Car no. 27119
16/01/2013

ज्ञानपीठ लोकोदय ग्रन्थमाला—हिन्दी ग्रन्थाङ्क—८०

Shatranj ke Mohra

शतरञ्जके मोहरे

Shatranj ke Mohre

Amrit lal Nagar

अमृतलाल नागर

Amrit lal Nagar

0.40
0.10
0.3.50
0100.00
150.

Bhartya Geyanpit Kashi

भारतीय ज्ञानपीठ • काशी

Bhartya

Cat no. 27119
16/01/2013

ज्ञानपीठ लोकोदय ग्रन्थमाला—हिन्दी ग्रन्थाङ्क—८०

Shatranj Ke Mohra

शतरञ्जके मोहरे

Shatranj Ke Mohre
Amrit lal nagar

अमृतलाल नागर

Amrit lal Nagar
0.40
0.10
0.3.50
0.100.0
150.
Bhartya Geyanpit kashi

भारतीय ज्ञानपीठ • काशी

Bhartya

युग प्रवर्त्तक
महाकवि पन्त जी
को
सादर सविनय सप्रेम

१

"होसियार ! होसियार हुइ जाओ होऽजुम्मन काका। फौजैं आवति हयिं।"

दो फ़र्लांग दूरसे गोहारते और दौड़कर आते हुए युवकका संदेसा सुनकर गढ़ी रुस्तमनगरकी बाहरी बस्तीमें कुहराम मच गया। उड़ती खबर आनन-फ़ाननमें हाट और महलों तक पहुँच गई। गढ़ीके दोनों फाटकोंकी खिड़कियाँ बन्द हो गयीं।

अबुलमुज़फ़्फ़र मुईज़ुद्दीन शाहेज़मां गाज़ीउद्दीन हैदर शाहे-अवधके नाज़िमकी फ़ौजें तहसील वसूलयात्रीके लिए दौरेपर निकली हैं, इधरसे गुज़र रही हैं। रुस्तमनगरके नवाब मुहब्बतखाँको पहले ही इसकी खबर मिल चुकी थी। इस समय उनके ख़ास कमरेमें नाज़िम साहबके स्वागतके लिए सलाह-मशविरे होने लगे, ख़िदमतगारोंकी फ़ौज बारहदरीकी सफ़ाई और सजावटमें जुट गई, मुहब्बतखाँकी नौकरीमें रहनेवाली तवायफ़ें अपनी कंघी-चोटी और बनावसिंगारमें मसरूफ़ हुईं, बावर्चीख़ानेका इन्तज़ाम गरमाने लगा।

गढ़ीके फाटकपर बाहरी बस्तीके रहनेवाले ग़रीब किसानों खेतिहरों, चमारोंकी स्त्रियाँ, बच्चे और बूढ़े अपनी गृहस्थी की लाई जा सकनेवाली वस्तुओंकी गठरी-मुठरी लादे भीड़ लगाये खड़े थे और फाटक खोल देनेके लिए भीतरके सिपाहियोंसे चिरौरी कर रहे थे। पिछली बार जब नाज़िमकी फ़ौजें इस इलाक़ेसे गुज़री थीं तब उसके सिपाहियोंने बस्ती उजाड़नेके अतिरिक्त स्त्रियों और बच्चोंसे कड़ी बेगार भी करवाई थी, कई निर्धन गृहलक्ष्मियोंकी अनमोल इज़्ज़तको बेभाव कर दिया था।

काले-भूरे बादलोंके घनघोर घिरावसे आकाश घुट रहा था, धरतीपर उसकी मनहूसियत फैल रही थी, नाज़िमी सेनाओंकी आहटसे गाँवकी हवा तकको मानो साँप सूँघ गया था।

देखते-देखते ही अन्तरिक्षके एक कोनेको धूलके बादल संकुचित करने लगे। दूर सुनाई पड़नेवाली घोड़ोंकी टापें मानो बाहरी बस्तीवालोंके कलेजोंपर पड़ने लगीं। बाहरी बस्तीके पुरुष आनेवाली परिस्थितिके प्रति आतंकभरी मौन उत्सुकता लिये एक जगह बटुरकर खड़े थे। दूर, गढ़ीके फाटकके बाहर खड़ी, गिड़गिड़ाती गुहारती अपनी घरवालियों और बाल-बच्चोंको देख-देखकर गूँगी चिन्ता और विवशता उन्हें कातर बना रही थी। गाँवपर हमला होनेकी कोई सम्भावना न थी, रुस्तमनगरके नवाब मुहब्बतख़ाँ लखनऊके दरबारमें आदर पाते थे, शाहग़ाज़ीउद्दीन हैदरके नायब आग़ामीरसे उनका मेलजोल था, नाज़िमको भी नज़र नियाज़से सन्तुष्ट रखा करते थे—यह सब होते हुए भी गाँवकी ग़रीब प्रजाके लिए स्वयं उसके ही बादशाहकी फ़ौजोंका आना प्रलयके आगमनके समान था।

सहसा फाटक खुले। नवाब साहबकी ओरसे बख्शी नूरमुहम्मद नाज़िम साहबकी अगवानीके वास्ते पालकीपर बाहर जा रहे थे। फाटकके दोनों ओर लगभग तीन फ़ुट ऊँचे चबूतरोंपर बने तिदरे दालानोंमें खड़े हुए धनुषबाण और बन्दूकधारी बारह सिपाहियोंने झुक-झुककर बख्शीको सलाम किया। आठ सिपाही उनकी पालकीके दोनों ओर चल रहे थे। परजा ने बख्शीकी और नवाब साहबकी खैर मनाई, शरण पानेके लिए गुहार मचाई। बूढ़े बख्शीजीने कुछ सोचकर उन्हें अन्दर जानेकी आज्ञा दे दी, साथ ही फाटकवाले सिपाहियोंको यह हिदायत भी दी कि उन्हें गठरी-मुठरियों समेत मवेशीखानेके अहातेमें बन्द रक्खा जाय जिससे नाज़िम साहबकी सवारी आनेके समय बाज़ारकी सड़कपर बदइन्तज़ामी न फैल सके।

देखते-देखते ही नाज़िमकी फ़ौजें टिड्डीदल-सी आ पहुँचीं। हाथी, घोड़े, तोपखानेके बैल, फ़र्राश, खलासी, चोबदार, साईस, फ़ीलवान, बाज़ारिये, कारकुन, मुंशी, दारोग़ा, सिपाही आदि सब मिलाकर लगभग साढ़े तीन सौ प्राणियोंका काफ़िला गाँवके एक ओर फैल गया। इतने बड़े मजमेके हड़बोंग, हिनहिनाहट और चिग्घाड़ोंसे आस्मान गूँजने लगा। नाज़िम साहब नवाब साहबके मेहमान होकर गढ़ीमें चले गये, सेना मनमानी हो गई।

गन्नेके खेतोंमें फ़ीलवान अपने हाथियोंको धँसाने लगे, दूसरे खेतोंकी ओर घोड़ोंके झुण्ड बढ़े, बैलोंके रखवाले और चूल्हे जलानेके लिए लकड़ी की तलाशमें निकले सिपाहियोंने बाहरी बस्तीके घरोंपर छापा मारा। घरवालों, खेतवालोंके प्राण खिंचने लगे। जिधर देखो उधर ही गाँववाले फ़ौजवालोंके पैर पकड़-पकड़कर हा-हा खा रहे थे। सिपाही, फ़ीलवान, साईस और शाही बैलोंके रखवाले महमूद ग़ज़नवी और नादिरशाह बने अकड़के मारे आस्मानमें अपना रुख़ मिलाते घुड़कते और धकियाते थे। खेत न उजाड़नेके लिए सिपाहियोंको रिश्वतोंसे गरमाया जा रहा था। पैसेवालोंके खेत थोड़े बहुत ही रौंदे गये, परन्तु बेपैसेवालोंकी कोई सुनवाई न हुई। उन्होंने मारें खाईं और अपने खेतोंको तबाह होते देखा, भरसक पैसे भरे और फिर भी सिपाहियोंने उनके घरोंमें घुसकर बाँस-बल्ली बरन हल किवाड़ जो भी लकड़ीका सामान मिला उसे कुल्हाड़ियोंसे काटकर, अधिकतर घरवालोंसे ही कटवा, उनके सिरोंपर ही लदवाया और ले चले। बैलोंके रखवाले किसानोंके घरोंका भूसा ढोने लगे, फूसके छप्पर तक न छोड़े। रुस्तमनगरके बाहरी भागमें आबाद तीस चालीस घरोंकी बस्ती और उसमें बसनेवाले छोटी जातियोंके ग़रीब लोग देखते-देखते ही अधमरे हो गये।

सैनिकोंमें बदमस्ती फैल रही थी। लूटके ज़ोमसे भरे ठहाके, कोहश, मज़ाक, अफ़ीम, गाँजा, चरस, भंग और सस्ती शराबोंके दौर शुरू

हुए; बहुतसे सिपाही बाज़ारियोंको घेरकर खाने-पीनेका सामान ख़रीद रहे थे, दुनिया भरके आये-गये मसले, अपने-पराये दुख-सुख जगह-जगह अपनी-अपनी मन मिलावकी टोलियोंमें कर रहे थे।

घुड़सवार अब्बास कुलीबेगका साईस रुस्तमअली अपने दो मित्रोंको साथ लेकर गढ़ीकी तरफ़ चला। ढाई साल बाद वह अपने घर जा रहा था, अपने ही गाँवमें नाज़िम साहबका पड़ाव पड़नेके कारण उसे अकस्मात् यह अवसर हाथ लग गया। वह बेहद ख़ुश था। दोनों दोस्तोंके कन्धोंपर बाहें फैलाकर रुस्तमअली बड़ी मस्तीमें गा उठा; **"मोरे उठत जोबनवामें पीर पिया घर बेगि पधारो।"**

घसीटेखाँकी सुरमीली नज़रोंसे रस टपक पड़ा, मुसकराकर अपने दूसरे साथीसे कहा; "देख रहे हो नब्बू इनके नक़्शे। आजके गये अब ये आठ रोज़ बाद ही घरसे लौटेंगे।"

नब्बू और रुस्तमकी प्यारभरी नज़रें मिलीं, एक आह फेंकते हुए मुसकराकर नज़म बोला; "देखा, घसीटेको जलन हो रही है।"

"जलन तो ख़ैर नहीं, मगर बच्चोंकी याद मुझे भी हो आई। चार साल हो गये उन्हें देखे।" घसीटेखाँकी नज़रें ध्यानमें खो गईं।

नब्बूका चेहरा गम्भीर हो गया, फिर धीरेसे कहा; "अपने ऊपर ख़ाँमखाँ जब्र करते हो। आख़िर बीती कबतक बिसारोगे—तुम्हें अपने बच्चोंका ख्याल करना चाहिए।"

घसीटे चुप और गम्भीर रहा, उसे देख फिर बात फेरते हुए नब्बूने कहा, "और तुम्हारे कितने बच्चे हैं रुस्तम ?"

"दो। एक लड़का है तीन सालका, और लड़की क़रीब डेढ़ बरसकी होगी।"

"लड़कीकी तो अभी सूरत भी नहीं देखी होगी तुमने।"

"अमाँ लड़कियोंको क्या देखना।" घसीटेख़ाँने कहा।

"देखा रुस्तम, ठाकुरोंके गाँवमें रहनेकी वजहसे बेरहम हो गया है। कम्बख़्त क्या रिवाज है उनमें भी, पैदा होते ही लड़कियोंको मार डालते हैं।"

"अमाँ अच्छा ही करते हैं। औरतसे बढ़कर बदज़ात कोई नहीं। ये नागिनें होती हैं जितनी ख़ूबसूरत उतनी ही ज़हरीली भी।" घसीटेखाँ के चेहरेपर नफ़रतकी कड़ी रेखायें उभर आईं। बातके तैशमें वह दोनों मित्रोंसे अलग हटकर चलने लगा।

रुस्तमखाँ पलभर ठिठककर उसे देखने लगा, फिर सधे स्वरमें एकाएक कहा, "मैंने एक बात सुनी है घसीटे। बहुत दिनोंसे पूछना चाहता था–"

"न छेड़ यार। जाने दे।" नब्बूने रुस्तमकी बाँह दबाई।

"मेरी बीबीके बारेमें सुना है?"

"हाँ।"

"सच सुना है। मैंने उसको और उसके आशिकको कुल्हाड़ियोंसे काट डाला···थूः।"

उसके बाद तीनों कुछ दूर तक ख़ामोश चले गये। रुस्तम अलीका चेहरा विचारोंसे भारी होकर झुक गया था। उसकी माँने अक्सर उसकी पत्नीकी बदचलनीके बारेमें शिकायतें की थीं। उसके सौतेले भाई फ़तहअली के खिलाफ़ उसकी माँने इल्ज़ाम लगाये थे। मगर वह अपने रक़ीबको, अपनी घरवालीको, लाख चाहनेपर भी कभी रँगे हाथों पकड़ न सका। उसके शककी जड़ कभी मज़बूत न हो सकी गो जमी रही। दुलारी उसपर जान निछावर करती है। वो रो-रो-कर अम्मी-जान की सख़्तियोंकी शिकायत करती है। रुस्तमअली कुछ तय न कर पाता था। पुरानी उलझन घसीटे खाँकी बातोंके सहारे फिर मनमें फैल गई।

दोनों मित्रोंको मौन देख नब्बू मस्तीमें आकर बोला, "अमाँ हम तो लाख टकेकी एक बात जानते हैं, जो मरद आठों पहर निगहबानी कर सके वही औरतको अपनी बीबी कह सकता है। और उसमें भी

ख़ास तौरसे हमारे ऐसे पेशेवाले जो साल दो सालमें महीने दो महीनेके लिए घर जाते हैं भला किस बातका गुमान करते हैं ? अमाँ हम तो कहते हैं कि अपनी औरतको नौकर रक्खी हुई रण्डी मान लो, जितने दिन रहो ऐश करो, उसके बाद—"

"और बच्चे ?" रुस्तमने पूछा।

"क्या रखैलोंसे नहीं होते ? अवधके तख्तोताजके आइन्दा होनेवाले मालिक रखेल ख़वास की ही औलाद हैं।"

"अच्छा अच्छा, बंद कीजिए ये चर्चे। किसूके भनक पड़ गई तो फाँसी चढ़ा दिये जायेंगे हम सबके सब।" घसीटेख़ाँने बात ख़त्म करा दी।

तीनों रुस्तमनगरके फाटकपर आ पहुँचे थे।

२

"ख़ुदा ऐसी औरत किसूको न दे। ख़ांदानके मूँ पे कालिख पोत दी। अभी जो कह दो तो बाजीजानको बुरा लग जाय—"

"ऐ कौन मेरी कोखजाई लड़की है जो—"

"न सही, पर लाड़ तो तुमने ही लड़ाये हैं उसके। मेरी सोने जैसी गिरस्तीमें ये ज़हरकी पुड़िया घोल दी। ऐ भला बताओ, ये आबरूदारोंका घर है या रंडीखाना ?—"

"आबरू तो उसी दिन चली गई जिस दिन घरमें तेरे सब्ज़-क़दम पड़े।"

"ऐ ख़ुदाका क़हर पड़े उसे मूँडीकाटीकी ज़बान पे जो मेरे जैसी सच्ची सूधीपर ऐब लगाती है—हाँ नहीं तो। ऐ मेरा तो ख़ुदा गवाह है, सारा ज़माना गवाह है। खैराबादमें भी रही, ढाई बरस यहाँ भी हो गये चच्चीके पास। कीड़े पड़ेंगे उसकी ज़बानमें…"

मित्रोंके साथ अपने घरके पास पहुँचते ही रुस्तमके कानोंमें अपनी माँ और फूफीके तीखे, लड़ाईके बोल पड़ने लगे और उसे यह समझनेमें भी देर न लगी कि लड़ाईकी जड़ उसकी बीवी दुलारी ही है। उसका चेहरा शर्म और गुस्सेसे लाल हो गया। दोस्तोंसे नज़र मिलाये बग़ैर 'अभी आया' कहकर दहलीज़के अन्दर घुसा। टाटके पर्देके पास उसके पैर फिर ठिठक गये, लड़ाईके दो चार बोल और सुनता रहा। बिजलीकी तरह ख्याल कौंधा, उसके दोस्त, खास तौरपर घसीटेखाँ भी सुन रहे होंगे; खयाल आते ही उसकी मर्दानगी जोश खा गई, म्यानसे बाहर खींची गई तलवारकी तरह झपटकर अन्दर पहुँचा। करीमन बुआ सामने खड़ी थीं। अचानक रुस्तमको देखकर वे अचम्भेमें पड़ गईं। रुस्तमने घुसते ही घुड़का, "खामोश! ये घर है कि भठियारखाना? शर्म नहीं आती तुम लोगोंको, बाहर तक आवाज़ जा रही है। चारपाई कहाँ है?"

रुस्तमअलीकी माँ भी बड़े बेटेके अचानक आगमनसे लड़ते-लड़ते थम गई। फ़तहअलीकी बीवीने फ़ौरन घूँघट खींचा और दौड़ती हुई कोठेके ऊपर चली गई, बुआ चारपाई लाने चलीं। रुस्तमअलीकी माँने मानो अपने आपको आश्वासन देनेके लिए बेटेको एक बार भर नज़र देखा और देखते ही आँखें भर आईं, रुँधे हुए गलेसे बोली, "आया है तो मेरे लिए ज़हर ला दे इस बार। ये चुड़ैल तो मेरे बच्चोंको खानेके लिए धँसी है इस घरमें···।"

करीमन बुआ अन्दरसे चारपाई निकाल लाईं। रुस्तमअलीने आगे बढ़कर उसे दोनों हाथोंसे थाम लिया। माँ की आँसूभरी आवाज़ कम होकर भी इतनी धीमी नहीं हुई थी कि घरके दरवाज़े तक न पहुँच सके। रुस्तमअली अपनी बदनामीके डरसे मन ही मन उबला पड़ रहा था। तभी दहलीज़से घरमें प्रवेश करते हुए रुस्तमके सबसे छोटे सौतेले भाईने, वारिसअलीने, कहा, "अरे बड़े भैया आप? इसी फ़ौजके साथ आये होंगे। खूब मिले। लाइए मैं बिछाये आता हूँ।" कहकर उसने बड़े भाईसे गले

मिल चारपाई उठा ली और दहलीज़की तरफ़ बढ़ते हुए कहा, "अम्मा छोटी भौजीसे कहिए, फ़तेह भैयावाली दरी निकाल देंगी, बड़े भैयाके दोस्त आये हुए हैं फ़ौजवाले।"

वारिसअलीको घरमें घुसते देखकर उसकी अम्माके चेहरेका चिराग़ गुल हो गया, वो हक्की-बक्की रह गई। करीमन बुआ पहले तो उसे देखकर अचकचाईं और फिर उनके चेहरेपर नई रौशनी चढ़ी। वारिसअलीके चारपाई लेकर बाहर जाते ही करीमन बुआने दबे स्वरमें लेकिन हाथ पैरोंकी पूरी तेज़ीके साथ आगे बढ़ अपनी भावजका हाथ पकड़कर झिंझोड़ते हुए कहा, "क्यों री तू तो कहती थी कि मेरी दुलारी तेरे वारिसअलीके साथ अपनी कोठरीमें है। फिर ये बाहरसे कैसे आगया नन्हा? जब, देखो तब मेरी दुलारीके पीछे हाथ धोके पड़ी रहती हैं। अरे तेरे बेटेकी जोरू है आखिर।"

रुस्तमने जाते-जाते सुना और ठिठककर अपनी माँ और बुआकी तरफ़ देखने लगा। फ़तेहअलीकी दुलहनने बायें हाथसे घूँघट ताने कोठेसे बाहर आकर अपने दाहिने हाथकी दरी सासकी ओर बढ़ाई। रुस्तमअली की अम्मा अपने जीके हौकेमें मरी जा रही थी। दरीको देखा अनदेखा किया, दूसरी ओर मुड़कर फिर तेज़ीसे अन्दर चली गई। करीमन बुआने फ़तेहअलीकी दुल्हनके हाथसे दरी लेकर रुस्तमकी ओर बढ़ाई।

आँगन पार सामनेवाले दालानकी कोठरीका दरवाजा खुला। चूड़ीदार पाजामा, गाढ़ेका कुरता पहने धानी रंगकी मोटी ओढ़नी ओढ़े दुलारीका उदास मुखड़ा झलका। रुस्तमअलीकी टकटकी बँध गई। वारिसअली तभी अन्दर आया, बुआके हाथसे दरी ली, सामने दालानमें दाहिने हाथकी मेंहदी लगी उँगलियोंकी चुटकीसे ओढ़नीका पल्ला खींचे बड़ी भावज चली आ रही थी। वारिसअली चोरीसे, आशिक़की हसरतभरी निगाहोंसे उसे देखता हुआ तेज़ीसे बाहर चला गया। बड़ी-बड़ी नशीली जादू भरी आँखें, बड़ा सुडौल बदन, सिजल नाक-नक़शा—रंग गेंहुआँ होने पर भी

दुलारीकी चढ़ती जवानी ऐसा चुम्बक थी जो मर्दानगीके लोहेको बरबस अपनी ओर खींच लेती थी। नज़रें मिलते ही वह पुरुषको मतवाला बना देती थी; बेऐब खूबसूरती न पाने पर भी दुलारी मर्दके लिए मुजस्सिम लालच थी। दुलारीने पलकें उठाईं, पतिको पलभर जमकर आँसूभरे नैनोंसे निहारा और उसी दालानकी दूसरी कोठरीकी ओर चटसे मुड़ गई, मानो ग़लतीसे आगे बढ़ आई थी, ध्यान आते ही अपनी जगहपर लौट गई। इन नेत्रोंके जादूसे ढाई बरस बाद एक झलक बँधकर रुस्तम अपनी सुध-बुध भूल गया। उसे अपनी पत्नीका उदास, आँसुओंसे नहाया हुआ चेहरा तीरकी तरह कलेजेमें चुभा, झुँझलाहट भरे स्वरमें करीमन बुआसे कहा : "अम्माके दिमाग़में फ़ितूर है। मैं अब समझ गया। बुआ कह दो कि रोना-धोना छोड़कर बावर्चीख़ानेमें जाय।" फिर जेबसे एक रुपया निकालकर फेंकते हुए ज़रा ऊँचे स्वरमें आदेश दिया : "घण्टे डेढ़ घण्टेमें दस्तरख्वान लग जाये बुआ। और कह देना खाना पकानेकी तारीफ़ लखनऊ तक पहुँची हुई है।"

पत्नीपर ख़ुशामदका तीर चलाकर रुस्तमअली बाहर चला गया। रुपया उठा कोठेके दरवाज़ेके पास जाकर करीमन बुआ बोली : "फ़तेहअली की दुलहिन, अरी मेहमान आये हैं, घरमें घुसके क्या बैठी है। चल बावर्चीख़ानेमें दुलारीका हाथ बँटा बिटिया। मैं बाज़ारसे सौदा सुलफ़ ले आऊँ।"

"उसे फ़ुरसत नहीं है। दुलहिन, खूँटीपरसे मेरा बुरका उठा। और चल तू भी चल चच्चीके याँ।" रुस्तमकी अम्मा गुस्सेसे अधिक हड़बड़ा कर बोलीं।

"भौजी, कल चली जाना चच्ची के यहाँ। इतने दिनों तो बाद लड़का आया है—"

"आया है तो मैं क्या करूँ। जिसके लिए आया है वो तो घर ही में रहेगी और जिसे कमाई लाके सौंपी है वो भी मौजूद रहेगी। मैं भला

कौन हूँ। चलो दुलहिन, निगोड़ा घर क्या है जादूगरनियोंका डेरा है! ऐ ख़ुदाकी मार पड़े इनपर।"

वारिसअली बावर्चीख़ानेके सामने खड़ा मेहमानोंके लिए हुक़्क़ा ताज़ा कर रहा था। करीमन बुआ दालानसे हटकर उस तरफ़ चली गईं। फ़तेहअलीकी दुल्हनने बुरका ओढ़ते हुए अपनी साससे डरी हुई आवाज़में धीरे-से कहा: "चुप भी हो जाओ अम्मा। क्यों अपनी जानकी गाहक बनती हो। चली चलो बस—आओ।"

रुस्तमअलीकी माँके चेहरेपर रह-रहकर बर्फ़-सी जम जाती थी। कोठेके अँधेरेमें फटी-फटी आँखें जमाये खड़ी सासने एकाएक बहूके दोनों कन्धोंपर हाथ टेककर घुटी आवाज़में कहा: "हय हय दुलहिन, आँखों देखा झूठ हो गया निगोड़ा। ये ज़रूर बंगालेका जादू जानती है। अब तो इस घरका पानी पीना भी अज़ाब है। हाय अल्ला, क्या होगा?—क्या होनेवाला है री?"—निकलती आह डरके मारे अन्दर ही अन्दर घुट गई, अपनी जानके सहारेके लिए उसने फ़तेहअलीकी दुल्हनको कसकर छातीसे चिपटा लिया।

वारिसअली बावर्चीख़ानेके सामने बैठा हुआ हुक़्क़ेका नैचा तर कर गुड़गुड़ीका पानी ठीक कर रहा था। अन्दर उसकी नज़रोंके सामने ही दुलारी चूल्हा फूँक रही थी। हसरतके जालमें फँसा हुआ नौजवानदिल पलकें उठने-गिरनेके साथ बेबस बावला-सा कनखियोंमें धँसकर झाँकता था। दुलारी उसके जानोईमानकी मलिका थी। दुलारी नींद थी, उसके आग़ोशमें बड़ी हैरत और करोड़ों जल्वे भरा वह ख़्वाब छिपा था जिसके देखते ही वारिसअली बच्चेसे मर्द बन जायगा। यों देवर और भावज एक ही उम्रके थे, बल्कि वारिस चार महीने बड़ा ही था; लेकिन दुलारी खुली खेली थी, दो बच्चोंकी माँ थी और वारिस अभीतक अपने आपको मर्द महसूस करनेकी चाहत लिए घुट रहा था। पिछले पन्द्रह-बीस दिनोंसे वह घुटन बड़ी तेज़ सनसनाहटके साथ नये जोशका सैलाब बनकर

उमड़ पड़ी है। मृगजलके छलावेमें दौड़-दौड़कर चूर हुए मनको इधर हर दिन गुज़रते यह अनुभव होने लगा है कि क़िस्मतने अपने हाथोंमें आबे-क़ौसरका जाम उठा लिया है और उसके लबोंतक पहुँचनेमें 'बस-अब, बस-अब' की ही देर है।

करीमन बुआ पिछवाड़ेके दरवाज़ेसे बाहर सौदा लाने चली गईं, अम्मा और छोटी भौजी अन्दर थीं—नज़र ओट थीं और बड़े भैया बाहर यार दोस्तोंमें फँसे हुए थे। वारिसअली बड़ी चिलमका तवा चूल्हेमें तपानेके बहाने अन्दर पहुँच गया। उसने ज्योंही दुलारीके मुखड़ेपर भौंरे-सा टपकना चाहा त्योंही उसकी अम्मा छोटी भौजीके साथ सामनेसे गुज़रीं। वारिसअली अलग हट गया, दुलारीने बेशर्म निगाहोंसे सास और देवरानीको देखा, दोनोंने चटसे मुँह फेरकर क़दम बढ़ाये। दुलारीने तेज़ीसे उठ बावर्चीख़ानेके दरवाज़े तक आकर साससे कहा : "अम्मीजान जो मुन्नेमियाँ शहज़ादीको पूछें तो क्या कह दूँ ?"

"तेरे आगे भला और किसकी पूछ होगी इस घरमें ?" सासने पलटकर कहा और फिर भड़क उठीं : "ये अपने जादूमन्तरोंको और अपने तीनों ख़समोंको लेके तू ही नागिन जैसी बैठ इस घरमें। हमारा भी अल्लाह बेली है। चल दुलहिन, इसकी हवासे भी दूर रहना चाहिए भलीभोलियोंको। अल्लाहका क़हर पड़े इनपर।"

दुलारीकी सास पिछवाड़ेके दरवाज़े तक बड़बड़ाती चली गई, हाथमें एक छोटी-सी गठरी लिये फ़तेहअलीकी दुल्हन उसके पीछे-पीछे जा रही थी। दोनोंके बाहर चले जानेके बाद दुलारी दरवाज़े उटकाने गई। चिलममें तम्बाकू भरते हुए बावर्चीख़ानेके दरवाज़ेपर आकर बावला वारिस अपनी दुलारीको ओर देखने लगा। माँके जानेसे वह बेहद खुश था, उसे हँसी आ गई और फिर अपनी हँसीको कारण देते हुए उसने पास आती दुलारीसे कहा, "उस वक़्त मुझे देखके अम्माको काठ मार

गया। हः हः तुम्हारे जादूने सिट्टी-पिट्टी गुम कर दी। तुम सचमुच जादूगर हो भौजी।" वारिसअलीके हाथने दुलारीकी देहपर चहकना चाहा।

"ऐ परे हटो, हरवक़्त लड़कपन अच्छा नहीं लगता हमें। ये कामका वक़्त है। जल्दीसे चिलम तैयारकर हुक़्क़ा बाहर ले जाओ औ' फिर आओ तो एक और ज़रूरी काम बताऊँगी।"

"अभी लो भौजी, अरे मैं तो ताबेदार हूँ तुम्हारा।"

"ए ताबेदार साहब!" बड़े भाईकी आवाज़ सुनकर वारिस चौंक गया। रुस्तमअली आँगनमें खड़ा था, बोला, "अपनी भौजीसे शरबत बनवाकर ले आओ और हुक़्क़ा भी।"

"अभी लाया बड़े भैया, बस तवे ये कोयले सँजो रहा हूँ।" वारिसके हाथ फुर्तीसे चलने लगे। दुलारी शरबत घोलनेका प्रबन्ध करने लगी। रुस्तम बावर्चीख़ानेके अन्दर आ गया, दुलारीको देखने लगा। वारिसअली चूल्हेकी ओर मुँह किये बैठा था। दिया सामने रखकर दुलारी काम कर रही थी। पतिको देखकर दुलारीने अपनी नज़रोंकी मूठ मारी। रुस्तमअली तड़प उठा। फिर बात करनेका कुछ बहाना ढूँढ़कर उसने पूछा: "बच्चे नहीं दिखलाई दिये अभी तक।"

"दोपहरमें मुन्नेमियाँ अपने साथ ले जाते हैं उन्हें। रातमें आयेंगे।" दुलारीने मेहमानोंके लिए हाथसे और पतिके लिए ज़बानसे शरबत घोलते हुए बड़े भोलेपनसे पूछा: "ये फ़ौज कहाँ जा रही है?"

"घोड़े अपने हाथमें हैं जिधर कहो उधर बाग मोड़ दूँ?" रुस्तमअली ने अपनी आँखों और मुसकानमें रस घोल मस्तीसे सीना फुलाकर कहा।

"शाही घोड़ोंकी बाग मोड़ सकते तो फ़रमायश भी करती।" दुलारी ने हँसी-हँसीमें रुस्तमअलीकी औक़ात ओछी कर दी। मगर रुस्तमअली भी इस समय घर आया हुआ था, मस्तीसे छलछलाया हुआ था, हल्का नहीं पड़ सकता था, हँसकर बोला: "वे घोड़े फ़िरंगी चराते हैं।"

गड़ुवेमें शरबत छानकर भरते हुए गर्दन झटक, त्योरी चढ़ा दुलारी बोली : "तो फिर शान किस बातकी दिखाते थे। अरे लखनऊसे मेरे लिए इतनी-सी सौग़ात तक तो लाई न गई, घोड़े दौड़ायेंगे मेरे हुक्मसे। चला जाओ भी।"

रुस्तमअली शरमा गया, बोला : "ये थोड़े ही जानता था कि घर आऊँगा।"

"हाँऽवैसे घरकी याद क्यों आने लगी। लखनऊमें भला-हूरोंकी कमी है? ख़ुदा अच्छा रक्खे नाज़िमको जिसकी बदौलत हुज़ूरका शरबते-दीदार नसीब हुआ हम ग़रीबोंको भी।...अच्छा लीजिए ये अपने मेहमानोंके लिए शरबत औ जाइए यहाँ से।"

"नन्हें मियाँ तुम दे आओ लपकके। मुझे पूछें तो कह देना अभी आता हूँ।" दुलारीके 'जाइए' कहनेकी अदाने रुस्तमको बेक़ाबू कर दिया था।

वारिसअली उर्फ़ नन्हें मियांके तलवोंकी आग इस वक्त चोटीपर थी। रुस्तमअली इस दम उसका भाई नहीं रक़ीब था। रुस्तम अगर अचानक घर न आया होता तो आजकी रात उसकी सुहागरात होती—दुलारीने वादा किया था और उसके लिए उसने कठिन मेहनत भी की थी। इस कम्बख्त सौतेले बड़े भाईने अचानक आकर दुलारीपर अपना मालिकाना हक़ जमा लिया और इस समय बड़प्पनकी धौंस देकर शरबत दे आनेके बहाने वह उसे बाहर निकाल रहा है। वारिसअली बेबस मुँह फुलाये हुए चिलम रखकर उठा और भावजके हाथसे शरबतके बर्तन लेकर जल्दीसे बाहर चला गया। दुलारीने उसके हाव-भाव देखे; जोरसे कहा : "नन्हें मियाँ, वहीं न बैठ जाना तुमसे एक काम है।"

उसी समय पिछवाड़ेका दरवाज़ा खुला, करीमन बुआ सामान लेकर आती दिखलाई दीं। वारिसअलीका रोम-रोम खिल उठा : "अब सालेको

मौक़ा नहीं मिलेगा। दुलारी मेरी है। कैसे प्यारसे उसने कहा कि नन्हें मियाँ वहीं न बैठ जाना।

बावर्चीखानेके दरवाज़ेपर आकर करीमन बुआ रुस्तमको अन्दर देख ठिठक गईं, दुलारीने घूँघट ताना, रुस्तमअली बाअदब खड़ा हो गया। बुआ अन्दर चली आईं, गठरी रक्खी और अपना जुँओं भर सिर खुजला कर कहा : "ले बिटिया, पुलावके लिए चावल लाई हूँ। बिशेशुरदीनसे जाके खुशामद की कि मेरा रुस्तमअली अपने दोस्तोंके साथ आया है। ऐ मैं बलायें लूँ, आँखें तरस रही थीं अपने बच्चेको देखनेके लिए। खुदा तेरी उम्र हज़ारी करे, फूलो-फलो परवान चढ़ो बेटा। मुझे तो आँखों देखेका सुख है। औ' एक भौजी हैं हमारी; क्या कहूँ बेटा। फूटी आँखों देख नहीं सकतीं तुझे औ मेरी दुलारीको। ऐ भला बताओ इतने दिनों बाद तो तू घर आया, औ आप बहूको लेके चल दी चच्चीके याँ! मान लिया भई कि पराई लड़कीसे बैर है तेरा, मगर उसके पीछू अपने पेट-जाये लड़के तकसे दुश्मनी ठान ली—एँ! ज़माने भरमें मेरी अच्छी-भली लड़कीको बदनाम करती-फिरती हैं। कोई उनसे पूछे कि ये बदनामी आख़िर है किसकी? अपने ही घर की न? अपने ही बाल-बच्चोंकी न? पहले मुन्नेके साथ. इसे ऐब लगाती रही और अब ये कलका लड़का बिचारा मेरा नन्हा है सो उसके साथ बुरा बतलाती है मेरी बच्ची को। तुम्हारे आनेके पहले घड़ी भरसे मेरा ख़ून पी रही थी कि तेरी लड़की तो मेरे नन्हेंके साथ है। हज़ारों कहनी न कहनी सुना डालीं। औ' नन्हा बिचारा तुम्हारे सामने ही बाहरसे आया है।"

करीमन बुआकी बातोंका असर रुस्तमअलीके चेहरेपर बोल रहा था। उसकी त्योरियाँ चढ़ती जा रही थीं। दुलारीने इस बीच चावलोंकी गठरी खोलकर उन्हें धोनेके लिए पानीमें डाला। फिर वारिसअलीको आया देख पतिकी ओर घूँघट ताने बाहर आगई। बावर्चीखानेसे परे हट एक कोनेमें

22152

उसे ले जाते हुए दुलारीने कहा : "नन्हें मियाँ, महलमें जाकर अपने दोस्तसे कहना—"

"नईमसे ?"

"हाँ। यहाँका सारा हाल बतलाना और कहना कि हो सके तो एक बोतल उम्दा वाली इंतज़ाम करके दे दें और जो कुछ वहाँ अच्छा-अच्छा पका हो सो भी लेते आना।"

सोलह बरसका नौजवान ईर्ष्यासे जल उठा, बोला : "बड़ी खातिरें हो रही हैं भैयाकी ! मैं—"

"इसी समझ पर पराई औरतसे इश्क करने चले हो ? जाओ भी, बच्चे हो न आखिर।"

नन्हें मियांको तीर लग गया; फ़ौरन सम्हलकर अपने चेहरेपर मर्दकी-सी संजीदगी लाते हुए बोला : "समझ गया। अभी लाता हूँ।"

हालाँ कि उसकी समझमें कुछ भी नहीं आया था।

३

नवाब मुहब्बतखाँके महलके पास ही मस्जिदवाली गलीमें बीबी मुलाटीका मकान है। वे नवाबसाहबकी लड़कियोंको क़ुरआन शरीफ़ और फ़ारसी पढ़ाती हैं। उनकी सच्चरित्रता, धर्म सम्बन्धी ज्ञान और ज्योतिष विद्या सिद्धिके सम्बन्धमें दूर-दूर तक चर्चा फैला हुआ है। रुस्तमनगरके नवाबी महलकी तो बात ही क्या, शाहे-अवधके महलोंमें भी उनकी बात सुनी और मानी जाती है। मरयमुलअस्मत बिल्किस उस् सितवत् महले खास बादशाह बेगम जो खुद ज्योतिष विद्याकी बड़ी जानकार हैं, बीबी मुलाटीको मानती हैं। तीज त्योहार और खास-खास मौक़ों पर बादशाह बेगमकी तरफ़से बीबी मुलाटीके लिए पाँच अशर्फ़ियाँ और रेशमका थान आता है। नवाब मुहब्बतखांने उनके रहनेके वास्ते यह मकान बनवा दिया है। उनका लड़का क़ासिमबेग दफ्तर हुज़ूर-तहसीलमें मुलाज़िम है और लखनऊमें

रहता है, लड़की जमीलुन्निसा अपने घर-बार वाली है और सुखसे है। बयासी वर्षकी आयुमें भी उनका जीवन नियमित है। जाड़ा-गर्मी-बरसात, दोनों समय ठंडे पानीसे नहाती हैं, पाँचों वक़्तकी नमाज़ पढ़ती हैं, किसीका छुआ नहीं खातीं, शक्कर नमक नहीं खातीं, भुनी हुई सूजी दूधमें घोलकर एक समय भोजन करती हैं और भोजन करते समय बोलती नहीं।

जिस समय रुस्तमअलीकी माँ और फ़तहअलीकी दुल्हन बीबी मुलाटीके घर पहुँचीं उस समय वे भोजन कर रही थीं। रुस्तमअलीकी मांने दो चार कुण्डी खटखटाई, कोई जवाब न मिला तो चबूतरे पर बैठ गईं। फ़तहअली की दुल्हन चबूतरे पर गठरी रखकर सासके पास खड़ी हो गई।

जिस तरह बाँसमें आग लगने पर रह-रहकर उसकी गाँठें चिटखती हैं उसी तरह रुस्तमअलीकी माँ भी दोनों गालों पर हाथ रक्खे बैठी हुई बीच-बीचमें पुटपुटा उठती थीं: "या अल्लाह रहम! हाय मेरे मालिक मेरा क्या होगा। जल्ले जलालहू आई बलाको टाल तू। हाय, ज़रूर कोई जिन्नात इसके बसमें है। हायअल्लाऽ! क़यामत आ गई। ऐ जो बंद कोठरीसे आदमीको बाहर निकाल दे वो क्या नहीं कर सकती दुलहिन।"

दाहिनी ओर गलीके मुहानेसे शिवबरन जमादारने आते हुए चच्चीके चबूतरे पर गठरीमुठरी लिये बैठी दो स्त्रियोंको देखा। अँधेरेमें सूरत न दिखाई दी, सोचा कहीं बाहरसे आई होंगी, पूछा: "कौन हो? कहाँसे आई हो?"

रुस्तमअलीकी मां आवाज़से पहचान गई, काँखते हुए स्वरमें कहा: "मैं हूँ श्योबरन नेहराज! चच्ची खाना खा रही होंगी शायद, इसीसे बैठी हूँ।"

"अरे फतेलीकी अम्मा हैं मैं कहूँ कोई बाहरसे आयी हैं। आज तो रुस्तम भी आया है तुम्हारा।"

"ऐ मेरा काहे भैया। पाला-पोसा तब मेरा था, अब तो अपनी जोरूका है, उसकी अम्माका है। मेरे लिए तो उस घरमें जगह भी नहीं रही।"

"क्यों ? घर क्या अकेले उसका है ? फतेली और वारस भी तो हैं ?"

"मेरा कोई नहीं मेहराज।" ठंडी साँस लेकर रुस्तमअ्रलीकी माँ बोली : "जादूगरनियोंने मेरा तो घर ही उजाड़ दिया। तुम तो देख ही रहे हो, फ़तेहअलीकी दुलहिनको लेके चच्चीके दरवाज़ेपर पड़ी हूँ। (कहते-कहते गला भर आया) ज़िन्दगीके दस-पाँच बरस जो भी हैं गुज़ार लूँगी जैसे-तैसे।" फिर सिसकते हुए पल्लेसे आँखें पोंछने लगीं।

"दुलरियाने कुछ किया होगा। मैं—"

"दुलारीका नाम आते ही आवाज़से आँसू उड़ गये, तैशमें हाथ आगे बढ़ाकर बोलीः "ऐ कुछ ?—ऐ ग़ज़ब कर दिया मेहराज। मैं तुमसे क्या कहूँ—सूरजको हाँथोंसे ढँकके दिनको रात कर दिया। हाय अल्ला ! मैं क़ुरान-पाककी क़सम खाके कहती हूँ श्योबरन मेहराज, मैंने अपनी इतनी उम्रमें ऐसी जादूगरनी नहीं देखी। है-है, मेरा कलेजा धड़क रहा है अभी तक।"

शिवबरन महाराजका कौतूहल भड़भड़ा उठा, गली छोड़ चबूतरेपर आ गये और दूर सरक कर बैठते हुए पूछा : "जादू ? क्या सचमुच जादू किया दुलरियाने या बात कह रही हो खाली ?"

"ऐ तुम्हाई क़सम, अल्लाक़सम मेहराज—जादू ! मैं क्या कुछ झूठ कहूँगी तुमसे ? मेरी आँखोंके सामने मेरे वारिस अलीको (धीमे स्वरमें) अपनी कोठरीमें ले गई...तुमसे क्या छिपाऊँ ?—औ' किसीसे भी क्या छिपाऊँ ? (आवाज़ चढ़ने लगी) सारा क़स्बा जानता है दुलारीको। जाने कबकी दुश्मनी निकाली करीमन बीबीने जो इस शैतानकी औलादको मेरे बच्चेके गले मढ़ दिया। खुदा करे इनके रोंयें-रोंयेंमें कीड़े पड़ें, क़फ़न और मिट्टी तक नसीब न होवे, कुत्ते-सियार भी इनकी लाशोंपर पेशाब करके चले जायें। ये अज़ाबकी पुतलियाँ हैं निगोड़ियाँ—"

दुलारी और वारिसअलीकी कथा सुननेके लिए शिवबरन महराज ऐसे बैठे थे जैसे कोई चाटवालेके सामने मुँह चलाता हुआ और लार

घोंटता हुआ चटपटे दोनेके इंतज़ारमें बैठता है, दुलारीकी सासके कोसनों का सिलसिला तोड़, बैठनेका पैंतरा बदलते हुए उत्सुक स्वरमें पूछा : "हाँ तो कोठरीमें ले गई, फिर क्या भया—"

"ले नहीं गई, बुलाया। अरे भैया तुमसे क्या बतलाऊँ मेहराज, आज चार-पाँच रोज़से बराबर यही चल रहा था। मैं तो तुम जानो दिन भर महलोंमें रहती हूँ। ये मुन्नाकी दुलहिन बिचारी सो इसने कल रात मुझसे कहा कि अम्मीजान रोज ऐसे-ऐसे खेल होते हैं याँ पे। नन्हा दिनमें रोटी खानेके बाद फिर कामपर नहीं जाता। दोनों कोठरी बन्द करके बैठ जाते हैं।"

"अच्छा!—"

"अरे क्या अच्छा और क्या बुरा मेहराज, अपने नसीबेको रोती हूँ। शरीफ़ोंके घरमें कसबी आ घुसी निगोड़ी। आखिर है तो मरी नीच क़ौम हिन्दूकी जात—उसके तो खूनमें कुफ़्र भरा है। पहले मेरे फ़तेहअलीको फँसाये रही और अब ये—"

"अच्छा तो फिर भया क्या?"

"अरे होता क्या मेहराज, मैं तो सन्न रह गई, ऊपरकी साँस ऊपर और नीचेकी साँस नीचे। मैंने अपना सर फोड़ लिया। औ' आज दिन मैं जानबूझ कर आगई, छिपके कोठेमें बैठ रही। उधर मुन्ने मियाँ खाना-वाना खाके, हुक्क़ा वुक्क़ा पीके रुस्तमअलीके दोनों बच्चोंको साथ लेके अपने फ़ीलख़ाने चले गये, इधर ये नन्हें मियाँको साथ लेके अपनी कोठरीमें चली गई। मैंने फ़ौरन ही बाहर निकलके दोनोंको पुकारा। ऐ भैया मैं तुमसे क्या कहूँ, बन्दीने खटाक-से अन्दरकी कुण्डी चढ़ा ली—औ' फिर दोनों अन्दरसे खिलखिलाके हँसे।—"

"फिर?"

"फिर मैंने बुलाकीकी लौंडियाको आवाज़ दी, उसे बख़्शीजीके घर भेजा कि करीमन बीबीको बुला ला। उन्होंने ही इसे पाला-पोसा अपनी

लड़की बनाया था और उन्होंने अपने भाई पे ज़ोर डालके मेरी छाती पे ये काली नागन बिठाई थी। मेरे तीनों बच्चोंको डस लिया पापिनने—" गला भर आया, आँखें डबडबा आईं। उसी समय घरका दरवाज़ा खुला, बीबी मुलाटीने देखा, पूछा: "कौन है?"

"मैं हूँ चच्ची।" रुस्तमअलीकी माँ उठी।

"सलाम चच्ची।" शिवबरन जमादार भी उठे।

"खुश रहो बेटा। फ़तेहमुरादकी दुलहिन, भीतर आ। मुन्नाकी दुलहिन, चल बेटा।"

फ़तेहअलीकी दुल्हनने बुरकेसे हाथ निकाल झुकके आदाब किया, उसकी सासने गठरी उठाई। शिवबरन महाराजका बतरस अधूरा रहा जाता था, उसे पूरा करनेकी टोहमें आगे बढ़कर भेदभरी आवाज़में बोले: "इनके घर तो गजब हुइ गया चच्ची। दुलरियाने गर्दन उतारै लाइक काम कर डाला।"

"अपनी करनी अपने साथ है बेटा। घर जा रहे थे।"

"हाँ चच्ची। आजकल बड़े फाटकपर तैनाती है न मेरी, सो वहींसे आ रहा था। तुम्हरे चबूतरे पे ये फ़तेलीकी अम्माको देखा सो दुख-सुख पूछने बैठ गया। बड़ी जादूगरनी, बड़ी जालम है चच्ची दुलारी।"

"खुदा सबको देखता है बेटा। और तेरे याँ तो सब अच्छी तरहसे हैं श्योबरन?"

"सब आसिरबाद है, दुआ है तुम्हरी।"

"सलामत रहो खुदा करे। अच्छा तो—" बीबी मुलाटी दरवाज़े बन्द करने लगीं।

शिवबरन ललचाये हुए, हड़बड़ा कर बोले: "तनी पूरी बात सुन लेता चच्ची। ईसुर न करे किसीके घरमें कुलच्छनी नार आये, फतेलीकी अम्मा दुखी है बिचारी। औ'—औ' इसकी दीदामटकौनी तो जाने

कित्तोंसे चल रही है चच्ची। मुझे राई-रत्ती हाल मालम है बस्ती भरेका। लोग कहते हैं कि सेओबरन महराज तुम्हैं जरूर देबीका इस्ट है।"

बीबी मुलाटीको दरवाज़ेसे हटना ही पड़ा, शिवब्रन घरके अन्दर आ गये। दालानमें दियेके सामने बैठ दुलारीकी सासने घुटनेके ऊपर बाँह चढ़ा हथेलीसे कपाल पकड़कर धीरे-धीरे कराहना शुरू किया। फ़तेहअलीकी दुल्हन दूसरे दालानमें अपनी गठरी रखकर बैठ गई, उसके हाथोंके छन्द, कड़े और पैरोंके झाँझ हिलते-डुलते बज उठते थे। शिवब्रन महाराजने दालानमें घुसते हुए अपना धनुष खम्भेसे टिकाकर रख दिया तथा बैठते हुए तरकसका पट्टा खोलने लगे। दरवाज़ेकी कुण्डी चढ़ा आङ्गन पार कर आती हुई बीबी मुलाटीके सन-से सफ़ेद बाल बादलों घिरी रातके अँधेरेमें उसी तरह झलक रहे थे जैसे झूठकी भारी तहोंमें सचका धुँधलका झलकता है। वो दालानमें आईं, दियेका बत्ता उकसाया और अपनी खाटपर बैठ गईं। उनके बैठते ही रुस्तमअलीकी माँकी कराहें तनिक ऊँची उठीं।

शिवब्रन महाराजने बात उठाई : "तुम ये समुझ लेओ चच्ची अकि इधर तो घरमें वारसको फाँसा औ' उधर क्या नाँव है उस लौंडेका—अरे जौन बड़ा तानसेन बना फिरता है—नईमा बबिरचीखानेवाला—"

"कौन, नईमउल्ला? अरे नहीं मेहराज, छै महीनेसे मैंने दुलारीको घरकी देहली नहीं झाँकने दी—"

"कैसी बातें करती हो फतेलीकी अम्मा! अरे आज दस दिन भये मैंने अपनी आँखिनसे देखा। तुम्हारे पिछवाड़े वाले दरवज्जेपर खड़ी थी दुलरिया औ' अपने दरवज्जे पे था नईमा—जरा-जरासी झिरियाँ खोले नजरियोंमें नावें तैरा रहे थे। मैं गुलामहुसैनके हियाँ गया था—अरे वही दिन चच्ची जब मैं तिजारीका गण्डा बनवाके ले गया था तुमसे—तो उसीको दैके मैं निकल रहा था उसके घरसे कि मेरी निगाह पड़ी—"

"नईमउल्ला शरीफ़ लड़का है। ज़रा अल्हड़पन तो ज़रूर है उसमें, बाकी किसी अज़ाबमें नहीं।" बीबी मुलाटी बोलीं।

"नहीं खैर, नईमेकी तो बात ही छोड़ दो श्योबरन मेहराज। मेरे वारिसका, फ़तेहअलीका दोनोंका ही मिलने-जुलनेवाला है, पड़ोसी है, अक्सर घर भी आता-जाता है, मगर उसके ऊपर तो मेरा शक कभी गया ही नहीं—"

"खैर जैसा तुम कहती हो वैसई होयगा। बाकी एक बात हम भी कहते हैं फतेलीकी अम्मा—पंडित सेओबरन पाँड़ेकी आँखिनमें चिराक जलता है चिराक। उड़ती चिड़िया पहचानता हूँ।"

"अरे मेहराज, मैं तो आपी मनाती हूँ कि जो ज़हर ये निगोड़ी मेरे घरमें घोल रही है वो कहीं बाहर घोलती तो इसकी नाक-चोटी कटाके शहरबदर करा देती। पर ये हरजाई तो ऐसा कर रही है कि मारे और रोने भी न दे, जो इसे निकालूँ तो मेरा ही घर फूटे। औ मेहराज, मैं तो आज साफ़-साफ़ कहूँगी कि ये सारा बिख बाजीजानका ही बोया हुआ है। चच्चीको मेरी बातका बुरा लगे तो लग जाय, मैं अपने कलेजे—"

"अरे अपनी बात तौ पूरी करौ पहले। कुठरियामें क्या भया फिर?"

"कालिख लगी मेरे मूँ पे और क्या होता—"

"श्योबरन, घर जाओ बेटा। किसीकी बेआबरूईके चर्चेमें लालच लगाना क्या कोई अच्छी बात है?"

बीबी मुलाटीकी बातसे पाँड़े हड़बड़ा उठे, तरकसका पट्टा नोचने लगे, हकलाकर बोले: "ल-ल-लालच चच्ची—हमैं-हमैं बिलकुल किसी बातका नहीं—ईसुर किरिया। ये तौ फतेलीकी अम्माने कहा कि दुलरियाने जादू किया। सो जादूका नाम सुनके—"

"कैसा जादू, दुलहिन?" ज़ादूका नाम सुन बीबी मुलाटीकी गंभीरताकी तहमें बेताबी ऐसे घुसी जैसे लिहाफ़की सिंदमें टंडी हवाकी सुरसुराहट घुसी हो।

अपनी ताड़ीकी कुज्जीको हलवाईकी दूकानके सामने जाकर चढ़ानेवाले चतुरकी भाँति दुलारीकी सासके कुछ बोलनेसे पहले ही सहानुभूतिका चुल्लू

छींटते हुए बोल उठे : "रुस्तमकी जोरू आजकल वारसको गाँस रही है चच्ची। अब फतेलीका तो ब्याव हो गया तुम समझौ कि—"

"कोई ख़ास बात हुई फ़तेहमुरादकी दुलहिन ?"

"खास ! अरे गजब कर डाला दुलरियाने आज तो। इनके ऊपर मूठ चलाई।"

"मूठ ?" बीबी मुलाटीने घबराकर रुस्तमअलीकी माँको देखा। वो फ़ौरन ही हाथ बढ़ाकर बोली : "ऐ हटो भी मेहराज, न जानो न बूझो। चच्ची उसने मूठ-वूठ तो नहीं चलाई। मूठ तो ख़ैर देखी है मैंने, उसने तो उससे भी बड़ा ग़ज़ब कर दिखाया। हाय अल्ला ! मैं तुमसे कह नहीं सकती चच्ची, मेरा कलेजा अभी तक धड़-धड़ कर रहा है।"

"दूल्हन, सीधी बात करो तो कुछ समझमें भी आये।" चच्चीने टोका।

"वही तो हम बताते रहे चच्ची। इनका तो इत्ती बेला घबराहटके मारे दिमाकै काम नहीं कर रहा—"

"दिमाग़ मेरा ठीक है। ऐ वाह मेहराज ऐसी फफड़दलाली निगोड़ी किस कामकी कि मुझे ही दीवानी बना दिया। अब बीचमें न बोलना तुम।" रुस्तमअलीकी अम्मा फिर तनिक चच्चीकी चारपाईके पास खिसकते हुए बोली : "मैं तो तुम जानो सुबह की गई फिर रातको ही घर लौटती हूँ। कभू-कभू दिनमें एकाध चक्कर लगा कि न लगा। औ' बाजीजानका कुछ ठीक नहीं, कभू घर रहीं कभू बाहर। औ' वो घर बाहर कहीं रहे उससे फ़रक क्या पड़ता है ? चच्ची, कलेजेकी आग छिपाये नहीं छिपती, बिखकी गाँठ ये तुम्हारी भतीजी ही है—"

"अच्छा ख़ैर बात बताओ।"

"सोई तौ नहीं बताय रहीं इत्ती देरसे—"

"अच्छा तुम चुप रहो मेहराज, बता तो रही हूँ। इधर वारिससे इसकी सटपट चल रही थी, कोई चार-पाँच रोज़से दिनमें सन्नाटा होते ही

वो इसकी कोठरीमें चला जाता था। तुम्हारे पोतेकी दुल्हनने मुझसे कहा कि अम्मीजान ऐसे-ऐसे गुल खिलते हैं रोज़। मैं आज खानेके लिए घर आई और फिर छिपके बैठ रही। जब सन्नाटा हुआ तो पहले दुलारी गई, पीछे-पीछे नन्हा गया। जैसे ही कोठरीके दरवाज़े बन्द किये मैं फ़ौरन बाहर आगई। मेरा तो खून खौल रहा था तुम जानो, खूब-खूब सुनाईं मगर बन्दे टस-से-मस न हुए। बाजीजानको भी बखशीजीके यहाँसे बुलवा लिया कि आके अपनी पाली बेटीकी करतूत देखें।"

"फिर?" शिवचरन महाराज आगे झुके।

"फिर अचानक रुस्तम आगया—"

"रुस्तम आया है?" चच्चीने पूछा।

"हाँ हाँ, फौजके साथै आया है। फाटक पे मुलाकात भई रही। तौ फिर—?"

"मैंने उससे कहा कि ये कालिख लग रही है घरमें। ए चच्ची, तुम्हारे क़दम पाव छूके कहती हूँ उसी वक्त देखती क्या हूँ कि बाहर वाले दरवाज़ेसे नन्हा भीतर आरहा है। हाय मैं कहूँ अल्लाह, अपनी आँखों उसे कोठरीमें जाते देखा। कोठरी एक दम संदूक जैसी—मैं दरवाज़ेके सामनेसे हटी नहीं—फिर ये बाहर कब गया और कैसे पहुँचा। बाजीजान और रुस्तम उल्टे मुझे ही कच्ची-पक्की सुनाने लगे, इतने ही में आप भी दरवाज़ा खोल खसमके आगे टेसुवे ढलकाती हुई आई चुड़ैल। खुदा समझे ऐसियों को। कलको जिन्नातोंसे उठवाके मुझे ही कहीं बाहर फिकवा दे, मेरे टुकड़े-टुकड़े करवा दे तो मैं क्या करूँगी चच्ची? अरे वो तो मेरी शहज़ादीसे भी सौतिया डाह निकाल सकती है—उसका क्या भरोसा? तुम्ही बताओ महराज, ऐसी जादूगरनीके साथ कैसे निभाव हो? अरे उस घरका तो पानी पीना भी गुनाह है।"

रुस्तमअलीकी माँ कहकर सूनी आँखोंसे सामने देखने लगी। दूसरे दालानमें फ़तेहअली की बीबीके हाथ-पैरोंके ज़ेवर ठनके, बीबी मुलटी गोदमें

दोनों हाथ रक्खे सिर झुकाये बैठी रहीं, शिवबरन महराजने छातीमें फूलते दमको हुंकारके साथ हल्का किया और गंभीर भावसे बोले : अगर जिन्नात बसमें है तौ मामला बड़ा कठिन है फतेलीकी अम्मा। वो जो चाहे सो कर सकती है—"

"हाँ मगर परियों-जिन्नातोंको बसमें करना आसान काम नहीं है बेटा, घरमें बैठे-बैठे ये काम नहीं हुआ करते।" बीबी मुलाटी बोलीं।

"तब तौ तुम चाहे मानौ चाहे न मानौ चच्ची, ये लौंडा जो है, नईमा, सारी कारस्तानी उसीकी है। पारसाल बस्ती बाहेर पीपलतले जौन साईं आया रहा, जिसने गाँव भरेके भूत जलाये रहे, उनके पास ये बहुत आता-जाता रहा। उन्हींसे कुछ पढ़वाय-पुढ़वायके लाया होगा। दुलरियासे इसकी आसनाई है, ये तौ मैं भरी गंगामें कह सकता हौं। सेवबरन जमादारकी आँखैं धोखा नहीं खातीं।"

"नहीं मेहराज, मेरा दिल कहता है कि ये सब निगोड़ी करीमनके करिश्मे हैं। वो मेरे घर ये अपना राज चाहती है। अरे शुरूसे इनका यही हाल रहा। हमारी जो बड़ी सौत थीं उनको इसने कभू चैन नहीं लेने दिया, फिर मैं आई तो मुझसे बस नहीं चला इनका। मुन्ने नन्हेके वालिद मेरी ही बात मानते थे, पैसा-टका सब मेरे ही पास रहता था सो इसे जलन हो। अरे जब वो जोखन कुरमी मरा है—यही दुलारीका बाप—तो इन्होंने बड़ी-बड़ी कोशिशें कीं कि मुन्नेके अब्बा उसे अपने घर बिठालें—"

"अच्छा! तौ ये दुलरिया जोखन कुरमीकी बिटिया है? हूँ: हूँ:!" शिवबरन महाराजने नई समझ पाकर दोबार सिर हिलाया।

"और नहीं तो क्या कहींकी शेखज़ादी है ये।—"

"तो फ़तेहमुराद इसकी माँको कैसे रखना चाहता था? क्या कुछ लेन-देनका हिसाब था?" बीबी मुलाटीने पूछा।

"साठ रुपै—वो ऐसा हुआ चच्ची, मैं तुम्हें सब बतलाती हूँ—कि दुलारीकी ननिहालमें कुछ ब्याह-बारात थी, उनसे रुपयोंका इंतज़ाम न हो सका। जोखनने दुलारीकी माँके कहने-सुननेसे हमारे यहाँसे साठ रुपया उधार लिया, कपड़े-वपड़े ख़रीदे। ख़ैर, दो महीने बाद ही हैज़ेमें उसका इंतक़ाल हो गया। तो बाजीजानने अपने भाईके कान भरने शुरू किये, कहा कि उसकी औरत ख़ूबसूरत है, जवान है, एक लड़की भी है, घरमें डाल लो, सबाब होगा और अच्छी औरत घरमें आजायगी। मुन्नेके अब्बाने भी औरतको देखा और ललचा उठे, उनमें हविस तो थी ही बड़ी ज़बर्दस्त? ख़ैर, बिलसिया और ये दुलारी और उसके घरका टूटा-फूटा सामान सब कुर्क़ कराके ये घर ले आये। बिलसियासे मेरी बातें हुईं, वो रोके कहने लगी कि मेरा धरम बचालो। असलमें उसका किसी औरसे मन मिला हुआ था, उसीकी क़ौमका भी था। कहने लगी कि जी चाहे तो दुलारीको मुसलमान बनालो औ' अपने क़र्ज़के एवज़में घर रख लो। मैंने कहा कि अच्छा कोशिश करूँगी। अरे, मेरी ज़ातसे किसीका भला हो जाय मेहराज तो मेरा क्या जाता है?—"

"हाँ, और नई सौतके डरसे भी बचाव—"

"अब ये ख़ैर तुम जो चाहे समझो, मगर मैंने मुन्ने-नन्हेके अब्बाको सब ऊँच-नीच समझाया। वो राज़ी हो गये। दूसरे दिन सुबू उठते ही मैंने बिलसियासे कहा कि तू आज़ाद है, चली जा। वो दुलारीको सोता छोड़के चली गई। जब बाजीजान उठीं और ये सब हाल जाना तो मुझसे बड़ा-बड़ा जलापा निकाला। मेरी सौतसे भी मिलनेकी कोशिश की मगर उन्होंने रुख़ न दिया। ख़ैर ये हारके बैठ रहीं औ' फिर मेरी ख़ुशामद-दरामद करने लगीं। मुझसे बोलीं, बुलाकन, मेरे कोई आस औलाद नहीं, या तो अपने रुस्तमअलीको मुझे गोद दे दो औ' या दुलारी—"

"रुस्तम वारस फतेलीका सगा भाई तो है नहीं, हम कहीं सुना रहा ऐसा, बाकी—"

"रुस्तमको लेके ये भी ऐसे ही आई जैसे दुलारीकी माँ आई थी।" बीबी मुलाटीने उठते हुए कहा—"ख़ैर, गड़े मुर्दे उखाड़नेसे फ़ायदा ही क्या ? ये बतलाओ तुम लोग खाना-वाना खाके तो आई नहीं होगी—"

"अरे चच्ची किसका खाना औ' किसका पीना। ख़ैरियतसे हम दोनो यहाँ आगईं—खुदाका लाख-लाख शुकर है।"

"अच्छा तो मैं नवाब साहबके यहाँसे बंदोबस्त करती हूँ।" बीबी मुलाटी आँगनकी ओर बढ़ीं।

जमादार शिवबरन पाँड़ेने भी उठकर अपना धनुष सम्हाला। रुस्तम-अलीकी माँने उठते हुए हाथ बढ़ाकर कहा : "कहाँ जाओगी चच्ची ? मुझे भूख नहीं हैं, तुम्हाई क़सम।"

"तुम्हें न सही, लड़की तो खायगी।" बीबी मुलाटी और आगे बढ़ीं। दूसरे दालानमें बैठी फ़तेहअली की दूल्हन उठकर खड़ी हो गई, उसके झाँझ झनके। रुस्तमअलीकी माँने तेज़ीसे अपनी चचियासासके पास आकर उन्हें रोकते हुए कहा : "तो तुम बैठो, मैं खुद ही जाके लिये आती—"

"मुझे और भी काम है। दरवाज़ा बंद करके बैठना।"

चच्चीके पीछे-पीछे शिवबरन जमादार भी चले। बाहर निकल चच्चीके दाहिनी ओर दो डग आगे बढ़नेपर दरवाज़ा बन्द करती हुई रुस्तमअली-की माँसे झुककर शिवबरन पाँड़ेने धीरेसे अपनाहत भरे स्वरमें कहा : "तुम निफिकिर रहना फतेलीकी अम्मा। मैं तुम्हारी रच्छा करौंगा।"

"तुम्हीं लोगोंका आसरा है भैया ! यहाँ परदेसमें पड़ी हूँ।"

"परदेस काहेका। अरे हम तुम्हारी खिजमतमें हौं। कहौ तौ जायके हरामजादीका मूँड़ उतार लेओं।" शिवबरन अपने धनुषपर टिक कर अकड़े।

रुस्तमअलीकी माँ क्षणभर मौन रही, फिर बोली : "अरे नहीं मेहराज, मेरे लड़के—"

"तुम्हारे लरिके सो मेरे लरिके। तुम निफिकिर रहना। औ आधी रातको भी काम पड़ै तौ हमें बुलाय लेना। काला कुत्ता भेजौगो तौ भी हाजिर हुइ जाओंगा।"

रुस्तमअलीकी माँ मौन रही। अँधेरेमें दोनोंकी सूरतें एक दूसरेको नहीं दिखलाई पड़तीं। शिवबरन उसके मौनका आशय भाँपनेके लिए उत्सुक थे, पर उधर दरवाज़ा बन्द होने लगा, लपकके फिर धीरेसे कहा : "दुलारी न सही, लेकिन करीमन ससरीको जिस दिन कहौ ठिकानेसे लगाय देओं। बक्सीजो औ' दरोगाजीके बल पे कूदती है।"

"अरे नहीं मेहराज, दुश्मनी है तो क्या हुआ, किसीको झूठा ऐब नहीं लगाऊँगी, खुदाका सामना करना है।"

गहरी नशीली साँस डालकर शिवबरन महराज बोले : "अरे तुम बड़ी भोली हौ फतेलीकी अम्मा। तुम्हैं दुनियाँके हाल-चाल नहीं मालूम। सेओबरन जमादार उड़ती चिड़िया पहचानता है। कित्ती औरतोंका हाल बताऊँ जो तुम्हैं या किसीको भी नहीं मालूम होयगा।" फिर और मुँहके नज़दीक मुँह लाते हुए कहा : "कहौ तो खास तुम्हरी मोती बेगम-की सुनावैं? पाँचदाईं नेवाज पढ़ती हैं, धरम सोधमें चच्चीसे दस कदम आगे रहती हैं—कि झूठ कहता हौं?

"हाय अल्ला, तो क्या मोती बेगम—?"

"अरे तुम्हैं अभी क्या मालम? औ' फिन ऐसोंके मैं दोख भी नहीं देखता फतेलीकी अम्मा सच्ची कहता हौं। एक सरीफसे बँधके रहै। ज़िन्दगी भर इज्जत भी रहती है, मन भी रहता है।"

अरे नहीं मेहराज, मोती बेगमकी तो दुनिया तारीफ़ करती है। इतने बरस मुझे भी हो गये उनकी ख़िदमतमें रहते —"

"हमरे साथ आओ तो आजै रातमें दिखाय देओं। दिवानजी—"

"हाय ग़ज़ब! हाय अल्ला ख़ैर—कानोंसे नापाक बला दूर! ऐं

"रुस्तमको लेके ये भी ऐसे ही आई जैसे दुलारीकी माँ आई थी।" बीबी मुलाटीने उठते हुए कहा—"खैर, गड़े मुर्दे उखाड़नेसे फ़ायदा ही क्या ? ये बतलाओ तुम लोग खाना-वाना खाके तो आई नहीं होगी—"

"अरे चच्ची किसका खाना औ' किसका पीना। खैरियतसे हम दोनो यहाँ आगईं—खुदाका लाख-लाख शुकर है।"

"अच्छा तो मैं नवाब साहबके यहाँसे बंदोबस्त करती हूँ।" बीबी मुलाटी आँगनकी ओर बढ़ीं।

जमादार शिवबरन पाँड़ेने भी उठकर अपना धनुष सम्हाला। रुस्तम-अलीकी माँने उठते हुए हाथ बढ़ाकर कहा : "कहाँ जाओगी चच्ची ? मुझे भूख नहीं है, तुम्हाई क़सम।"

"तुम्हें न सही, लड़की तो खायगी।" बीबी मुलाटी और आगे बढ़ीं। दूसरे दालानमें बैठी फ़तेहअली की दूल्हन उठकर खड़ी हो गई, उसके झाँझ झनके। रुस्तमअलीकी माँने तेज़ीसे अपनी चचियासासके पास आकर उन्हें रोकते हुए कहा : "तो तुम बैठो, मैं खुद ही जाके लिये आती—"

"मुझे और भी काम है। दरवाज़ा बंद करके बैठना।"

चच्चीके पीछे-पीछे शिवबरन जमादार भी चले। बाहर निकल चच्चीके दाहिनी ओर दो डग आगे बढ़नेपर दरवाज़ा बन्द करती हुई रुस्तमअली-की माँसे झुककर शिवबरन पाँड़ेने धीरेसे अपनाहत भरे स्वरमें कहा : "तुम निफिकिर रहना फतेलीकी अम्मा। मैं तुम्हारी रच्छा करौंगा।"

"तुम्हीं लोगोंका आसरा है भैया ! यहाँ परदेसमें पड़ी हूँ।"

"परदेस काहेका। अरे हम तुम्हारी खिजमतमें हौं। कहौ तौ जायके हरामजादीका मूँड़ उतार लेओं।" शिवबरन अपने धनुषपर टिक कर अकड़े।

रुस्तमअलीकी माँ क्षणभर मौन रही, फिर बोली : "अरे नहीं मेहराज, मेरे लड़के—"

"तुम्हारे लरिके सो मेरे लरिके। तुम निफिकिर रहना। औ आधी रातको भी काम पड़ै तौ हमें बुलाय लेना। काला कुत्ता भेजौगो तौ भी हाजिर हुइ जाओंगा।"

रुस्तमअलीकी माँ मौन रही। अँधेरेमें दोनोंकी सूरतें एक दूसरेको नहीं दिखलाई पड़तीं। शिवब्रन उसके मौनका आशय भाँपनेके लिए उत्सुक थे, पर उधर दरवाज़ा बन्द होने लगा, लपकके फिर धीरेसे कहा: "दुलारी न सही, लेकिन करीमन ससरीको जिस दिन कहौ ठिकानेसे लगाय देओं। बक्सीजो औ' दरोगाजीके बल पे कूदती है।"

"अरे नहीं मेहराज, दुश्मनी है तो क्या हुआ, किसीको झूठा ऐब नहीं लगाऊँगी, खुदाका सामना करना है।"

गहरी नशीली साँस डालकर शिवब्रन महराज बोले: "अरे तुम बड़ी भोली हौ फतेलीकी अम्मा। तुम्हें दुनियाँके हाल-चाल नहीं मालूम। सेओब्रन जमादार उड़ती चिड़िया पहचानता है। कित्ती औरतोंका हाल बताऊँ जो तुम्हें या किसीको भी नहीं मालूम होयगा।" फिर और मुँहके नज़दीक मुँह लाते हुए कहा: "कहौ तो खास तुम्हरी मोती बेगम-की सुनावैं? पाँचदाईं नेवाज पढ़ती हैं, धरम सोधमें चच्चीसे दस कदम आगे रहती हैं—कि झूठ कहता हौं?

"हाय अल्ला, तो क्या मोती बेगम—?"

"अरे तुम्हें अभी क्या मालम? औ' फिन ऐसोंके मैं दोख भी नहीं देखता फतेलीकी अम्मा सच्ची कहता हौं। एक सरीफसे बँधके रहै। ज़िन्दगी भर इज्जत भी रहती है, मन भी रहता है।"

अरे नहीं मेहराज, मोती बेगमकी तो दुनिया तारीफ़ करती है। इतने बरस मुझे भी हो गये उनकी ख़िदमतमें रहते —"

"हमरे साथ आओ तो आजै रातमें दिखाय देओं। दिवानजी—"

"हाय ग़ज़ब! हाय अल्ला ख़ैर—-कानोंसे नापाक बला दूर! ऐं

मेहराज तुम्हें हमाई जान क़सम, अपने धरमकी क़सम, भगवान् क़सम, गंगा क़सम, सच कहना।"

"अरे हाथ कंगनको आरसी क्या, कहता तो हौं, जिद्दिन कहौ दिखाय देओं। बाकी एक बचन तुमसे भी लेता हौं। तुम्हरी मालकिनकी, भले मानुसौंकी आबरूकी बात है। करने वालोंको, हमैं औ अब तुम्हैं भी, औ भगवान्को छोड़ कोई छठा आदमी नहीं जानता। जान भी न पावै फतेलीकी अम्मा। मैंने तुम्हैं बहुत सरीफ जानके ही ये बात कही है। आठ बरिससे जानता था।"

"अरे नहीं नहीं मेहराज, जानके साथ बात रहेगी। पर तुमने मेरा कलेजा उखाड़ दिया। ख़ुदा जानता है मैं आस्मानसे ज़मीनपर गिर पड़ी।" दुलारीकी सासकी आवाज़में दर्द था।

शिवबरन गुरुकी तरह गंभीर स्वरमें समझाते हुए बोले : "सहारेके बिना औरतकी गुज़र नहीं फतेलीकी अम्मा। औरत अपना मन मार लेगी, ये मानता हौं, बाकी आड़े बखतके सहारेके लिए भी मरद चाहिये, ऐसा मरद जो अपुनपौ दै सकै।...औ फिन देखौ फतेलीकी अम्मा, जोगी-जती ब्रिरमचार धारन करना सबके बसकी बात नहीं। और राँड़-बेवा जिसे भगवान बनायदें सो बिचारीको बनना पड़ेगा। मैं पूछता हौं कि जो एक सरीफसे बँधके ज़िन्दगी काट दे तो क्या बुरा है? दुनियाकी चोरी तौ जरूर रहती है पर अपनी नियतमें औरत-मरद दूनौ साफ रहते हैं, इससे ऐसा अपुनपौ बँधता है कि क्या ब्याहे मरद-औरतमें बँधैगा?"

इतना कह कर शिवबरन महराज चुप हुए। अँधेरेने उन्हें फ़तेहअली-की अम्माके चेहरेके भाव जाननेका अवसर न दिया। वह चुप खड़ी थी; कुछ पल मौनमें बीते। शिवबरन फिर सहानुभूति भरे स्वरमें बोले : "तुम्हरे ऊपर खरी बिपदा आई है फतेलीकी अम्मा। यौं अपने लिए चाहे जैसे होंय पर तुमरे लिए तो तुम्हरे तीनौ पूत कपूत निकले। राम राम!"

एक गहरी ठंडी साँस सुनाई दी; शिवबरन आगे बोले : "औ अभी तुम्हरी उमिर ही क्या है, चालीसके आस-पास लगती है। बड़ी जिनगानी निपटानी है।"

"निबट जायेगी मेहराज ! कुछ न रहेगा तो चरखा कातकर पेट भर लूँगी।" तेज स्वरसे उत्तर आया और किवाड़ बन्द हो गये।

४

दुलारीका घर उस समय गुलाबके गहरे नशेमें मखमूर था। वारिस अलीसे दुलारीका संदेसा पाकर नईमउल्लाने तीन बोतलें चुराकर भेज दीं। दुलारीने अपने पतिके मित्रोंके अलावा दोनों देवरोंकी भी खूब खातिर की। फ़तेहअली और वारिस अलीको तो नईमकी बदौलत अक्सर नवाबी बावर्चीखानेकी नियामतें नसीब हो जाती थीं, मगर रुस्तम और उसके दोस्तोंको यह लज़्ज़त कभी मयस्सर न हुई थी। नब्बू और घसीटे ख़ाँने रुस्तमकी तारीफ़ोंके पुल बाँध दिये।

नब्बू बोला : "कुछ कह लो घसीटे, औरत सुघड़ हो तो घर बिहिश्त बन जाता है।"

"उ-वाह ! केऽया कहना है बहिश्तका। रुरुरुस्तम मेरी जान नसीबेवर ऐ—बड़्ड़ा नसीबेवर ऐ।…और ए-ए-एक साला मैं ऊँ ! बेवफ़ा न्निकल गई साली। खैर जाने दो बज्ज़ातको—गोली मारो। लाओ और पिलाओ, पि-प्पिलाये जाओ—रुस्तम मेरी जान जीते रओ।"

दो बोतलोंने तीनोंको क़रीब-क़रीब बेहोश बना दिया था।

रुस्तमअलीपर तो तिहरा नशा था। नाज़िमका दौरा इस बार ऐसे इलाक़ेमें हुआ कि बग़ैर छुट्टी लिये अपने घर आनेका अवसर मिल गया। अचानक घर आनेकी खुशी, फिर अज़ीज़ दोस्तोंकी ऐसी शाही मेहमांनवाज़ी करनेका जस दुलारीकी बदौलत लूटना अपने आपमें कुछ हल्के नशे न थे। दुलारीका घरमें होना सबसे भारी नशा था। इतने बरस हो जानेपर

भी दुलारी उसे हर बार नई लगती; सामना होनेपर हज़ार कोशिशें करनेके बावजूद वह दुलारीकी नज़रोंके जादूसे बच नहीं सकता। बग़ैर नशेके भी वह दुलारीके सामने उसी तरह ढल जाता है, जिस तरहकी शराब साग़रसे मीनामें ढलती है। उसे दुलारीसे लाखों शिकायतें रहीं, उसका दिल उसकी बेवफाईसे जेठकी गरमी-सा झुलसता है मगर दुलारीकी नज़र हर बार असाढ़के पहले दौंगरे-सी ही गिरती है; उसकी शिकायतें भी मिट्टीकी सोंधास जैसी मँहक उठती हैं।

नशेके बेहोश दौरोंके साथ भी दुलारीका ध्यान दौड़ रहा था, उसे रह-रहकर थाम लेता था। सहसा उसकी नज़रोंके धुँधलकेमें—सामने दरवाज़ेपर टँगे टाटके परदेसे झाँकती दुलारी आ गई।

दुलारी उस समय सचमुच पर्दा हटाकर झाँक रही थी। देखा, मजमा लाहिजाब है तो पर्दा करनेकी ज़रूरत न समझी; उसे घरके सदर दरवाज़े बंद करने थे सो बेझिझक बाहर निकली।

रुस्तमअली उसे देखते ही बेकाबू हो गया, पैंतरा बदल कर उठ खड़ा हुआ। उसकी लड़खड़ाती ज़बानसे अपनी रमणीके प्रति ऐसे शब्द प्रकट हो रहे थे जो सभ्यवर्गके इकेले-दुकेलेपनमें भी रसके लिए आम तौरपर वर्जित हैं।

अपने लिए विपद देख दुलारी फ़ौरन सहम कर पीछे सरकी, टाटके परदेके पीछे किसीके हाथोंने उसे अपनी गिरफ्तमें ले लिया। दुलारी चौंक उठी; पीछे घूमकर देखा, नईम था। दुलारी परदेके पीछे चली गई। रुस्तमअली लड़खड़ाते डगसे ज़रा और बढ़ा और गिर पड़ा, उसके धक्केसे किवाड़की कुण्डी खड़की, नशेकी बड़बड़ाहटके कुछ आखिरी शब्द फूटे और ख़ामोशी छा गई। दुलारीके कन्धेपर हाथ रक्खे हुए नईमने झाँक कर बाहर देखा—नब्बू जूठे बर्तनोंपर औंधा पड़ा था, घसीटे खाँ दीवारके सहारे दाहिने हाथ झुका हुआ ग़ाफिल पड़ा था, उसकी एक टाँग नब्बूकी पीठपर थी, दूसरी चारपाईके बाहर लटक रही

थी, और रुस्तमअली दरवाज़ेके पास ही चारों खाने चित, लड़ाईके मैदानमें कटी हुई लाशकी तरह पड़ा था। दुलारीको यह दृश्य देख कर नफ़रत हुई; मगर नफ़रतसे ज़्यादह इस समय उसके मनमें खुशी थी। नईम उसके पास था, नईम जिस्मानी तौरपर कभी उसके इतने क़रीब नहीं आ सका था। पर्देसे हर नईमकी बाँहोंसे छिटक मिलन मदसे माती, पहले स्पर्शकी शर्मसे परेशान दुलारी तेज़ीसे आँगनकी तरफ़ बढ़ती हुई बोली :

"जो कोई देख लेता तो ?" गो नज़रोंके इशारोंमें वे बहुत बेतकल्लुफ़ हो चुके थे, मगर नजदीक़से बातें करनेका यह पहला ही मौक़ा था। दुलारीके हर लफ्ज़पर हयाका बोझ था।

"मैं बड़ी देरसे तुम्हारी कोठरीमें खड़ा-खड़ा भाँप रहा था। तुमने नन्हे मुन्नेकी कोठरियाँ बंद कीं, ऊपर गईं फिर इधर आईं। मैंने समझ लिया कि मैदान साफ़ है। ऊपर कौन सोता है ?" नईम एकदम बेतक़ल्लुफ़ हो जाना चाहता था।

"अम्मा और फुफ्फी और बच्चे। अम्मा अ-आज नहीं हैं—"

"नन्हे मियाँने मुझे सब कुछ बतला दिया। सुरंगने अजब जल्वा दिखाया। और क़िस्मत देखो कि आज तुम्हारे शौहरके आनेके दिन ही वह बनकर तैयार भी हो गई।"

दोनों आँगन पार कर दूसरे दालानमें पहुँच चुके थे। दुलारीके चेहरेपर जीतकी, यारसे मिलनेकी, जवानीकी रौनक़ थी; होठोंपर नशीली मुसकान और आँखोंमें नूर बरस रहा था; रह-रहकर नईमके चेहरेकी तरफ़ नज़रें उठ जाती थीं। अँधेरेमें जी भरकर देखनेकी तड़प घुट भी रही थी और अँधेरा झिझक तोड़नेका बहाना भी बन रहा था। मनका अजब अंदाज़ था, लगता था मानो जवानी पहली बार अपना जल्वा नुमायाँ कर रही है।

नईमने उसका हाथ पकड़ लिया, उँगलियोंमें उँगलियाँ फँसा लीं। दुलारी न छूट सकी, न बँधी ही रह सकी और कोठरीका दरवाज़ा आ गया।

अन्दर टिमटिमाते चिराग़की रौशनीमें दोनोंने पहली बार एक दूसरेको इतनी नज़दीक़से देखा, नईमकी आँखोंमें मर्दानगी वहशी जानवरकी तरह भूखी झाँक रही थी। लाख चाहनेपर भी दुलारी बँधी टकटकी न तोड़ सकी, उँगलियोंमें फँसी उँगलियाँ कस गईं, दुखने लगीं पर यह टीस उसे नशा दे रही थी और नशा उसे दहला रहा था।

छः महीने पहले नईम और दुलारीने एक दूसरेको अपनी-अपनी छतोंसे देखा था। दुलारी बाल सुखा रही थी, नईम अपनी छतपर गिरी पतंग लूटने चढ़ा था। गोरा-चिट्टा लंबा-पूरा सुनहरी दाढ़ी मूछों और बालोंवाला ख़ूबसूरत नौजवान दुलारीकी कटोरी जैसी बड़ी-बड़ी आँखोंको कालेसा डस गया। फिर तो बहाने ढूँढे जाने लगे। बेख़ुदी मौजसे दरिया बनने लगी, दोनों अथाहमें डूबने लगे। भोर होते न होते कूड़ा फेंकनेके बहाने दुलारी घरके पिछवाड़ेका दरवाज़ा खोल नईमके इंतज़ारमें खड़ी हो जाती, दिनमें नईमको छतपर पतंग उड़ानेका शौक़ लग गया, रातको जब पीछेकी गली नईमकी ग़ज़लसे गूँज उठती तो दुलारी हज़ार बहानेसे दरवाज़ेपर पहुँच जाती। रातको उसे आमतौरपर दरवाज़ेके पास खड़े रहनेका मौक़ा कम मिलता था; फिर जबसे फ़तेहअलीकी दुल्हन घरमें आ गई तबसे नई बहूका लिहाज़ कर नईमने छतपर पतंग उड़ाना भी छोड़ दिया, आते-जाते बहानेकी देखा-देखी रह गई और वह भी कभी नसीब न होती थी। दुलारीके दिन रोते बीतते, सास समझती कि फ़तेह-अलीकी शादी हो जानेसे अपने स्वारथके लिए रोती है। करीमन बुआने ज़रूर भाँपा था मगर दुलारी उनकी पवित्र देहमें खेलते हुए अपवित्र मनकी तरह थी, ऊपरसे बरजनेपर भी मन-ही-मन वे बढ़ावा देती थीं। नईमके प्रति उनका ममत्व बढ़ गया, जिसकी एवज़में महलके बावर्चीख़ानेसे अक्सर लज़ीज़ खानेकी चीज़ें ले आती थीं। नईमसे कहतीं 'मेरी दुलारी को ये पसंद है और वो पसंद है। मेरी दुलारीको न जाने क्या हो गया है कि दिन-पर-दिन सूख कर काँटा होती जा रही है; न जाने

किसकी नज़र लग गई है।'' और दुलारीकी कोठरीमें चुपचाप सामान पहुँचाकर कहतीं कि नईम बड़ा अच्छा लड़का है, नईमने यह भेजा है और वह भेजा है, खुदा उसकी उम्र दराज़ करें। दुलारीके लिए यह बातें प्यास भड़कानेवाली थीं। फिर धीरे-धीरे उसका दिमाग़ दुखसे उबरकर सोचनेमें लगा। उसने अपने सबसे छोटे देवर वारिसअली पर डोरे डालने शुरू किये; दोनो भाइयोंमें अनबनकी राहें भी खोलीं, नईमउल्लाको शरीफ़ और वारिसका हमदर्द बतलाकर उनकी मेल मुलाक़ात बढ़वाई। एक दिन सुबह तड़के ही जान हथेली पर रखकर नईमउल्लाको इशारेसे पास बुला इतना कहा कि नन्हे मियाँकी बातोंका कुछ और मतलब न लेना जो वह कहें उसके लिए हामी भर लेना, यह एक राज़ है। इसके बाद उसने वारिसअलीको अपनी कोठरीसे लेकर नईमके घर तक छोटी-सी सुरंग खोदनेकी सलाह दी, कहा: "वे तुम्हारे दोस्त हैं, ज़रूर मदद देंगे, फिर उन्हींके घरसे होकर यहाँ आया करना कोई शक न कर सकेगा।''

इस तरह दुलारी की कोठरी और नईमउल्लाके घरकी एक कोठरीके बीच एक सुरंग तैयार हुई। रातमें घर लौटकर नईम भी अपनी तरफ़से खुदाई करता। बारे चार दिनमें इश्क़की राह खुल गई; शगुन भी अच्छा हुआ, शामको उसीकी बदौलत पतिके सामने दुलारीकी लाज बच गई।

नईमउल्ला छिछोरा न था, बदक़िस्मत ज़रूर था। बचपनमें ही माँ-बाप मर गये, मारा-मारा फिरा, लेकिन उसमें एक आन थी, कभी किसी की भीखसे अपना पेट नहीं भरा। घूमते-भटकते रुस्तमनगर आ पहुँचा। उस समय नसीब सीधे थे, बूढ़े बावर्ची यास्मीन खाँ की बदौलत नवाब साहबके बावर्चीखानेमें नौकरी लग गई। यास्मीनखाँके कोई आस-औलाद न थी, इसे ही अपना लड़का समझ कर अपना हुनर सिखलाया और अपने ही घरमें रख लिया। बूढ़े नेकनियत नमाज़ी यास्मीनखाँ की निगरानीमें नईमउल्लाको हर नसीहत अच्छी मिली थी पर इश्क़ हो जाय तो कोई क्या करे। यास्मीनखाँको मरे करीब साल भर हो चुका था।

दुलारी की तड़पमें महीनों गर्म आहें फेंकते ही बीते थे, उसकी ज़िन्दगी आमतौर पर औरतके सायेसे बेबाक़ थी, इसलिए आजकी रात नईमके लिए अरमानों की रात थी, नया अनुभव उसे नया जोश भी दे रहा था।

लेकिन दुलारी कहती थी : "नहीं। मुझे यहाँसे निकाल ले चलो, यह मौक़ा मिला है। बादमें न जाने कौनसे तूफ़ान उठें, ! नन्हें मियाँ अलग पागलपन दरसायेंगे। ख़ुदा जानता है मैं ज़िन्दगीमें एक की होकर रहना चाहती हूँ।"

× × ×

दुलारी की सास और फ़तेहअली की पत्नीके लिए खानेका इन्तज़ाम करने बीबी मुलाटी जब बावर्चीखाने पहुँचीं तो उन्हें नईमा कहीं न दिखाई दिया। मुनियाँ महरीसे पूछा, वह बोली : "चच्ची परोंवाले साँप भी कहीं मिला करते हैं भला। जितना तेज़ चलता है उतनी ही तेज़ीसे उड़ता है। दई मारा। मैंने कहा नईमा, ज़री मेरी मदद करदो बारादरीमें चार तश्त भिजवाने हैं, ज़रा किसू कहारको पकड़ ले आओ, आज तो काम की ऐसी बिजलियाँ कौंध रही हैं, कोई कान देके बात नहीं सुनता निगोड़ा। ऐ चच्ची मैं तुमसे क्या कहूँ, डले में से दारू की बोतल निकालके ठी-ठी-ठी-ठी—हँसता ठेंगा दिखाके चला गया। अपने-अपने बख़त पर ख़ुदा सबको जवानी देता है, भला ऐसा गुमान भी किस कामका मुआँ ?"

बावर्चीखानेमें जाकर इलाहीबख्श बावर्चीसे अपने घर खाना भिजवा देने के लिए कहा। उसने फ़ौरन चच्चीके हुक्म की तामील की, नईमके लिए पूछा, पता लगा अभी तो यहीं था। इतनेमें गुलख़ैरूने बतलाया कि वारिसअलीके साथ बातें कर रहा था फिर पता न चला कि कहाँ चला गया।

नईमउल्लाके संबन्धमें उड़ती हुई बातें सुनकर बीबी मुलाटी सोचमें पड़ गयीं। उन्हें श्योबरन जमादार की बात याद आई, एक बार

रुस्तमअलीसे मिलनेके बहाने उस ओर हो आनेका इरादा कर बीबी मुलाटी महलसे बाहर निकलीं, रास्तेमें पड़ने वाले एक घरमें कोई बिच्छूका काटा रो रहा था, अन्दर बाहर सब जगह शोरा मचा हुआ था। चच्चीको देखकर लोग पाँव पकड़ने लगे, वे बिच्छू झाड़ने अंदर चली गई। होते करते घंटा पौन घंटा बीत गया। जब नईमउल्लाके घर पहुँची तब रात चढ़ आई थी। आसमान बादलोंसे घटाटोप हो रहा था। जबसे शिवचरनमहाराजने दो बार दुलारीके चरचेमें नईमका नाम लिया तबसे शकके लिए सतही तौर पर कोई गुंजायश न होते हुए भी मनमें चोर बैठ गया था। ठंडे दिलदिमाग़का, लम्बी उम्रका अनुभव उन्हें दुलारी की कोठरीसे वारिसअलीके ग़ायब हो जाने की बात सोचनेके लिए भी मजबूर कर रहा था।

छोटी बस्तीके घरोंके दरवाज़े बन्द हो चुके थे, आमतौर पर गलियाँ सुन-सान थीं, अंधेरेमें कोई इक्का-दुक्का निकल जाता तो दोनों ओरसे 'कौन है' की पूछताछ होती। "चच्ची इतनी रातमें कहाँ?" के उत्तर में "कुछ नहीं भइया खैरातनके लड़केको बिच्छूने काटा था सो आई थी। सोचा रुस्तमअली आया है, सुबू चला जायगा, सोचा इसी वक्त मिल आऊँ—" कहती हुई बीबी मुलाटी जब रुस्तमअलीके द्वारे पहुँचीं तो देखा दरवाज़े खुले हुए थे। अंदर क़दम रखते ही खुदाका नाम याद आया। शराब की बू और खुर्राटोंका शोर उन्हें लौट चलनेके लिए उकसाने लगा। लेकिन घरके दरवाज़े खुले हुए हैं, घरके मर्दोंको होश नहीं तो क्या औरतें भी बेहोश हो गई? दुलारी लापरवाह हो गई तो करीमनकी अक़ल पर भी पत्थर पड़ गये हैं?—मन ही मन झुँझलाते वे ज़मीन पर पड़े हुए रुस्तमसे कतराकर अंदर पहुँचीं। आँगन पार वाली कोठरीमें दिया टिमटिमा रहा था और हर ओर अंधेरा था। सहसा मुलाटी बीबीके मनमें आया कि वे बग़ैर आवाज़ दिये हुए चुपचाप उधर जायँ।

दुलारी नईमसे कह रही थी : "मुझे यहाँसे निकाल ले चलो। यह मौक़ा मिला है। बादमें न जाने कौनसे तूफ़ान उठें। नन्हे मियाँ अलग पागलपन दरसायेंगे। खुदा जानता है मैं ज़िन्दगीमें की एक होकर रहना चाहती हूँ।"

चच्चीके कानोंमें नईमकी आवाज़ आई वह कह रहा था : "मेरा भी खुदा गवाह है; लो बीवी मानकर ही तुम्हारा हाथ पकड़ता हूँ। जहाँ कहोगी वहीं चल कर रहूँगा। मैं भी अब इक पलके लिए तुमसे जुदा नहीं हो सकता। चलो इसी वक्त चल दें। तुम्हें अपना कोई सामान लेना हो तो लेकर मेरे यहाँ आओ। मैं भी ज़रूरी चीज़ोंकी गठरी बाँध लूँ।" नईम चारपाईके पीछे कूद कर ग़ायब होगया। दुलारी कोनेमें रक्खे अपने काठके संदूकके पास पहुँची।

"क्या हो रहा है यहाँ ?" कहते हुए मुलाटी बीवीने कोठरीमें क़दम रक्खा। दुलारी खड़ी की खड़ी पत्थर सी हो गई। बीवी मुलाटी अपनी लठिया टेकती हुई चारपाईकी दूसरी ओर पहुँचीं ज़मीनमें गड्ढा खुदा हुआ देखा, कुछ देर ख़ामोश खड़ी देखती रहीं। फिर चारपाई पर बिस्तरका एक छोर हटा कर बैठते हुए दुलारीसे कहा : "तू कितनोंकी ज़िन्दगी का अज़ाब बनेगी दुलारी ? ख़ुदाने तुझे औरत बनाया है और तू ख़ुद अपने आपको जानवर बना रही है, कुत्ती कहींकी !"

दुलारी वैसे ही पत्थर बनी खड़ी थी। उसका सक्ता अब तक टूट न पाया था। चच्चीने पूछा : "तेरे बच्चे कहाँ हैं ? बोल कहाँ हैं।"

"ऊपर···फुफ्फीके पास।" दुलारीने सहमे हुए धीरेसे जवाब दिया।

"उन्हें मेरे पास ला चल।" चच्चीकी आवाज़ कड़क-बिजली सी दुलारीके होश-हवास पर गिर रही थी। सहमे हुए डग दरवाज़ेकी ओर बढ़ने लगे। चच्ची भी उठ खड़ी हुईं। दरवाज़े तक पहुँचते हुए दुलारीके पैर लड़खड़ाने लगे, उसने दरवाज़ेको थाम लिया। पीछेसे चच्चीकी फ़टकार बरसी:" "छातीका हुस्न देखा और छातीका दूध याद न आया?

वेहया ! वेग़ैरत ! बदज़ात ! तुझे अपने बच्चोंकी भी मामता नहीं ? आख़िर है तो मुयें काफ़िर कमीनेकी ही औलाद, भला शरीफ़ोंका चलन कहाँसे पाये । चल निकल बाहर" चच्चीने उसे बाहर बढ़ाया । फिर ताक पर रक्खा दिया हाथमें उठा बाहर निकल कर कोठरीका दरवाज़ा बंद कर कुंडी चढ़ाई । दुलारी दालानके खंबेसे चिपकी खड़ी थी । चच्चीने फिर कहा—लेकिन इस बार धीमे स्वरमें बोलीं : "इश्क़में तू ऐसी माती कि दरवाज़े तक बंद करनेका होश न रहा ? यूँ तो बड़ी होशियार है सुरंगें तक खोद लेती है चोर कहींकी । तेरी ऐसी औरतकी सज़ा तो यही है कि खुद अपने हाथसे आग जलाकर मर जा । करीमनको बुला ।" फिर खुद ही ज़ोरसे पुकारने लगीं : "करीमन ! ओ करामतुन्निसा ! नीचे आ ।"

घरमें जगार हो गई ।

दुलारी खूब पिटी । नईमउल्ला भाग गया ।

५

लखनऊके पुराने महल दौलतख़ाना आसफ़ीकी ज़नानी ड्योढ़ीसे निकल कर ज्योंही मुनियाँने बाहर क़दम रक्खा कि सिपाहियोंने उसे घेर लिया । किसीने अम्मा, किसीने बड़ी अम्मा और किसीने बड़ी बी बुआ पुकार कर उससे महलोंके हाल-चाल पूछने शुरू किये, किसीने मुनियाँसे इनाम-इक़राममें पाई हुई रक़मके बारेमें सवाल पूछने शुरू किये । कोई उसकी ओढ़नी खींचने लगा, किसीने हाथ थामा; मुनियाँ चिढ़ने झुँझलाने लगी, बड़ी बी और बड़ी अम्मा पुकारने वालोंको एक मुँहसे सौ गालियाँ सुनानी शुरू कीं : "इन मुए फूटी आँखों वालो पर खुदाका क़हर नाज़िल हो । शैतानकी फिटकार बरसे निगोड़ों पर । ऐ बड़ी अम्मा होगी तेरी बीवो, मेरी सौतें निगोड़ियाँ । ऐ अभी मेरी उम्र ही क्या है !"

"भला बताओ तो सही, अभी इनकी उम्र ही क्या है । जुम्मा जुम्मा आठ रोजकी तो कहानी ही है इनकी । सआदत खाँके राजमें बाल सफ़ेद

हुए, सफ़दर जंग और शुजाउद्दौलाके ज़मानेमें आँखोंकी रोशनी धीमी हुई, और आसफ़ुद्दौला जब इमामबाड़ा बनवा रहे थे—"

"तब ईंटे ढोने वाले गधोंके खुरोंकी धूल इनके कानोंमें भर गई—।"

"हाँ हाँ इसीसे ज़रा बहरी हो गईं। और वज़ीरअली बेचारे बहुत दिनों राज न कर पाये सो फ़क़त इनके चेहरे पर झुर्रियाँ ही पड़के रह गईं। और इनके ये दो दाँत तो सआदतअली खाँके ज़मानेने तोड़े थे।— अभी बेचारी मुनियाँकी उम्र ही क्या है?" साठ पैंसठ बरसकी मुनियाँ अपने नखरे तिल्लोंसे बारह बरसकी उम्र वाली बिजली-सी चौमुखी चमक रही थीं। सब मुँहजलों, निगोड़ों पर खुदाकी मार और शैतानके दुर्रे डालती हुईं, सबको परे हटने, उन्हें न छेड़ने, न सताने और ज़रूरी कामके लिए जल्दी जाने देनेके लिए माशूक़ाना अंदाज़की चिरौरी भी करने लगीं।

इतनी उम्र हो जाने पर भी मुनियाँ अपने आपको नन्हीं मुन्नी ही मानती हैं। सफ़ेद बालों पर मेंहदी, हाथोंमें मेंहदी, आखोंमें सुरमा, टिकली, मिस्सी, कानोंमें इत्रकी फुरहरी, धानी दुपट्टा, गुलाबी कुरता, सर पे झुमका, कानोंमें करनफूल, नाकमें बुलाक, गलेमें तौक, बाहोंमें जोशन, हाथोंमें कड़े और चूड़ियाँ, उँगली उँगलीमें अँगूठियाँ, अँगूठोंमें आरसे, पावोंमें कड़े छड़े झाँझ,—ग़रज़ कि मुनियाँ अपने खयालसे उम्रके पैंसठवें सालमें जवानीकी देहली चढ़ रही थी।

गुलामहुसैन जमादार बुर्जीसे नीचे उतरकर चबूतरे पर आये। मुनियाँ लपझप उनकी ओर बढ़ी। जमादारने मुनियाका हाथ खींचा और उचकाके चबूतरे पर चढ़ा लिया, फिर सबको बरजते हुए बोला: "खबरदार यारो, तुम्हें क़सम है मुनियाँकी जवानीकी, अब कोई इसे बूढ़ी न कहना। ऐ देखते नहीं हो मेरी गुइयाँका ये सिन और ये सितम!

चुटकीमें इनकी तीर निगाहोंमें क़हर है,
क्या जाने कितनी देर हमारी क़ज़ामें है।

कहकर मुनियाँके हम-उम्र गुलामहुसैनने मुनियाँके कंधे पर ऐसे निढाल होके गर्दन डाली और इस पर निहाल होती हुई मुनियाँने वो शोख कनखी मारी कि कहकहा लग गया। जमादारने फिर सिपाहियोंको डाँटा, एकको पान लानेका हुक्म दिया और धीमी आवाज़में मुनियाँसे पूछा : "क्या ख़बर है आज की ?"

"ऐहै कैसे भोले बनके मतलब निकाल रहे हैं। ये झाँसे किसी और को देना मियाँ, समझे। (धीरे से) इस वक्त पाँच अशर्फ़ियों वाली ख़बर है मेरे पास।"

"ऐ तो क्या ज़िंदगी भर मोलभाव ही करती रहोगी, कभी पुरानी दोस्तीका ख़याल भी तो कर लिया करो। अरे किसके वास्ते ये दौलत जोड़ती हो आख़िर ?"

"ऐ जब बुढ़ापेमें हाथ पैर थकेंगे तब कौन बैठाके खिलायेगा मुझे ?"

गुलामहुसैनकी ज़बान तक जवाब आया मगर उसे अपना मतलब साधना था इसलिए बात बनाकर संजीदगीके साथ बोला : "हाँ ख़ैर यह तो हक़ीक़त है। मगर अल्लाहके फ़ज़लसे अभी तो तुम्हारे चढ़ती जवानीके दिन हैं मुनियाँ, अपने बुढ़ापेका ख़याल दिलाके क्यों चाहनेवालोंका दिल तोड़ती हो।"

"ऐ हटो, नज़र लगाते हो।" नशीले तेवर चढ़ा, ज़रासा घूँघट डाल, सामनेका पल्ला ठीककर अपनी चढ़ती जवानीके गुमानमें मुनिया संजीदा होकर बैठ गई।

सामनेवाले चबूतरे पर बैठे हुक्के पर चिलम चढ़ाते हुए लड्डनख़ाँने कहा : "हाय, कुर्बान जाऊँ तेरे नख़रों पर मुनियाँ। अल्ला क़सम तूने तो अपने बुढ़ापेको भी चूना लगा दिया।"

फिरसे अपने बुढ़ापेका चर्चा सुनकर मुनियाँने फुफकार छोड़ी ही थी कि गुलामहुसैनने उसकी उँगली दबाते हुए धीरे कहा : "तुम भी किस फेरमें पड़ी हो। आओ ऊपर चलें।"

"पाँच अशर्फियोंसे कम नहीं लूँगी।"

"सात दूँगा—चलो तो।"

ग़ुलामहुसैन मुनियाँका हाथ पकड़ ऊपर चला; सिपाही रंगीन फ़ब्तियाँ कसने और हँसने लगे। मगर जमादारके ऊपर जाते ही सिपाही आसपास सिमट खुसुर-फुसुर बातें करने लगे, देर तक क़यास भिड़ाते रहे।

शाही दौलतख़ाना क़दीममें इन दिनों अनहोनी घट रही है। युवराज सुलेमानजाह नसीरुद्दीन हैदरके करमसे महलकी एक खवास सुखचैन पेटसे रह गई, पर पच्चीस पूरे होके छब्बीसवाँ महीना लग रहा है और अभी तक उसे औलाद ही नहीं हुई। शाही महलकी यह अद्‌भुत कहानी शहरमें छोटे बड़े हर शख्सकी ज़बान पर थी। खुलेआम कोई कुछ भी नहीं कह सकता मगर ऐसी खबरें जितनी ही दबा कर कही जाती हैं उतनी ही तेज़ीसे फैलती भी हैं। घर-घरमें कोने कूचोंमें मुँह पर रूमाल और पल्ले ढाँप ढाँप कर लोग-लुगाइयाँ फ़तियाँ कसतीं। शाहे अवध ग़ाज़ीउद्दीन हैदर और बादशाहबेगममें—पति-पत्नीमें—तेज़ तनातनी चल रही थी। नायब आग़ामीर बादशाहबेगमसे खार खाये हुए थे, बादशाहको हरदम उनके खिलाफ भरते ही रहते थे। इस पच्चीस मासके गर्भका बहाना लेकर तो उन्होंने आगमें घी डालना शुरू कर दिया। बादशाह जितने ही फटे, बादशाह बेगम उतनी ही पैनी हुईं।

बादशाह बेगम बड़ी अहंकारिणी महिला थीं, अपने आगे वह बादशाह तककी एक नहीं चलने देती थीं। उनके पिता मुबश्शिर खाँ मुनजमुल्मुल्क अपने समयके नामी ज्योतिषी थे। आसफ़ुद्दौलासे बिगाड़ कर जिन दिनों यामीनुद्दौला सआदत अलीखाँ बनारसमें रहते थे, मुनजमुल्मुल्क वहाँ किसी कामसे पधारे। बुरे दिनोंमें ज्योतिषियोंकी शरणमें जाना महात्वाकांक्षी पुरुषोंकी आम कमज़ोरी होती है, इसलिए यामिनुद्दौलाकी मुनजमुल्मुल्कसे मुलाक़ात हो जाना कोई अचरजकी बात न थी। दोनोंमें अच्छी पटरी बैठ गई। मुनजमुल्मुल्कके एक लड़की भी थी जिसे उन्होंने

धर्मकर्म और ज्योतिष विद्याकी अच्छी शिक्षा दी थी। ज्योतिष विद्याके लगावसे हिन्दू रस्म रिवाज़ोंकी जानकारी भी उसे खासी हो गई थी।

यामिनुद्दौला अपने बेटे ग़ाज़ीउद्दीन हैदरके लिए संबंध खोज रहे थे। मुनजमुल्मुल्ककी पंडिता कन्या उन्हें हर तरहसे अपने घरानेके योग्य लगी। मुनजमुल्मुल्क गो किसी सामंत नवाबवंशके न थे, विशेष धनी भी न थे फिर भी श्रेष्ठ रिज़वी सैयद थे, समाजमें उनकी बड़ी प्रतिष्ठा भी थी।

भारतमें आकर मुसलमान बादशाहों नवाबोंने हिन्दू राजे सामंतोंके बहुतसे रिवाज अपना लिये थे। राजपूतोंकी प्रथाके अनुसार अपनेसे हीन कुलकी कन्याको ब्याहनेके लिए वर स्वयं ससुरके दरवाजे पर नहीं जाता, बल्कि डोला भेज देता है। यामिनुद्दौला सआदतअलीखाँने भी उसी तरहका प्रस्ताव किया, परन्तु स्वाभिमानी मुनजमुल्मुल्क इसके लिए तैयार न हुए। अंतमें नवाबको ज्योतिषीकी बात माननी पड़ी और वे बड़ी धूमधामसे बेटे की बारात लेकर मुनजमुल्मुल्क सैयद मुबशिरखाँ रिज़वीके दरवाजे पर गये।

बादशाह बेगम अपने पतिको हर तरहसे अपने, अंकुशमें रखना चाहती थीं। यामिनुद्दौला सआदतअलीखाँकी मृत्यु होने पर जब ग़ाज़ीउद्दीन हैदर गद्दीनशीन हुए तो बादशाह बेगमकी महत्वाकांक्षायें सातवें आस्मानको छूने लगीं। ग़ाज़ीउद्दीन अपनी पत्नीके आगे खुलकर मामूली बात करनेकी हिम्मत भी नहीं रखते थे, उन्हें उनके गुस्सेसे डर लगता था। सआदतअलीखाँके जीवन कालमें ही ग़ाज़ीउद्दीन एक कन्याके पिता बने थे जो दादाकी लाडली होकर पोती बेगम कहलाई। उसके बाद बादशाह बेगमके कोई संतान न हुई।

ग़ाज़ीउद्दीन हैदर यों भले, और कुछ कुछ मौलाना क़िस्मके आदमी थे पर कभी-कभी उनका भी जी चाहता था कि घड़ी दो घड़ी किसी नाज़नीकी सोहबतका लुत्फ़ उठायें। बादशाह बेगमकी एक बाँदी सुब्ह दौलतने प्रेमके भूखे रसके भिखारी नवाबको अपने नाज़ो-

अन्दाज़ोअदा ग़मज़ओशोख़ी व हयासे मालामाल कर दिया। बादशाह बेगमको कानोकान ख़बर न लगी और सुब्ह दौलतके दिन चढ़ने लगे। मगर बाँदी जब अवधके भावी शासककी माता बनी तब बादशाह बेगमसे यह ख़बर छिपी न रह सकी।

बादशाह बेगमके तलवोंकी आग चोटीपर चढ़ गई। उनके रहते एक अदना बाँदी वलीअहदकी मां बन जाय, इसे वो हरगिज़ हरगिज़ बरदाश्त नहीं कर सकती थीं। गुस्सेमें वे आपेसे बाहर हो गईं और अपने पतिकी इच्छा अनिच्छाकी तनिक-सी भी परवाह किये बिना उन्होंने बड़ी बेरहमीसे सुब्हदौलतको क़त्ल करवा डाला। क्रोधमें अंधी होकर उन्होंने अपनी सौतके बेटेको भी मार डालनेका हुक्म दिया, पर अपनी खास सलाहकार बीबी-फ़ैज़ुन्निसाके बारहा यह समझानेपर कि शाही-ख़ूनका एक क़तरा भी जाया करना खुदा और रसूलकी नज़रोंमें बहुत बड़ा गुनाह है, उन्होंने अपना हुक्म वापस लिया। अपने पतिको मानसिक दण्ड देनेके लिए उन्होंने उनकी प्रियतमा, अवधके भावी शासक नसीरुद्दीन हैदरकी माता, अपनी सौत बन जानेवाली हक़ीर बाँदी सुब्हदौलतको झंखड़ बाग़में ग़रीबों-भिख़ा-रियोंको कब्रिस्तानमें दफ़न करवा दिया। ग़ाज़ीउद्दीन हैदर मुँहसे उफ़ तक न निकाल सके।

कुछ दिनों बाद ग़ुस्सा ठंडा होनेपर उन्होंने नसीरुद्दीनको अपनी निगरानीमें ले लिया और उसके ऐसे लाड़ लड़ाये कि क्या कोई सगी मां लड़ायेगी। बरसों तक नसीरुद्दीन यह जान ही न पाया कि बादशाह बेगम उसकी सगी मां नही है।

युवराजको पूरी तरह अपने अधिकारमें रखकर प्रचण्ड अहंकारिणी अनन्त महत्वाकांक्षिणी बादशाह-बेगम अपने पति और उनके कुचक्री शक्तिशाली वज़ीर आग़ामीरसे बराबर राजनीतिक मोर्चे लेती थीं। पिता और सौतेली माताके राजनीतिक द्वन्द्वमें नसीरुद्दीनकी बुद्धि पनपनेके पहले ही अनबूझे झकोले खा खाकर नष्ट हो गई। वह चिड़चिड़ा जिद्दी और

मनमौजी हो गया। वह माताका बड़ा अदब करता था, उनका हुक्म भी मानता था पर जब वह अपनी-सी पर आता था तो किसीके आगे न झुकनेवाली बादशाह बेगम भी अपने सौतेले बेटेका मन रखनेके लिए झुक जाती थी। बादशाह बेगमको एक ही डर था, किसी अभाव या असंतोषके कारण नसीरुद्दीन अपने पिता या वजीर आग़ामीरके बहकावेमें आकर कहीं उनके कब्ज़ेसे छूट न जाय। नसीरुद्दीनके ऊपर ही उनकी सारी आशायें लगी थीं। राजरानी होकर अपनी जिन आशाओं-आकांक्षाओंको वे पूरा नहीं कर पाईं उन्हें वे राजमाता बनकर पूरा करनेके स्वप्न देखती थीं।

बादशाह बेगम स्वयं दूधकी धुली बेदाग़, नियम-संयमसे शुद्ध महिला थीं। वे अपने आस पास कोई गंदगी नहीं देख सकती थीं। वे अपने पतिमें भी कोई बुराई नहीं बर्दाश्त कर सकतीं थीं, परन्तु अपनी सत्ताके सपने देखते हुए उन्होंने नसीरुद्दीनको बरबादीकी राहपर बढ़ावा दिया। नसीरुद्दीन बाहरी आदमियोंसे न मिल पाये, पिता और आग़ामीरके कहेमें चला न जाये इसलिए उसकी जवानीके होश सम्हालते ही उन्होंने उसे अपनी खूबसूरत बाँदियोंके हुजूममें छोड़ दिया, हुस्न और सिंगारके तिलस्म में उसे क़ैद कर दिया।

दो बरस पहले मुन्तज़ामुद्दौला मेहदी अली खाँने बादशाह सलामतकी खिदमतमें तीन खूबसूरत लौंडियाँ भेजी थीं, उन्होंने उन्हें बादशाह बेगमके पास भेज दिया। सुलेमानजाह नसीरुद्दीन उन तीनों लड़कियोंसे बेहद खुश थे।

इसके कुछ दिनों बाद ही बादशाह बेगमके ज्योतिषज्ञानने उन्हें यह बतलाया कि नसीरुद्दीनके पिता बननेका योग आया है और वे खुदाके फ़ज्लसे पोतेका मुँह देखेंगी। महलोंमें इसी खबरको लेकर सूत न कपास कोरियोंमें धकापेल मच गई। हर लौंडी बाँदी जो सुलेमान जाहकी खिदमतमें जाती थी, बादशाहके पोतेकी माँ बननेके ख्वाब देखने लगी।

एक लड़कीने नादानीसे, अपना ओहदा रुतबा बढ़ानेकी नीयतसे गर्भवती होनेका ढोंग किया। उसका नाम सुखचैन था। बादशाह बेगमने यह खबर सुनी तो बेहद खुश हुईं। महलोंमें शादियाने बजे, ग़रीबोंको खैरात बँटी, सारे शहरमें शोर हुआ, बादशाह तक खबर पहुँची।

कुछ महीनो बाद राज़ खुला। बादशाह बेगम बेहद नाराज़ हुईं और अकस्मात् उसके बाद ही सुखचैन मर भी गई। लेकिन उसका नाम न मरा और यह खबर भी बरक़रार रही कि सुखचैन हमल से है।

नौ महीने गुज़रे, दस हुए, ग्यारह हुए, एक साल पूरा हुआ—पर ग़ाज़ीउद्दीनके दादा बननेका खुशनसीब दिन न आया। बाहर अच्छी बुरी चर्चा होने लगी, दबी ज़बान मज़ाक होने लगे। बादशाहकी नाराज़गी भी बढ़ी। ज़िम्मेदार क़िस्मके लोगोंने शाही महलकी लौंडियों बाँदियोंमें इनाम इक़राम बाँटकर यह खबर फैलानी शुरू की कि नसीरुद्दीनमें पिता बनने की शक्ति ही नहीं है। बादशाह बेगमको भी यह समझाया जाने लगा कि जालसाज़ोंकी उड़ाई खबरोंको वे अपनी ज़ातसे बढ़ावा न दें, शाही खान्दानकी इज्ज़तका सवाल है, नामुमकिनको मुमकिन साबित करनेकी कोशिश न करें, ज्योतिष विद्या तो झूठ नहीं, मगर सितारोंके हिसाब किताबमें ग़लती हो सकती है। बादशाह बेगम इस बातको माननेके लिए तैयार न थीं, उन्हें अपनी ज्योतिष विद्याकी जानकारी पर नाज़ था।

बादशाह बेगमने बादशाह सलामतको यह कहला भेजा कि सुखचैनके गर्भवती होनेका समाचार सच है मगर चूँकि किसी प्रेत-जिन्नातने अड़चन डाल रक्खी है इसीसे बच्चा नहीं हो रहा। फिर भी घबराने या शक करनेकी बात नहीं; उपाय हो रहे हैं; अल्लाहके फ़ज़्लसे वह मुबारक दिन ज़रूर आयेगा जिस दिन शाहेअवध अपने पोतेका मुख देखेंगे।

इतने पर भी बादशाहको सन्तोष न हुआ। उन्होंने बेगम साहबाको

यह आदेश भेजा कि बच्चा होतेवक्त शाही घरानेकी औरतें वहाँ मौजूद रहें।

बादशाह बेगम इस आदेशसे चिढ़ गईं। कोई उनपर शक करे, उन्हें आदेश दे, उनकी बात काटे, यह वो हरगिज बर्दाश्त नहीं कर सकती थीं। उन्होंने तय किया कि ज्योतिष-गणनाके अनुसार जब वह शुभ घड़ी आयेगी तब वे इसी बात पर मन्सूरिया-वंशकी एक भी स्त्रीको नहीं बुलायेंगी। पर उस समय तो यही चिन्ता सबसे भारी थी कि किसी युवतीको नसीरुद्दीनके संसर्गसे गर्भ रह जाय। इसके लिए यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र, गण्डे तावीज़ कुश्ते मुक़व्वियात—सभी उपाय हो रहे थे।

उन्हीं दिनों रुस्तम नगरके नवाब मुहब्बतअलीखाँकी विधवा बहन मोती बेगम बादशाह बेगमकी ख़िदमतमें आदाब पेश करने आई थीं; बीवी मुलाटी उनके साथ आई थीं। उन्होंने भी ग्रहनक्षत्रोंकी नाप-जोख कर यही निर्णय दिया कि सुलेमानजाहके पिता होनेका निश्चित योग है परन्तु यह योग एक वर्ष बाद आयगा।

नसीरुद्दीनके संतान योगकी अफ़वाहने महलकी अनेक बाँदियोंको गर्भवती बना दिया। बादशाहबेगम इस बातकी कड़ी निगरानी रखने लगीं। मुन्तज़ामुद्दौला द्वारा भेजी गई दो लड़कियाँ ही सुलेमानजाहकी ख़िदमतमें जा पाती थीं और हरवक्त बादशाहबेगमकी कड़ी निगरानीमें रहती थीं। बारे ख़ुदा ख़ुदा करके वह दिन भी आया जब एक लड़कीके हमल रहा। हमलके अच्छी तरहसे तसदीक़ हो जानेके बाद बादशाहबेगमने उसके खाने-पीनेका इन्तज़ाम भी अपनी निगरानीमें कर लिया। बीफ़ैज़ुन्निसा और बादशाहबेगमको छोड़कर किसीके हाथका एक बूँद पानी पीने तककी सख़्त मुमानियत थी। सुखचैन मर चुकी थी मगर गर्भकी घोषणा चूँकि उसके नामसे हुई थी लिहाज़ा यह लड़की सुखचैन ही कहलाई।

जैसे-जैसे दिन निकट आने लगे वैसे-वैसे ही बादशाहबेगमकी घबराहट भी बढ़ने लगी। मानलो लड़का न होकर लड़की हुई तो? इससे बादशाह-

बेगमकी ज्योतिष विद्याको कलंक लगेगा; यह भी हो सकता है कि सुलेमानजाह उनके काबूसे निकल जायें। बादशाहबेगमने अपनी आन रखने और वक्त ज़रूरतके लिए मुनियाँ दल्लालाकी मार्फ़त ऐसी कई औरतोंको चुपचाप महलमें दाखिल कर लिया जिनके गर्भके पूरे दिन चल रहे थे। अगर सुखचैनके लड़का हुआ तो ठीक है वरना उन्हीं दिनों महलमें पैदा होने वाले किसी भी लड़केको सुलेमानजाहका लड़का क़रार दे दिया जायगा।

ज़नानी ड्योढ़ीका ज़मादार गुलाम हुसैन छिपे तौरपर अंगरेज़ी रेज़ीडेन्सीसे महलकी सही ख़बर पहुँचानेके लिए रिशवत पाता था। मुनियाँ दल्लालाको भी उसमेंसे अच्छा हिस्सा मिलता था। चूँकि मुनियाँ ही इस षड्यन्त्रकी जड़में थी इसलिए आग़ामीरको कभी सही ख़बरें न मिल सकीं।

ऊपर बुर्जोंमें बैठी हुई मुनियाँने गुलामहुसेनसे कहा: 'ख़ुदाकी क़सम, जो कहीं सचमुच ही बादशाहके पोता हो गया—'

"अरे अब हमसे तो न उड़ो, सुलेमानजाह भला किस क़ाबिल हैं जो ख़ुदा उन्हें औलाद वाला बनायेगा। मुझे तो सब हाल चाल मालूम होता रहता है।"

"तुम्हें मेरी जवानीकी क़सम, सचमुच बताना गुलामहुसैन, किसे ये ख़बरें बेंचते हो?"

गुलामहुसेनने मुनियाँको धोखेमें रखनेके लिए हँसकर टाल दिया फिर बहुत इसरार करनेपर झुककर बड़ी ख़ुफ़िया बात कहनेके अन्दाज़से बोला: "दिल्लीके बादशाहके यहाँ—किसूसे कहना मत मुनियाँ, वरना मेरी गर्दन चली जायगी।"

'मुझे क्या ग़रज़, किसूके लेनेमें नहीं देनेमें नहीं। ऐ न जाने कितने घरोंका हाल मुनियाँ अपने सीनेमें छिपाये हुए है। भला कोई कह तो दे कि मैंने आज तलक किसूको किसूकी बात बतलाई हो। अच्छा अब चलूँ,

बड़े बड़े काम हैं मुझे। मगर हाँ, तुम्हारी ग़लतफ़हमीको सुधारे जाती हूँ ताकि देहलीके दरबारमें ग़लत ख़बर न पहुँचा दो।"

ग़ुलामहुसेन चौंक कर उसे देखने लगा। मुनियाँ बोली : "दिल्लीके बादशाहकी पोतीसे, अल्ला रक्खे, हमारे सुलेमानजाहका निकाह होनेकी बात क़रार पाई गई है।"

"सच ?"

"हाँ मैं जिस वक्त बेगम साहबाकी खिदमतमें मौजूद थी उसी वक्त इत्तफ़ाकसे ये खबर आई। आग़ामीर कोशिश कर रहे हैं। बड़े साहब और शाहेज़माकी भी यही ख्वाहिश है। उनका ख़याल है कि अवधके तख्तोताजका मालिक दोनों ओरसे आला ख़ान्दानका होना चाहिए।"

ग़ुलाम हुसेन मुसकुराया, झुक कर बोला : "खुद सुलेमानजाह—"

"हाँ बेगमसाहबा भी फ़रमाती थीं। ग़ाज़ीउद्दीन हैदरके तख्त पर कुँजड़िनों ख़वासनोंकी औलाद ही बैठेंगी। फ़रमाती थीं कि उनकी बद-दुआ ख़ाली न जायगी।"

"ख़ैर ख़वासनोंके हमलसे ही सही मग़र नुत्फ़ा तो शाही है; लेकिन इस बार देखता हूँ कि तुमलोग किसू धोबी कहारकी औलादको ही लखनऊके तख्तोताज़का मालिक बनवाओगी। बड़ा क़िस्मतवर होगा। वाह, बड़े साहब और बड़े-बड़े अमीर उमरा झुक झुकके ताज़ीम करेंगे उसे। अल्लाहोग़नी ! अल्लाहो अकबर।"

मुनियाँ बोली : "हाँ इन्तज़ाम इस हद तक है तो ज़रूर, मग़र हुज़ूर बेगम साहबका नजूमी अक़ीदा कभू ग़लत नहीं हो सकता। खुदा कारसाज़ है, अवधके तख्तोताजका तीसरा मालिक भी मंसूरिया ख़ान्दानके शाहज़ादे का बेटा ही होगा।" कहकर मुनियाँ दल्लाला उठ खड़ी हुई। ग़ुलाम हुसेन पर बतरस छा गया था, उसने बातें पूछनेके लिए मुनियाँको थोड़ी देर और रोकना चाहा, मग़र वह रुक न सकी। बादशाह बेगमके कामसे उसे अभी लखनऊके एक छोरसे दूसरे छोर तक जाने कहाँ कहाँ जाना

था, क्या क्या इंतज़ाम करने थे। मुनियाँने दुपट्टा सँभाला और मटक कर चल दी।

६

साढ़े पाँच मीलके घेरेमें अवधके नवाब वज़ीरों तथा प्रथम बादशाह अबुल मुज़फ्फ़र मुईज़ुद्दीन शाहेज़मा गाज़ीउद्दीन हैदरकी राजधानी लखनऊ अवधकी हरी-भरी धरती पर बसी हुई ऐसी सुन्दर लगती है मानो धानी दुपट्टेके पल्ले पर किसी अलबेले हुनरमन्दने ज़रदोज़ीका नायाब गुलदस्ता काढ़ दिया हो। नवाब आसफ़उद्दौला इमारतें बनवानेके ऐसे ही शौक़ीन थे। दूरसे ही मीनारों और गुम्बदोंसे सज़ा हुआ शहर नज़रोंको जादूसा बाँध लेता है। शहरका पच्छिमी हिस्सा आबादीसे गँजा हुआ है। मीना नगरमें संत शाहमीनाके मज़ारके पास ही ऊँचे टीले पर मच्छी भवनका क़िला स्थित है जो पुराने ज़मानेमें लखनाकी गढ़ी और हवेली लखनाके नामसे मशहूर था।

ऊँची ऊँची दीवारों वाली यह गढ़ी मीना नगरसे लेकर गोमतीके किनारे तक फैली हुई है। इसका एक द्वार पूर्वमें है और दूसरा पश्चिम में। फाटकोंके ऊपर दूसरी मंज़िलमें पत्थरकी मेहराबें और झरोखे बने हुए हैं, मंडप राजस्थानी शैलीमें निर्मित है। मच्छी भवनका पच्छिमी द्वार ठीक आसफ़ुद्दौलाके बनवाये हुए रूमी दरवाज़ेके सामने पड़ता है। फाटकके दाहिने हाथ, गोमती पर स्थित पत्थरका पुल है और किम्वदंतियों के अनुसार सुमित्रा नंदन राघव लक्ष्मणके जन्मस्थान लक्ष्मण टीले पर स्थित पीर मोहम्मदशाहकी दरगाह और बाबरी मस्जिद है, उसके बाद शेख़जादोंका बनवाया हुआ गुस्लख़ाना और किसी पुराने वक़्तकी इमारतके खँडहर हैं। बाईं ओर आसफ़ुद्दौलाका बनवाया हुआ अजीब ग़रीब सतखंडा बावली महल है और उसके पास ही आसफ़ी इमामबाड़ा है। मच्छी भवनके पच्छिमी फाटकके सामने एक और विशाल फाटक है जो

बावली महल और टीलेकी मस्जिदकी दीवारोंसे सटा हुआ है। यह इमामबाड़ेका पूर्वी फाटक है जिसके अंदर अनोखी शानवाला, अकालके दिनोंका आसफी स्मारक इमामबाड़ा, मक़तब, कोतवाली, नौबतखाना, दूकानें और दूसरी सीमापर गोथिक राजस्थानी मिश्रित शैलीका भव्यरूमी दरवाज़ा है जिसके बाहर आस-पास खजूरके पेड़ोंके झुण्ड शोभित हैं। नवाब आसफ़ुद्दौला लखनऊको अरब, कुस्तुंतुनिया और फ़ारसकी याद ताज़ा करानेवाला शहर बनाना चाहते थे। दाहिनी ओर गोमतीके किनारे प्राचीन कुड़िया घाट, बनारसी घाट, राधाकृष्णका घाट और शिवालोंके कलश कंगूरे शोभित हैं। सड़कके बाईं ओर लालमंडी, इस्माइलगंज और वाजपेई टोला है। कोठी कलाँ शीशमहल और पुराने राजभवनोंकी शृङ्खला गोमती तटसे उत्तरसे लेकर दक्षिण तक पूरे हुसैनाबाद क्षेत्रमें फैली हुई है। इनमें अनेक महल आसफ़ुद्दौलाके बनवाये हुए हैं, अनेक पुराने हैं जिनका जीर्णोद्धार आसफ़ुद्दौलाके समयमें हुआ था। हुसैनाबाद (जिसका कि प्राचीन नाम रामगंज है) के बाद नदीतटपर शिवपुरी और गऊघाटकी बस्तियाँ बसी हुई हैं। नदीके दोनों ओर सुन्दर इमारतें बनी हुई हैं। मच्छीभवनके पूरबकी ओर नीमभार शेखोंकी बस्ती, सूरज कुण्ड, रेज़ीडेन्सी, कोठी फ़रह-बख्श, कोठी दर्शनविलास सआदतअली खाँ का मकबरा, दिलकुशाबाग आदि नवाब वज़ीरोंकी बनवाई हुई शानदार इमारतें हैं।

ढाई मीलकी चौड़ानमें गोमतीके दोनों ओर बसा हुआ यह स्वर्ग-सा नगर निकट आते ही अपनी प्रजाके नारकीय जीवनकी झाँकी भी प्रस्तुत कर देता है। स्वर्ग और नरक एक सिक्केके दो पहलू होकर यहीं हर समय साथ-साथ दिखलाई देते हैं। ऊँची-ऊँची मीनारों, गुम्बदों और कलश-कंगूरों वाली शानदार इमारतोंके आसपास खपरैलके टूटे मामूली घर घिरे हैं। सोने चाँदीके छत्र धारण करने वाले शाह, शाहज़ादों, अमीरो-उमराके हाथियों वाले जुलूस और फटेहाल भिखमंगोंके हुजूम एक साथ देखनेको मिलते हैं। अगुरु लोबान इत्रों और फूलोंसे महमहाती हुई कोठियोंके साथ

ही साथ कीचड़ दुर्गन्ध और सीलन भरी गली दरगलियोंके छोटे-छोटे मकान हरदम गंदी हवासे बसे रहते हैं।

लाल और पीली वर्दीके शाही सवार हरे झण्डे फहराते हुए इधर-उधर दिखलायी पड़ रहे हैं। कुर्ता, धोती, पगड़ी, दुपट्टे वाले, अँगरखे, पायजामें वाले, तहमद अँगौछा पहने, हर रंगके लोग गली सड़कों और बाजारोंमें हर तरफ़ दिखलायी पड़ते हैं। घड़ीमें किसी अमीरका हाथी निकला; रईसोंके सजे-सजाये रथोंकी खड़-खड़ और घंटियोंकी गूँजसे सड़क गुलज़ार हो गई; कोई बिगड़े दिल घोड़ा फेंकता हुआ चला आ रहा है तो ज़रा-सी सड़क पर हटो बचोकी धूम मची जा रही है; पालकी पर बैठे घुटने पर तस्बीह वाला हाथ टिकाये बड़ी गम्भीर मुद्रामें ये कोई बड़े मौलवी मुल्ला चले जा रहे हैं, दोनों ओरसे बहुत-सी सलामें झुक रही हैं। ये बड़े-बड़े गलमुच्छों वाले, बड़े रौबीले, केसरिया तिलक लगाये पगड़ी, जामदानीका अँगरखा दुपट्टा पहने गंगा जमुनी तामजान पर कोई बड़े भारी जौहरी चले जा रहे हैं, आठ आदमी तामजान उठाये हैं, आठ सिपाही उनके साथ चल रहे हैं, सड़क पर गुहार पड़ रही है। वो सामनेसे बाँके उस्ताद अब्बू खाँका ग़ोल आ रहा है, सत्तर-अस्सी शागिर्द साथ हैं। शहरका हर शख्स हथियारबन्द है; ढाल-तलवार, तीर-कमान, कटार, कड़ाबीन, तमंचे और कुछ नहीं तो हर एकके हाथमें लाठी ज़रूर है। दूकानदार तक हथियार रक्खे हैं।

शाहे अवधकी यह स्वर्ग नरकमयी राजधानी आज दोपहरसे बस एक ही खबरसे गूँज रही है। बादशाह सलामतके पोता हुआ है। पच्चीस महीनों तक जिनके आमदका चर्चा गर्म रहा, वे नसीरुद्दीन हैदरके नौनिहाल मोहम्मद रफ़ीउद्दीन हैदर उर्फ़ मुन्नाजान पहली कुआँ-कुआँ करते ही शहरका शोर हो गये। जनमते ही उन्होंने अपनी माँको बाँदीसे रानी बना दिया। मगर दबी ज़बान लोग यह भी कहते फिरते हैं कि धोबीकी औलाद है। किसीको यह ख़बर अफ़वाह लगती है, वह कहता है, अगर सच होगी तो तोपोंकी सलामी दी जायेगी। इस पर कोई पलटके कहता है कि दौलतख़ाने

पर ये जो हज़ारोंकी ख़ैरात बाँटी जा रही है, बाजे बज रहे हैं, रातमें रोशनीका इन्तज़ाम हो रहा है, बादशाह बेगमके हुक्म और खर्चसे मस्जिदोंमें दुआएँ माँगी जा रही हैं—यह सब क्या झूठ है? कोई कहता बादशाहबेगमकी चाल है; कोई कहता कि आग़ामीरको मुँहकी खानी पड़ी। मुन्नाजानके पैदा होनेके समाचारको लेकर चारकी चों-चों, बहस-मुबाहसों, नोक-झोक और अटकलबाजियोंका अन्त जनताकी एक पंचमंडलीमें यों हुआ कि—"अमाँ न इनकी जीत है न उनकी जीत है। अगर अंग्रेज़ मान लेगा तो धोबीकी औलाद होकर भी मुन्नाजान शाहज़ादा कहलायेगा और जो मियाँ, अंग्रेज़ने न माना तो शाहज़ादेके नुत्फ़ा होकर भी वह धोबी क्या धोबीका लत्ता बन जायगा और बहत्तर घाट पछाड़ा जायेगा।"

× × ×

१४ सितम्बर सन् १८२० ई० के दिन दोपहरके वक्त खवास सुखचैन का सितारा बुलंद हुआ। बादशाह बेगमने अपने पोते मुन्नाजानको गोद में लेकर उसकी मांको अफ़ज़लमहलका ख़िताब बख्शा। बादशाह बेगम बेहद खुश थीं। हुसैनाबादके दौलतखाना क़दीममें हरसूँ खुशियाली छा गई। शादियानें बजने लगे, बादशाह बेगमने नमाज़े शुक्रिया अदा की, पोते पर निछावर कर सैकड़ों फ़कीरोंको ख़ैरात बाँटी, शहरमें शोर मच गया।

इसके बाद बेगम साहबाने अपने दोहते मुहसानुद्दौलाके हाथ बादशाह को अपनी ओरसे मुबारकबादी और एक सौ एक मोहरोंकी नज़र भिजवाई।

फ़रहबख्श महलके पुस्तकालयमें बैठे हुए शाहे अवध क़ुरआन शरीफ़का पारायण कर रहे थे। ग़ुलाम बा अदब दस्तबस्ता हाज़िर हुआ।

"क्या है?" कुछ देरके बाद बादशाहका ध्यान गया।

"ज़िल्ले सुभानी, हुज़ूर मुहसानुद्दौला साहब आलमपनाहकी क़दमबोसीके लिए हाज़िर हुए हैं।"

"आने दिया जाय।" क़ुरआन शरीफ़का सफ़ा बदलते हुए ज़िल्ले सुभानीने इजाज़त दी।

मुहसानुद्दौलाने आकर ताज़ीम दी। रूमालमें रखकर नज़र पेश की और हाथ बाँधे नज़र झुकाये सविनय खड़े हो गये।

"बैठो बरखुरदार। अच्छे हो?"

"नाना हुज़ूरके इक़बालसे अच्छी तरह हूँ।"

बात चीत रुक गई। बादशाह सलामत क़ुरआन शरीफ़ पर नज़र गड़ाये रहे। फिर पूछा: "किसी ख़ास कामसे आना हुआ है?"

"हुज़ूर नानी अम्माने ज़िल्ले सुभानीकी ख़िदमतमें अपने आदाब पेश किये हैं और मुबारकबादियाँ भेजी हैं।"

"किसलिए?" बादशाहने बन कर पूछा।

"सूरज ग़ुरूब होनेसे दो घड़ी पहले अल्लाहतालाने मुझे मामूंज़ाद भाई बख़्शा है। नाना हुज़ूर दादा हुए।"

"ये मोहरें अपनी नानी अम्माको लौटा देना। फिर कभी आना बरखुरदार! हम इस वक़्त मसरूफ़ हैं।"

मुहसानुद्दौला इतना-सा मुँह लेकर वापिस लौट गये। उनके जाते ही नायब आग़ामीर तशरीफ़ लाये।

आग़ामीर उस समय अवध राज्यका महामंत्री था। शहरमें, अवध भरमें प्रजा उससे घृणा करती थी। लम्बा चौड़ा, काला भुजङ्ग, बाज़की चोंच ऐसी नाक वाला, रूखे मिज़ाज और कुटिल पैनी बुद्धिवाला यह व्यक्ति अवधका सर्वेसर्वा था। गाज़ीउद्दीन शाह उसे बहुत मानते थे। यामिनुद्दौला नवाब सआदतअली ख़ाँ जिस ज़मानेमें अपने युवराज गाज़ीउद्दीन हैदरके आचरणसे अप्रसन्न रहते थे उन दिनों आग़ामीर युवराजका खानसामा था। आग़ामीरकी मंत्रणाने ग़ाज़ीउद्दीनको बड़ा बल प्रदान किया था। बादशाह होनेपर उनका परम मंत्रदाता विश्वास-पात्र प्रिय खानसामा आग़ामीर राज्यका सबसे अधिक शक्तिशाली व्यक्ति बन गया। बड़े-बड़े उसके क़दम चूमते थे; उसका जाल चारों ओर फैला

हुआ था। नायब आग़ामीरने अपने जासूसों-द्वारा प्राप्त समाचार बादशाह को सुनाये।

जीक़ादकी सातवींको[1] दोपहरके समय मुनिया दल्लाला प्यारा धोबीके घर उसकी पत्नी मुन्नाको पूछती हुई गई थी। मुन्नाकी माँने कहा कि वह परवरिश अलीखाँके यहाँ कपड़े लेकर गई है। इसपर मुनियाने प्यारा की सासको अपनपौ जताते हुए फटकारा भी कि लड़की आठ महीनेके पेटसे है, उसे बाहर इस तरह जाने देना ठीक नहीं, जाने किस वख्त क्या हो जाय। यह कहकर मुनिया प्याराके घरसे चली आई और मुन्ना उसके बाद घर नहीं पहुँची। आग़ामीरने इसके बाद बादशाहको यह भी बतलाया कि दौलतखाना क़दीमके एक पुराने मुलाज़िम दिलावरखाँके कथनानुसार मुन्ना धोबिन महलोंमें लाई गई थी। आज दोपहरमें उसके बेटा हुआ और उसके बाद बेटा छीनकर मुन्नाको मरवा डाला गया; आग़ामीरके आदमी उसकी लाशकी खोज कर रहे हैं। दौलतखाना क़दीमकी दाई मुसम्मात महताबके बयानात लेनेपर मालूम हुआ कि सुख-चैन खवासको कोई औलाद नहीं हुई, मुन्ना धोबिनका बच्चा नहला-धुलाकर सुखचैनकी बग़लमें लिटा दिया गया और तबसे ही महलमें शादियाने बज रहे हैं।

बादशाह सलामत धर्मवचनोंपर ग़ौर करना छोड़ बादशाहबेगमके इस कारनामेपर ग़ौर करने लगे। आलीजाहके प्रायः शान्त और स्थिर मुखमण्डलपर क्रोधकी तमतमाहट चढ़ आई।

उसी समय सूचना मिली कि शाहज़ादा नसीरुद्दीन हैदर नज़र लेकर शाहे अवधकी खिदमतमें बादशाह बेगमकी ओरसे यह अर्ज़ करने आ रहे हैं कि शाही पोतेका तोपोंकी सलामीसे स्वागत किया जाय।

---

१. अरबी तिथि ७ जीक़ाद १२३५ हि० तदनुसार १७ अगस्त सन् १८२० ई०।

"धोबियोंकी औलादको शाही तोपें सलाम नहीं किया करतीं। आग़ामीर !"

"ज़िल्लेसुभानी !"

"साहबे आलमको फ़रहबख्शमें दाखिल होनेकी इजाज़त नहीं है।"

"जो हुक्म आलमपनाह। मगर—"

"मैं सिफ़ारिश नहीं सुनना चाहता। अवधके तख्तोताजका वारिस खुद अपने ही खिलाफ़ एक ऐसी साज़िशमें शरीक हुआ है जो मेरी रिआयाके हक़ीरसे हक़ीर इंसानको भी अपनी शानके खिलाफ़ लगती। किसी मर्दके लिए इससे बढ़कर शर्मकी और क्या बात हो सकती है। ···हमें दिली सदमा पहुँचा है।"

फ़रहबख्शमें प्रवेश करते ही शाहज़ादेको रोकनेकी चेष्टा की गई। नसीरुद्दीन बहुत नाराज़ हुआ और किसीकी परवाह न कर आगे बढ़ा। दारोग़ा दीवानखाना शिद्दी अब्दुलक़रीम, अमृतलाल अर्ज़बेगी और फ़तेहअलीने शाहज़ादाको बादशाहके कमरेमें जानेसे रोक दिया। शाही हुक्मकी तामील करनेके लिए शाहज़ादेको मजबूर होना पड़ा।

यह सुनकर कि शाहज़ादा सुलेमानजाहको शाही हुक्मके बावजूद महलमें आने दिया गया ज़िल्लेसुभानीने नाराज़ हो उन तमाम सिपाहियों और अफ़सरोंको बरखास्त कर दिया जो उस वक्त पहरेपर तैनात थे।

बादशाह बेगमके पास यह तमाम खबरें बराबर पहुँच रहीं थीं। शाही नाराज़ीकी बात सुन बादशाह बेगमने पौत्र जन्मोत्सव और जोशसे मनाना शुरू किया। महलोंमें रतजगा हुआ, रौशनी हुई।

बेगम साहबाको रुस्तम नगरकी बीबी मुलाटीकी याद भी आई, उन्हींकी बतलाई हुई तारीखको बेगम साहबा दादी हुईं। बादशाहबेगमने बीबी मुलाटीको एक थान रेशम और ग्यारह अशर्फ़ियाँ भेजीं, बुलावा भेजा, साथ ही उनसे किसी नेकचलन धायकी माँग भी की।

नईमउल्लाके भाग जानेके बाद दुलारी घरसे निकाली जाकर बीबी मुलाटीकी निगरानीमें रक्खी गई थी। दुलारीने चच्चीके बड़े हाथ पैर जोड़े और कहा कि मुझे महलोंमें भिज़वा दीजिए। चच्ची पहले तो राज़ी न हुईं पर बादमें दुलारीके बहुत गिड़गिड़ाने और नेकचलन बने रहनेके बड़े-बड़े वादे करने पर उन्होंने दुलारीको भी अपने साथ ले लिया।

७

ढाई घड़ी रात बीत चुकी थी। चरिन्दे परिन्दे तक सुखकी नींद सो रहे थे जबकि शाहे अवधको न इस करवट चैन मिल रहा था और न उस करवट। पंखा झलने वाली बाँदी अपने फ़र्ज़ और शाही खौफ़से बेहोश हो नींदके बसमें ठोस सोनेके जड़ाऊ पलँगके पायेमें बाँह डालकर ऐसे पड़ी थी गोया प्रियके गलेमें बाँहें डालकर बड़े सुखकी नींद सो रही हो। दूसरी बाँदी शाही सेजकी दूसरी ओर बैठी सधे हाथोंसे बादशाहके पैरों पर मुक्कियाँ लगा रही थी।

एक गहरी निश्वास ढील कर बादशाहने बड़ी बेचैनीके साथ करवट बदल ली। बाँदी अपने अधूरे कामको पूरा करनेके लिए पलँगकी दूसरी ओर दौड़ी।

"रहने दे सुलखिया।" बादशाहने बड़े उखड़े दर्द भरे स्वरमें धीरे-से कहा।

बाँदी बोली : "नींद नहीं आ रही आलमपनाह?"

"नींद आदमियोंको मयस्सर होती है, खुदाने बादशाहोंको उस नेमतसे महरूम रक्खा है।" फिर निश्वास छोड़ी, फिर करवट ली। सुलखियाने पंखेवालीको पैरकी हल्की ठोकरसे जगा दिया। शाहेअवध पलँग छोड़कर उठ बैठे। सामने अँधेरेमें गोमती पार दूर पर एल चिराग़ टिमटिमा रहा था, ग़ाज़ीउद्दीन हैदरकी टकटकी लग गई। पंखा झलनेवाली सिरहाने खड़ी होकर पंखा झलने लगी। आज उससे बहुत बड़ी ग़लती हो गई, यह

उसकी ख़ुशनसीबी थी कि जागते रहने पर भी बादशाह सलामतने उसे कुछ न कहा। सुलखिया शीराज़ी जाम भर लाई और बाअदब बा सलीक़ा जाम हुज़ूरेआलमके होठोंसे लगा दिया। आलमपनाह मानो इस वक़्त इसीके इन्तज़ारमें बैठे थे। जाम उनके होठोंसे लगा और उनकी बाँह सुलखियाके गलेमें जा पड़ी, दूसरे क्षण सुलखिया बादशाहकी बग़लगीर हो सेजपर बैठी थी। उसका सिर जहाँपनाहने अपने सीनेसे चिपका रक्खा था। पंखे वालीने दूसरी ओर आकर पुखराजकी प्याली सुलखियाके हाथसे ले ली। दो बाँदियाँ और ख्वाबगाहमें आ गईं। पंखेवालीने अपना काम दूसरीको सौंपकर साग़र सम्हाला, चौथी बाँदी, पेचवानकी मुँहनाल हुज़ूरे आलमके होठोंके करीब ले आई। बादशाह सलामतका बाँया हाथ सुलखियाके गालों और बालोंसे धीरे-धीरे खेल रहा था। बादशाहने नज़र उठाकर अपने चारों ओर जवानीकी खिली फुलवारीको देखा और फिर एक की तरफ़ देखकर बोले "इमाम बाँदी !"

"ज़िल्ले सुभानी।"

"सच बतलाना, कभी सुख पाया है।"

"ख़ुदावन्देक़रीम ज़िल्ले सुब्हानीको लाखों बरस बनाये रक्खे, हम दुखको क्या जानें हुज़ूर ?"

"ख़ुशनसीब हो।" कहकर ज़बान रुक गई मगर मन कहता रहा : "लेकिन तुम्हारा बादशाह बड़ा दुःखी है इस वक़्त बे-घर—बे-पनाह—बे आबरू।..."

गाज़ीउद्दीन हैदर इस रात बड़े ही दुखी थे। उनकी पत्नी उनकी शत्रु थी। उनका बेटा उनसे और वे अपने इकलौते बेटेसे नाराज़ थे। उनके पोतेको लेकर शहरमें शर्मनाक चर्चा थी और वो यह तै ही नहीं कर पा रहे थे कि मुन्नाजानको अपना मानें या न मानें। किसके कहे पर विश्वास करें ? उनका कोई अपना न था। यों कहनेको हज़ार थे पर कोई जाँ निसार न था, कोई ग़मगुसार न था। लाखों जानोंका मालिक, करोड़ों

का धनी अपने आपको एकदम अकेला महसूस कर रहा था। वह महसूस कर रहा था कि उसके क़दमोंसे साँप लिपटे हैं और उसके चारों ओर लपलपाती जीभें निकाले खूँख्वार भेड़िये खड़े हैं।

आज दोपहर अँगरेज़ रेज़ीडण्ट जॉन मॉन्किटन साहब तशरीफ़ लाये और कह गये कि अपने पोतेके संबन्धमें खूब सोच-समझ कर सही-सही हाल क़लमबन्द कर दीजिये। बादशाह क्या लिखें। मामूलीसे मामूली आदमी भी अपने घरकी बदनामीके डरसे जिन बातोंकी चर्चा ज़बान पर लाना पसन्द नहीं करता, उन बातोंको किस तरह खुद क़लमबन्द करें। बादशाहका घर बिगड़ा हुआ है। उनके खान्दानमें यह पहली घटना हो सो बात भी नहीं, नवाब आसफ़ुद्दौला जिस वज़ीर अलीको अपनी ज़बान मुबारिक़से एक बार अपना बेटा और वलीअहद कह गये, उसीको खुद अपनी ही ज़बानसे खान-सामाका बेटा भी बतला गये। वजीरअली चार दिनके लिए अवधके तख्तोताजका मालिक होकर फिर कुत्तेकी तरह दुर-दुर मारा हो गया। जिन बादशाहोंके सामने प्रजा अदबसे अपना सिर भी नहीं उठा सकती उन्हींके बारेमें अपने मनमें, अकेलेपनमें जाने क्या क्या कहती सोचती होगी। ये लौंडियाँ, बाँदियाँ जो हरदम हमें खुश रखनेमें अपना भला समझती हैं, जिनकी ज़बानसे, सेवाओंसे, हर रंग और अदासे यह झलकता है कि वो हम पर जान भी निछावर कर सकती हैं, क्या जाने अपने मनमें हमें कोस रही हों। ईश्वरके प्रतिनिधि, मानव-समाजके आदर्श पुरुष, जगके पालन-हार बादशाह खुद अपने बाप दादोंकी विधवा स्त्रियों और रखैलोंकी परवरिश भी नहीं कर सकते। आज शाम एक दूसरी शर्मनाक घटना भी हुई थी जिसने बादशाहके घरानेकी आबरू धो दी। शाही दौलतखाना क़दीमके खस्तादम मकानोंमें रहने वाली नवाब आसफ़ुद्दौला, नवाब वजीरअली, नवाब सआदत अली खाँकी बूढ़ी बिधवा बेगमें और रखेलियाँ आज अपनी लौंडियों बाँदियोंका गिरोह लेकर बाज़ार हुसैनाबाद लूटनेके लिए वहशियाने जोशके साथ बाहर निकल पड़ी थीं। शाही खज़ानेसे हर एककी पेन्शन

बँधी हुई है, दफ़्तरमें हर महीने उनके नामके आगे अदा की गई रक्म भी बाक़ायदा दर्ज है, और फिर भी उन्होंने सरेआम यह इल्ज़ाम लगाया है कि ग़ाज़ीउद्दीन हैदर अपने बाप भाई और चचाकी बेवाओंको भूखे मारता है। उनके तन पर पहननेके लिए साबित कपड़े भी नहीं हैं। इस घटनाका हाल सुनकर शाहेअवधको खुद अपने मनमें ही ठौर ठिकाना नहीं मिल रहा था—वे शर्मसे गड़े जा रहे थे।

आग़ामीर का कहना था कि यह बादशाह बेगमकी साज़िश थी; ग़ाज़ीउद्दीनको बदनाम करनेके लिए उनकी पत्नीने यह काण्ड करवाया था।

गोमती पार दूरके दियेसे टकटकी लगाये बादशाह अपने दर्दकी उलझनोंमें उसी तरह चक्कर काट काट कर चेतनाके उस मध्य बिंदु पर पहुँचनेके लिए संघर्ष कर रहे थे जहाँ बिंदु—शून्य—अपने आपमें पीड़ा को लय कर एक नई गति पाता है। गति दोनों ही दिशाओंमें होती है, या भँवरसे छूटकर दर्दमें डूब ही जाता है और या अन्तरकी उछालसे चेतनाका स्पर्श मिलता है। ग़ाज़ीउद्दीन डूबना नहीं चाहते, वो उस दूर टिमटिमाती लौको आत्मसात् कर लेना चाहते हैं जिसके सहारे दर्दकी अँधेरी भूलभुलैया में भी उन्हें राह मिलती रहे।—और राह ही नहीं मिल रही है। ग़ाज़ीउद्दीन जानना चाहते हैं कि साज़िश कहाँ-कहाँ है, बादशाह बेगम ही क्या अकेले उनके ख़िलाफ़ साज़िशमें है, आग़ामीर नहीं, अँगरेज़ नहीं, उनके दरबारके कुल अमीर-उमरा नहीं, कौन नहीं?—उनके राज्यका कौन-सा ऐसा व्यक्ति है जो उनके ख़िलाफ़ षड्यंत्र नहीं कर रहा?

बाहर बरामदेमें कुत्तेके भौंकनेकी आवाज़ आई। कुत्ता लगातार भौंक रहा है। उसका भौंकना उनके सुकूनको तोड़ रहा है। इन्हें ऐसा महसूस होता है जैसे ज़ख्मको कोई बार-बार उँगलीसे कोंच रहा हो। कुत्ता लगातार भौंक रहा है। परेशानियोंमें यह एक नई परेशानी और जुड़ रही है; क्या यह कुत्ता भी जिसे वो इतना प्यार करते हैं, उनके ख़िलाफ़ साज़िशमें शरीक़ है?—क्या यह भी अवधका तख्तोताज चाहता है?—या ख़ुदा

रहम ! या परवरदिगार अँधेरेकी इन चक्करदार गलियोंमें नजातकी सीधी राह दिखा—अंधेकी लाठी बन—दुनियाके सबसे ज़्यादह दुखी लाचार इंसान आलमपनाह ग़ाज़ीउद्दीन हैदरको पनाह दे ! उसे तेरी रहमतके साये की ज़रूरत है ।…………कुत्ता लगातार भौंक ही रहा है, क्या हो गया है इस कुत्तेको ? मेरी मुसीबतके वक्त क्या यह अदना जानवर भी मेरे सामने शहज़ोर बनना चाहता है ?—"सुलखिया, दारोगाको बुला ।"

थोड़ी देरमें दारोग़ाने आकर ताज़ीम दी ।

"अमीरअली, पहाड़ी क्यों भौंक रहा है। और तो कभी इस तरह दिक़ न करता था ।"

"यूँ तो पहाड़ी बड़ा समझदार जानवर है हुज़ूर, मगर इस सड़ी गर्मीका असर शायद हो। मैं अभी इसको यहाँसे हटवाये देता हूँ आलमपनाह ।"

"नहीं, पहाड़ी मुझे इन्सानोंसे ज्यादा अज़ीज़ है । इसे यक़ीनन कोई सख्त तक़लीफ़ है जिसे वह इस तरह इज़हार करना चाहता है। उसे क्या तक़लीफ़ है अमीरअली ? फ़ौरन उसे राहत दो ।"

अमीरअलीने फ़ौरन झुककर अर्ज़ किया—"ग़ुलाम पहाड़ीकी खिदमतमें ही इतनी देरसे लगा हुआ है ज़िल्ले सुब्हानी । इसके सरपर बराबर केवड़ा छिड़का जा रहा है, पंखा भी झला जा रहा है आलमपनाह ! पहाड़ी हिमालियाका जानवर है । उसे गरमी बेहद सताती है । अगर एक सेर ग़ुलकन्द इसे रोज़ दिया जाय तो यक़ीनन पहाड़ी सेहत दस्तयाब कर लेगा आलीजाह ।"

"तो फिर यही करो । खुदाके लिए उस बेज़बानको सुकून दो । वह बेज़बान अगर इज़हारेदर्द नहीं कर सकता तो क्या उसकी कोई भी न सुनेगा ।"

आलमपनाहने एक जानवरको कष्टसे उबारा है, उन्होंने एक बेज़बान

की तक़लीफ़को पहिचाना है। क्या खुदावन्दे क़रीम उन्हें उसका सिला न देंगे ?

आलमपनाहका दुखी मन रसधारामें प्रवाहित करनेके लिए बड़े मौक़े से संगीत छेड़ दिया, ग़जलका आशय था—ऐ दुनियाके मालिक! तूनें खुले आसमानमें खड़े होकर धूप, आँधी और तूफ़ान सहनेवाले दरख्तोंको अपनी छायाका सन्तोष दिया है। वह स्वयं तपकर भी अपनी छायासे जगको शीतल करता है और यही उसका सबसे बड़ा सन्तोष है।

संगीत पूरा हुआ, ऐसा लगा जैसे ज़र्रा-ज़र्रा होकर संगीत वातावरणमें अपनी गूँज भर गया। सुलखियाकी सहज दर्दमें डूबी मिठास भरी सुरीली आवाज़ ग़ाज़ीउद्दीनके प्राणोंमें सिहरन और गूँज भर गई। बाज़के पीछा करनेपर असीम आकाशको अपने नन्हें परोंसे नापते हुए एक छोटा पंछी जब घायल और चूर-चूर होकर हर तरहसे लाचार और बेसहारा हो गया और तब मानो अचानक उसे किसीके दामनकी छाँव मिल गई, किसीके दिलकी धड़कनोंसे उसके मुर्दादिलको नई धड़कनें मिल गईं। सहारा अजब चीज़ है। गहरेमें—पाताल तक गहरे खड्डमें नुकीली चट्टानों से टकराता हुआ इन्सानका मन जब बेपनाह गिरता ही चला जाता है तब कभी-कभी, उसे यह सोचकर भी चैन मिल जाता है कि—"अरे अभी पाताल मुझसे बहुत नीचे है, बहुत दूर है—मौत अभी बहुत-बहुत दूर है...मैं हवामें ठहरा हूँ, सूनेपनने मुझे थाम लिया है।" बाहरी तौरपर मनका यही सूनापन अपने आपको भरनेके लिए किसी भी बहानेसे काम चला लेता है। जब कभी भयमें बेहोश मन अनायास ही होशके दौरसे गुज़रने लगता है तब उसे कोई भी वस्तु जीवनदायिनी, स्फूर्तिदायिनी मालूम पड़ने लगती है। संगीत, कविताका भाव, उसकी तात्कालिक प्रतीति, करुण सुरीला कंठ, सब मिलकर अथाह समुद्रमें डूबते हुए बादशाह ग़ाज़ीउद्दीन हैदरको जहाज़के सहारे सा लगा। बादशाह भर नज़र टक-टकी साध कुछ देर सुलखियाको देखते ही रह गये—ठमका क़द, गेहुँआँ

रंग, बड़ी-बड़ी हिरनके बच्चे-सी भोली दर्दसे भीनी आँखें, उसकी सादगी, बादशाहको अपनी ओर तकते देख नज़र झुकाये हाथ बाँधे तस्वीर सी खड़ी थी। बादशाहको ताकने देनेके लिए बाँदीने अपने-आपको इतना खामोशीसे लय कर दिया था, कभीसे पलकोंके झरोखेसे पुतलियोंकी बेबसी बाअदब झाँक जाती। ज़िल्ले सुब्हानी सुलखियाके बहाने एक सपनेमें बँध गये थे।

इमाम बाँदीने हुज़ूरेआलीके होठों तक जाम बढ़ाया, ग़ाज़ीउद्दीनने हाथ झटककर खोई हुई आवाज़में हुक्म दिया :

'तख़्लिया।'

ग़ाज़ीउद्दीनकी नज़रें तब भी उसी तरह सुलखियाकी ओर टकटकी लगाये देख रही थीं; सुलखिया वैसी ही तस्वीर बनी खड़ी थी। ग़ाजीउद्दीन पलंगसे उठे, सुलखियाके पास तक आये, वह तस्वीर बनी रही, मानो वह जानती थी कि उसका मालिक इस वक़्त उसे तस्वीरनुमा ही देखना चाहता है। ग़ाज़ीउद्दीन उसके नज़दीक आ कन्धेपर हाथ रख उसे बहुत आहिस्ता दबाते हुए पल-दो-पल एकदम खामोश खड़े रहे। उस वक़्त सुलखियाने मानो साँसें लेना भी बन्द कर दिया था। ग़ाज़ीउद्दीन उसीतरह खामोश एक डग आगे बढ़े; सुलखिया बेजान तस्वीरसे जानदार साया बन गई, अपने आक़ाएआलमके साथ क़दम साधकर चलने लगी। दोनों गोमतीकी ओर वाले दरवाज़ेके पास आये। रात तारोंसे सजी हुई थी, नदीकी लहरें अक्सर टकराकर खामोशीमें संगीत पैदा कर रही थीं, तारोंकी रोशनीमें पानी और आसमान एकसे चमक रहे थे। शाहे अवधको अब वो दूर टिमटिमाता हुआ चिराग़ बुरा मालूम हो रहा था—वो लाल-लाल जलता सितारा, वह मनहूस चिराग़, जो इस गहरे सुकूनमें जलनका एहसास कराता है—बादशाह सलामतका हुक्म चूँकि उसे तुरंत बुझा नहीं सकता था, लिहाज़ा वे आड़ ले पच्छिमकी ओर मुँहकर खड़े हो गये।···तारों भरी रात, छलछल करती नदी, कालिखमें रंगे उस पारके दरख़्तोंके अधगोल घेरे, गुम्बद, मीनारें और पास खड़ी हुई सुलखिया

सब कुछ एक ख्वाब था। बादशाह ग़ाज़ीउद्दीन हैदर जो दुनियामें किसीसे अपना मन नहीं खोल पाता, जिसे दुनियामें किसीसे भरोसा नहीं मिलता, अपने आपसे भरोसा पानेका हठ लिये सपनेमें उसे पा रहा है। बादशाहका घुटता हुआ मन खुलना चाहता है, उनके मनकी बातें अपनी ख़ामोशीको तोड़नेके लिए आवाज़के पंख पाना चाहती हैं, उसके लिए वे बेताब हैं—"सुलखिया।"

"आलीजाह।"

"मन, जानती हो किसे, कहते हैं?"

"हमसायेको, जहाँपनाह।"

"लेकिन इस हमसायेको छूना अकसर गुनाह भी होता है। मनकी दोस्ती खतरनाक़ है।"

"मगर मनसे दोस्ती किये बग़ैर किसीका भी गुज़ारा हुआ है जहाँ-पनाह?"

"हूँः—।" ग़ाज़ीउद्दीन सोचमें पड़े। हुंकारी भरी फिर डूबी हुई आवाज़में बोले: "मनको दोस्त बनाना ही पड़ता है। दिलको दिलसे ही राहत है वरना इन्सान बेसहारा हो जाये।···सुलखिया, तू मेरा मन बन सकेगी?···मैं ख़ामोश मन नहीं चाहता, बोलता मन चाहता हूँ। मैं बादशाहका मन नहीं चाहता, इन्सानका मन चाहता हूँ। मैं दल-दलसे उबर कर सधी ज़मीनपर पाँव रखना चाहता हूँ। क्या तू यह भूल सकेगी कि तू मेरी बाँदी नहीं, मेरा मन है?"

पहली बार अपनी बड़ी-बड़ी आँखोंसे टकटकी बाँधकर अपने बादशाहको देखते हुए बाँदीने कहा।

"मनका ग़ुलाम होना ही अच्छा है।"

"मगर मालिकको खुश रखनेके लिए नौकर झूठ बोलता है। और मैं इसी झूठसे घबरा गया हूँ--इसीसे पनाह चाहता हूँ।" ग़ाज़ीउद्दीन

दीवानेकी तरह बोलते ही चले जा रहे थे, जब वो ख़ामोश हुए, एक घुटनके मोड़पर रुके तो सुलखिया शान्त स्वरमें बोली : "मालिकको खुश रखना बाँदीका फ़र्ज़ है, मगर खुशी सिर्फ़ ऊपरी सतहपर ही नहीं होती जहाँपनाह।"

बादशाहको इस जवाबसे बड़ी राहत मिली। उन्होंने उसे सीनेसे लगा लिया, बड़बड़ाने लगे : "या ख़ुदा एकको मेरा बना ! एकको मेरा बना। या ख़ुदा छाँव दो। परवरदिगार, मेरे गुनाहोंपर रहम !"

सुलखियाने फ़ौरन सिर उठाया। बोली : "ग़ुलामोंमें सिर्फ़ मनको ही यह हक़ हासिल है कि वह अपने साहबसे हर तरह बात करले।"

"बोलो क्या कहना चाहती हो ?"

"हुज़ूर किस बातसे डरते हैं ?"

"डर अपनी इन्तहापर पहुँच चुका है, सुलखिया। शरीफ़ इन्सान दुनियामें सबसे ज्यादा अपनी बेआबरूईसे डरता है, ग़ाज़ीउद्दीन हैदर उस डरको भी पार कर गया है। क्या तुम यह कह सकती हो सुलखिया कि इन दिनोंकी वारदातसे लोग मेरे बारेमें भला-बुरा न कहते हों।"

"कहते हैं जहाँपनाह।"

"दुनियामें शरीफ़ आदमी जिन बातोंसे डरता है क्या मैं उनके लिए बदनाम नहीं हो चुका ?"

"ज़रूर हुए।"

"और क्या यह बादशाहत झूठी नहीं ?"

"झूठी है बन्दानवाज़ ! आप अंग्रेज़ोंके, आग़ा मीरके, अपने हर अमलेआमिलके खिलौने हैं, आप ख़ुद अपने भी खिलौने हैं जहाँपनाह।"

"सच कहती हो। मैं वाक़ई इन्सानकी शक्लमें आज पहली बार अपने मनकी बातें सुन रहा हूँ। ख़ामोशीमें कही जानेकी वजहसे जिन बातोंको

मैं अपने आपमें साफ़ साफ़ नहीं सुन पाता था, जो सवालात बवण्डरकी तरह मेरे मनमें उठा करते थे, उनके जवाब पहली बार सुन रहा हूँ।"

सुलखिया भी उद्दाम भावावेशमें बह गई, लेकिन अन्तर्धाराकी तरह—ऊपरी सतह पर उसकी वाणीमें उसकी तीव्रताकी अनुभूति तो होती थी, मगर बड़े संयम-संतुलनके साथ; उसने कहा: "आपने इस नाचीज़को अपना मन कह कर जो रुतबा दिया है उससे बढ़कर मैं और कुछ पानेकी सोच भी नहीं सकती। आप बादशाह न होकर फ़क़ीर होते तब भी इससे बढ़कर मैं और कुछ न पाती। भरोसा रखिये, पल-पल पर अपने मनको कसौटियों पर चढ़ा लीजियेगा हुज़ूरे-आलम—मैं आख़िरी साँस तक आपके पाँवोंतलेकी हरी-भरी धरती बनी रहूँगी।"

"अच्छा सुलखिया, क्या ये सच हो सकता है कि जन्नत मकानी बुज़ुर्गोंकी बेगमातको पेंशनकी रक़म नहीं मिलती थी?"

"शाहे-अवधकी सरकारमें कौन-सी बेईमानी नहीं होती?"

"तुम हमें फिर कुएँमें ढकेल रही हो सुलखिया, हम यह नहीं सुनना चाहते।"

"मनकी बात है हुज़ूर, किसी परायेकी नहीं जो बुरी नीयतसे कही गई हो।"

"क्या तुम इस बातको ज़ोर देकर कहती हो?"

"क्या हुज़ूरको खुद नहीं मालूम?"

"ठीक-ठीक मालूम नहीं, पर महसूस ज़रूर करता हूँ। शाही निज़ाममें ख़राबी न होती तो अंगरेज़ हमारे ही घरमें आकर हमारे मालिक क्यों हो जाते।"

"लेकिन जहाँपनाह यह भी तो सोचिये कि शहरमें बदनामी किसकी होगी? जो सुनेगा क्या कहेगा?"

लम्बी आह भर कर बादशाह सलामत बोले: "सब जानता हूँ। क्या करूँ बड़ा बेबस हूँ मैं अपनी ही सल्तनतमें खुद कुछ नहीं कर सकता।"

"यह आलीजाहका एक ख़याल है।"

ग़ाज़ीउद्दीनने हँस कर कहा—"सुलखिया, तुम यह नहीं समझ सकतीं। जन्नत मकानी अब्बा हुज़ूर कहते थे कि अंगरेजोंका जाल मिस्ले घासकी जड़के है, जितनी ही काटो उतनी ही बढ़ती है। कल अगर मैं सल्तनतका इन्तज़ाम ख़ुद देखने लगूँ तो जानती हो क्या होगा? दस बदइन्तजामियोंके लिए गवर्नर जनरलके ख़त पर ख़त आने लगेंगे। एक अच्छाई करने जाऊँगा, आग़ामीर उसकी राहमें हज़ार रुकावटें डालेगा। जानती हो सुलखिया, आग़ामीरकी कोठीका मुक़ाबला शहर भरमें किसी कोठीसे नहीं किया जा सकता। एक बार मेरे जासूसने ख़बर दी थी कि आग़ामीरकी सवारी शान-शौकतमें शाही सवारीसे टक्कर लेती है। जीमें आया कि आग़ामीरको आगाह कर दूँ। फिर सोचा अंगरेज जिसे शह दे रहे हैं वह मेरी हुक्मउदीली भी कर सकता है। अपनी इज़्ज़तको डरता हूँ सुलखिया।"

"काश कि डरते होते आलमपनाह। मैं यह नहीं जानती कि अँगरेज या वज़ीरेआज़म क्या करेंगे, मगर यह ज़रूर जानती हूँ कि रिआया अपने बादशाहको पहचान जायगी। रिआयाका साथ ही बादशाहको बादशाह बना सकता है।"

ग़ाज़ीउद्दीन कुछ देर तक बात पर ग़ौर करते रहे। फिर बोले—"हमने तेरी सलाह पसन्द की सुलखिया, हम उसूलकी परवाह करेंगे, किसी शख़सकी नहीं।" शाहेअवधके कुम्हलाये चेहरे पर उनके मनका तेज उभर आया।

८

बादशाहबेगम बड़ी धार्मिक थीं। वे कट्टर शिया थीं, हज़रतअली और बेगम फ़ातिमामें उनके प्राण बसते थे; मगर उनका प्रेम वैसा लौकिक और पारलौकिक चमत्कार नहीं प्रकट कर पाता जैसे कि हिन्दू अपने

कन्हैया जीके प्रति प्रकट करते हैं। उन्होंने भी श्रीकृष्णकी छठीके समान इमाम मेहदीकी छठी मनाना आरम्भ किया। शाही खान्दानकी तमाम औरतें आतीं, झाँकी सजती, नाच गाना होता, खैरात बँटती, बड़ा जश्न होता।

बहुतसे उलेमाओंको यह हिन्दुआनी सुधार पसंद नहीं आता था। अलावा इसके मज़हबके मुआमलेमें किसीकी, खासतौर पर शाही घरानेके किसी शख्सकी दखलंदाजी वे पसन्द नहीं कर सकते थे मगर बादशाह बेगम कब किसीकी परवाह करती थीं। उन्होंने अपने महलमें इस्लाम संगठनके बारहों इमामोंके रौज़े बनवाये जो रौज़ा-ए-दो वज्दा इमाम कहलाते थे। हर रौज़ेमें ज़री रक्खी गई थी और हिन्दू मन्दिरोंमें देवताको अर्पित देवदासियोंकी भाँति हर इमामको एक एक पत्नी भी अर्पित की गई थी। ये इमाम पत्नियाँ अछूती कहलाती थीं। उत्तम सैय्यद कुलोंकी सुन्दरी कुआंरी कन्याएँ इसके लिए चुनी गईं। जिन लड़कियोंके माता-पिताओंने देवकार्यके लिए अपनी कन्याओंको बादशाह बेगमकी बात मान कर अर्पित कर दिया उन्हें तो यथेष्ठ धन मिल गया परन्तु जो राज़ी न हुए उनकी लड़कियाँ तरक़ीबसे उड़ा ली गईं।

बादशाहबेगमके महलमें इन अछूतियोंका बड़ा मान था। खुद बादशाहबेगम सुबह उठते ही किसी अछूतीका मुख देखकर अपना दिन शुभ करती थीं, उन्हें झुककर सलाम करती थीं। हर अछूतीकी सेवामें तीन-तीन बाँदियाँ रहती थीं। अच्छेसे अच्छे कपड़े, गहने, खाने-पीनेकी चीज़ें इन अछूतियोंको इफ़रातसे मिलती रहती थीं।

सातों सुख होते हुए भी भरी जवानीमें अपने मनको मारना बहुत-सी अछूतियोंके लिए कष्टप्रद हो जाता था। बादशाहबेगमका कड़ा नियन्त्रण रहने पर भी शाही महलोंसे विलास-व्यभिचारका वातावरण बदल नहीं सकता था। नसीरुद्दीनको अपने वशमें रखनेके लिए स्वयं उन्होंने ही उसके महलोंमें रंगरेलियोंको बढ़ावा दिया था। महलोंकी बाँदियों और

महलोंके प्रबन्धसे सम्बन्धित पुरुषोंके रिश्ते नाते आये दिन चोरी छिपे बँधा टूटा ही करते थे, चुपचाप शराबका प्रयोग भी होता ही था। ऐसे वातावरणमें अछूतियोंका मन वशमें रह नहीं पाता था।

कल एक अछूतीने बड़ा नाटक किया। आधी रातमें अचानक सिरके बाल खोल, कपड़े नोच, छाती पर दुहत्थड़ मार मार कर रोना और चीखना शुरू किया : "हाय मैं लुट गई। या अल्लाह, मैं कहींकी न रही ऐ मेरे मालिक, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था जो मेरी ज़िन्दगी बिगाड़े जाते हो?"

बाँदियोंके समझाये न समझी, फ़ैज़न बीबीके चुपाये न चुपी। रोती बेहोश होती, दीवानापन करती ही रही। आखिरकार हुज़ूर बेगमसाहबा खुद तशरीफ़ लायीं। बहुत समझाया, ढाढ़स दिया, कलेजेसे लगाकर पूछा तब अछूतीने रो रो कर बतलाया कि उसके इमाम पतिने अभी-अभी उसे सपनेमें तलाक़ दे दिया है।

अछूती बिलख-बिलखकर रो रही थी। बादशाहबेगम भी बेचारी बड़ी बेबस थीं। यों वह किसी अछूतीके अपने इमाम पतिको छोड़कर बाहर शादी करनेकी बातका बहुत बुरा मानती हैं, मगर इसका क्या करें जिसके इमाम पतिने ही तलाक़ दे दिया है।

आज सुबह ही वह अछूती बड़े क़ीमती गहनों, कपड़ों और वैभवके साथ अपने पिताके घर भेज दी गई। दूसरी अछूतियोंको उसकी भाग्यपर ईर्ष्या हुई।

बेगम साहबा बड़ी उदास थीं। एक रौज़ा अछूती बिना सूना था— पिंजरेकी मैना उड़ गई थी। रौज़ोंके सामने दालानमें फ़र्श पर एक कालीन पर बैठी हुई क़ुरानशरीफ़ पढ़ रही थीं। फ़ैज़न बीबीने आकर रुस्तम नगरसे बीबी मुलाटीके आनेका समाचार दिया। बादशाहबेगमने उत्साह-पूर्वक उन्हें फ़ौरन लानेकी आज्ञा दी।

बादशाहबेगमने उठकर बड़े आदर भावसे बीवी मुलाटीका स्वागत किया। बादशाहबेगम किसीको इतना आदर प्रायः कम ही दे पाती हैं। उनका अहंकार सहज स्वभाव है इसलिए किसीको अपनी बराबरीका भी नहीं समझतीं अपनेसे बड़ा मानना तो बड़ा कठिन है। बीवी मुलाटीने उनकी ज्योतिष गणना की एक बहुत बड़ी भूलको सुधारा था। उनकी भूलके कारण ही मुन्नाजानके जन्मकी घटना इतना विवादग्रस्त विषय बन गई। इन्हीं कारणोंसे बीवी मुलाटीके प्रति उनका इतना आदरभाव था। मोटे कपड़ेका चूड़ीदार पायजामा, कुरता पहने और सफ़ेद मोटी ओढ़नी ओढ़े सनसे सफ़ेद बालोंवाली, सात्विक तेजसे दीप्त वयोवृद्ध, ज्ञान वृद्ध देवी सहजभावसे बादशाहबेगमके पास बैठ गईं। उनके साथ ही सादे लिबासमें दुलारी भी आई थी। नईमके विरहसे दग्ध, अपने अपराधके लिए दण्डित किये जानेका पश्चात्ताप और भय, महलमें नौकरी पानेकी महत्त्वाकांक्षाको सिद्ध करनेके लिए जगाया गया संयम,—सब मिलकर दुलारीको एक आभा प्रदान कर रहे थे, उसकी तड़पती हुई सलोनी जवानी भय और संयमकी भस्म लपेटे हुए सन्यासिनी जैसी लगती थी।

बीवी मुलाटीकी आवभगत करते हुए बीच-बीचमें तीन चार बार बादशाहबेगमकी नज़रें दुलारीके चेहरेसे अटकीं। बादशाहबेगमको मुजरा कर दुलारी सच्चरित्रताकी पुतली बनी हुई बड़े सलीकेसे सिर झुकाये खड़ी थी। बादशाह बेगम जान गईं कि उनकी फ़रमाइश पर बीवी मुलाटी इसे धायकी उम्मीदवारीके लिए लाई हैं। बेगम साहिबाकी नज़रों में दुलारी जँच गई। मगर उन्होंने उसके बारेमें कुछ न पूछा; बीवी मुलाटीसे ज्योतिष चर्चा ही करती रहीं। जौज़ामें ज़ोहरा है, सरतानमें मुश्तरी है, सुम्बुलामें क्या है और मीज़ानमें कौनसा ग्रह है—यही चर्चा चलती रही। हिन्दुओंके गोचर सिद्धान्तसे इस समय बादशाहबेगमके ग्रह कैसे हैं, किस ग्रहके कहाँ रहनेसे बादशाहबेगमका इस समय क्या भला बुरा होगा इसकी सूक्ष्म विवेचना होने लगी। बीचमें एक बार दुलारीको औचक

में देखा। दुलारी आश्रय पानेकी कामनासे श्रद्धामयी हो बड़ी करुण दृष्टिसे टकटकी लगाये बादशाहबेगमको देख रही थी। दोनोंकी नज़रें मिलते ही दुलारीके मन प्राणमें कम्प हो गया; दीनता पर आतंककी यह छाया बादशाहबेगमको भा गई—"बैठ जाओ!"

बेगमसाहबाकी रोबीली आवाज़से परिचालित होकर दुलारी ऐसे बैठ गई जैसे हवाके झोंकेसे डालीका फूल टूटकर धरतीपर गिरा हो—फूलका गिरना गिरना-सा नहीं मालूम होता, भला लगता है। दुलारी दोज़ानू होकर बैठ गई। सामने इमामोंकी अछूतियाँ—आठ, दस, बारह-तेरह बरसकी उम्रवाली यह खूबसूरत लड़कियाँ बादशाहबेगमके सामने होनेपर अपने-अपने इमामोंकी ज़रीके पास क़रीनेसे बैठी हुई लिख पढ़ या तस्बीह फेर रही थीं। बादशाहबेगमके चारों ओरका वातावरण बड़ा सात्त्विक लगता था। उनका सुन्दर अतिगौर मुखमंडल राजसी दर्प और तप तेजसे जैसा दीप्त दिखाई देता था वैसा ही उनके चारों ओरका वातावरण भी था। नियम संयमसे साधी गई हर सुन्दरी अछूतीके मुखपर सात्त्विकताकी छाप थी। किसी ओर भी चञ्चलता नहीं थी। वातावरण सात्त्विक, गम्भीर, आतंक भरा, शान्त था। बाँदियाँ भी आमने-सामने नहीं बल्कि इधर-उधर दूर-दूर दरवाज़ोंकी आड़में बैठी बेगमसाहिबाके किसी भी हुक्मके लिए हरदम चुस्त और तैयार थीं। दुलारी बीच-बीचमें दबी कनखी उठाकर इधर-उधर देख जाँच लेती थी। बादशाहबेगम और बीवी मुलाटी तख्तीपर लग्नकुण्डली बनाये बैठीं उसपर विचार कर रही थीं। उनकी बातें बहुत धीरे-धीरे हो रही थीं। कहीं किसी क़िस्मका शोर न था। सहसा सामनेके दरमें, सोनेके पिंजरेमें मैना बोल उठी—"अम्मी हुज़ूर, साहबेआलम तशरीफ लाते हैं। साहबेआलम तस्लीमात! अम्मी हुज़ूर साहबेआलम तशरीफ़ लाते हैं। साहबेआलम तस्लीमात।"

बादशाहबेगमकी कठोर पुतलियोंमें स्नेहकी आभा आई, बीबी मुलाटी अदबसे उठ खड़ी हुई, बाँदियाँ चारों ओरके दरवाज़ोंसे निकलकर अदबसे

सुलेमानजाहको कोर्निश करने लगीं। सल्में सितारे जड़ी, चाँदीके ज़ेवरों, रंग-बिरंगे कपड़ोंसे सजी बाँदियोंका इधर-उधरसे निकलकर आना, आदाब पेश करना और बाअदब पीछे हट जाना ठीक उसी तरहसे लगा कि जैसे तालाबके शान्त पानीमें एक ढेला गिरा हो—लहरें उठीं सारे तालाबमें तरंगे छा गईं और फिर सब शान्त हो गया। साहबे आलमके तशरीफ़ लानेपर बादशाहबेगम न उठीं, रौज़ा-ए-दोवज़्दा इमाममें बैठी हुई अछूतियाँ न उठीं। सुलेमानजाहने अपनी माताको सलाम किया, रौज़ोंकी तरफ़ देख, झुककर तीन बार सलाम किया, बादशाहबेगमके बिल्कुल पास बैठनेका परम आदर पानेवाले तपःपूत बुढ़ापेको सलाम किया और माँके पास किसी हद तक बेतक़ल्लुफ़ीसे, बच्चोंकी तरह बैठ गया।

नसीरुद्दीन हैदर गोरा छरहरे बदनका लम्बी नाक और बड़ी-बड़ी आँखोंवाला आकर्षक युवक था, उसकी चाल-ढाल बात-चीत हर अन्दाज़में लापरवाही, शान और तेज़ी थी। नसीरुद्दीनकी बड़ी-बड़ी भूखी आँखें हर तरफ़ कुछ पानेकी चाहमें अपने अन्दरकी भरपूर ताक़त लगाकर टूटती थीं; शाहज़ादेकी आँखोंकी पुतलियाँ अपने सवालिया निशानसे सबको बाँध लेती थीं। आमतौरपर बड़ी चञ्चलतासे वह इधर-उधर देखता था। उसकी नज़र दुलारीसे भी अटकी। दुलारी युवराजके पधारनेके बाद अपने आदाब पेश करनेके लिए जो उठी थी, सो खड़ी ही रही। अम्मी हुज़ूरके सामने चञ्चल हठी नसीरुद्दीन हैदर बहुत संयममें सध जाता था। तपस्विनी धर्मपरायणा माताके प्रति, रसूलेपाक, हज़रतअली हज़रत फ़ातिमा और सब इमामोंके प्रति, उनके इन रौज़ों, इन अछूतियों, अपनी माताकी सुधारवादी नई धार्मिक परम्पराओंके प्रति उसे अपार श्रद्धा थी। वह माताके पवित्र स्थानमें, इस देवस्थानमें सदा अपने उच्चैश्रवा मनपर लगाम साधे आता था।

अम्मी हुज़ूरके पास आकर उनके पास दोज़ानू हो बैठकर कभी क़ालीनका रेशा नोचकर उछालना, कभी तश्तरीमें रक्खी हुई मिट्टीकी बनी हरी

गुलाबी बत्तियोंको छूना, कभी इधर मुड़कर देखना, कभी उधर नज़र फेंकना,—संयममें बहुत बँधकर भी सुलेमानजाहका अल्हड़पन मचलता ही रहा। दुलारीपर एक बार नज़र गिरी—संयमको खरोंच लगी। मगर बातके ज़ोरमें वह खरोंच मालूम न पड़ी। नसीरुद्दीन अपनी माँसे एक धार्मिक प्रस्ताव लेकर परामर्श करने आये थे कि जिस तरह इमाम पत्नियों के लिए अछूती बालायें रक्खी गईं हैं, उसी तरह इमामोंके प्रतीक रूपमें अछूते बालक भी रक्खे जायँ। माताको यह प्रस्ताव पसन्द आया, उन्होंने बीवी मुलाटीसे अपने बेटेकी धार्मिकताके बखानमें भाव भरा एक वाक्य कहा और फिर साहेबआलमसे फ़रमाया कि अमीरुज्जिन्नात शाह सुलेमानसे पूछकर जवाब दूँगी।

अछूतोंका प्रस्ताव रखते हुए सुलेमानजाहकी नज़र औचक दुलारीके चेहरेपर गिरी और इस बार अछूती न रह सकी, जितनी देर बादशाहबेगम बातें करती रहीं उतनी देरमें बादशाहज़ादेकी नज़र कई बार बिजली-सी चमककर दुलारीपर गई। दुलारीकी दबाये न दबनेवाली हविस-भरी जवानी कठोर संयममें कसी हुई अपने दुहरे उलझावमें नसीरुद्दीनको अटकानेमें सफल हुई।

"अम्मी हुज़ूर, ये नई अछूती आई हैं ?" साहबेआलमने पूछा।

दुलारी अपने अन्तरकी सारी पवित्रता उँडेलनेमें और लय हो गई।

बीवी मुलाटीने परीक्षाकी तीखी दृष्टिसे रुस्तमअलीकी दुलहनको देखा।

बादशाहबेगमने बेटेकी बातपर दुलारीको फिर देखा—'सुलेमानजाह का कहना ठीक है। लड़की नेक दिल और पाकीज़ा लगती है। बच्चेको ऐसी ही औरतका दूध मिलना चाहिए'—शाहज़ादेके प्रश्नपर दुलारीके सम्बन्धमें सारी बातोंका निर्णय बादशाहबेगमके मनमें क्षणमें जम गया। ज़ाहिरा तौरपर बेटेके भोलेपनपर मुसकुराकर बोलीं—"तुम्हारे बेटेकी दाई होनेके लिए उम्मेदवार है।"

नसीरुद्दीनने फिर और कुछ न पूछा। बाँदीने जड़ाऊ गिलौरीदान हुज़ूर बेगमसाहिबाके सामने पेश किया। अम्मी हुज़ूरने साहबज़ादेको अपने हाथों बीड़ा दिया, साहबेआलमने झुककर आदाबअर्ज़ किया। रौज़ों को सलाम किया और जाते-जाते दुलारीपर एक बार और नज़र डाली, मैनासे दो बोल बोले-बुलवाये फिर तशरीफ़ ले गये।

सुलेमानजाहने शाही हकीमोंको यह कहकर सचेत कर दिया कि रुस्तम-नगरकी बुढ़िया आलिमाके साथ आई हुई लड़कीका दूध मुन्नाजानके लिए निहायत सेहतमन्द है। उधर दुलारी बादशाहबेगमके मन चढ़ चुकी थी।

उस समय दुलारीके ग्रह उच्चके थे। सामने खड़ी एक अछूतीकी बाँदीको बुलाकर बादशाहबेगमने उसे दुलारीको उस वक्त तक अपने पास रखने का हुक्म दिया जबतक कि शाही हकीम दूधकी जाँचकर उसकी किस्मतका फैसला नहीं कर देते। बीवी मुलाटीके लिए उन्होंने खास अपने कमरेके नज़दीक ही ठहरनेका इन्तज़ाम करवाया, बीवी मुलाटीके ग्रह भी इस समय बहुत अच्छे थे।

और स्वयं मरियमुल अस्मत बिल्किस-उस-सितवत महलखास हुज़ूर बादशाहबेगमके ग्रह नक्षत्र!—बीवी मुलाटी उनका ही विचार कर रही थीं।

उन दिनों अवधके वज़ीर मुतमातुद्दौला आग़ामीर और बादशाह-बेगम में एक दूसरेको तबाह कर देनेके लिए बड़ी लाग-डाट चल रही थी। बादशाह बेगम मुन्नाजानको राजकुलोचित सन्मान और अवधके सिंहासन पर उसका अधिकार प्रतिष्ठित करानेके लिए दृढ़प्रतिज्ञ थीं।

९

बादशाहबेगमकी आज्ञासे दुलारी ज़हूरन नामकी एक बाँदीके साथ टिकी। दुलारी और ज़हूरनमें खूब पटी। मुन्नाजानकी धाय नियुक्त हो जाने

के बाद भी उसने ज़हूरनके साथ रहना न छोड़ा। उसके पास वाली कोठरी में ही उसने अपने रहनेके लिए स्थान भी प्राप्त कर लिया। मुन्नाजानका लालन-पालन भी उसने बड़े मनोयोगसे करना आरम्भ किया। पाँचों वक्त नमाज़ पढ़ती। बच्चा जब सो जाता तो उसके सिरहाने बैठ कर कुरआन-शरीफ़ पढ़ा करती, कहती कि इससे बच्चेकी मानसिक प्रवृत्तियाँ धार्मिक होंगी। बादशाहबेगम मुन्नाजानको हरदम अपनी आँखोंके सामने ही रखती थीं, उसे अपनी माँके पास भी बहुत कम जाने देती थीं। दुलारीके रहन-सहन, बात चीत, बच्चेके लालन-पालन कार्यसे वे बहुत संतुष्ट थीं। दुलारी उन्हें दूसरी बाँदियोंसे अलग मालूम पड़ती थी। उसकी धार्मिकतासे वे प्रसन्न थीं। दुलारी बड़ी बूढ़ियोंकी तरह बर्ताव करती, जब कभी उसको मनबहलावका अवकाश प्राप्त होता, वह जहूरनकी मालकिन अछूती इमाम पत्नीके पास ही जाकर बैठती थी। दुलारी बड़ी ही सादगीसे रहती, हाथोंमें चाँदीकी चूड़ियोंके अलावा वह और कोई आभूषण नहीं पहनती थी। सफ़ेद कपड़े पहनना ही उसने अपना नियम बना रक्खा था। शाही महलमें उसने अपना परिचय दो बच्चों वाली विधवा कह कर ही दिया था; उसके बच्चे अपनी दादीके पास रहते हैं यह भी सबको मालूम था। अपने छोटे से छोटे व्यवहारसे दुलारी अपनी शुचिता और धार्मिकताको प्रकट करती थी। वह हर तरहसे बादशाहबेगम और उनकी अन्यतम विश्वासपात्री वयोवृद्धा फ़ैज़न बीबीको संतुष्ट और प्रभावित करना चाहती थी।

दो महीनोंके अन्दर ही दुलारीने अपना सिक्का जमा लिया। इन दो महीनोंमें दुलारीकी सास और करीमन बीबीने दुलारीसे मिलनेके कई प्रयत्न किये, लखनऊ आकर एक रिश्तेदारके यहाँ पन्द्रहियों पड़ी रहीं, बारहा मिलनेकी कोशिश की, पैग़ाम भिजवाये, पर दुलारीने मिलनेसे इनकार कर दिया। इन दो महीनोंमें साहबे आलम नसीरुद्दीन हैदरने अपने बच्चेकी धायसे बहुत मिलना चाहा पर दुलारीने अकेलेमें मिलनेसे सदा इनकार किया। ज़हूरनने रातों उसे अपने पास सुलाकर, हर तरहकी छेड़-

छोड़ कर समझा कर साहबेआलम की ओरसे बहुत कुछ कहा पर दुलारी टससे मस न हुई ।

जब ज़हूरन कहती कि शाहज़ादेने तुम्हारे लिए दो रोज़से खाना छोड़ दिया है तो खुद भी फ़ाक़े करने लगती; जब प्रेम भरी बातें सुनाती तब दुलारी टप-टप आँसू बहाने लगती, सर्द आहें भरती। शुरूमें महीने डेढ़ महीने तक तो दुलारीने ज़हूरनकी बातोंका अपने मुँहसे कोई उत्तर ही न दिया, केवल हाव-भावसे ही ज़हूरनके मनमें पहेलियाँ उठाती रही ।

यों दुलारीने पूरे महलमें जो रसबतियाव किसीसे न किया, वह ज़हूरन से करती थी। ज़हूरन नई उम्रकी लड़की थी; चौदह पूरे कर पन्द्रहवें वर्षमें पैर रक्खा था और हालहीमें ड्योढ़ीके एक सिपाहीसे उसका मन मिल गया था । दुलारी उसके मिलनकी आकांक्षाको जगाती, उसकी विरह-वेदना को अपनी बातोंकी नक्काशीसे भरती। ज़हूरन जिन दिनों जिस रसमें रहती दुलारी उसको वैसा ही रंग देती । इसलिए ज़हूरनको दुलारी बहुत प्यारी थी, इसीलिए और भी उसे अचम्भा होता कि दुलारी साहबेआलम का प्रस्ताव मान क्यों नहीं लेती ।

एक रात ज़हूरनने बड़ी-बड़ी क़समें दिलाईं, बड़ा इसरार करके पूछा कि आखिर वह अपने इतने बड़े प्रेमीका प्रस्ताव मान क्यों नहीं लेती। दुलारी एकाएक जवाब न दे पाई ।

जिस दिन यह जाना कि साहबेआलम उसपर मरते हैं उस दिन वह मन ही मन खुशीमें फूल गई थी; उसका यौवन मद उसके दिलकी धड़कनोंमें चढ़-चढ़ धाया था । परन्तु दुलारी बादशाहबेगमसे डरती थी। वह जानती थी कि बादशाहबेगमके नाराज़ होनेसे उसका सारा जीवन चौपट हो जायगा, महलोंसे निकाली जाकर दुलारी कहीं की न रहेगी। बेगमसाहिबाको खुश करनेके लिए ही तो उसने इतने नियम संयमका धर्माचरण साधा था। वह किसी भी कीमत पर फ़िलहाल बादशाहबेगम का मन अपनी ओरसे खराब करना नहीं चाहती थी ।

और अवधके होनेवाले बादशाहको भी वह क्योंकर अप्रसन्न करे? दीन दुनियाके बादशाहके चित्त चढ़ जाय, भला इससे अधिक और क्या चाहिए। जवानीसे खेलनेकी उमंग रखनेवाली कामोन्मादिनी युवती-को नसीरुद्दीन सुहाता भी था। नसीरुद्दीन सुन्दर युवक था। उसकी प्रेम रासलीलाके बड़े बड़े क़िस्से महलमें दबी ज़बान प्रचलित थे। ऐसे रसियासे दुलारी भेंट करना ही चाहती थी मगर बेगम साहबाके भयसे वह अपने मनोभावको बराबर दबाती आई थी। परन्तु दोनों ओरकी कशमकशके साथ दुलारी यह न सोच पाती थी कि वह शाहज़ादेके पैग़ामका क्या जवाब दे, इनकार करना बुरा है लेकिन इक़रार किया नहीं जा सकता। इसीलिए वह ख़ामोश रहकर आँसुओं आहों और फ़ाक़ोंसे इज़हार मोहब्बत कर शाहज़ादेको अपनी ओर बाँधती जाती थी और अपना काम भी साधती जाती थी।

आज जब ज़हूरनने बहुत ज़ोर देकर पूछा तो दुलारीको लगा कि कोई न कोई जवाब देना ही चाहिए। चार छः रोज पहले ही उसने एक रोज़ फ़ैजनबीवी और बादशाहबेगममें होनेवाली बातचीतके दौरमें बादशाहबेगमको एक बात कहते सुना था। फ़ैज़नबीवीने कहा था कि—"बादशाह आपसे बहुत नाराज़ हैं। कुछ भी हो आखिर आपके शौहर हैं आपको उन्हें जाकर मनाना चाहिए।" इसपर बादशाहबेगमने तमककर जवाब दिया था कि—"मेरे शौहर तो अमीरुज्जिन्नात हैं। बहुत बचपनमें ही मेरी उनकी प्रीत लड़ गई थी।" इसके बाद बेगमसाहबाने नज़ीर देते हुए अकबर बादशाहके ज़मानेकी एक तवारीखी बात सुनाई। मेवाड़की हिन्दू महारानी मीराबाईका बचपनमें ही कन्हैयाजीसे इश्क़ हो गया था; उन्होंने भी कन्हैयाजीको छोड़ कभी अपने शौहरको शौहर नहीं माना।

दुलारीने उस बातको इस वक़्त अपने रंगमें ढाला। एक सर्द आह छोड़कर अपनी सहेलीको तड़पते आलिंगनमें कस, बन्द आँखोंसे नीर ढलकाते हुए, दो पल भरे गलेसे ख़ामोश रह काँपते स्वरमें कहा: "क्या

कहूँ ! कुछ कहते नहीं बनता। मेरे बचपनका ख्वाब हक़ीक़त बनकर आया है, और मैं बड़ी लाचार हूँ।"

और उसके बाद कुछ देर रो-धोकर फिर उसने अपने बचपनकी अजीब ग़रीब कहानी सुनाई कि खैराबादमें वह एक बड़े नवाब ख़ान्दान में पैदा हुई, बड़े नाज़ों पली; और फिर एक दिन जब कि वह सात बरसकी थी सितारोंकी गर्दिशने उसका सब सुख चैन लूट लिया—"मेरे वालिदने एक नई शादी की। उस औरतने घरमें आकर ऐसी कलह बाँधी कि साल भरमें मुझको और मेरी माको घरसे निकलवा कर ही छोड़ा। मेरे वालिदने दस रुपया महीना गुज़ारेके लिए देना क़बूल किया, मगर मेरी माने लेनेसे इनकार कर दिया। हम बड़ी मुसीबतोंके दिन झेल रहे थे। कभी फ़ाक़ोंकी नौबत भी आ जाती थी। ऐसे बुरे वक्तमें एक शाह साहब हमारे दरवाज़े पर तशरीफ़ लाये और पीनेको पानी माँगा। मैंने उन्हें पानी पिलाया। मुझे देखकर वह बोले कि बेटी, तू क्यों फ़िक्र करती है, तेरा चाहनेवाला तो बादशाहोंका बादशाह होगा। इस पर मेरी वालिदाने कहा कि मुझ नसीबोंजलीकी बेटी भला शाही महलोंमें क्योंकर पहुँच सकती है ? शाह साहबने इस पर तमक कर फ़रमाया कि फ़क़ीरकी बातको झूठ समझती है ? यह देख, मैं इसके आशिक़की तसवीर भी दिखाये देता हूँ। इसके बाद शाह साहबने मेरी ओढ़नीका दामन फैला कुछ पढ़कर उसपर फूँक मारी औ ज़हूरन, क़सम हज़रत अब्बासकी, सच कहती हूँ, साहबे आलमकी तस्वीर मेरे दामन पर नक्श हो गई। बस उसी दिनसे वह तस्वीर मेरे दिल पर भी नक्श हो गई। मैंने हमेशा उनको ही अपना माना। तबसे दूसरेकी होनेके वास्ते मैं ज़रूर मजबूर हुई मगर मनसे सदा उन्हींकी रही। मैं तुझसे सच कहती हूँ ज़हूरन कि मैं दिलसे दुआ माँगती थी कि मेरा शौहर मर जाय और मैं बेवा होकर अलम् सुकूनमें अपने आक़ाये-आलम प्यारे सुलेमानजाहके खयालमें हरदम डूबी रहूँ। मेरी दुआएँ क़बूल हुई। मेरे शौहर लड़ाईमें मारे गये और नसीबने मुझे अपने प्यारेकी

औलादको दूध पिलाई मा बनाकर भेज दिया। मैं अपनी रूहके मालिकके इतने नज़दीक हूँ मगर फिर भी मिल नहीं सकती। इतने दिनों तक मनके मालिकसे मनमें ही मिली हूँ। अब सामना कैसे करूँ, वो मेरे वैसे ही मालिक हैं जैसे कि मेवाड़की रानीके कन्हइयाजी थे, हुज़ूर बादशाहबेगम साहिबाके अमीरुज्जिन्नात हैं। उनसे कह दो ज़हूरन, दुलारी उनकी अछूती है, वे उसी अछूती ही बनी रहने दें।"

वह साहबेआलमसे ज़हूरनके मार्फ़त पाई हुई सौग़ातोंमेंसे ज़हूरनको भी हिस्सा दिया करती थी, कुछ अपनी ओरसे भी दे देती थी। ज़हूरनके सहारे दुलारीने नसीरुद्दीनको अपनी तरफ़ खींच रक्खा था। रातों जागकर उसने क़ीमती रेशमपर ज़रदोज़ीका काम काढ़ा और बेल इस तरक़ीबसे बनाई कि सुलेमानजाहका पूरा नाम उसमें खूबसूरतीसे लिख जाता था। रोज़ छिपाकर अपने हाथसे बीड़े बनाकर भेजती; कभी बड़ा मचलता हुआ खत लिखकर भिजवाती। दुलारी नसीरुद्दीनको खिला-खिलाकर अपना बना रही थी। अक्सर बादशाहबेगमके महलमें सुलेमानजाह आते ही रहते थे। उसने कभी नज़र उठाकर भी न देखा। नसीरुद्दीन बड़े मायूस होते थे।

होते करते दुलारीको महलोंमें छः महीने गुज़र गये। पराये बच्चेको दूध पिलाते हुए दुलारीको अपने बच्चोंकी ममता सताने लगी। अलावा इसके वह ये भी सोचती थी कि अगर करीमन बुआ यहाँ आकर रहने लगें तो शाहज़ादे तक पैग़ामरसाईमें ज्यादा सहूलियत हो जायगी। दुलारी अब एकान्तमें नसीरुद्दीनसे मिलना चाहती थी। वह शाहज़ादेके तक़ाज़ोंसे अब ज़्यादा दिनों तक कतरा नहीं सकती थी। उसने फ़ैज़न बीवीसे गिड़गिड़ाकर कहा। फ़ैज़न बीवीने बेगमसाहबासे सिफ़ारिश कर दी। रुस्तमनगरसे करामतुन्निसा, दुलारीके बेटे मुहम्मदअली और बेटी ज़ीनतुन्निसाको यहाँ बुलवा लिया गया। दुलारीकी सासने आनेके लिए बड़े हाथपैर फटफटाये मगर उसके नामका परवाना पहुँचा ही न था।

१०

बादशाहबेगमको आग़ामीरसे दिली नफ़रत थी, शुरूसे ही दोनोंकी काट-फाँस चली आती थी।

ग़ाज़ीउद्दीन स्वभावसे सीधा और कमज़ोर तबीयतका मनुष्य था। जिन दिनों उसके पिता यामिनुद्दौला नवाब सआदतअली ख़ाँ अपने बड़े भाई और अवधके शासक नवाब वज़ीर आसफुद्दौलाके कोपभाजन और पराजित शत्रु होकर बनारसमें आर्थिक तंगीके संकट भरे दिन काट रहे थे, उन्हीं दिनोंसे ग़ाज़ीउद्दीनमें कुछ कुप्रवृत्तियाँ समा गई थीं। ख़ानसामा आग़ामीर इन दूषणोंका पुरोहित था। आग़ामीरने राजकुमारको धीरे-धीरे, बड़ी चतुराईके साथ अपना दास बना लिया था। आग़ामीरके अन्तरका पशु कमज़ोर राजकुमारको उसी तरह दबोच बैठा था जैसे चूहेको बिलाव दबोचता है।

सआदतअली ख़ाँके गद्दीपर बैठनेके बाद राजकुमार ग़ाज़ीउद्दीन हैदर के जीवनमें वैभव आया, परन्तु उनके व्यक्तित्वकी कमज़ोरी न गई। वे बहुत भोले और भले थे; किसी हद तक झेंपू भी थे, इसलिए अपनी इच्छाओंको कभी ठीक तरह व्यक्त नहीं कर पाते थे। उनकी यह इच्छा होती थी कि कोई उन्हें संभाल ले। बादशाहबेगम अपने अहंकारमें यही न कर पाईं। उन्होंने अपने पतिपर शासन करना चाहा, उन्हें हीन मानकर हुक्म चलाना चाहा। अपनी किताबी धार्मिकतासे ऊबकर ग़ाज़ीउद्दीन रस चाहते थे, परन्तु पण्डिता पत्नीका दर्प उन्हें तोड़-तोड़ देता था। ख़ानसामा आग़ामीर राजकुमारका मन समझकर उन्हें संभाल-संभालकर अपनी महत्त्वाकांक्षा और स्वार्थकी राहपर चलाने लगा। बाँदी सुब्हदौलतसे राजकुमारका सम्बन्ध आग़ामीरने ही कराया।

ससुर अपनी पुत्रवधूको बहुत मानते थे। आरम्भमें वे स्वयं तेजस्वी और निष्ठावान् प्राणी थे, इसलिए उन्हें अपनी तेजस्विनी और निष्ठावान्

पुत्रवधू बहुत पसन्द आती थी। अपने अशक्त व्यक्तित्ववाले पुत्रसे उन्हें एक जगहपर चिढ़ थी। वे चाहते थे कि उनका पुत्र अपनी पत्नीके कहेमें रहे। प्रजाके कल्याणके लिए भी उन्हें यही उचित मालूम होता था।

बापके हुक्मसे बँधकर अपनी पत्नीकी इच्छाओंका ग़ुलाम बनना लाख कमज़ोर होनेपर भी ग़ाज़ीउद्दीन हैदरको पसन्द न था। आग़ामीर ऐसे ही घोर मानसिक संकटके क्षणोंमें उनके विश्वास और शक्तिका मूर्तिमान् प्रतीक बन गया। वह जानता था कि सआदत अलीको अपने उत्तराधिकारीसे एक जगहपर दबना ही पड़ेगा। आग़ामीरने युवराजपुत्रको महाराज पिताका विद्रोही बना दिया। वलीअहदके नामपर उनका ख़ानसामा आग़ामीर बड़े-बड़ोंसे मिलता। उसने दरबारके कई प्रभावशाली व्यक्तियोंको युवराजका समर्थक बना लिया। अंगरेजी रेज़ीडेन्सीमें भी उसकी रसाई हो गई।

अंगरेजोंकी दग़ाबाज़ीसे अपना आधा राज्य छिन जानेके बाद सआदतअली मन ही मन बहुत टूट गये थे। उन्हें लगता था कि अगर उनका उत्तराधिकारी शासक कमज़ोर रहा तो अंगरेज़ उनकी आँखें मिचते ही इस आधे अवधको भी एक ही निवालेमें हड़प जायेंगे। वे ग़ाज़ीउद्दीनको सिंहासनके उत्तराधिकारसे वंचित रखना चाहते थे, और यहीं बादशाहबेगम अपने पतिके साथ थीं। अपने पतिके बहाने ही वह पतिके राज्यपर शासन कर सकती थीं। उन्होंने अपने श्वसुरके क्रोधको बहुत हद तक सम्हाले रक्खा। महलमें बैठे ही बैठे अपनी मुग़लानी फ़ैज़ुन्निसाके भाञ्जे चतुर और व्यवहार कुशल नवजवान मीरफ़ज़लअलीके साथ नसीरुद्दीनहैदरको दरबारके अनेक प्रभावशाली व्यक्तियोंके पास उनका समर्थन पानेके लिए भेजा। नवाब आसफ़ुद्दौलाके एक ग़ुलाम नवाब नज़ीर मोहम्मदआफ़रीनअलीखाँ उस समय बड़े प्रभावशाली पुरुष थे। बादशाहबेगमने उन्हें अपने पतिके पक्षमें कर लिया। मिर्ज़ाजाफ़रकी कम्पनी सरकारके रेज़ीडेण्ट कर्नलबेली तक पहुँच थी। रेज़ीडेण्ट उनसे

सलाह लिया करते थे। बादशाहबेगमने उनका समर्थन भी बहुत ही आवश्यक समझा। मिर्ज़ाजाफ़रने सौदा किया। अपने गरज़की दीवानी बादशाहबेगमने मीरजाफ़रको अवधका मन्त्री बनानेका वचन दिया।

आग़ामीर यह सब जानता था, मगर चुप था। उसने ग़ाज़ीउद्दीनको अपनी पत्नीको प्रसन्न रखनेकी सलाह दी। इसलिए बादशाहबेगम उन दिनों जो कुछ कहतीं ग़ाज़ीउद्दीन कान दबाकर सुन लेते थे।

ग़ाज़ीउद्दीनके गद्दीनशीन होते ही बादशाहबेगमके सपनेपर पहला कुठाराघात यह हुआ कि ख़ानसामा मुतमातुद्दौला मुख्तारुल्मुल्क सैयद मुहम्मदखाँ बहादुर ज़ैग़ामजंगकी पदवियोंसे विभूषित हो अवधके गद्दी नशीन नवाब वज़ीरका नायब नियुक्त हुआ। बेगम साहब दाँत पीसकर रह गईं। बेचारे मीरजाफ़रको इतना गहरा सदमा पहुँचा कि अधिक दिनों जी न सका।

आग़ामीरकी शक्ति दिनोंदिन बढ़ती गई। उसकी कुशाग्र बुद्धि, संगठन शक्ति, शासन करनेकी क्षमताको अंगरेज़ तक सराहते थे। परन्तु आग़ामीर बहुत महत्त्वाकांक्षी और स्वार्थी था। अपनी सत्ताके लिए नवाब वज़ीरको काबूमें रखकर वह दरबारी राजनीतिमें बड़े उलट-फेर करने लगा। ग़ुलाम ख़ानसामाके दर्पने बड़े-बड़े ख़ान्दानी अमीरोंकी नाकपर चिकोटियाँ काटीं। बादशाहबेगमको भी वह चैन नहीं लेने देता था।

बादशाहबेगमने युवराजको अपने कब्ज़ेमें कर रखा था। आग़ामीर बेगमका यह काटनेवाला दाँत भी तोड़ देना चाहता था। मीर फ़ज़लअली और फ़ैज़ुन्निसासे भी आग़ामीर आन्तरिक घृणा करता था। इन दोनोंके कारण आग़ामीरके विरुद्ध चलनेवाले षड्यन्त्रोंको बल प्राप्त होता था। मीर फ़ज़लअलीकी नौजवानी अक्सर आग़ामीरकी शानके ख़िलाफ़ ऐसे ज़हर बुझे पैन वार करती थी कि आग़ामीर ख़ूनके घूँट पी-पी कर रह जाता था।

कम्पनी सरकारके गवर्नर जनरल लार्ड मेएरा फ़र्रुखाबाद पधार रहे थे; राज्यकी ओरसे वहाँ उनका स्वागत करना था। आग़ामीरको अपने भागों बादशाहबेगमका छींका टूटता नज़र आया, उन्होंने नवाबकी ओरसे युवराजको फ़र्रुखाबाद अपने साथ ले जानेका प्रस्ताव किया। बादशाह-बेगम इससे इनकार नहीं कर सकतीं थीं परन्तु उन्होंने युवराजकी सेविकाओंमें सुख-चैन बाँदीको साथ कर दिया था। मुतमातुद्दौलाने रास्ते भर नसीरुद्दीन हैदरको हर तरहसे अपना बनाना चाहा परन्तु सुखचैनका जादू युवराजको अपनी माताके पक्षमें बनाये रखनेमें पूरी तरह समर्थ हुआ।

इधर बादशाहबेगमने आग़ामीरके ख़िलाफ़ चारों ओरसे व्यूह रचा। उन्होंने जीवनमें पहली बार कुछ नम कर नवाब वज़ीर ग़ाज़ीउद्दीन हैदरके कान आग़ामीरके ख़िलाफ़ भरे। नवाब वज़ीर मोहम्मद आफ़रीन अली खाँके पुराने प्रभावको मुतमातुद्दौलाने बड़ी ठेस पहुँचाई थी ? वह उससे खार खाये बैठे थे। मिर्ज़ा जाफ़रके पुत्र मिर्ज़ा हाजी क़मरुद्दीन अहमद भी अपने पिताका बदला लेनेके लिए तड़प रहे थे। बादशाह-बेगमने इन दोनोंको भी नवाब वज़ीरके कान भरनेके लिए उकसाया। ग़ाज़ीउद्दीन भी मन ही मन कहीं अपने ऊपर शासन करनेवाले आग़ामीरसे त्रस्त थे। आग़ामीरने सुल्तानका लाखों रुपया हड़प लिया, छोटी औक़ातका होनेके कारण बड़े-बड़े अमीरोंकी इज़्ज़त धूलमें मिला रहा है, अंगरेजोंसे मिलकर आपके ख़िलाफ़ साज़िश कर रहा है,—इन सब बातोंने मिलकर ग़ाज़ीउद्दीन हैदरका मन फेर दिया। आग़ामीर जब लौट कर आये तो उनकी नायाबत छिन चुकी थी।

इन दिनों बादशाहबेगमका सितारा बुलन्द था; परन्तु यह परिस्थिति बहुत दिनों तक क़ायम न रह सकी। अँगरेज़ोंको चूँकि दो करोड़ रुपया चाहिए था इसलिए वे नवाब वज़ीर ग़ाज़ीउद्दीन हैदरपर ज़ोर डाल रहे थे। उनसे कहा गया कि वे दिल्लीके सम्राट्से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर स्वतन्त्र बादशाह हो जायें। ग़ाज़ीउद्दीनको बादशाह बनानेके लिए कम्पनी

सरकार और कुछ भी न चाहती थी, फ़क़त दो करोड़ रुपया उधार माँगती थी। रुपया अथवा राज्यका कोई भाग देनेसे बादशाहको आपत्ति थी। वह अपने पिताके शब्दोंको बराबर याद करते थे कि अँगरेज़ों का जाल घासकी जड़की तरह है। इनसे जितना हो सके बचना ही चाहिए। लेकिन ग़ाज़ीउद्दीन बच न सके। पहले उन्होंने एक करोड़ देना मंज़ूर किया, फिर पचास लाख और स्वीकार किया परन्तु अँगरेज़ दो करोड़से कम लिये बिना माननेवाले न थे। ग़ाज़ीउद्दीनको यह परिस्थिति नाक रगड़कर स्वीकार करनी पड़ी। नवाब वज़ीर आसफ़ुद्दौलाके समयसे ही अवध अँगरेज़ोंकी लूटके लिए अन्यतम साधन बन गया था। नवाब आसफ़ुद्दौला ने इमारतें बनवाने और अपने दरबारको दुनियाँके राजदरबारोंमें सबसे अधिक शानदार बनानेके खब्तमें अवधकी प्रजाका करोड़ों रुपया फूँका। अँगरेज़ोंने तभीसे अवधपर अपने दाँत गड़ा लिये। आये दिन अवध दरबारसे रुपयोंकी माँग होती। नवाबोंको अपनी शान दिखलाने और विलासिताके लिए रुपयोंकी आवश्यकता थी, नवाबी दरबारके अफ़सरों कारिन्दोंको लूट और रिश्वतकी आवश्यकता थी, अंगरेज़ोंको तो हड़पनेकी हविस थी ही। इन सब बड़े लुटेरोंसे आये दिन दबाई जाकर अवधकी प्रजा हर तरहसे त्रस्त हो उठी थी। रुपया लूटनेके हर छोटेसे छोटे मौक़ेपर अँगरेज़ोंकी नज़र रहे इसलिए एक अँगरेज़ रेज़ीडेण्ट भी लखनऊमें नियुक्त कर दिया गया। वो छोटेसे छोटे मामलोंमें भी हस्तक्षेप करता था। परिस्थिति यह हो गई कि नवाब देशी, उनके वज़ीर अमले कारिन्दे देशी और उन्हें चलानेवाली प्रेरणा शक्ति कम्पनी सरकारके रेज़ीडेण्टकी विदेशी बन्दूकें और संगीने थीं और इन विदेशी बन्दूकोंकी गोलियाँ इन संगीनोंके घाव सीधे अवधकी प्रजाकी छातीपर ही होते थे। जब सआदतअली ख़ाँ ऐसा कुशल, कर्मठ और प्रजावत्सल शासक भी अँगरेज़ोंसे घिरकर अपनी प्रजाके संकटोंको दूर न कर सका तो ग़ाज़ीउद्दीन जैसे कमज़ोर व्यक्तिकी हस्ती ही क्या थी ?

नवाब वज़ीर ग़ाज़ीउद्दीन हैदरको उन्नीस अक्टूबर सन् १८१८ ई० के दिन अवधका स्वतन्त्र सम्राट् घोषित कर दिया गया। अँगरेज़ गवर्नर जनरलके आग्रहसे शाही तख्त और ताजको शानदार बनानेके लिए राजखज़ानेको खुलवा दिया गया। अवधकी सीमाओंपर जितने बड़े फ़ौज़ी अफ़सर थे वे सब खज़ानेकी रक्षा करनेके बहाने लखनऊ बुला लिये गये। साह बिहारीलाल महाजनकी अध्यक्षतामें जौहरियोंका दल तख्त और ताजके लिए बेशक़ीमती जवाहरात छाँटने लगा। इस तरह अवधके खज़ानेकी छँटनी हो गई, करोड़ों रुपयेके जवाहरात अँगरेज़ों, आग़ामीर, सरकारी अमलों और जौहरियोंके घर पहुँच गये।

और इस लूटमें अँगरेज़ोंकी मदद करनेवाले मुतमातुद्दौला आग़ामीर की शक्ति फिर सातवें आस्मानको छूने लगी। इस बार वह पूरी तौरपर निरंकुश हो उठा था।

कमजोर बादशाह और उसके कुटिल वजीरसे त्रस्त हो बादशाहबेगमने खुला विद्रोह करनेकी ठानी। ग़ाजीउद्दीनके बादशाह बनते ही बादशाबेगमने यह फ़रमाइश की कि जिस तरह बादशाहको अपना वजीर चुननेका अधिकार है उसी तरह युवराजको भी अपनी ओरसे नायब वजीर नियुक्त करनेका अधिकार होना चाहिए। उन्होंने मीरफ़ज़्लअलीको नायब वजीर नियुक्त करनेके लिए आग्रह किया। आग़ामीरने बादशाहबेगमकी इस युक्तिको नाकाम कर दिया। यही नहीं, आग़ामीरने इस बार बादशाहबेगम की समस्त शक्ति तोड़नेका निश्चय कर बेगमके महलमें नित्य नये तूफ़ान उठाने आरम्भ किये। उसने बादशाहके द्वारा युवराज नसीरुद्दीन हैदर और शाही नवासे नवाब मुहसानुद्दौला बहादुरके नाम यह आदेश भिजवाया कि वे बादशाहबेगमके साथ रहना छोड़कर स्वयं बादशाहकी सेवामें उपस्थित हों।

महलोंमें यह आदेश पहुँचते ही बादशाहबेगमके तलवोंकी आग चोटी पर पहुँच गई, उनकी आँखोंसे ज्वाला फूट पड़ी, दाँतोंकी बत्तीसी क्रोधसे

बार-बार भिंचने लगी, वे तेज़ीसे उठ खड़ी हुईं और नसीरुद्दीनके महलकी ओर बढ़ीं।

महलकी बाँदियोंमें हर शख्सके दिलमें यह धुकधुकी समा गई कि अब क्या होगा। बेगमके महलोंमें अनेक दास-दासियोंको आग़ामीरने अपनी ओर फोड़ रक्खा था, वे आतंक फैलाने लगे कि इस बार आग़ामीर बादशाहबेगमको भी तलाक़ दिलवा कर ही छोड़ेंगे, मीर फ़ज़लअलीको फाँसी चढ़ाई जायेगी, फ़ैज़न बीवीके नाक-कान काट आधा मुँह काला कर गदहे पर सारा शहर घुमाया जायगा—जितने मुँह उतनी बातें थीं, ऐसा लगता था कि आज बादशाहबेगमकी सत्ता सदाके लिए समाप्त हो जायगी।

नसीरुद्दीन अपने कमरेमें अपनी परिचारिकाओंसे घिरा बैठा इस बात पर बहस कर रहा था कि नशोंमें शराब बेहतर है या अफ़ीम।

"ऐ हुज़ूर अफ़ीममें क्या धरा है, बुड्ढोंके लिए होती है अफ़ीम कि खा लिया और झुरमुराके पड़ रहे। शराब जवानीका नशा है दरअसल पूछिए तो जवानीकी रूहका नाम ही शराब है।"

शकीलाकी बात सुन सुलेमानजाहने मुसकुराते हुए अपनी बग़लमें बैठी हुई अनवरीको धीरेसे कोंचा। इशारा समझ अनवरी शकीलासे बोली: "ऐ हम तो नहीं मानते, साहबेआलम इतने दिनोंसे शराब पीते हैं लेकिन हमे जवान नज़र नहीं आते औ जो कहीं एक दिन अफ़ीम खा लें तो फिर देखना।"

शकीलाकी ओरसे कुल्सुम बोली: "भला तो सही, तू लगा साहबेआलम को यह शौक़! हम सब उसी दिन फाँसी लगा कर मर जायेंगी। ए मुआ वो है तो अफ़ीमची अली असग़र, आठों पहर मुआ झुरझुराया पड़ा रहता है; दो दो जनी उसे हाथ पकड़के उठाती हैं तब भी निगोड़ा जागता नहीं।"

अनवरीको मज़ाक़ सूझा, सुलेमानजाहसे प्रस्ताव किया: "अलीअसग़र को बुलाकर उसका तमाशा देखा जाय। हुज़ूर देखें तो सही अफ़ीमका

नशा कितना गहरा होता है। ऐ कुल्सुम, जा तो चार जनी उस मुर्देको उठा कर ले आओ।"

अलीअसग़रको एक चाँदनीमें डाले चारों कोनोंसे उठाये चार बाँदियाँ ले आईं। बेंतकी कुरसी पर उसे किसी तरह बैठाया गया। अलीअसग़र बीच-बीचमें बड़बड़ाता तो था लेकिन उसकी आँखें नहीं खुल रहीं थीं। अनवरीने रेशमकी डोरियोंसे उसके दोनों हाथ कुरसीके हत्थों पर ढीले-ढीले बाँध दिये। फिर उसकी दाढ़ीमें डोरियाँ बाँध-बाँध कर कुरसीके हत्थे से बाँध दिया, तश्तरीमें एक दर्जन छोटी मोमबत्तियाँ जलाकर अनवरीने उन्हें कुरसीके नीचे रख दिया। गर्मीसे तपने पर अली असग़र बार बार उचकता उसकी दाढ़ीके बाल नुचते। हर बार जब अली असग़र कराहता तो कमरेमें क़हक़हा लग जाता था। अनवरीने नायाब खेल सोचा था, सुलेमानजाह बेहद खुश थे। उसी समय बादशाह बेगमके आनेका समाचार मिला।

अली असग़रके बन्धन जल्दी जल्दी खुल गये। बादशाहबेगमने कमरे में प्रवेश किया। बाँदियोंने महारानीकी झुक कर अभ्यर्थना की और वातावरण गंभीर हो गया। बादशाहबेगम इस समय बड़े आवेशमें भरी हुई थीं।

"साहबेआलम, हिन्दुओंके यहाँ माँका दर्जा बापसे ऊँचा माना गया है। बापकी गया एक बारमें ही पूरी हो जाती है और माँकी गया सात बार में भी पूरी नहीं होती। माँकी मोहब्बत और औलादके फ़र्जकी इससे उम्दा मिसाल नहीं मिल सकती। तुम्हारा क्या खयाल है?"

"अम्मी हुज़ूर, मेरे खयालात कभी इस ज़मीन पर चले ही नहीं; कभी ज़रूरत ही महसूस नहीं की। मेरा वजूद मेरी वालिदाकी वजहसे है।"

कठोर अनुशासनमें रहने वाली बादशाहबेगमकी आँखोंमें आँसू डब-डबा आये, भरे गलेसे बोलीं: "खुदाकी खुदाईमें फ़र्क़ डालने वाले अब यह भी चाहते हैं कि साँस और जिस्म अलग-अलग चला करें, माँ और

बेटे एक दूसरेसे जुदा रहें। दुश्मन इस पर शाही मुहर छपवानेकी ताक़त रखता है। वह सोचता है कि सुलेमानजाहके अलग हो जाने पर उसकी माँ यक़ीनन घुल-घुल कर मर जायगी—और उसने सही अंदाज़ लेकर इस बार निशाना साधा है।" बादशाहबेगमके चेहरे पर फिर आँसू काँप गये।

नसीरुद्दीन हैदरके चेहरे पर तेहेकी तमक चढ़ आई, उठ कर अपनी माँके सामने घुटने टेक कर बैठ गया। उनके एक हाथ पर हाथ रख कर बोलाः "अम्मी हुजूर, इंगलिस्तानके बादशाह और वजीरोंमें भी यह ताक़त नहीं कि मुझे आपके दामनके सायेसे जुदा कर सकें फिर शतरंजके मोहरों जैसे इन नक़ली बादशाह और वजीरके बेतुके हुक्मकी परवाह कौन करेगा। मगर क्या कोई इस क़िस्मका हुक्म बादशाहकी तरफ़से आया है?"

"बादशाह!"—बादशाहबेगमके चेहरे पर नफ़रतकी सिकुड़नें पड़ गईं—"खानसामाका ग़ुलाम है तुम्हारा बादशाह। वह जज़्बातकी बारीकियों को अपनी कमज़ोरी पर क़ुर्बान कर चुका है, उसका सोचना रुक गया है। उस जानवरके ज़ेरसाये रह कर वह भी—" कहते कहते बेगम रुक गईं मानो निकलनेवाले शब्दकी लगाम खींच ली हो।

इसी समय मीर फ़ज़लअलीने कमरेमें प्रवेश किया और बेगम-साहबाको यह सूचना दी कि उनके नवासे नवाब मुहसानुद्दौला बहादुर शाही हुक्मकी तामील कर महलसे चले गये हैं और यह खबर भी मिली है कि बादशाह सलामतने उन्हें मिर्ज़ा हाजीके यहाँ रहनेका हुक्म फ़रमाया है। "साहबे आलम, शाही हुक्म आपके लिए भी इन्तज़ार कर रहा है।" फ़ज़लअलीने अपनी बातकी यों परिसमाप्ति की।

नसीरुद्दीन कुरसीके हत्थे पर हाथ पटक कर तेज़ीसे उठ खड़ा हुआ और कमरेके दरवाज़े तक पहुँच कर ताली बजाई, बाँदी हाज़िर हुई उसे हुक्म हुआ कि दरबारसे शाही हुक्म लेकर आया हुआ आदमी फ़ौरन

उनके हुज़ूरमें पेश किया जाय। यह कहते हुए साहबेआलम बग़लके कमरेमें चले गये।

मीर फज़ल अलीने बादशाहबेगमको बतलाया कि शहरसे ज़िलों और परगनोंसे दो हज़ार धनुर्धारी पासी और बन्दूक़धारी पठान इकट्ठे कर लिये गये हैं। शाही हुक्मउदूली करने पर अगर सुलेमानजाहके ख़िलाफ़ आग़ामीरने गिरफ्तारीका हुक्म निकलवाया तो उसकी कोठीमें आग लगा दी जायेगी, उसकी ईंट से ईंट बजा दी जायगी।

दूसरे कमरेमें शाही फ़रमान पर एक सरसरी नज़र डाल उसे फाड़ कर चिन्दी चिन्दी करते हुए साहबेआलमने ग़ुलामको यह आदेश दिया कि वे चिन्दियाँ बटोर कर ख़रीतेमें भर कर चोबदारको दे दी जायें, चोबदारको यहाँसे लेकर ड्योढ़ी तक बराबर जूते लगाते हुए ले जाया जाय और इसके घोड़ेके दुममें पीपा बाँध दिया जाय ताकि यहाँसे लेकर फ़रहबख्श तक पूरे रास्तेमें आम रिआयामें यह ऐलान हो जाय कि नसीरुद्दीन हैदर बाग़ी हो गया है। दौलतख़ानेके नौकरों ग़ुलामोंमें तहलक़ा मच गया; सारे शहरमें बिजलीकी तेजीसे यह समाचार दौड़ गया। ग़ाज़ीउद्दीनहैदरके सामने आग़ामीरने जब शाही फ़रमानकी फटी हुई चिन्दियोंका ख़रीता रक्खा यो उनकी आँखोंमें ख़ून उतर आया। हुक्म हुआ कि सुलेमान जाहको क़ैद कर लिया जाय। आग़ामीरने अर्ज़ किया कि वली अहदको क़ैद करनेके परिणाम घातक हो सकते हैं, रेज़ीडेण्ट को पहले सूचना देनी होगी। लेकिन इन तमाम आफ़तोंकी जड़ मीर-फ़जलअली और उसकी मौसी फ़ैज़ुन्निसा बीवीको गिरफ्तार करनेसे बादशाह बेगम और सुलेमान जाहकी सारी विद्रोही प्रवृत्तियोंके पर कट जायँगे। इसके लिए अंगरेजोंसे पूछना भी न पड़ेगा क्योंकि यह सल्तनतका घरेलू मामला है।

शाहअवध वज़ीरअवधकी सलाहसे सहमत हुए।

आग़ामीरने केवल इन दोनोंकी गिरफ्तारीका ही प्रबन्ध न किया

बल्कि उससे पहले शहरमें चारों ओर अपने गुर्गे छोड़कर यह समाचार भी फैला दिया। इसलिए जब कि दो सौ सिपाहियोंकी टुकड़ी मार्च करती हुई चली तो शहरका हुजूम भी उसके पीछे था।

बादशाहबेगमके महलोंके पास तक पहुँचते हुए भीड़की संख्या हजारों तक पहुँच गई थी। महलके फाटक बन्द थे। आधे फर्लाङ्गसे भी कम की दूरी पर जब कि शाही सेनाकी टुकड़ी शहरकी भीड़के साथ पहुँची तो महलकी छतों पर धनुर्धारी पासियों और पठानोंकी सेना पाँति बाँधकर खड़ी हो गई। शराबके नशेमें मस्त पासियोंके रणहुंकारसे धरती और आकाश पर आतंक छा गया।

जनताके लिए यह दृश्य अप्रत्याशित था; लोग-बाग यह दृश्य देख कर स्तब्ध रह गये। शाह पतिसे विद्रोह करनेवाली बादशाहबेगमके इस साहस भरे कार्यके कारण जनतामें एक अपूर्व उत्साह की लहर दौड़ गई। आग़ामीर जन साधारणकी दृष्टिमें घृणाका पात्र था। सहसा शोर मच गया; शाही महलोंकी छत पर मुर्शिदज़ादा सुलेमानजाह नसीरुद्दीन हैदर तशरीफ़ लाये थे। छतों पर खड़ी हुई सेनाने ज़िन्दाबादके नारे लगाये, जनता भी अपने उद्‌गार रोक न सकी। छतोंकी ऊँचाईसे लेकर धरतीकी सतह तक कई हजार कण्ठ साहवेआलमकी जय जयकार कर उठे। शाही सेना अपने आपको दो चक्कीके पाटोंके बीच महसूस करने लगी। सुलेमान जाहकी ओरसे छतसे आवाज आई कि अगर बादशाहबेगमके इलाक़ेमें बादशाही फ़ौजने किसी भी प्रकारकी धृष्टता दिखलाई तो सेनाका सत्यानाश कर दिया जायगा।

जनतामें पहले तो सन्ना छा गया फिर सहसा हिंसात्मक खुशीकी लहर दौड़ गई।

जनताको शाही सेनासे घृणा थी। शाही सिपाही अक्सर और अधिकतर शहरकी गुण्डागर्दीको बढ़ावा देकर जिस-तिसका जीना मुहाल करते रहते थे। सेठ-साहूकारोंसे लेकर मामूली खोन्चेवाले तक उनके अत्या-

चारोंसे समानभावसे पीड़ित रहा करते थे। बादशाहबेगमकी फ़ौज और सुलेमानजाहके आगमनसे जनसाधारणकी सोई हुई विद्रोही वृत्ति सहसा बल पाकर उभड़ने लगी। यह देख सेनाने आक्रमण करनेकी धृष्टता न की।

समाचार आग़ामीरके पास पहुँचा, वह दाँत किटकिटा कर रह गया। इस बग़ावतका जवाब न देना शाही सत्ताको अप्रतिष्ठित करना था। उन्होंने बादशाहकी अनुमति लेकर रेज़ीडेण्टको इसकी बाक़ायदा सूचना भेजी।

तिलंगाकी दो कम्पनियाँ लेकर कैप्टन होम्स रेज़ीडेण्टके मीर मुंशी सैय्यद बाक़रअली खाँके साथ महल पहुँचे। अंगरेजोंके आनेसे नई सनसनी दौड़ गई।

रेज़ीडेण्टकी ओरसे उनके मीर मुंशीको यह आदेश प्राप्त था कि बेगम और युवराजको शाही आज्ञा पालन करनेके लिए भली-भाँति समझाया जाय, यदि इस पर भी वे न मानें तो कैप्टन होम्स अपनी सेनाकी शक्तिका परिचय दे सकते हैं।

अंग्रेज कप्तान अपने तिलंगोंको लेकर फाटकपर डट गया। मीर मुंशी सैयद बाक़रअलीने रेज़ीडेण्टकी ओरसे हुज़ूर बादशाहबेगमकी ख़िदमतमें उनका पैग़ाम पेश करनेकी इजाज़त माँगी।

बेगमने पहले तो इन्कार कर दिया पर बादमें मीरफ़ज़लअली और फ़ैज़ुन्निसा बीवीके समझानेपर वे राज़ी हो गईं।

युवराज नसीरुद्दीन हैदरके महलमें सैयद साहब बुलाये गये। दीवानखानेमें उन्हें बिठलाया गया; सुलेमानजाह उनके नज़दीक़ ही बेरुख़ होकर बैठे; मीर फ़ज़लअली खम्भेके पास हाथ बाँधे सकपकाये हुए खड़े हो गये। पास ही परदेके पीछे हुज़ूर बादशाहबेगम कुर्सीपर तशरीफ़ रखती थीं, फ़ैज़ुन्निसाबीवी उनके क़दमोंके पास फ़र्शपर बैठी थीं, दुलारी मुन्ना-

जानको गोदमें लिये पास ही खड़ी थी, दो बाँदियाँ हुज़ूर बादशाह बेग़मको और एक मुन्नाजानके पास खड़ी हुईं पंखा झल रही थीं। बादशाहबेगमका गोरा सतेज मुखमंडल क्रोधसे तमतमाया हुआ गुलाबी हो रहा था। बादशाहबेगमने अंगरेजोंकी दख़लन्दाज़ीपर ख़ूब-ख़ूब सुनाईं; साहब लोग आग़ामीरको नहीं पकड़ते जो सल्तनतका लाखों रुपया खा रहा है, बादशाहको नहीं समझाते जो अपने ख़ानसामा वज़ीरके बहकावेमें आकर अपने ख़ूनको अपना तस्लीम नहीं करते, फ़ज़लअली और उसकी मौसीको इसलिए क़ैदी बनाया जा रहा है कि वे बेसहारा हो जायँ---बड़े साहब इस अन्यायको क्यों नहीं देख पाते। बादशाहबेगमने जी भर कर सुनाईं। सैयद साहबने सर झुकाकर सुनी और अन्तमें समझाते हुए यह भी कहा कि बाग़ी करार दिये जानेपर सुलेमानजाह की गद्दीनशीनीपर भी आँच आ सकती है। बेगमने भी रुख़ बदला सुलेमानजाहने फ़ौरन अपना रुख़ मिलाया। दो घड़ी मीर मुंशीके तरह-तरहसे समझानेके बाद बादशाहबेगमको स्वयं फ़ैज़ुन्निसाबीबी और मीर फ़ज़लअलीने यह सलाह दी कि बेगम साहबा उन्हें इस शर्तपर रेज़ीडेण्टकी सेनाके हवाले कर दें कि वे उन्हें अपने यहाँ नज़रबन्द रक्खेंगे, बादशाहके हवाले नहीं करेंगे, और बादशाहबेगम इस आन्दोलनके ठण्डे हो जानेके बाद जब इन दोनों को लौटा देनेकी प्रार्थना करेंगी तो रेज़ीडेन्ट साहब कृपापूर्वक इसके लिए अनुमति भी प्रदान करेंगे।

कप्तान होम्सने इसके लिए बेगमसाहबाको रेज़ीडेन्टकी ओरसे पूर्ण आश्वासन दिया। पालकियोंमें बिठलाकर अंगरेज़ सिपाहियोंकी निगरानीमें बादशाहबेगमके बड़े प्रिय एवं विश्वासपात्र अनुचर क़ैद होकर चले गये। बादशाहबेगमका दिल रह-रहकर घुमड़ रहा था। बड़े क्षोभ और बेबसीके साथ वह कुरसीसे उठीं, कहारियोंने उन्हें सुखपालपर हज़रतअलीके रौज़े पर पहुँचा दिया। बादशाहबेगम वहाँ बड़ी देर तक अकेलेमें रोती रहीं।

११

आग़ामीरने बड़ी-बड़ी कोशिशें की, बादशाहसलामत तकसे रेज़ीडेण्टको कहलवाया कि उनके दोनों बन्दी शाही अपराधी हैं इसलिए वे सल्तनतके हवाले किये जायँ मगर अंगरेज़ बहादुर इसके लिए राज़ी न हुआ। आग़ामीरने फिर भी अपना बदला ले लिया। शाही हुक्मसे उसने मीर फ़ज़ल अलीकी शानदार कोठी पर तोप चलवा दी। शाही अफ़सरोंके साथ ही साथ आग़ामीरके निजी आदमियोंने मीर फ़ज़ल अलीकी पक्की शानदार इमारतको बुरी तरह तबाहकर, ज़रीके परदे, क़ीमती क़ालीनें, हज़ारोंके झाड़ फ़ानूस और सजावटका सामान और लाखोंके ज़ेवर-जवाहरात, सोने चाँदीकी चीज़ें और क़ीमती कपड़े वग़ैरः लूटे। लूटकी दौलत शाही ख़ज़ानेमें कम और आग़ामीरके घरमें ज्यादा पहुँची, शाही अफ़सरों और आग़ामीरके आदमियोंने भी बड़े हाथ मारे। देखते-देखते ही कलका लखपती आजका भिखारी बन गया। मीर फ़ज़लअली और उनकी मौसी फ़रमाइश करनेपर अंगरेज़ सिपाहियोंकी रक्षामें शाहजहानाबाद भेज दिये गये।

बादशाहबेगम और मुर्शिदज़ादा सुलेमानजाहकी कोठियोंपर अंगरेज़ सिपाही तैनात थे।

मुहर्रमका महीना लगा, हर जगह ताज़ियों मर्सियों और मजलिसोंका बोलबाला हुआ। मुसलमान स्त्री पुरुष काले, सब्ज़ और ऊदे रंगके कपड़े पहन कर सोगके रंगमें रँगे हर तरफ़ दिखलाई पड़ने लगे। लड़कियाँ मैके बुला ली गईं, नाते-गोते मेल-पड़ोसकी औरतोंमें बुलावे जाने लगे। हरे रंगके कुरते पहने बच्चोंमें घर-घर गोटेके लिए धूम मचने लगी। ग़रीबसे लेकर बड़े-बड़े मुसलमान अमीरोंके घर तक सालभरके त्योहारकी चहल-पहल मची हुई थी। केवल बादशाहबेगमके घरमें ही रंग फीका था।

आग़ामीरने इस बार शाही महलोंमें हर तरफ़, ख़ासतौरपर स्वर्गीय नवाबोंकी विधवा बेगमों और रखैलोंमें बड़ा रुपया बाँटा जिससे कि वे धूम-धामसे मुहर्रम मना सकें।

बादशाहबेगमने चुप-चाप सब सहन किया। धार्मिक कर्म और रीति-रिवाज यथाविधि मनाये गये। शाहज़ादेआलम रोज़ उनकी मजलिसोंमें जाते थे और बाहरका कोई आदमी नहीं होता था।

अशरेका दिन राज़ी-खुशी बीत गया। लेकिन दो रोज़ बाद ही सारे शहरमें शाही छापेख़ानेके छपे हुए बड़े-बड़े इश्तहार दीवारोंपर चिपकाये जाने लगे, जगह-जगह भीड़ इकट्ठी हो गई। इश्तहारोंमें बादशाह सलामत की तरफ़से हुक्म हुआ था कि जो भी पेशेवर सिपाही या हथियारबन्द आदमी खुलेआम या छिपेतौरपर सुलेमानजाहकी मदद करेगा उसे सख्त सज़ा दी जायगी और उसकी ज़मीन जायदाद ज़ब्त कर ली जायगी। शाही फ़ौज़के अफ़सरोंके लिए भी एक फ़रमान निकाला गया था—शाही फ़ौज़के हर अफ़सरको आगाह किया गया था कि कोई भी नसीरुद्दीन हैदरको किसी क़िस्मकी मदद न दे, उनसे किसी भी तरहका सम्बन्ध न रक्खे और उनसे इनाम-इक़राम वगैरह न ले। जो भी अफ़सर बादशाह की मर्ज़ीके ख़िलाफ़ काम करेगा उसे सख्त सजा दी जायगी।

तीसरा इश्तहार जनताके सम्मुख मीर फ़ज़लअली और फ़ैजुन्निसा मुग़लानीके कुचक्रोंकी पोल खोलनेके लिए बादशाहसलामतकी ओरसे छपवाया गया था। इसमें नसीरुद्दीनको बहकाकर विद्रोही बनानेका सारा दोष फ़जलअलीपर मढ़ा गया था।

बादशाहबेगम और नसीरुद्दीन हैदरके महलोंपर कम्पनी सरकारका पहरा बैठा हुआ था। बादशाहबेगमके महलके भीतर-बाहर चारो ओर आग़ामीरकी फैलाई हुई अफ़वाहोंने आतङ्क मचा रक्खा था। बेगम साहबाके ग़ुलाम और बाँदियाँ उन्हीं बातोंके वशीभूत होकर गुपचुप बातें किया करते थे।

बादशाहकी ओरसे खास महलका खर्च नहीं आ रहा था। दिनपर दिन तंगी आ रही थी। आग़ामीरकी अफ़वाहें बादशाहबेगमके ख़िदमतगारोंको आये दिन दहला रही थीं—"बादशाहसलामत इस हद तक नाराज हैं कि किसी भी दिन उन्हें तलाक़ दे सकते हैं। अब एक छदाम भी इन्हें नहीं मिला करेगी। जो ख़ादिम हुजूर बेगम साहबाका साथ देंगे उनपर किसी वक्त कोई भी आफ़त आ सकती है।" भूख और डरके मारे बहुतसे लोग नौकरी छोड़कर चुपचाप भाग गये।

दिनोंदिन पैसा छीज रहा था और एक दिन वह भी आया जब कि अवधके महाराजकी पटरानी कौड़ी-कौड़ीको मुहताज थीं। तोते मैना और चिड़ियोंके लिए दाना न था, मवेशीखानेमें जानवर पहले ही से भूखों मर रहे थे। ख्वाजासरा, गुलाम, बाँदियाँ आकर हाथ बाँधे, सर झुकाये, ग़मगीन, डबडबाई आँखोंसे हुज़ूर बेगमसाहबाके सामने चुपचाप खड़े हो जाते। अवधकी महारानी कहतीं: "बादशाहके नज़रे-करमसे महरूम बेगमात यूँही बसर करती हैं। शाही हरम औरतोंके लिए दोज़ख है। ये खानसामाका गुलाम, तुम्हारा बादशाह, अगर यह सोचता है कि सैयद मुबश्शिर खाँ मुनजमुलमुल्ककी बेटी उसके और उसके खानसामाके आगे अपना सर झुका देगी तो वह सर पटक पटकके मर जायेगा, मगर उसकी आस पूरी न होगी।"

बादशाहबेगम अपने पतिसे इतनी चिढ़ गईं थीं कि खुले आम उनकी शानके ख़िलाफ़ अपमानजनक शब्दोंका प्रयोग करती थीं।

फ़ैज़न बीबीके जानेके बादसे उन्हें किसी पर भी विश्वास नहीं रह गया था। मुन्नाजान आठों पहर अपनी दादीकी नज़रोंके सामने ही रहता। उन्होंने अपने कुँए वाली कोठरीमें ताला डाल दिया था। खाना या तो स्वयं बनातीं या अपनी नवासियों वज़ीर बेगम और हाजी बेगमके हाथ का खाती थीं। हर शख्स उन्हें बादशाह और आग़ामीरका जासूस नज़र आता। जो ख़ादिम भाग गये वे न भागनेवाले नमकहलालोंके लिए

स्वामिनीके मनमें शंकाओंके काँटे बो गये। बादशाहबेगम सोचतीं, जो लोग नहीं गये हैं वे ज़रूर बादशाह या आग़ामीरके सिखाये पढ़ाये हुए हैं। वे किसीसे अपना कोई काम ही न कराती थीं, वे हर एकके सायेसे दूर भागती थीं। एक करीमन और दुलारीके लिए किसी हद तक उन्हें अपनापन महसूस होता था। दुलारीने उनपर गहरा जादू डाल दिया था। धर्म कर्म रोज़े नमाज़की पाबन्द, गम्भीर, मुन्नाजान पर अपनी जान कुर्बान करनेवाली, सच्चरित्र दुलारी उन्हें सुहाती थी। करीमन बीवीने फ़ैज़न बीवीका मन जीता था, वे उसकी बेहद तारीफ़ किया करती थीं। हुज़ूर बादशाह बेगमसाहबाने भी उसे भली और नेक माना था। इनके अलावा अपनी एक पुरानी दासी हैदर बाँदी पर भी उन्हें भरोसा था।

दुलारी उनके सौतेले बेटेकी चुम्बक शक्ति थी। और साथ ही उसने अपनी पाक दामनीका ऐसा सच्चा मुलम्मा चढ़ा रक्खा था कि बादशाहबेगम मन ही मन उसका आदर भी करती थीं। इस नाज़ुक घड़ीमें रह-रहकर बादशाहबेगमको यही भय सताता कि कहीं इन संकटोंसे थककर नसीरुद्दीन उनके कब्जेसे निकल न जाय। उन्होंने एक दिन दुलारीको अकेलेमें बुलाकर कहा : "साहबेआलमका दिल दरियाकी तरह है, वह मौजोंसे खेलना पसन्द करता है, उसे तुग़यानियोंसे दहलन होती है।"

दुलारी ख़ामोश खड़ी रही।

बादशाहबेगमको उसका इस तरह चुपचाप खड़ा रहना पसंद न आया। यह सच है कि उन्हें सतीत्व, पवित्रता आदि गुण पसंद आते हैं पर उन्हें दुलारीका इस समय उनकी रक्षा करनेका हठ अच्छा नहीं लगा। मामूली औरतोंका इस संबन्धमें हठ कैसा? जिस सौभाग्यके लिए महलोंकी हर लौंडी बाँदी तरसती है उस सौभाग्यको दुलारी इस तरह ठुकराये, यह उनके मनमें झुँझलाहट पैदा करता है; वे बोलीं : "खुदाके काममें मदद देनेसे बढ़कर और कोई सबाब नहीं। साहबेआलमका दिल इन तूफ़ानोंसे मुरझा न जाय, उनके हाथों करोड़ोंका भला होगा। मैं इसी

लिए उस नन्हें नाज़ुक पौदेको कुदरतकी आँधियों और सियासतके ख़ूँख्वार दरिन्दोंसे बचाया करती हूँ। अल्लाहसे मुझे इसके लिए हुक्म मिला है वर्ना मुझे क्या लालच था? सुलेमान जाह एक हक़ीर खवासकी औलाद है जिसने फ़रेबसे मेरे हक़को छीन लिया। मैं नफ़रतकी आगसे जल रही हूँ, और फिर भी तू देखती है कि मैं अल्लाहके हुक्मसे बँधी हुई साहबेआलम की बहबूदीके सिवा और कुछ नहीं चाहती, फ़र्ज़ अस्मतसे भी बड़ा है बेटी, तू ख़ुदावन्दे क़रीमकी नज़रोंमें सदा नेकचलन बनी रहेगी।" बादशाहबेगमने आज तक किसीका एहसान नहीं माना था।

दुलारीने यह सुनकर मानो जग जीत लिया। उसे भला और क्या चाहिये था। गम्भीर किन्तु मीठे स्वरमें बोली—"ख़ुदारसूल और हज़रतअलीके बाद इस नाचीज़के रोयें-रोयेंमें मलिकयेजहाँका ख़याल ही बसा है। जब महलोंमें नहीं आई थी तबसे ही हुज़ूरकी शोहरत मुझे नेक राहपर चलनेका हौसला देती थी। और अब तो लोहेको पारसकी ख़िदमतमें सदा रहनेका मौक़ा मिल गया। समझती थी अल्लाहकी दी हुई अपने शौहरकी इन दो निशानियोंका मुँह देखकरहुज़ूरके ज़ेरसाये उम्र गुज़ार दूँगी, मगर जब मरियमुल अस्मत ही मुझसे मेरे अस्मतके मोतीकी आब माँग रही हैं तो अपनी क़िस्मतपर रोना आता है। [illegible] मुझसे वह माँग रही हैं जिसे लेकर मैं अल्लाहके जलवे को देखने[illegible] अक़दा रखती थी। फिर भी, खातिरजमा रक्खें, अगर अल्लाहको मंज़ूर होगा तो आपकी और सल्तनतकी ख़िदमतके लिए कामकरते हुए भी अपने दामनपर धब्बा न लगने दूँगी।"

बादशाहबेगमका कुम्हलाया मुखमण्डल खिल उठा। अपने गलेसे मोतियोंकी माला उतारकर दुलारीके गलेमें डाल दी और उसके सरपर हाथ फेरकर कहा—"ख़ुदा तुझे इसका सिला दे, ख़ुदा तेरी मुराद पूरी करे, तेरा दामन पाक रहे।"

दुलारी बादशाहबेगमके अनजानमें चोरी-छिपे सुलेमानजाहसे मिला

तो करती ही थी, अब आज़ाद होकर सुलेमानजाहके महलोंमें जाने लगी। मुन्नाजान करीमनबीबीसे काफ़ी हिल गया था, फिर भी दुलारी दिनमें दो-चार बार आकर बादशाहबेगमके पोतेका मुँह चूम जाती।

बेगमके महलोंमें फ़ाक़े होने लगे। बाँदियाँ, ग़ुलाम अगर चार दिन बाद भी मुट्ठीभर चने खानेको पा जाते तो अपना भाग सराहते। बादशाह बेगमकी अछूतियाँ भी कुम्हलाने लगीं।

और कम्पनी बहादुरके नये रेज़ीडेण्ट मॉर्डेण्ट रेक्टस महोदयके आने तक बादशाहबेगमके महलोंमें यों ही तंगदस्तीके दिन गुज़रते रहे।

इतने दिनों तक साहबेआलमके महलोंमें भी तंगदस्तीका आलम रहा। मगर यह तंगहाली बनावटी क़िस्मकी थी। सुलेमानजाहके बग़ावत करने पर भी बादशाहसलामतने उनका क़ुसूर माफ़ कर रक्खा था मगर चूँकि सुलेमानजाहकी माताको बादशाहकी ओरसे सताया जा रहा था, इसलिए युवराज महाराजका क़ुसूर माफ़ करनेको तैयार न थे। उन्होंने अपनी तरफ़से अपने हर ग़ुलाम बाँदीको यह आदेश दे रक्खा था कि वे बादशाह और आग़ामीरके आदमियोंसे कोई सरोकार न रक्खें। उन्होंने मानो अपने बादशाह पिताको दण्ड देनेके लिए ही ख़र्च लेना भी अस्वीकार कर दिया था। वे अपनी माताका साथ हरग़िज नहीं छोड़ना चाहते थे। लेकिन मैमनत ख्वाज़ासरा बड़ा चतुर था, अपने इकलौते बेटे और उत्तराधिकारीके लिए बादशाहका रुख देखकर ख्वाजासराने अपना बहुत सारा आरायशी सामान एलानियाँ तौर पर बेच डाला और सुलेमानजाहकी ख़िदमतमें रुपया लेकर पहुँच गया। कहा : "हुज़ूरका नमक खाया है यह रुपया भी हुज़ूरका ही है और अगर इसे हुज़ूरने क़बूल न फ़रमाया तो यह ग़ुलाम यहीं हुज़ूरके क़दमों पर ज़हर खाके अपनी जान दे देगा।"

सुलेमानजाह बूढ़े मैमनतका आग्रह टाल न सके। जबसे दुलारी बादशाह बेगमकी आज्ञानुसार सुलेमानजाहकी ख़िदमतमें आठों पहर रहने लगी थी, तबसे आग़ामीरके इशारे पर नसीरुद्दीनकी बहुतसी चहेतियाँ

आये दिन अपने आभूषण बेचकर युवराजके लिए त्याग किया करतीं थीं। सबके त्यागको अपने लिए स्वीकार करते भी नसीरुद्दीन हैदर अपने लिए दुलारीके सतीत्व-त्यागको ही सर्वश्रेष्ठ त्याग मानते थे। दुलारीने नसीरुद्दीनके चंचल मनकी हर गतिको अपने नियंत्रणमें ले लिया था। दुलारी उसका आत्मविश्वास बन गई थी। अपनी माताकी तरह ही सुलेमानजाह भी केवल दुलारीके ही हाथका बना भोजन करते थे, पानीकी सुराही भी हर वक्त अपने पास ही रखते थे और दुलारीके सिवा किसीके हाथों शराब पीना भी उन्होंने छोड़ रक्खा था। दुलारी मुन्नाजानकी तरह ही मुन्नाजानके बापको भी खिलाती थी।

शरतपूनोंकी रात थी। दुलारीने छत पर साहबेआलमके लिए फूलोंका हिंडोला डाला था मगर खुद बादशाहबेगमकी खिदमतमें थोड़ी देरके वास्ते चली गई थी।

सुलेमानजाह बड़े बेक़रार थे। पूनोका चाँद, रातकी रानीकी नशीली महक, हल्की पेंगों लहराता हुआ हिंडोला और नीचे, सामने बहती नदीकी धारा उन्हें दुलारीकी बड़ी याद दिला रही थी। शराबकी याद दुलारीसे कम नहीं थी बल्कि इस वक्त दुलारी और शराब उन्हें एक नज़र आ रही थीं, बादलोंमें चलते चाँद और दरियामें एक ही रवानी थी, दोनोंका हुस्न दुलारीकी यादमें समाया था।

अज़ीज़नने उम्दा गज़ल गाई। कत्थक नाचने वालियोंने दान माँगते हुए कान्हाकी बरजोरियोंका कुछ ऐसा नक़शा खींचा, गोपियोंने अपने लुटते जोबनकी ऐसी बेबसी दरसाई कि साहबेआलम झूम-झूम उठे।

अज़ीज़नकी टोलीने युवराजको रिझानेमें कोई कसर न उठा रक्खी; वह होठों तक जाम लाई। युवराज भूले और फिर सिहर कर मुँह फेर लिया।

अज़ीज़न मुँह लगी थी, आँखोंमें आँसू भर लाई: "ये बेऐतबारी नहीं

सही जाती साहबे आलम। मैं जान दे दूँगी। इन्हीं क़दमों पे ज़हर खाके लोट जाऊँगी, सच कहती हूँ।"

साहबे आलमके उड़ते हुए ख़याल, उड़ती हुई निगाहें थिर कर अज़ीज़नको गौरसे देखने लगीं; वे समझ न पाये कि उन्होंने क्या देखा क्या गौर किया, इससे मिज़ाज परेशान हुआ। सुलेमानजाह तीखे स्वरमें शब्द जमा जमा कर बोले: "ज़रा देर पहलेकी वो शोख़ी, वो चुलबुलापन और अब ये रंजोग़मकी कैफ़ियत! अल्लाह रे तेरा हुस्न! अज़ीज़न, तू ज़हर खाकर मेरे क़दमों पर तड़पती हुई निहायत हसीन लगेगी। मैं उस मंज़रको देखनेके लिए बेताब हूँ।"

"आप औरतके दिलकी कैफ़ियत नहीं जानते ज़िल्लेसुभानी।"

"ज़िल्ले सुभानी—"

"चाहती थी कि साहबेआलमको एक बार शाहेअवधका ताज पहने देख लेती। मगर वह अरमान मेरे जीके साथ जायगा, इसीलिए पुकार लिया।"

"ख़ैर जान देने वालीका यह क़ुसूर मुआफ़ किया जाता है, अपना ज़हर निकालो।"

आदेशकी दृढ़ता देख अज़ीज़न काँप उठी, फिर भी अपनेको सँभाल कर बोली:—"ज़हरे इश्क़ नस-नसमें पिनहा है हुज़ूरे आलम, दिल बुझते ही जान निकल जायगी।

युवराज नसीरुद्दीन हैदरने दूर खड़ी एक लौंडीको आवाज़ देकर कहा: "मरियम, अज़ीज़नको ज़हर लाकर दे। मैं उसे मरते देखना चाहता हूँ। और अगर ये ख़ुद अपनी मर्ज़ीसे ख़ुदकुशी न करे तो मेरे हाथों मारी जायेगी। इसने मुझे ज़हर देनेकी कोशिश की।" नसीरुद्दीनकी बड़ी बड़ी आँखें ग़ुस्सेसे लाल हो गई? ऐसा लगता था मानो मुर्शिज़ादा हठ पर चढ़ गये हों।

अज़ीज़नका चेहरा डरसे सफ़ेद पड़ गया था। सुलेमान जाह हिंडोले

से उतर आये, पास रक्खी कटारको उठा लिया और अज़ीज़नको धक्का दे ज़मीन पर गिरा दिया। लौंडियाँ, बाँदियाँ दूर सहमी हुई खड़ी थीं। युवराज डरकी मारी अज़ीज़नके पास बैठ गये, कटारसे उसकी चोली फाड़ डाली, अज़ीज़न चीख़ उठी।

दुलारीने उसी समय प्रवेश किया। अज़ीज़नके वक्ष पर कटार गिराते हुए नसीरुद्दीनने दुलारीको देखा, कटारकी नोक एक जगह रुक गई। अज़ीज़न फटी आँखोंसे दुलारीको देखने लगी। दुलारीने उसे देखा, नसीरुद्दीनके पास बैठी, कटार उनके हाथसे लेली, मुसकुरा कर बोली : "लहू चाँदनीको बदरंग करेगा हुज़ूरे आलम।"

नसीरुद्दीन दुलारीको भी उसी तरह ग़ौरसे देखने लगा जैसे कुछ देर पहले अज़ीज़नको देख रहा था। चार बड़ी-बड़ी मद भरी आँखें एक दूसरेमें उलझ गईं। दुलारीकी एकटक सधी हुई पुतलियाँ सुलेमान जाह की बड़ी चंचल पुतलियोंको अपने साथ साधने लगीं। नसीरुद्दीन पल दो पल तो बँधा रहा और फिर नज़र हटाकर एक बार अज़ीज़नकी तरफ़ देख दुलारीसे कहा : "इसने मेरे लिए ख़ुदकशी करनेकी तमन्ना ज़ाहिर की थी, फिर मेरा भी जी हो आया कि किसीका अपने लिए ज़हर खाकर तड़पना और मरना देखूँ। सुना है, ज़हरके ज़ोरसे इन्सानका जिस्म अंगड़ाइयाँ ख़ूब लेता है।"

"यह दिखाना कौन मुश्किल है।" दुलारीने अपने हाथसे एक अँगूठी उतार ली और उसका नगीने जड़ा ऊपरी ढक्कन खोल कर अपने होठोंके पास ऐसे सहज भावसे लेगई कि अगर नसीरुद्दीन उतनी ही फुर्तीसे उसका हाथ न झटकता तो अँगूठीका ज़हर दुलारीके हलक़में उतर जाता।

नसीरुद्दीनने कहा : "जां निसार देख लिया। जियो दुलारी, तुम्हारे दमसे नसीरुद्दीन भी जियेगा।"

कहकर नसीरुद्दीन तेज़ीसे उठ खड़ा हुआ और टहलने लगा। दुलारी-

ने अज़ीजनका हाथ आहिस्तासे दबाया, मानो उसे अभयदान दिया हो। दुलारी उठी, उसे उठनेका इशारा किया। अज़ीज़न उठ बैठी। दुलारीने दासियोंको बाहर जानेका इशारा किया फिर मुँडेरके पास खड़े, चाँदनीमें चमकती गोमतीको देखते हुए सुलेमानजाहके पास जाकर ख़ामोशीसे छूती हुई सायेकी तरह कुछ दूर खड़ी हो गई लेकिन यह हल्का-सा छूना नसीरुद्दीनसे हज़ार बात कह गया।

"शराब !" मन की बेताबी हाथोंहाथ मिली। दुलारीने गर्दन घुमाकर अज़ीज़नको पुकारा। सुलेमानजाह फ़ौरन ही बोले: "जानती हो अज़ीज़नने मुझे ज़हर देना चाहा था।"

"यह जानती हूँ कि आपका ख़याल ग़लत है।"

इतने ठेठ तरीक़ेसे तो नसीरुद्दीनके मां-बापने भी कभी उसे गलत साबित करनेकी जुरअत नहीं की। नसीरुद्दीन चमका मगर चट बुझ गया, ज्यों वार खाकर बेबस हो गया। दुलारी इस समय अज़ीज़नको शराब लानेका आदेश दे रही थी। उसने अपने गलेकी जंज़ीरमें पड़ी हुई ताली अज़ीज़नको दे दी। मृत्युभय और आशंकाओंसे सहमा हुआ युवराज दुलारीको बरजना चाहता था मगर दुलारीका आदेश भरा मीठा स्वर मानो केवल अज़ीज़नको ही नहीं, खुद नसीरुद्दीन हैदरको भी शक्तिसे बाँध रहा था।

अज़ीज़नके जानेके बाद दुलारी सहसा बच्चीकी तरह नसीरुद्दीनके गलेमें बाँहें डाल झूल गई और फिर उसकी गर्दन झुकाते हुए होठोंके जादूसे बाँध कर बोली: "मैंने चाँदको चूम लिया।" और फिर बच्चीकी तरह ही, खिलखिलाकर ताली पीटने लगी।

नसीरुद्दीनके लिए दुलारी एक ऐसा जादू है जो उसके चंचल मनकी गतिसे भी अधिक तीव्रतासे चलता है। दुलारी उसके अनबूझे मनको अपनी हर गतिसे अर्थ दे देती है। नसीरुद्दीनको लगता है कि जैसे उसकी यही मर्ज़ी थी—दुलारीकी श्रृङ्गार-चपलता और वाक्पटुता

नसीरुद्दीन पर छा जाती है। दुलारीकी गम्भीरता नसीरुद्दीनको अपने अभावकी पूर्ति-सी लगती है। नसीरुद्दीन उसके आगे बेबस हो जाता है और जब उसकी बेबसी कभी विद्रोह करने पर आमादा हो उठती है, तो दुलारी चटसे चाँद सितारोंकी सी दूरी पर चली जाती है। हरदम जैसे धूप और चाँदनीका स्पर्श पाते हुए भी मनुष्य चाँद और सूरजसे दूर रहता है, साहबे आलम उसी तरह दुलारीकी दूरी भी महसूस करते थे। इन दो सालोंमें धीरे धीरे नसीरुद्दीन हैदरकी यह धारणा बन गई थी कि ज़िन्दगीके सैलाबमें बेपनाह बहते हुए शाहज़ादे सुलेमानजाहको मदद देनेके लिए परियोंके शाह सुलेमानने एक परी भेज दी थी। दुलारी सितम थी : कभी बच्ची, कभी शोखियोंसे भरी अल्हड़ भोली लड़की शाहज़ादेके कृत-विकृत रसकी हर प्रकारसे पूर्ति करती हुई रमणी, कभी अपने आचरणसे माँ की अछूतियोंकी तरह पवित्र भाव जगानेवाली देवी, और कभी सलीमको जहाँगीर बनानेवाली मेहरुन्निसा नूरजहाँकी तरह अपना सहारा, अपनी शासिका सी लगती थी।

अज़ीज़न शराबका सामान लेकर आ गई, उसने अबतक अपनी फटी हुई चोली नहीं उतारी थी। उसका श्रृङ्गार अब भी बिखरा हुआ था। अज़ीज़न अब भी शाहज़ादेको सहमी कनखियोंसे ही देख पाती थी, उसके होश हवास उसके श्रृङ्गार की तरह बिखरे हुए थे। दुलारीने अपने हाथसे जाम भर कर साहबेआलम के गलेमें बाँह डालते हुए उन्हें बरबस झुकाते हुए कानमें धीरेसे कहा : "बाँके यार, आज तुझे अपनी जूठी पिलाऊँगी।" और यह कह प्याला अपने होठोंसे लगाकर फिर शाहज़ादेके होठोंसे लगा दिया।

अज़ीज़न हैरतमें थी। दुलारीको सहारा दिये सुलेमानजाह हिंडोलेकी तरफ़ बढ़े; दुलारी गोया इस वक्त बेबस हो गई थी, उसे सहारेकी ज़रूरत थी और नसीरुद्दीनको यह सहारा देनेकी सेवा मन ही मन खुश कर रही थी। हिंडोले पर पहुँच दुलारी निढाल हो गई। उसने हल्केसे ज़ाहिर

किया कि आज वह बहुत थक गई है और उसे हरारत भी है। दुलारी बार-बार नसीरुद्दीनको अपने पास खींच उसके कानोंमें धीरे-धीरे बेमतलबकी बातें करती। उसने अपने बाँकेयारसे अनुरोध किया कि वह उसे अपने हाथों ढाल कर पिलाये, अपने होठोंकी जूठी पिलाये। सुलेमानजाह दुलारीके अनुचर हो गये।

अज़ीज़न ख़ामोश खड़ी थी। उसने अब तक सुलेमानजाह पर किसी भी स्त्रीका ऐसा प्रभाव न देखा था। खुद अज़ीज़न भी साहबे आलमकी बड़ी चहेतियोंमें थी मगर कभी इस तरह शाहज़ादेको अपने इशारों पर चलानेकी जुरअत सपनेमें भी नहीं कर सकती थी। अज़ीज़न ठगी-सी खड़ी थी कि दुलारीने शाहज़ादेकी छातीके सहारे लेटे हुए शोख़ नज़रोंसे उसे देख कर कहा: "साहबेआलम, खिलाड़ियोंमें कोई छोटा-बड़ा नहीं होता। तुमने अज़ीजंन बहनको आज बुरी तरह सताया है। वे तनिक कमज़ोरजीकी हैं मगर शाहज़ादेकी ख़ैरख्वाह हैं। बहन नज़दीक आओ, साहबेआलम के पास बैठो। साहबे आलमको तुम पर एतबार है। मुसीबतज़दा होने पर अमीरज़ादे अपने अज़ीज़ोंको ही अपने परेशानकुन मिज़ाजकी कसौटी पर कसते हैं। ले, मैं तुझे अपने हाथसे तेरे जादूगरके होठोंकी चूमी पिलाऊँगी।"

जबसे बादशाह बेगमकी आज्ञासे दुलारी उजागरमें युवराजकी सेवामें रहने लगी, उसने शाहज़ादेकी चहेती हर दासीको अपने प्रभावमें धीरे-धीरे ले लिया था। मुन्नाजानकी माता अफ़ज़ल-महल तो शाहज़ादेकी यादसे बिलकुल उतर ही चुकी थी; दिल्लीके शाहकी पोती, नसीरुद्दीन हैदरकी विवाहिता पत्नी सुल्तान महल भी बहुत सीधी थी। शाहज़ादेको उनके पास जाकर रस नहीं मिलता था। दुलारी शीघ्र ही शाहज़ादेकी सर्वसत्ताधिकारिणी प्रेयसी मान ली गई थी। अपने पुत्रको वशमें करनेकी इच्छा गाज़ीउद्दीनको मन ही मन तड़पाती थी। सुलखियाने अंतमें उनकी इस चिन्ताको अपने सिर ओढ़ लिया। एक दिन वह सादे देहाती वस्त्र पहिन

कर, शाही पंजा दिखा दुलारीकी कोठरीमें आई। दुलारीके लड़के मुहम्मद अलीको ही मिठाईसे बहला कर अपनी माँको बुलाने भेजा। करीमन उस समय बादशाहबेगमके महलमें थी।

दुलारीने अचानक आकर एक अजनबी स्त्रीको देखा। सुलखिया बहुत शीघ्र ही दुलारीको अपना विश्वास देनेमें समर्थ हुई। सुलखियाने बिना किसी प्रकारका आडम्बर किये ठेठ स्वार्थकी बातें कीं, कहा कि पिता-पुत्रमें समझौता करा दुलारी बादशाहकी कृपापात्री हो जायगी। उसने यह भी बतलाया कि बेगमसाहबासे नाराज़ होनेके साथ ही साथ ज़िल्लेसुभानी आग़ामीरसे भी मन ही मन ख़ुश नहीं। वो चाहते हैं कि नसीरुद्दीन हैदरको कोई राज-पाट सम्हालने लायक़ करदे। दुलारीने कोई आश्वासन तो न दिया पर दूसरे दिन सुलखियाको अपना निश्चित उत्तर देनेके लिए अवश्य बुलाया।

दुलारी इस समय नसीरुद्दीनसे उन्हीं बातोंकी चर्चा चलानेके लिए खुशनुमा जाल फैला रही थी। शाहज़ादेके सम्पर्कमें आनेवाली किसी स्त्रीमें ऐसा आत्मविश्वास नहीं था जैसा कि दुलारीमें था। दुलारी भली-भाँति नसीरुद्दीनको समझ गई थी। तन दुर्बल, मनका प्रबल चंचल, अतृप्त विलासी यह भूलना चाहता था कि वह स्वयं अपनी वासनाओंको ही पूरा करनेमें पूर्णरूपसे समर्थ नहीं है। अपनी मौजूदगीमें दुलारी मुर्शिदज़ादाको प्रतिक्षण यह विश्वास दिलानेके लिए तत्पर रहती थी कि साहबे आलम सर्वशक्तिमान और सर्वगुणसम्पन्न हैं, मगर हर इन्सानको ऐसा साथी चाहिए जो बेलौस सलाह दे सके और गालियाँ देकर इन्सानके घमण्डको उसके क़ाबूमें रख सके। दुलारीने शाहज़ादाके आवारा मनको तू-तड़ाक और गालियोंसे रिझाया था। नसीरुद्दीन यहीं बेबस था, वह रसमें गालियाँ खाता और गालियाँ खानेकी भोली नीयतमें दिनपर दिन दुलारीका ग़ुलाम होता जाता था।

अज़ीज़नको ख़ुशकर, उसे विदाकर छतपर चाँदकी गवाहीमें सुलेमान

जाह और दुलारी ही रह गये। दुलारीने मौक़ा देख बात छेड़ी—"तुम्हारा इरादा क्या है?"

नसीरुद्दीन चौंक पड़ा। दुलारीने निष्कपट भावसे सुलखियाके आने का समाचार और उद्देश्य बतलाया और बादशाहबेगमको दम-दमपर सराहते हुए भी उसने नसीरुद्दीनको अपने पिताकी बात मान लेनेके लिए उभारा। उसने नसीरुद्दीनको यह आश्वासन दिया कि वह उसे राज-काजमें नूरजहाँकी तरह सहायता देगी; वह उसे दूसरा जहाँगीर बनायेगी।

ज़िलहिजकी नवीं तारीखको दो घड़ी रात बीते बादशाहने नसीरुद्दीन के पास इमामबख्श मीरदहाके साथ फ़तहअलीके लड़केको भेजा। दुलारी सुलखियासे पहले ही इसकी सूचना पा चुकी थी। इन लोगोंके आनेकी सूचना पाते ही दुलारीने नसीरुद्दीनको बाहर भेजा और यह क़सम दिलाई कि बादशाहकी तरफ़से जो भी हुक्म आया हो उसे बसरोचश्म तस्लीम फरमायें। दुलारी बहुत सावधानीसे मगर निश्चित रूपसे इस बातका प्रयत्न करने लगी कि एक दिन युवराज बेगमसाहबाके प्रभुत्वसे मुक्त होकर एक-मात्र उसके ही आदेशानुगामी बन जायें।

शाहज़ादा अपने पिताके भेजे हुए आदमियोंसे बड़ी अच्छी तरह पेश आया और उसने यह विश्वास दिलाया कि उसके पिता जो कुछ भी आज्ञा देंगे वह उनका पालन करेगा।

बादशाह बड़े ही प्रसन्न हुए। उन्होंने फ़तहअलीके बेटे और मीरदहा को खिलअत, दोशाला और रूमाल देकर सम्मानित किया, सुलखियाको खूब पुरस्कृत किया और सुलखियाके द्वारा ही दुलारीको भी।

दूसरे दिन सम्पूर्ण राजसी वैभवके साथ साहबे आलमको लानेके लिए सवारी भेजी गई। दारोग़ा-ए-दीवानखाना अमृतलाल सक्सेना और दारोग़ा-ए-तोशाखाना फतहअलीखाँ साहबे आलमको लिवा लानेके लिए भेजे गये।

जब बादशाहबेगमको यह समाचार मिला तो वे चौंक उठीं—"यह किसकी साज़िशसे मुमकिन हुआ ?"—बेगमसाहबाके मनमें स्पष्ट न होते हुए भी दुलारीके प्रति शंका पैठ गई।

युवराज, महाराज और रेज़ीडेण्ट तीनों ही इस भेंटसे सन्तुष्ट हुए। आग़ामीर भी ज़ाहिरा तौरपर बड़ी खैरख्वाहीकी बातें बघारता रहा।

बादशाहबेगमने दुलारीको अकेलेमें बुलाकर पूछा। दुलारी भोली बन गई। बादशाहबेगमने क्रोधमें आकर दुलारीको पीटते हुए कहा—"अहसान फ़रामोश ज़लील कमीनेकी औलाद, चार दिनकी आई हुई तू, मेरे बेटेको मेरे ही खिलाफ़ ले जाना चाहती है। मैं तेरी तमाम चालों को एक बारगी ही खत्म कर दूँगी।"

लेकिन बादशाहबेगम सफल न हो सकीं। प्रतिदिन वे अपने बेटेको दरबार न जानेके लिए समझातीं। युवराज माँकी इन ममताभरी मन्त्रणाओंसे लड़खड़ा उठते। दुलारी हर रात उन्हें माँकी इस आज्ञाके विरुद्ध पिताकी इच्छापर ही चलनेकी सलाह देती और हर दिन सुलेमानजाह दरबार जाते थे। साहबे आलमकी कोठीसे अँगरेज़ी पहरा हटा लिया गया। शाही हुक्मसे हर रोज़ शाहज़ादेके लिए क़ीमती और स्वादिष्ट भोज्य-पदार्थ आया करते थे। बादशाह अक्सर एकान्तमें युवराजसे राज-काजके सम्बन्धमें मन्त्रणा भी लिया करते थे। दुलारी उन्हें ऐसी सलाह देती कि अक्सर शाहेज़माना साहबे आलमकी रायसे मुत्तफ़िक़ होते और उनकी दाद देते थे।

सुलेमानजाहका सितारा बुलन्द हो रहा था। बादशाह और रेज़ीडेन्ट उनकी बड़ी खातिर करते। खुद शाहज़ादेको भी यह महसूस होता कि काम-काजमें मशग़ूल रहनेसे उनका चित्त प्रफुल्लित रहता है। ज़िम्मेदार प्रतिष्ठित और कार्यव्यस्त पुरुषोंके साथ इतना समय बितानेका यह पहला ही अवसर युवराजको मिला था। नये जीवनमें बड़ी ताज़गी थी परन्तु हर शाम नमाज़के बाद बादशाह बेगम आतीं और अपने सौतेले बेटेको

दरबारमें न जानेके लिए तरह-तरहसे उपदेश देती थीं; दुलारी प्रतिदिन बादशाहबेगमके नये-नये तर्कोंको काटकर निर्भय कर देती थी।

बादशाहबेगमने दुलारीसे बदला लेना आरम्भ किया। सबके सामने तरह-तरहसे दुलारीका तिरस्कार करती थीं। एक दिन दुलारी और करीमन पर चोरीका आरोप लगाकर बादशहबेगमने दोनोंको बुरी तरह कोड़ोंसे पिटवाया और अपनी नौकरीसे निकाल दिया। दुलारी, कोड़ोंकी मारसे नीली पड़ी हुई देह लेकर अपने बच्चों और करीमनके साथ सुलेमानजाहकी कोठीमें हठपूर्वक चली आई। बादशाहबेगमकी कड़ी आज्ञा होने पर भी सुलेमानजाहकी कोठीसे दुलारी को कोई निकाल न सका। शाहज़ादेको सूचना देनेके लिए एक विश्वस्त आदमीको उसने कोठी फ़रहबख्शकी ओर रवाना किया।

जिस समय सुलेमानजाहने कोड़ोंसे नीली पड़ी दुलारीकी देह देखी और कारण सुना उस समय वे आवेशमें क़ाबूके बाहर हो गये। दुलारीने उन्हें सम्हाला और यह सलाह दी कि वे बादशाहबेगमके आश्रयसे निकल कर किसी स्वतंत्र जगहमें रहें। बादशाह इससे प्रसन्न भी होंगे और युवराजकी सामाजिक प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी।

नसीरुद्दीन हैदरने उसी दिन अपने पितासे रहनेकी जगह माँगी। ज़िल्ले सुभानी दुलारीके कहे मुताबिक़ ही बड़े प्रसन्न हुए, उन्होंने फ़ौरन हैदरबाग़ हसनबाग़ और शीशमहलके भवनोंकी भव्य सजावट करनेकी आज्ञा दी। महाराज और युवराजको प्रसन्न करनेकी कामनासे मुतमादुद्दौला आग़ामीरने अपनी दौलतपुरे वाली उम्दा ढंगसे सजी-सजाई बारादरीमें युवराजको ठहरनेके लिए आमंत्रित किया। बादशाहने इसे स्वीकार किया।

मीरफ़ज़लअली और फ़ैज़ुन्निसाकी गिरफ्तारीके बाद बादशाहबेगमने यह दूसरी करारी मात खाई थी।

साईसकी पत्नी दुलारीने शाही तंत्रकी लगाम युवराजके बहाने

अपने हाथमें लेकर बादशाहकी पत्नीको बुरी तरह नीचा दिखा दिया। वह बड़ी प्रसन्न थी।

१२

शहरमें सुबहसे धूम मच गई कि मुर्शिदज़ादा नसीरुद्दीन हैदर सुलेमानजाह अपनी सौतेली माँके प्रभावसे मुक्त होकर स्वतंत्र जीवन बिताने जा रहे हैं। इस खबरने चारों ओर अफ़वाहों और बातोंका घटाटोप छा दिया। लोग अपने काम-धाम छोड़कर चर्चोंमें मशगूल हो गये।

अकबरी दरवाज़ेके पास कल्लूखाँकी सरायके फाटक पर चारपाई पर बैठे हुक्क़ा गुड़गुड़ाते हुए समदअलीने कहा: "अमाँ भूरे, शाहज़ादेकी सवारी देखने नहीं चलोगे।"

भूरेखाँ गाँजा मल रहे थे, बोले: "मैं तो अपने ही घोड़े पर ज़ीन कस रहा हूँ उस्ताद, शाहज़ादोंकी सवारियाँ देखनेकी फ़ुरसत किसे है। अबे टुण्डे, जल्दीसे उठाना बेटा।"

एक हाथसे चारपाईके बाँध कसते हुए टुण्डेमियाँ बोले—"फ़ुरसत नहीं है।"

"देखा सालेको! जो मैं न पालता तो आज ससुरेका कहीं पता न होता। मियाँ, ज़मानेको देखो, ये हाल है।" कहकर भूरेखाँने दानिशमन्दों जैसी संजीदा सूरत बना ली।

हुक्क़ेका एक कश खींचकर समदअली बोले—"अरे मियाँ, ज़माने का हाल तो कोई इस वक्त जाके बादशाहबेगम साहबाके कलेजेसे पूछता कि जिन्होंने इतनी लगन और प्यारसे साहबेआलमको पाल-पोसकर हर तरह से लायक़ किया और जब अल्लाहने अच्छा दिन दिखलाया तो वालिदाको छोड़कर चल दिये। देख लेना भूरेमियाँ, आजकी तारीख़में इस बूढ़ेकी बात भी याद रखना, ये आग़ामीर बेगमसाहबाको भूखों मरवा डालेगा।"

भूरे मियाँ बातका जवाब देनेसे पहले टुण्डेपर गरजे—"अबे उठता है या आके लगाऊँ दो लातें। आधी घड़ीसे चिल्ला रहा हूँ—कल रात जो मुसाफ़िर आया है उसकी कोठरीसे केवड़ेकी शीशी उठा ला, कमसे कम महीना भर तो गाँजेमें ख़ुशबू की लपटें उड़ेंगी।"

"मैं चोरी करने नहीं जाऊँगा।"

टुण्डेका जवाब सुनकर भूरे खाँ तैशमें उठे और उसके पास जाकर जो ज़ोरसे लात घुमाई, तो टुण्डा चारपाईके नीचे घुस गया। भूरेखाँकी टाँग चारपाईके पायेसे टकराकर चोट खा गई। भूरे मियाँ टखना पकड़ कर कराहते और टुण्डेको गालियाँ देते उसी चारपाई पर बैठ गये। टुण्डा भागा। इसी वक्त कल्लू खाँ भटियारेका बेटा फाटकसे बाहर आ रहा था, भूरे मियाँने उससे चीख़ कर कहा: "घसीटे मियाँ, पकड़ लेना सालेको, जाने न पाये।" घसीटे मियाँने टुण्डेको गप्चीमें भर लिया। पकड़े जानेके बाद टुण्डा बिल्लीके पंजेमें दबे हुए चूहेकी तरह निश्चेष्ट हो गया।

"पकड़ लाना ससुरेको इधर।" भूरे खाँ गाँजेके बजाय अपनी चोट खाई हुई टाँग मलते हुए गरजे: "जबसे फ़रीदनकी लौंडिया दुलारीने इसे शह दी है—"

समदमियाँ हुक्का छोड़ हाथ बढ़ाकर हँसते हुए बोले: "अरे मियाँ, ये ज़माना ही दुलारियोंका है, देखते नहीं, दुलारीके आते ही बादशाह-बेगम बेसहारा हो गईं।"

घसीटे कल्लूको घसीटता और टिपियाता हुआ भूरेखाँके पास पहुँच चुका था। उसे सामने देख भूरेमियाँ समदमियाँको जवाब देते हुए उठे: "हो गई होंगी। इसको और इसकी दुलारीको तो मैं गँड़ासेसे काट डालूँगा।" कहते हुए उन्होंने टुण्डेको बुरी तरह पटक-पटक और उठा-उठा कर धुनना शुरू किया। मारके ज़ोममें भूरेमियाँका गाँजा मुट्ठीसे छूट कर गिर गया।

सरायकी बाहरी दीवालमें बनी दो कोठरियोंमें आबाद छिद्दा कुम्हारकी बीवी चिल्लाई : "अरे भइया, छोड़ देव छोड़ देव, बहुत हुइ गवा।"

"इस हरामज़ादेको छोड़ दूँ ? अरे मैं इसकी बोटी-बोटी काट डालूँगा, ये उस कसबीकी बेटीके फेरमें फूला है। वह हरामज़ादी मेरे बेटेको अपना दलाल बना रही है। पूछो उससे कि क्या मैंने उसकी रोज़ीके लिए पाला था इसे या अपने बुढ़ापेके सहारेके लिए ?"

झुँझलाकर समद मियाँ बोले—"अमाँ छोड़ो भी, इतनी देरसे समझा तो रहा हूँ कि बादशाबेगमकी मिसाल लो। अरे मियाँ कौन किसका होता है, जब माँ-बाप मर गये, तुमने पाला। तो भइया इसकी क़िस्मतमें लिखा होगा कि कोई अल्लाहवाला इस यतीमको शाहज़ादेकी तरह पालेगा।"

"तो समझ लो समद मियाँ इसकी और दुलारीकी क़िस्मतमें यह भी लिखा होगा कि उसकी नाक और इसकी गर्दन भी मेरे हाथों कटेगी।"

घसीटेखाँ भी दुलारीके चाहने वालोंमें था। भूरे मियाँकी बातका बुरा मान गया, बोला : "अपने लड़केको चाहे जो कुछ करो, पराई औरतसे तुम्हें क्या मतलब ? यह अपनी मर्ज़ीसे उसका काम करने जाता है वर्ना उसे क्या ग़रज़ पड़ी है कि तुम्हारे बेटेको फँसाये।"

घसीटेकी फटकार सुन कर समद मियाँ हुक्क़ा गुड़गुड़ाने लगे, भूरे मियाँ टुण्डेका हाथ छोड़ कर घसीटेका मुँह देखने लगे, और टुन्डा सराय-पतिके बेटेकी शह पा कुछ दूर हट कर खड़ा हो अपनी मार सहलाने लगा।

कल्लूखाँकी सरायमें फ़रीदनकी बेटीने ज़ुल्म ढा रक्खा था। अपनी जवानीमें फ़रीदन सरायके तबीयतदार मुसाफ़िरोंकी तफ़रीहके लिए बुलाई जाया करती थी। कल्लूखाँकी उससे ख़ासी दोस्ती थी। बढ़ते-बढ़ते यहाँ तक आपसी नाता बन गया कि फ़रीदन एक तरहसे सरायकी साझीदार बन गई। उसने मुसाफ़िरोंकी तफ़रीहके प्रबन्धकार्यको अपना पेशा बना

लिया और आप केवल सरायवालेकी प्रणयपात्री होकर उससे बँध गई। संयोगकी बात कि कल्लू खाँकी पत्नी और फ़रीदन साथ ही गर्भवती हुईं। कल्लू खाँको इस समय प्रबल मोह जागा, दैनिक व्यवहारमें अपनी भठियारीकी लात-पूजा करते हुए भी उसने अपनी निकाही पत्नीकी सन्तान को ही उत्तराधिकार देनेका निश्चय किया। फ़रीदन हर तरहसे चतुर, चाक-चौबन्द होने पर भी कल्लू खाँके नेह नातेको लेकर बड़ी भोली थी। कल्लू खाँके साथ उसका कोई पक्का-पोढ़ा क़रार न था, न निकाहनामेका कागज़, न मुताहनामा और न किसी क़िस्मकी साझेदारीका कागज़। फ़रीदन दोस्ती-दोस्तीमें ही मुसीबतके वक़्त अपने रुपयोंसे मदद करने लगी, मुसाफ़िरोंके आराम इन्तज़ाममें मदद करने लगी। मुसाफ़िर उसकी बोलीसे खुश होते, उसके चलन बरतावसे बँध जाते थे। कल्लू खाँकी भठियारीने पहले तो तोबा तिल्ला मचाई पर उसकी एक न चली। लेकिन उस समय फ़रीदन पर पीठ पीछे धोखेसे वार हुआ। कल्लू खाँने एक बने हुए मुसाफ़िरके साथ फ़रीदन पर इल्ज़ाम लगाया; मुसाफ़िर भी चारके सामने अपना आरोप स्वीकार कर गया। फ़रीदन सरायसे निकाल दी गई। फ़रीदनने चलते हुए कल्लू खाँसे कहा : "याद रख, तू अपनी औलाद की माँको निकाल रहा है।"—"अरे जा जा, बड़ी औलाद वाली आयी, न जाने किसका नुत्फ़ा हो; रण्डीकी बातका ठिकाना क्या।" यह कह कर कल्लू खाँने फ़रीदनको लात मार कर निकाल दिया। उसी फ़रीदनकी बेटी, कल्लू खाँकी औलाद दुलारीने कल्लू खाँकी दूसरी औलाद घसीटे खाँको अपनी माँसे शह पाकर फँसाना शुरू किया। फ़रीदन अपनी बेटीको लेकर सरायके आस-पास मंडलाती; कल्लू खाँके गाहक टूटने लगे थे। दुलारी बड़ी शातिर थी, ज़मानेको उँगली पर नचाती थी। दुलारीने जब घसीटे खाँको घेरा तब कल्लू खाँ तिलमिला उठा। फ़रीदनसे उसका इस बातका सरेआम झगड़ा हुआ, फ़रीदन जवाबमें अकड़ कर बोली : "अब क्यों दुलारीको अपनी औलाद मानता है? जब मैंने कहा था तब इनकार

कर गया था। दुलारी अब लावल्द, कसबीकी औलाद है। वह वही कर रही है ज़ो उसके लिए मुनासिब है, रोकना है तो अपने बेटेको रोक ले। दुलारीके साथ मोहल्ले भरके शोहदे जमा होते थे। घसीटेखाँ दुलारीकी सोहबतसे उनके सरदार बनने लगे।

कल्लूख़ाँके बेटे घसीटेखाँने आज टुण्डेके बहाने दुलारीका पक्ष लेकर अपने बापके दाहिने हाथ भूरेमियाँ और मुहल्लेके बड़े बुज़ुर्ग समदमियाँके सामने बेझिझक अपनी रुझान, अपना निश्चय प्रकट कर दिया था।

भूरेखाँ पलभर चुप रहे फिर .गुस्सेसे लाल हो कहने लगे—"घसीटे, इस जवाबपर तेरा बाप तो बादमें बोलेगा, मैं पहले ये तेरी सारी पहलवानी और सोरे पुस्ती निकाल दूँगा, बताये देता हूँ। अरे .ख़ुदा और रसूल से तो डर।"

फ़रीदन हस्बमामूल दुलारीको साथ लेकर अपने सुबहके दौरपर निकली थी। वज़ीरन पानवालीकी दूकानपर घण्टा दो घण्टा बैठ दुलारी अपनी मौसीको पान लगानेसे .फ़ुरसत देती, दोनों बुढ़िया दूकानसे ज़रा हट नीमतले चारपाईं डालकर बातें करतीं, कल्लूख़ाँके नये मुसाफ़िर आते उनके हाल-चाल लेतीं, अक्सर बहकावा दे पासवाली यारखाँकी सरायको अच्छी बतलाकर उसे फोड़ लेती थीं। दुलारी सुबह शाम पान लगानेके बहाने सरायके मुसाफिरोंको रसबतियाव और कनखियोंसे भरमाया करती। कल्लूख़ाँ, भूरेख़ाँ कोई भी उसका कुछ बिगाड़ न पाते थे। भूरेख़ाँकी बातके जवाबमें फ़रीदन बोली—".ख़ुदा और रसूलसे आजके ज़मानेमें कौन डरता है। अरे बड़े-बड़े बादशाह, शाहज़ादे, आमिलउलेमा धन्नासेठों से लेकर कल्लूख़ाँ और उनके जिगरी दोस्त भूरेख़ाँ और समदख़ाँ तक सबको देख लिया। गाहकोंकी कोठरियोंमें चोरी करवाते हो, सबाब करते हो? नशा पिला-पिलाके जेबें कटवाते हो यह सवाब करते हो? हमसे कोई न अटके, कहे देती हूँ। अरे सूप बोले तो बोले छलनी क्या बोले जिसमें निगोड़े बहत्तर छेद होते हैं।"

इसी बीचमें घसीटे खुलेआम दुलारीके साथ मुसकुराता बातें करता वज़ीरकी दूकानकी तरफ़ चला जा रहा था। भूरेखाँ यह देखकर तैशमें आगया। वह ज्यों ही घसीटेको मारने चला कि फ़रीदनने घसीटेको आगाह किया। घसीटेखाँने झपटकर अपने पिताके बड़े विश्वासपात्र और मित्र भूरेखाँको पकड़ लिया; दोनों जूझने लगे। दुलारीने अपनी शोहदा सेनाको गुहारकर बुला लिया।

भूरेखाँके हाथ-पैर बाँधनेवालोंमें एक उनका पोष्यपुत्र टुण्डा भी था। यारोंने लगे हाथ यह भी तै किया कि कल्लूखाँ अगर सीधी तरह सरायका सारा कारोबार और मालमता घसीटेके हाथमें न सौंपें तो उनका भी यही हालकर दोनोंको एक कोठरीमें बन्द कर दिया जाय। घसीटेखाँकी सेना सरायकी ओर दौड़ पड़ी। उसी वक्त शोर हुआ कि दौलतखानेसे साहबे आलमकी सवारी निकल रही है।

हज़ारों लोग शाहज़ादेकी सवारी देखनेके लिए सड़ककी तरफ़ भागे जा रहे थे। गली-कूचोंमें चर्चा थी, लोगबाग कहते-फिरते थे कि अब दुलारी आ गई है, देख लेना दोनोंमेंसे कोई न बचेगा, न बादशाहबेगम न बादशाहसलामत।

अकबरी दरवाज़ेके पास रहनेवाला एक व्यक्ति इसपर कहने लगा—"अमा हमारे यहाँ भी एक दुलारी है। उसने भी ग़ज़ब कर दिखाया, बेटे को बापका दुश्मन बनाकर शोहदोंसे बापको बँधवा दिया और अपने आशिक़के बहाने ख़ुद सरायकी मालिकन बन बैठी।"

वह ज़माना दुलारियों और दुलारोंका था। शहरमें ऐसे अनाचार दूर-दूर तक अपनी जड़ें फैलाये हुए थे। अमीरोंके घरका यह आम चलन था कि एक या दो तवायफ़ें या ख़ूबसूरत लड़के अपनी नौकरीमें रखते थे। नीची मानी जानेवाली जातियोंकी स्त्रियोंका उपभोग सामन्ती लोगोंके अलिखित विधानके अनुसार उचित था। बड़ी जातियोंवाले छोटी जातियों की स्त्रियोंको हर प्रकारके कल बल छलसे अपने रस प्रयोगमें लाते थे।

एक प्रकारसे नीची मानी जानेवाली जातियोंकी सुन्दरी नवयुवतियाँ उन दिनों अमीरोंके फ़ैशनमें समा गईं थीं। गाली बकना औसतसे अधिक आमरिवाज बन गया था। जुआ, शराब और चण्डूके अड्डे निठल्ली जनतामें बड़े आकर्षणकी वस्तु थे। खानगी रण्डियोंकी दल्लालाओंका बड़ा मान था। बाज़ार क़ीमती सामानोंसे पटे पड़े थे, अमीरोंकी कोठियों और शाही महलोंमें ही उनकी खपत थी इसलिए रिश्वतका बड़ा बोल-बाला था। रिश्वतमें रुपये जवाहरात और ख़ूबसूरत स्त्रियोंकी चारों तरफ़ माँग थी। कुटनियाँ भले घरोंसे लड़कियाँ-औरतें उड़ाती थीं और बेचती थीं। प्रेम ज़मानेकी बड़ी मान्यता हो चली थी और इस प्रेमके लिए, ऐश और इशरतके लिए भारी ख़र्चकी ज़रूरत हुआ करती थी। इसलिए ठगी और लूट-पाटका बोलबाला था। शाही आमिल अमले, शहरके रईस, छोटे अमले, जनसाधारण आमतौरपर अपने सुख-विलासके लिए कुछ भी कर डालते थे। हिन्दुओंमें कुलीन ठाकुर और ब्राह्मण बहुपत्नीवादी थे; निर्धन प्राकृतिक, अप्राकृतिक बलात्कारकी ताकमें रहते।

विलासकी सर्वोपरि मान्यतामें सामाजिक जीवन डूबकर सड़ रहा था। अनेक निर्धन किन्तु कुलीन घरोंके युवक गुण्डे बन गये थे। पिताओं और गुरुजनोंसे, बहुतसे उच्छृङ्खल नौजवान नातेकी प्रतिष्ठा तोड़कर उद्दण्ड और अत्याचारी बन गये थे। यह गले-गले तक पंकमें डूबे हुए लोग, अनेक मज़लूम पिसे हुए आदमी, कारबारी बैपारी—हर तरहके नागरिक अपने भावी महाराज, ईश्वरके प्रतिनिधि श्रीमन्त नसीरुद्दीन हैदरकी सवारी देखने सड़कके दोनों ओर खड़े हुए थे।

साहबे आलमके अंगरक्षक सिपाही, साहबे आलमकी पालकीके आगे पीछे चल रहे थे। पालकीके दोनों ओर मोर्छल आसाबरदार चाँदीके गंगा-जमुनी कामके आसे लिये हुए पालकीके साथ धीरे-धीरे दौड़ रहे थे। आगे-आगे नकीब पुकारता चल रहा था।

देखने वालोंकी टोलियाँ आपसमें व्यंग्य कटाक्ष करने लगीं।

साहबे आलमके अंगरक्षकोंकी वर्दियाँ फटी पुरानी थीं। उनके घोड़े, जिन्हें महीनोंसे भर पेट खाना नहीं मिला था अपनी उभरी पसलियाँ झलकाते, मोटे सवार लादे लड़खड़ाते चक्कर खाते चले जा रहे थे।

"अमां वाह ! माशेल्ला क्या सजीले घोड़े हैं !"

"ये कि देशसे लाये गये हैं ? अमाँ घोड़े हैं कि जादू, सवार सामने चला रहा है और आप चौमुख चलते हैं।"

"भई, वो बादशाह सलामतने जो इंगलिश मिस्त्री पाला है न, जिसने कल-पुरजोंसे चलनेवाला बजरा बनाया है, उसीने यह कलदार घोड़े भी बनाये हैं।"

"अमां एक मिस्त्री इतने नमूने नहीं बना सकता। विलायतके बादशाह ने हमारे शाहजादेके लिए बनवाकर भिजवाये हैं। इनमें सिफ्त यही है कि इनकी घास सरकारी अमले चरते हैं और ये ख़ुद भूखे चलते हैं।"

"अमां जिसके राजमें जानवरोंका ये हाल है उसकी ग़रीब रिआयाका भी यही हाल होना ही चाहिए।"

साहबे आलमकी पालकी आगे चली गई थी। अंगरक्षक सवारोंके घोड़े अड़ते, लड़खड़ाते, चाबुक खाते आड़े तिरछे चल रहे थे। उनकी कतारें सध नहीं पा रही थीं।

पीछे वाले सवारोंपर फ़ब्ती कसते हुए एकने कहा : "अमां ओ शहसवार जी, सँभलना मियाँ, अमाँ ओ सवार सम्हालना ! एऽऽ वो गिरा वो गिरा।"

पीछे वाले एक सवारका घोड़ा बहुत ही कमजोर था, उसके थूथनकी हड्डियाँ चमक रही थीं, आँखोंसे पानी बह रहा था और एक-एक पसली दिखलाई पड़ रही थी। घोड़ा हर बार दस-पाँच क़दम चलकर अटक जाता था, सवार ऐंड़ पर ऐंड़ लगाता और बढ़ाता था मगर इस बार घोड़ा अड़ ही गया। सवार उसे बढ़ानेकी कोशिश करने लगा, तमाशाई हँसने लगे। सवारने तैशमें आकर पीटना शुरू किया, घोड़ा घबराकर चक्कर काटने

लगा। सवार उसे आगे बढ़ाना चाहता था, आख़िरकार वह भूखा अधमरा घोड़ा अपने मोटे सवारको लिये दिये गिर पड़ा, तमाशाई हँस पड़े।

शाहज़ादेकी सवारीको लेकर ज़मानेकी टीका-टिप्पणी शुरू हो गई। सवारी देखकर लौटते बाज़ार इस्माईल गंजसे गुज़रते हुए एक व्यक्तिने दूसरेसे कहा : "देखे शाही घोड़े ?"

दूसरा बोला : "अजी बादशाह क्या करें। इनके नाम पर शाही खज़ानेसे हर महीने खर्च तो निकलता ही है, फिर चाहे ये खायें चाहे इनके रखवाले। साहबे आलम आमतौरपर घुड़सवारोंके साथ तो निकलते नहीं इस लिए अस्तबलके दारोग़ाने उनपर ख़र्च करना फ़ज़ूल समझा और आप खाने लगा। यह मर भी जायेंगे तो भी इनके नामपर खर्च लेकर फूँका जायगा।

वाजपेयी टोलेकी तरफ़ बढ़ते हुए गौरवर्ण, लम्बे, पुष्ट देह वाले लट्ठ त्रिपुण्ड रुद्राक्षधारी मस्तमौला बेनी कविने कहा : "अरे ई की का पूछत हौ भइया, आसफ़ुद्दौला केरे जमाने केर घोड़ा आजौं खर्चु पावति हैं। हालाँकि घोड़ा अउर मालिक दूनौं मरि चुके हैं। सआदत अली खाँ केरी बागनके बैल बिकायगे, रकम खवइया रकम खायगे, अउरु अबहींउ महिनवारी खर्चु वसूल करति हैं। गाजीउद्दीन हैदर क्यार कुतवा याक राति भँउकति रहै, तउ भइया रखवारु कहि दिहिसि कि यहिका गरमी चढ़िगै है। एक सेरु गुलकन्द यहिका रोज खवावा जाय तौ ठीक होइ जाय। चलौ यहिके बहाने एक नवा सिग्गा खुलिगा, अब कमसे कम आगे आवै वाले तीनि चारि बादसाही जमाने तक कुत्ता केरे नाँव पर कोई न कोई रकम खातै रही। ई धाँधलीबाजी केरिका पूछति हौ भइया, दुर्बल और गरीब केरि मौत है पापिन खातिर जमाना बहुत अच्छा है। जय हाय देव आजु पापिनकी······काल नाहीं परौं वहै घोड़ा अउरु सवारकी तना भरभरायके गिरि परिहैं।" यह कह हँसते हुए कवि बेनी झूमते हुए अपनी राह चल दिये।

तँबोलीकी दूकानके आगे बिछी हुई तिपाईपर टाटके परदेकी छावमें बैठे हुए व्यक्तियोंमें चरचा चल रही थी।

एकने कहा : "अज़ी इङ्गिलिशियोंने तबाह कर दिया। वह चाहते हैं कि बदइन्तज़ामी बनी रहे।"

दूसरा बोला : "मैंने मान लिया कि वह चाहते हैं, मगर जनाब यहाँ तो सवाल यह है कि हमारे बादशाह और वज़ीर क्यों नहीं अपनी हालत सुधारते।"

तीसरा बोला : "मेरी बात गाँठ बाँध लो रामसुमेर, एक दिन बहुत बुरा ज़माना आयगा। राजाओंका दण्ड परजाको भुगतना पड़ेगा।"

दूसरा निश्वास ढाल कर बोला : "भगवान् जिलाना तो इज़्ज़त आबरू से, नहीं तो उठा लेना। इस राजमें कुछ भी बुरेसे बुरा हो सकता है।"

गलीमें अपने चेलोंको लिये हुए नये जवान बाँके बब्बू गुरू चले आ रहे थे। गलीके हर दूकानदारसे उनका कर बँधा हुआ था जिसे सबको कान दबाकर प्रतिदिन अदा करना पड़ता था। टोली सहित बब्बू गुरूको सामने देखकर एकने दूसरेके कानमें कहा : "असली राज तो इन गुण्डों उठाईगीरोंका है भइया, नवाब बादशाह ससुरे महलोंके क़ैदी हैं।" दूसरा बरज कर धीरेसे बोला : "गाली मत दो भइया, ज़माना बुरा है।"

बुरे ज़मानेकी दहलन लिये हर भला आदमी यों रहता था जैसे हिंसक पशुओंके जंगलमें चूहे, खरगोश रहते हैं।

× × ×

शाहज़ादेके महलसे जानेकी चर्चाको लेकर शहरमें सत्यका जो रूप था उससे अलित एक व्यक्ति—बादशाहबेगम—का अन्तर्सत्य कुछ और था : "मैं हारी—पतिके स्वामी आग़ामीरसे, अंगरेजोंसे, दाई खवासों और खवासकी औलाद से।"—सैयद कुलीन ज्योतिषाचार्यकी स्वयं निष्ठ तपस्विनी और पण्डिता लाड़ली बेटी अपनी मध्यवयमें नन्हीं मानिनी

की तरह फूल बैठी। बड़े गोरे सहज दर्पयुक्त मुखमंडल पर तमतमा और आँसू बादल बिजलीकी तरह होड़ लगा रहे थे। बादशाहबेगम अपनी पराजय एक क्षणके लिए भी नहीं सह सकती थीं। अदृश्य ईश्वर और इसलामी इतिहासके महापुरुषोंसे भी शायद इसीलिए कि वे अदृश्य हैं, अपने आपको छोटा मान कर वे श्रद्धा दे पाती थीं। दैव भी यदि उनके आड़े आयें तो बिना सर झुकाये उनसे भी मोर्चा लेनेको तैयार थीं। वे अपनी जन्मकुण्डलीके ग्रहनक्षत्रोंसे जूझने वाली महिला थीं। वे अपनी इच्छाको सर्वोपरि रखना चाहतीं थीं और इस समय सब कुछ उनकी इच्छाके विपरीत हो रहा था। नसीरुद्दीन पर उनका भरोसा था। उसकी माँकी हत्या करानेके बाद, उसे एक बार अपनी गोदमें उठा लेनेके बाद बादशाहबेगम वचन और कर्मसे उसकी माँ हो गई थीं; खवासके बेटेसे एक जगह कट कर भी अपनी महत्त्वाकांक्षाओंके प्रतीक स्वरूप नसीरुद्दीन हैदरकी मा वे प्रायः मनसे भी बन चुकी थीं। नसीरुद्दीनके रूपमें उन्होंने जिस महत्त्वाकांक्षाको इतने वर्षों तक एक लगनसे दिन-रात पाला-पोसा, बड़ा किया, वह आज उनसे बरजोरी छीन ली गयी। फ़रेबकी पुतली दुलारी बादशाहबेगमके हाथोंसे नसीरुद्दीनको छीन ले गई। दुलारीका अपनी मार पर इस तरह बदला लेना उन्हें बेहद खल गया। शाहज़ादेके इस तरह जुदा होनेके माने यह थे कि बादशाहबेगम अनाथ हो गईं—"नहीं, मैं इस तरह लाचार नहीं बनूँगी, मैं अपने बेटेको अपने पास खींच लाऊँगी और जब तक वह मेरे पास नहीं आ जायगा मैं खाना नहीं खाऊँगी।"

बादशाहबेगमने अन्न त्याग किया, यह सूचना सबसे पहले दुलारीके पास पहुँची। सुलेमानजाहके महलोंमें इस समय बिना ताजकी पटरानी बनी बैठी दुलारीने सुना और सक्तेमें आगई। दुलारी इस समय अपनी जान पर खेल रही थी। उसकी अबतक सुप्त और इस कारण विकृतियोंसे मन बहलानेवाली महत्त्वाकांक्षा इस समय अपना रूप और भविष्य देख

तँबोलीकी दूकानके आगे बिछी हुई तिपाईपर टाटके परदेकी छावमें बैठे हुए व्यक्तियोंमें चरचा चल रही थी।

एकने कहा : "अज़ी इङ्गिलिशियोंने तबाह कर दिया। वह चाहते हैं कि बदइन्तज़ामी बनी रहे।"

दूसरा बोला : "मैंने मान लिया कि वह चाहते हैं, मगर जनाब यहाँ तो सवाल यह है कि हमारे बादशाह और वज़ीर क्यों नहीं अपनी हालत सुधारते।"

तीसरा बोला : "मेरी बात गाँठ बाँध लो रामसुमेर, एक दिन बहुत बुरा ज़माना आयगा। राजाओंका दण्ड परजाको भुगतना पड़ेगा।"

दूसरा निश्वास ढाल कर बोला : "भगवान् जिलाना तो इज्ज़त आबरू से, नहीं तो उठा लेना। इस राजमें कुछ भी बुरेसे बुरा हो सकता है।"

गलीमें अपने चेलोंको लिये हुए नये जवान बाँके बब्बू गुरू चले आ रहे थे। गलीके हर दूकानदारसे उनका कर बँधा हुआ था जिसे सबको कान दबाकर प्रतिदिन अदा करना पड़ता था। टोली सहित बब्बू गुरूको सामने देखकर एकने दूसरेके कानमें कहा : "असली राज तो इन गुण्डों उठाईगीरोंका है भइया, नवाब बादशाह ससुरे महलोंके क़ैदी हैं।" दूसरा बरज कर धीरेसे बोला : "गाली मत दो भइया, ज़माना बुरा है।"

बुरे ज़मानेकी दहलन लिये हर भला आदमी यों रहता था जैसे हिंसक पशुओंके जंगलमें चूहे, ख़रगोश रहते हैं।

× × ×

शाहज़ादेके महलसे जानेकी चर्चाको लेकर शहरमें सत्यका जो रूप था उससे अलिप्त एक व्यक्ति—बादशाहबेगम—का अन्तर्सत्य कुछ और था : "मैं हारी—पतिके स्वामी आग़ामीरसे, अंगरेजोंसे, दाई खवासों और खवासकी औलाद से।"—सैयद कुलीन ज्योतिषाचार्यकी स्वयं निष्ठ तपस्विनी और पण्डिता लाड़ली बेटी अपनी मध्यवयमें नन्हीं मानिनी

की तरह फूल बैठी। बड़े गोरे सहज दर्पयुक्त मुखमंडल पर तमतमा और आँसू बादल बिजलीकी तरह होड़ लगा रहे थे। बादशाहबेगम अपनी पराजय एक क्षणके लिए भी नहीं सह सकती थीं। अदृश्य ईश्वर और इसलामी इतिहासके महापुरुषोंसे भी शायद इसीलिए कि वे अदृश्य हैं, अपने आपको छोटा मान कर वे श्रद्धा दे पाती थीं। दैव भी यदि उनके आड़े आयें तो बिना सर झुकाये उनसे भी मोर्चा लेनेको तैयार थीं। वे अपनी जन्मकुण्डलीके ग्रहनक्षत्रोंसे जूझने वाली महिला थीं। वे अपनी इच्छाको सर्वोपरि रखना चाहतीं थीं और इस समय सब कुछ उनकी इच्छाके विपरीत हो रहा था। नसीरुद्दीन पर उनका भरोसा था। उसकी माँकी हत्या करानेके बाद, उसे एक बार अपनी गोदमें उठा लेनेके बाद बादशाहबेगम वचन और कर्मसे उसकी माँ हो गई थीं; खवासके बेटेसे एक जगह कट कर भी अपनी महत्त्वाकांक्षाओंके प्रतीक स्वरूप नसीरुद्दीन हैदरकी मा वे प्रायः मनसे भी बन चुकी थीं। नसीरुद्दीनके रूपमें उन्होंने जिस महत्त्वाकांक्षाको इतने वर्षों तक एक लगनसे दिन-रात पाला-पोसा, बड़ा किया, वह आज उनसे बरजोरी छीन ली गयी। फ़रेबकी पुतली दुलारी बादशाहबेगमके हाथोंसे नसीरुद्दीनको छीन ले गई। दुलारीका अपनी मार पर इस तरह बदला लेना उन्हें बेहद खल गया। शाहज़ादेके इस तरह जुदा होनेके माने यह थे कि बादशाहबेगम अनाथ हो गई—"नहीं, मैं इस तरह लाचार नहीं बनूँगी, मैं अपने बेटेको अपने पास खींच लाऊँगी और जब तक वह मेरे पास नहीं आ जायगा मैं खाना नहीं खाऊँगी।"

बादशाहबेगमने अन्न त्याग किया, यह सूचना सबसे पहले दुलारीके पास पहुँची। सुलेमानजाहके महलोंमें इस समय बिना ताजकी पटरानी बनी बैठी दुलारीने सुना और सक्तेमें आगई। दुलारी इस समय अपनी जान पर खेल रही थी। उसकी अबतक सुप्त और इस कारण विकृतियोंसे मन बहलानेवाली महत्त्वाकांक्षा इस समय अपना रूप और भविष्य देख

कर महावेगके साथ जाग उठी थी। बापके कर्ज़में बिकी, ज़िन्दगीकी हज़ार ठोकरें खाई हुई घुन्ने अहंकारवाली हठीली दुलारीको छोटी उमर होते हुए भी यह होश था कि—"दुलारी, जो तू अब गई, तो गई।" दुलारीने दिल्लीके शाहंशाहकी पोती, अपने प्रियतमकी परिणीता सुल्तान महलसे भेंट की। झुककर अदबसे पेश आई, उसने यह भी देख लिया कि सुल्तानमहल गाय है। करीमन और मुनियाँ दल्लालाकी मार्फ़त पुरस्कारमें पाये हुए ढाई, तीन लाखके आभूषण बिकवाये। रुपयेके बूते पर दुलारी महलके हर व्यक्तिको अपनी ओर खींचे हुए थी। उसने अपना एक आदमी खुफ़ियातौर पर अपने दोनों सौतेले देवरों और प्रेमियों फ़तह-अली, वारिसअलीको लिवा लानेके लिए भेज दिया था। दुलारी इस समय अपने विश्वस्त आदमी चाहती थी। भाग्य सुलखियाके रूपमें उसे शक्ति प्रदान करने आया था। अपने सच्चरित्र कठोर धार्मिक आचरणके आडम्बरसे युक्त विलासिनीके रूपमें उसने सब पर अच्छा और अद्भुत प्रभाव डाल रक्खा था।

अपनी अब तक जीती बाज़ी पर बादशाहबेगमके द्वारा फेंके गये अन्नत्याग रूपी परमास्त्रको निष्फल करनेका कीना लेकर उपाय सोचने बैठी। उसने नसीरुद्दीनको पत्र लिखना आरम्भ किया और हर बारकी तरह उसके खुशबूदार रंगीन काग़ज़को नईमकी छाया छू गई। हर बार कीतरह इस बार भी उसने अपना वियोगका भाव कलेजेकी गहराइयोंसे नईमउल्लाको दिया, जो न जाने कहाँ था और अपने दिलका फ़रेब नसीरुद्दीनको। उसके पत्र अपने दोहरे व्यक्तित्वकी पूरी शक्तिसे भोले मुर्शिदज़ादाको बाँधते थे।

पत्रका प्रभाव यह पड़ा कि सुल्तानमहल और दुलारीके डोले भी शाही सिपाहियों और नक़ीब तुरहीके अदब कायदेके साथ सुलेमान जाह के पास पहुँच गये। दुनियाने जाना, भूखी बादशाहबेगमने भी जाना कि दुलारी इस वक्त चाँद सितारोंसे खेल रही है, उसे कोई छू नहीं सकता।

यह सन् १८२२ ई० का ज़माना था।

१३

आम, सेमल, महुआ और इमलीके पेड़ोंसे छाई हुई धरती ऐसी सुहावनी सुखदायिनी लग रही है जैसे किसी पुण्यात्माका व्यक्तित्व अपने ही सुन्दर गुणोंकी छायासे शोभित हो निखर और फल-फूल रहा हो। अवध की भूमि अपनी अमराइयोंसे सफला है।

गाँवके दक्षिणमें एक बड़ी झील है। उसके तीन ओर घनी अमराइयाँ हैं; कुछ यहाँके व्यापारियों, दूकानदारोंने लगाई हैं और कुछ पुराने ठाकुरोंके वंशजोंकी मिल्कियत हैं। पुराने पेड़ोंके आस-पास नये पेड़ बढ़ रहे हैं। झीलके उस पार एक शिवालयके ढलकते हुए कलश-शिखर उसके पास नये उगते हुए पीपल और खण्डहर होती हुई बड़ी-बड़ी इंटोंकी दीवारें इस धरतीके किसी प्राचीन ऐतिहासिक वैभवकी गवाही दे रही हैं शिवालेके पास ही विशाल टीले पर मन्दिरका पुजारीवंश एकसे अनेक होकर कई घरोंमें बसा है।

मगर इस प्रकृति-सम्पन्न गाँवमें एक भी घर पक्का, बड़ा या भव्य नहीं है। बाहरसे देखनेमें दरिद्रोंका गाँव लगता है।

सई साँझसे ही गाँवमें ऐसा सन्नाटा छाया हुआ है मानो पूरी आबादीको साँप सूँघ गये हों। कहीं पत्ता भी नहीं खड़कता, चिरईका एक पूत भी नहीं झाँकता। हाँ थोड़ी-थोड़ी देर बाद क्षितिजके चारों ओर दूर-दूर तक एक हाँकके उत्तरमें अनेक हाँकें सुनाई पड़ जाती हैं और सन्नाटा छा जाता है।

रात एक पहर चढ़ गई। बस्तीके पास ढाकके जंगलके सामने स्थित बड़े टीलेके पीछेसे अचानक पचीस-पचास मशालोंका जुलूस जुटने लगा। घरोंके दरवाज़े खुले, स्त्रियों-बच्चोंके दलके-दल घरोंसे निकलने लगे, देरसे

छाया हुआ सन्नाटा रौल-चौलसे भर गया। टीलेके पिछवाड़े बैलगाड़ियों और मियानोंकी पाँत लगी थी। घरोंकी गृहस्थी लदी, बच्चे और स्त्रियाँ बैठीं। ज़मींदार लालकुँअर सिंहने एक बार आकर प्रबन्ध पर दृष्टि डाली और गाड़ियाँ हाँकनेका हुक्म दिया। 'सदा भवानी दाहिनी सम्मुख रहैं गणेश' भज कर आगे-पीछे, दायें-बायें चारों ओर बन्दूक-भाला धनुर्धारी वीरों और मशालचियोंसे घिर कर मियाने और गाड़ियाँ जंगलकी ओर बढ़ने लगीं।

आजकी रात्रि गाँवके लिए भयकी रात्रि थी, कालरात्रि थी।

इस गाँवमें सोमवंशी ठाकुरोंकी आबादी सबसे अधिक है। ज़मींदार कुँअरसिंह मँझोले क़द और छरहरे बदनके जवान हैं। उनकी चाल-ढाल, आवाज़ और विचारोंमें बिजली कौंधती है। तलवारके वारकी तरह ही वे हर कामका निर्णय भी किया करते हैं और उसपर अडिग रहते हैं। साल छः महीनेमें इनके सर पर सैयद सवार होते हैं, महीना-पचीस दिन उनका जशन रहता है। नाच-गाना, शराब, औरतबाज़ी, आस-पासके गाँवोंकी अच्छी ज़मीनें लूटना, क़त्ल करना, अपने दलवालोंको बख्शीशें देना आदि ऐसे-ऐसे कार्य लालकुँअरसिंह द्वारा होते हैं जो उनके दैनिक-जीवनमें सम्भव नहीं। पान-तमाखूको छोड़ कर घरकी स्त्रियों तकमें प्रचलित हुक़्क़ा भी वे नहीं पीते। सैयद उतर जाने पर हर बार छोटी जातिवाली प्रजामें वे दण्डस्वरूप सौ-सवासौ रुपये तक अवश्य बाँट देते हैं। नित्य पार्थिव-पूजन करते हैं; ब्राह्मण मन्त्रोच्चार करता है। जिन दिनों सैयद आते हैं उन दिनों भी पूजा करते हैं। इसके बारेमें यह कहा जाता है कि भगवान् भूतनाथमें उनकी ऐसी प्रबल निष्ठा है कि उसके कारण एक घड़ीके लिए सैयद भी उन्हें छोड़ जाते हैं। उन्होंने अपने सैयद रूपी आवेशोंमें छोटे-छोटे बावन गाँव हड़प लिये हैं। आमिल मुहम्मद अब्दुल्ला और उसकी शाही सेनासे लालकुँअरसिंहकी लड़ाई शाश्वत है। यों आस-पासके मुसलमान पड़ोसियोंसे आमतौर पर भला बरत-बरताव है। लालसाहबके

सैयदके कारण उनके घरसे सैयदों, मौलवियोंको भी कुछ-न-कुछ पहुँचता ही रहता है। लालकुँवरसिंहकी दूर-दूर तक धाक जमी हुई है।

अकबरके राजमें महाराज टोडरमलने सम्राट् और प्रजाके बीच एक बिचौलिया अफ़सर रक्खा। उस अफ़सरको ज़मींदार कहा जाता था। रैयतसे लगान वसूल करने और ज़मीनका उचित बन्दोबस्त करनेके निमित्त ज़मींदार और आमिलको नोन-करके रूपमें ज़मीन मिलती थी, साथ ही एक मातहत अफ़सर क़ानूनगो भी मिलता था। जबसे दिल्ली साम्राज्य डगमगाया तो जैसे सूबेदार स्वतन्त्र हुए वैसे ही बहुतसे ज़मींदार भी सर्वतन्त्र स्वतन्त्र हो गये। नवाबी क़ायम होनेके बादसे अवधके अधिकतर ज़मींदारोंकी यह नीति रही है कि प्रबलसे झुक जाते हैं, वरना यों शाही खज़ानेमें एक झंझी कौड़ी देना भी वे अपना अपमान समझते हैं।

लालकुँअरसिंहके गाँवको आये दिन आमिलकी फ़ौजसे मोर्चा लेना पड़ता; शाही सेनाके सिरमौर होकर कभी अंग्रेज कप्तान लफ्टण्ट भी आ जाते हैं। ये लालमुँहवाले बड़े बस्ती-उजाड़ हैं। लालसाहबके गाँवमें इसीलिए एक भी घर क़ीमती, भव्य और गतका नहीं। बस्तीके पास ही ढाकका एक घना जंगल है, विपत्ति आने पर गाँवके परिवार और उनकी गृहस्थीकी माया तुरन्त जंगलमें बने सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दी जाती है; मर्द लड़वैये तब शत्रुको बाहरी जंगलमें घेर कर छकाते-भूनते, अपने जौहर दिखाते हैं।

आज भी ऐसे ही हमलेकी आशंका की जा रही है। हमले प्रायः रातके पहरमें होते हैं, फिर भी गाँववालोंकी औरतें-बच्चे रात होते ही ठण्डे सुस्ते जंगलमें बने एक तलघरमें पहुँचा दिये गये। केवल लालसाहब के घरकी कुछ स्त्रियाँ रह गईं। लालसाहबकी दूसरी पत्नी आज इस समय प्रसव-वेदनासे छटपटा रही हैं। लालसाहबकी पहली पत्नीने चार कन्याओं और एक पुत्रको जन्म दिया। पुत्रियाँ जन्मते ही मार डाली गईं तथा पुत्र

दस महीनेका होकर मर गया। दूसरी पत्नीका यह पहला प्रसवकाल था। लालसाहबकी मा, विधवा बहन और दाई कण्डौर (कण्डे रखनेकी कोठरी) में छोटी ठकुरानीको घेरे बैठी हैं। दाई पृथ्वी पर नये जीवनका स्वागत करनेके लिए तत्पर खड़ी है। कुछ दूर पर एक मोटे बत्तेसे लौ फेंकता हुआ दिया अपनी लौ और कालिख फेंक रहा था। बाहर बड़ी उमस है और इस कण्डौरमें बैठी हुई स्त्रियाँ तो मानो पसीना बनकर गली जा रही हैं।

दाईके हाथोंमें नई ज़िन्दगी आई, अम्मा और काकी उत्सुक हुईं।

"करमुँही आय।"

"जनैवालीकी कोख जरै ? लड़वइया जंगल मइहाँ भटक रहे हैं अउ रैकवारनके घरकी बिटेवा यू असगुनु जलमिकै पसरीं हैं। भरौ मुँह मा मदार—अउर का कही ? चलौ नन्हकी।"—लालसाहबकी मा और चाची जल भुन कर चल दीं। ड्योढ़ी पर दस गोड़ैत, बारह पालकी कहार और दो मियानों के साथ ही यह हवा भी फैली हुई थी कि अंगरेज़-कप्तान अचानक इसी समय चल पड़ा है, कानपुरकी अंगरेज़ी फ़ौज भी शाही फ़ौजके साथ है। ऐसा ज़बरदस्त हमला होनेवाला है कि जैसा पहले कभी नहीं हुआ। लालमुँहवाले इस बार बड़े ही खौखियाये हुए हैं। लालकुँअर सिंहने अंगरेज़ोंके एक बहुत बड़े अपराधी दिग्विजय ब्रह्मचारीको शरण दी है। शाही आमिल मुहम्मद अब्दुल्लाको लालसाहबसे अपना बड़ा पुराना बैर चुकानेके लिए यह बहुत ही अच्छा अवसर हाथ लगा है, क्योंकि अंगरेज़ोंकी ओरसे इस बार लालसाहब पर आक्रमण करनेकी माँग आई है। इस बार ठाकुर कुँअरसिंह और उनके सगोती सोमवंशी पट्टीदारोंको सदाके लिए उजाड़ देनेका पूरा आयोजन किया गया है। सुननेमें आ रहा है कि कई तोपें भी साथ आ रही हैं।

लाल साहबकी मा ने बाहर निकल कर जो यह समाचार सुने तो पतोहुओंके लिए दस बुरी-बुरी गालियाँ और मुँहसे निकालीं। उनकी दोनों

पतोहुएँ अभिशप्त कोखोंवाली निकलीं। बुरी खबरें सुनकर इकलौते बेटेकी माका दिल दहल उठा। बहुओं, अंगरेज़ों और आमिलको कोसती हुई वे जल्दीसे एक मियाने पर सवार हुईं। अपनी सुरक्षाके लिए आठ भाला-धनुर्धारी गोड़ैत और जल्दी पहुँचनेके लिए आठ कहार अपने साथ ले गईं। लड़की जननेवाली बहू और दाईके लिए एक मियाना चार कहार और दो रक्षक छोड़ गईं। रक्षक और कहार अपनी संख्या कम देखकर भयके मारे इधर-उधर भाग जानेके उपाय सोचने लगे।

लालकुँअर सिंहकी नवजात कन्याके पहली कुँआँ कुँआ करते ही दाईने उसके मुखमें मदारके पत्तेका दूध टपकाना आरम्भ कर दिया। बच्चीकी माँ, पन्द्रह वर्षकी नवयुवती अपनी पहली संतानका यों नाश होते देख कर रोने लगी। पर दाईने आजीवन ऐसी रोनेवाली न जाने कितनी क्षत्राणी माताएँ देखीं और बरतीं हैं जो पहली शिशु-हत्याके समय ऐसी ही रोती-कलपती हैं परन्तु धीरे-धीरे शिशुहत्या देखते हुए अपनी कोखसे जन्म पानेवाली हर कन्याका तत्काल मरण अनिवार्य जान कर वे क्रमशः इस ओरसे विरक्त—प्रायः निर्मम भी हो जाती हैं।

दाईने बच्चीको मदारका दूध पिला उसके मुखमें गर्भका मल भर दिया। ज़च्चाकी खाटके पास ही गड्ढा जल्दी-जल्दी खोद कर जैसे-तैसे शिशु का शव तोप दिया और भागने की तैयारीमें लगी।

इस कंडौरकी धरतीमें इस वंशकी न जाने कितनी कन्याओंके शव गाड़े गये; उनकी हत्याके तेरहवें दिन हर बार इस कंडौरमें ब्राह्मण देवताके चरण पड़ते हैं, वे हत्याके प्रायश्चित्तका विधान करते हैं; फिर ब्रह्मभोज होता है। पता नहीं लाल कुँअरसिंहकी इस कन्याकी हत्याका प्रायश्चित्तका विधान होगा भी या नहीं।

दाई हाथ-पैर धोकर बाहर मियाने वालोंको बुलाने दरवाज़े तक पहुँच भी न पाई थी कि बहुत पाससे तोपका धमाका हुआ। आकाशमें लाल-लाल जलता हुआ गेंद सरीखा गोला दिखाई दिया; लगता था कि उसीके

सर पर गिरनेवाला है। बदहवासीमें भाग कर वह कंडौरमें घुस गई और किवाड़ बन्द कर लिये। कुँअरसिंहकी पत्नी अपनी मृत्युभयके आगे अपनी कन्याकी हत्या भूल गई। दोनोंका सारा शरीर भयसे सफ़ेद पड़ गया।

शत्रु यह समझ रहे थे कि उन्होंने अपनी पुरानी परम्परा तोड़ कर मध्य रात्रिमें अचानक हमला कर अपने शत्रुओंको बेमान दबोचा है, पर कुँअरसिंहको शाही और अंगरेज़ी फौज़के हर क़दम आगे बढ़नेका हाल बराबर मिलता रहा था। मुहम्मद अब्दुल्लाके नायब कुँअरसिंहसे प्रतिवर्ष अच्छी रक़म पाते थे। कुँअरसिंह और नायब जुम्मनखाँ के बीच गुप्त संकेत सधे थे, हरकारे अपने दोनों मालिकोंके बीच संकेत सूचनाओंका आदान-प्रदान किया करते थे। कुँअरसिंहको मालूम था कि इस बार एक बड़ी तोप भी आ रही है। कुँअरसिंहने अपने मकानके पीछे ऊँचे टीले पर एक छोटी तोप चढ़ा दी थी। शत्रुका ध्यान बटानेके लिए कुँअरसिंहने अपनी उजाड़ बस्तीको शत्रुके द्वारा तहस-नहस करवाना क़बूल किया था। उनके आदमी बचे रहें, शत्रुओंके जितने गोले खराब हो सकें, करवा दिये जायँ, फिर जंगलसे निकल कर अचानक भेड़ियोंकी तरह शत्रुको दबोच लिया जाय। कुँअरसिंह यह प्रण किये बैठा था कि इस बार इनकी तोपें न छीनी तो कोई काम न किया।

टीलेवाली तोपका गोला अपनी चाल चल गया। अंगरेज़ोंकी तोपें उसी ओर बाढ़ दाग़ने लगीं। प्रजाको धमकी देनेके लिए बड़ी तोपका धमाका भी हुआ। खपरैल ज़रूर टूटे मगर मिट्टीकी दीवारों और फ़र्शका ये गोले ख़ास कुछ न बिगाड़ सके।

इन गोलोंकी दगादगीमें कंडौरमें बन्द छोटी ठकुरानी और दाईके प्राण सूखे जा रहे थे। दोनों काठकी तरह जड़ हो गई थीं। उन्हें कुछ भी होश नहीं रह गया था, सर पर मँडराती मृत्युको देख कर उनका मृत्यु-भय भी जड़ हो चुका था।

सहसा टीलेकी तोप रुक गई। शाही और अंग्रेज़ी सेनाने उसे कुँअरसिंहकी शक्ति सीमा समझा, उत्साहसे गोलियोंकी बाढ़ोंपर बाढ़ें दागते हुए उनकी 'एडवांस-गार्ड' टुकड़ी आगे बढ़ी। इधरसे कोई मुक़ाबला ही न था। शाही सेनाने सोचा कि उनके दुश्मन इस अचानक हमलेसे घबरा घर बार छोड़कर भाग गये। सेनाके लोगोंमें लूटनेकी लालच समाई और वे बस्तीके घरोंमें घुसकर तितर-बितर हो गये। यों शत्रुकी सेनाको फोड़कर कुँअरसिंहके दलने जंगलसे निकलकर हमला किया। गोहार सुनकर आस-पासके गाँवसे हथियारबन्द लोगोंके दलके दल आ जुटे। शाही और अंग्रेज़ी सेना इस अचानक आक्रमणके लिए तैयार न थी; किसी तरह उन्होंने अपनेको बटोरनेका प्रयत्न किया, मगर टोपीदार बन्दूकों की बाढ़ और देहातियोंका युद्धघोष बढ़ता ही जाता था, इसी बीचमें लाल कुँअरसिंहने शत्रुओंकी सारी तोपोंपर कब्जा कर लिया। शाही सेनाके नायक कप्तान होलिंग्ज़ने अपनी सेनाको क़ाबूमें रखनेका प्रयत्न किया पर उनके पाँव उखड़ चुके थे। प्रजादल पहली जीतसे उत्साह पाकर शत्रुओं को उसी तरह खदेड़ने लगा जिस तरह जंगलोंमें शिकारी कुत्ते जानवरोंको दबोंचते और खदेड़ते हैं। सारी रात शाही सेना और अंग्रेजी सेना यों ही भागती फिरी। कप्तान होलिंग्ज़ और अंग्रेज़ी सैनिक भागते हुए भी अपने शत्रुओंसे सख्त मुक़ाबला कर रहे थे। अंग्रेज़ोंके नैतिक साहस और वीरता से शाही सिपाहियोंको भी जोश मिलता था।

पौ फटनेसे पहले पहले एक मुक़ाबलेमें अचानक लाल कुँअरसिंह कप्तान होलिंग्ज़की पकड़ाईमें आ गया और उनके सौभाग्यसे ही ठगी और डकैती विभागकी स्पेशल पुलिसकी एक टुकड़ीके साथ रघुराज सिंह तोमनदार वहाँ आ पहुँचे और उनके ताज़ादम सिपाहियोंने रात भरके थके प्रजादलको तेज़ीसे पीछे खदेड़ दिया।

कप्तान होलिंग्ज़में नया विश्वास जागा, उनका इस समय तक बहुत नुक़सान हो चुका था। एक सूबेदार एक हवलदार और बीस सिपाही मारे

जा चुके थे तथा एक सूबेदार, दो हवलदार, एक नायक और चौदह सिपाही घायल या ग़ायब हो चुके थे। तोपें निकल जानेकी शर्म उन्हें सबसे भारी थी।

लाल कुँअरसिंहके अंग्रेज़ोंके हाथमें पड़ जानेके कारण रात भरकी जीत ज़बरदस्त हार बनी जा रही थी। सबसे अधिक उनके शरणागत दिग्विजय ब्रह्मचारीको खल रहा था, उनकी रक्षाके लिए कुँअरसिंहको यह दण्ड भोगना पड़ा। दिग्विजय ब्रह्मचारी गंगापार कानपुर ज़िलेके एक गाँवके निवासी थे।

दिग्विजयसिंह बैस राजपूत वंशके थे, उनके कुलमें बहुत प्राचीन-कालसे जाति तथा गाँवकी चौधरीगीरी चली आ रही थी। संयोगवश इनके कुलके सिरमौर ठाकुर मृत्युञ्जयसिंहकी नज़रें आन गाँवके सैयदोंके एक प्रतिष्ठित काज़ी कुलकी एक विधवा युवतीसे लड़ गयी, जिसके कारण उन्हें अपना धर्म परिवर्तन करना पड़ा। मृत्युञ्जयसिंहके नूर मोहम्मद बन जानेपर जातिका प्रमुख पद स्वाभाविक रूपसे उनसे छिन गया। उनके सगे काकाके ज्येष्ठ पुत्र दिग्विजयसिंह इस पदके अधिकारी थे, परन्तु दिग्विजयसिंहकी सौतेली माँने अनायास उत्पात खड़ा किया। घरमें फूट पड़ती देखकर तथा उसके कारण कुलसे मुखिया पद जाता देखकर उन्होंने बड़ा त्याग किया। उनकी बालपत्नी कुछ महीनों पहले ही मर चुकी थी, दूसरा विवाह तै भी हो चुका था परन्तु घरमें कलहके बीजका नाश करनेके लिए उन्होंने अपना ज्येष्ठपद त्यागकर आजन्म अविवाहित और ब्रह्मचारी रहनेकी भीष्म प्रतिज्ञा की। उनके छोटे सौतेले भाई जातिके मुखिया बने। नूरमोहम्मदको बटवारे द्वारा कुलसे अलग कर दिया गया, परन्तु पट्टीदारी पूर्ववत् क़ायम रही।

अपनी फ़ौजोंके खर्चके लिए ईस्टइण्डिया कम्पनी बहादुरकी सरकारने अवधके नवाब वज़ीरोंसे कई इलाक़े क्रमशः पाये थे। मुरादाबाद, बरेली, इटावा, कानपुर, इलाहाबाद, गोरखपुर आदि अवधके नबाबोंसे पाये और

सहारनपुर, अलीगढ़, आगरा, बुन्देलखण्ड मराठोंसे जीते। इन इलाकोंमें कम्पनी सरकारने पुराने परम्परागत नियमोंको अमान्य कर अपनी परिपाटी लादी। इन लोगोंमें परम्पराके नियमोंसे खेती व्यक्तिगत न होकर पंचायती होती थी। दो प्रकारकी प्रवृत्तियाँ प्रचलित थीं। एक भैयाचार पद्धति जिसमें पूरी बिरादरी सामूहिक रूपसे जमीनके नफ़े नुकसानमें सम्मिलित रहती थीं, दूसरी पट्टीदारी प्रथा थी इसमें एक कुलके अधिकारमें भूमि सम्पत्ति होती थी और उस कुलमें जन्म लेते ही हर मर्द बच्चा भूमि संपत्ति का पट्टीदार भी हो जाता था।

मुग़ल साम्राज्यके पतनके बाद ज़मीदार स्वतन्त्र हो चुके थे। वे प्रायः सरकारी ख़ज़ानेमें लगान नहीं देते थे, शाही आमिलों और नाज़िमोंसे उनकी आये दिन मुठभेड़ होती रहती थी, प्रबल होने पर नाज़िम और आमिला बड़ा अत्याचार भी करते पर यह होते हुए भी राज्याधिकारियोंको भारतीय ग्रामोंकी प्रजासे दबना पड़ता था। ग्राम पंचायतें बड़ी सशक्त होती थीं, ज़मीन पर उनका सामूहिक अधिकार होता था। समाजके लिए आवश्यक और उपयोगी पेशों वाले हर व्यक्तिको भी उस ज़मीनकी उपज का भाग मिलता था। पट्टीदार और भैयाचार दोनों ही प्रकारके भूस्वामी अपना एक मुखिया चुनते थे। ये मुखिया उनका धनरक्षक, न्यायकर्त्ता और शासनकर्त्ता होता था। ग्राम पंचायतकी ओरसे सब जातियोंका यथोचित प्रतिनिधित्व और रक्षण होता था। धरतीकी उपजमें, समाजका धरम-करम सम्हालने वाले ब्राह्मणका हिस्सा, चौकीदारका हिस्सा, पंचायतके लेखपाल-पटवारीका हिस्सा, लोहार, चमार, नाई, बरेठा, ओझा, सयाने, बैद साधु, सन्त, अतिथि, सबका हिस्सा होता था। इस तरह गाँवोंको सामूहिकता कभी नष्ट नहीं होती थी। खेतीके अलावा घरोंमें चरखा कातने का आम रिवाज था, दस्तकारीकी बहुत-सी चीज़ें भी तैयार होती रहती थीं। भारतमें केन्द्रीय शासन जाने कितनी बार स्थापित हुए, केन्द्र भी घूमते रहे, इतिहास पर तरह तरहसे अपनी छाप छोड़ जानेवाले अनेक

राजे सम्राट् हुए परन्तु भारतके गाँव सदा स्वतन्त्र ही रहे। राजा सम्राट्के प्रतिनिधिको निश्चित लगान देनेके अतिरिक्त और उनका कोई सम्बन्ध नहीं रहता था।

अंग्रेजोंने जहाँ-जहाँ अधिकार किया, वहाँ-वहाँ इन पंचायतोंकी शक्ति तोड़ दी। स्वतन्त्र जमीदारों और ताल्लुकेदारोंको उन्होंने दबोच लिया और भूमि पर अपने देशके एक सत्ताधिकार वाले नियमके अनुसार सारी ज़मीन एक ज़मींदारको सौंप दी। अंग्रेज़ ज़मींदारी नीलाम करते थे जो अधिक रक़मका बोली बोलता था उसे ही गाँवका मालिक बना दिया जाता था। इसके साथ ही साथ अंग्रेज़ोंने जमींदारोंको यह आश्वासन भी दिया था कि बंगालकी तरह वे यहाँ भी जमीदारोंका इस्तमरारी बन्दोबस्त कर देंगे, परन्तु बादमें उन्होंने ऐसा न किया। अधिकाधिक मुनाफ़ा चूसने की लालतसे वे बार-बार जमीदारियोंका नीलाम करते थे। इन नीलामोंमें एक नहीं बल्कि पुरानी भैयाचार और पट्टीदारी प्रथाके अनुसार अनेक भूस्वामियोंका राज पाट साहबकी कलमके एक झटकेसे छिन जाता था। यों ज़मीनसे उखड़े हुए सर्वहारा भूमिधर किसान विद्रोही और लुटेरे होकर प्रजामें अन्त तक अशांति फैलाते फिरते थे। इन उखड़े हुए अनेक भूस्वामियोंको ही अंग्रेजी कानूनके अनुसार उत्तर प्रदेशकी जरायम पेशा जातियाँ घोषित किया गया, स्वयं अंग्रेज़ लेखकोंका कथन है कि अनेक बार इन्हें पशुओंकी तरह खदेड़ा जाता था।

चौधरी नूरमुहम्मद भी अंग्रेजोंके बनाये जमीदार थे। वे इस्तमरारी बन्दोबस्त होनेकी बाट तक रहे थे कि उधर अंग्रेज़ उनसे बड़ी रकम पर ज़मीनका नये सिरेसे सौदा करनेका आग्रह करने लगे। अंग्रेज़ोंने यह भी कहा कि यदि वे ऊँचे दाम न देंगे तो चौधरी साहबकी जमींदारी फिर नीलाम पर चढ़ा दी जायगी। चौधरी नूरमुहम्मद तन गये।

अंग्रेज़ी सरकारने विधिवत् नीलाम कर नूरमुहम्मदका इलाक़ा उनके प्रतिद्वन्दी टिम्मो ख़ाँ ज़मीदारको दे दिया। जब वे अंग्रेज़ी फ़ौजके साथ

कब्ज़ा लेने गये तो जमके लड़ाई हुई। पचीसों गोरोंकी एक टुकड़ी चौधरी नूरमुहम्मदकी बनी हुई पक्की हवेली तोड़कर अन्दर घुस गई। चौधरी नूरमुहम्मदने इस आख़िरी मोर्चे पर जम कर मुक़ाबला किया और खेत रहे। लेकिन दिग्विजय ब्रह्मचारीने अपने भाईका स्थान ग्रहण किया और हवेलीमें घुसे हुए अंग्रेज़ों पर टूट पड़े। एक गोरा सिपाही नूरमुहम्मद की बची हुई एक मात्र सन्तान छः वर्षीया लड़कीको भागते हुए पकड़ ही चुका था कि दिग्विजयने उसकी हत्या कर डाली। घरमें घुसे हुए गोरे और उनका साहब लेफ्टीनेन्ट तक बीन-बीन कर मारे गये। हिन्दुस्तानी टुकड़ियाँ प्रजादलकी करारी मारसे छीज कर तितर-बितर हो गईं। कम्पनी सरकारको शर्मनाक हार सहनी पड़ी। परन्तु इसके बाद ही स्थान अरक्षित देखकर नूरमुहम्मदकी लड़कीको ले ब्रह्मचारी गंगा पार कर शाही इलाक़ेमें लाल कुँअर सिंहके शरणागत हुए।

अपने शरणदाता लाल साहबको छुड़ा कर लानेकी प्रतिज्ञा कर ब्रह्मचारीने रातमें अचानक शाही सेनाके पड़ाव पर छापा मारा। कप्तान होलिंग्ज अपने ख़ीमेमें से भाग निकला परन्तु उसका सारा सामान नष्ट कर दिया गया। शाही सेना बुरी तरह पिटी। इसी गलमथलमें नायब जुम्मन ख़ाँने आमिल मुहम्मद अब्दुल्लाके मुँह पर कम्बल डाल हाथ पैरोंको रस्सीसे बाँध कर चारपाई समेत जला दिया। मीर अब्दुल्लाकी एक नौकरानी इस कुचक्रमें जुम्मन ख़ाँके साथ थी। आमिलकी गढ़ी रातके अँधेरेमें नायबके कुचक्रसे खुद शाही सेनाके सिपाहियोंने ही लूटी। ब्रह्मचारी कुँअर सिंह और उनके साथ पकड़े गये दो अन्य व्यक्तियोंको छुड़ा कर ले गये।

शरणदाताको संकटसे उबार कर ब्रह्मचारीने फिर वहाँ रहना उचित न समझा। दूसरे लाल कुँअरसिंहकी माता नूरमुहम्मदकी लड़कीको अपने घरमें शरण देनेमें आपत्ति करती थीं। लड़कीकी मा इसी गाँवके क़ाज़ी-सैयद कुलकी लड़की थी। क़ाज़ी साहब इसीलिए बार बार अपनी अनाथ

भान्जीको अपने क़ब्ज़ेमें करना चाहते थे। दिग्विजय जानते थे कि यह अधिकार प्रेम-भावनाके कारण नहीं बरन बदला लेनेकी नियतसे माँगा जा रहा है। इसीलिए ज़ख़मी होने पर भी उन्होंने कुँअरसिंहके साथ रातके पिछले पहर घर लौटते ही नूरमुहम्मदकी कन्याको लेकर चले जाने का निश्चय किया। कुँअरसिंह उन्हें रोक न सके। उन्हें अपनी सीमा तक निरापद पहुँचानेके लिए चार आदमी साथ कर दिये।

मुसलमान कन्याके हिन्दू पितृव्यके जीवन पर अब एक भार था—सत्पात्रको सौंपने तक कुल्सुमकी रक्षाका भार।

१४

सूर्यवंशी आर्योंके आदिम इतिहाससे संबद्ध, भारतीय संस्कृतिसे अविच्छिन्न और उसपर प्रभाव डालनेवाली, भारशिवों, राजपूतों, शेख़, पठानों, मुग़लों और मंसूरियावंशके शिया मुसलमानोंके राजकीय इतिहास की धरती—अवधकी धरती अपने मैदानोंकी व्यापकता, अपनी उर्वर भूमिका वैभव और पूर्वी अंतरिक्षके पास बहती हुई गंगा भागीरथीको अर्घ्यके रूपमें भगवान् अंशुमालीको अर्पित कर रही थी। दूर दिखलाई देती हुई नीलके कारखानेकी चिमनी और आलीशान कोठी गंगाके उसी ओर पड़ती थी, जिस ओर दिग्विजय ब्रह्मचारी अपनी भतीजी कुल्सुमको लेकर घोड़े पर चले आ रहे थे। कुल्सुम लड़केके लिबासमें थी; चूड़ीदार पायजामा, अंगरखा और साफ़ा उस पर फब रहा था। घोड़े पर इतना बेतहाशा सफ़र कुल्सुम जीवनमें दूसरी बार कर रही थी। युद्धके, अपने परिवारके मार्मिक अंतके तीखे अनुभवोंने, तकलीफ़ोंकी इन्तेहाने नन्हीं कुल्सुमको सहसा प्रौढ़ा और गंभीर बना दिया था; फिर भी बच्चीके चेहरे पर थकानका कुम्हलायापन तो था ही। दिग्विजय ब्रह्मचारी भी दो रातोंके जूझे घायल थे, और ऐसी दशामें डेढ़ पहरसे घोड़ा दौड़ाते चले

आ रहे थे, चिंता भी थी कि कहाँ जाकर टिकेंगे; उनका चेहरा भी मुरझा हुआ था।

रक्ताभ सूर्य देव मानो गङ्गा नहाकर उदय हो रहे थे। उनके दर्शन कर ब्रह्मचारीकी सारी थकान हर गई। उन्होंने घोड़ा रोक श्रद्धापूर्वक अपने कुलदेवको प्रणाम किया और कुछ देर तक मौन ध्यानमग्न हो गये। उनका मुखमण्डल श्रद्धाकी शान्त स्निग्ध आभासे दीप्त हो उठा। नन्हीं कुल्सुम एकटक अपने काकाको निहारने लगी।

हाथ जोड़ आँखें खोलने पर दिग्विजय ब्रह्मचारीने कुल्सुमको अपनी ओर टकटकी बँधी खोयी दृष्टिसे देखते देखा, मुसकुराते हुए उसके सिरपर हाथ रख कर बोले : "क्या देख रही हो बेटी?"

कुल्सुम हल्केसे चौंक पड़ी, होशमें आई हुई नज़रोंसे दिग्विजयको देखा, लजा गई, बोली : "जी कुछ नहीं, आपको इबादत करते देख रही थी!"

"मैं अपने गुरुसे इबादत करना सीख रहा था।" बच्चीको उत्तर देते हुए भी ब्रह्मचारीने ऐसे गम्भीर भावसे कहा मानो किसी बड़ेसे कह रहे हों।

"आपका गुरु कौन है?"

"वो!—भगवान् सूर्यनारायण! देखो हमें सुख पहुँचानेके लिए कैसे तपते हैं—यही सच्ची इबादत या पूजा है।"

"अच्छा कक्कू, ये सब अल्लाहने ही तो बनाया है?" अपने कक्कूकी बात अच्छी तरहसे न समझते हुए भी कुछ उसी क़िस्मके भोले सोचमें पड़ी कुल्सुम पूछ बैठी।

"हाँ बेटी।"

"सब कुछ कितना अच्छा बनाया है अल्लाहने! तब कक्कू अल्लाहने इंसानको नहीं बनाया होगा।"

"तब फिर किसने बनाया है बेटी ?" घोड़ेको आगे बढ़ाते हुए ब्रह्मचारीने प्यारसे पूछा ।

"जाने किसने बनाया—शैतानने बनाया होगा, हैं कक्कू ?" कुल्सुम गम्भीरतासे बोली

ब्रह्मचारी हँसने लगे, बोले : "पर मेरी बेटीको तो खुदाने ही बनाया है ।"

कुल्सुम शर्मा गई पर दूसरे ही क्षण आँखें नचा हँसते हुए कहा : "और आपको भी ।"

घोड़ा नदीतटके निकट जा पहुँचा, पेड़ोंके झुरमुटके नीचे घोड़ा खड़ा कर उस परसे उतरते हुए ब्रह्मचारीने कुल्सुमको अपनी गोदमें ले लिया और फिर घोड़ेकी पीठसे ज़ीन उतारकर उसे लम्बी डोरी बाँध स्वयं भी एक पेड़के नीचे बैठ गये ।

कुल्सुम बोली : "कक्कू, अब हम कहाँ रहेंगे ?"

"जहाँ भगवान् रक्खेगा ।"

कुल्सुम उत्तर सुनकर गंभीर हो गई । ब्रह्मचारी हथेलीपर सुरती, चूना रख फिर मलनेकी प्रक्रियामें व्यस्त हो चिंतामग्न हो गये ।

भरी बन्दूकको कन्धेपर लटका झोलेसे लोटा निकाल प्रातःकालीन कर्मोंसे निवृत्त होनेके लिए जाते हुए ब्रह्मचारीको कुल्सुमकी चिंता हुई । आशंकासे भरे डग आगे बढ़े, पीछे हटे फिर स्तब्ध हो गये । कुल्सुमने पूछा : "क्या बात है कक्कू ? आप तो जा रहे थे न ।"

ब्रह्मचारी उसके पास आ धीरेसे कहने लगे : "बेटी, अगर कोई तुम्हारा नाम पूछे तो कुलवन्तसिंह बताना ।"

कुल्सुम खिलखिलाकर हँस पड़ी । बोली : "कैसी मजेदार बात है कक्कू, आपने तो मेरा नाम भी बदल दिया । पर मैं यह नाम नहीं रक्खूँगी, अच्छा नहीं लगता ।"

"तो क्या नाम रक्खोगी बेटी ।"

"रसूल खाँ। मेरी अम्मा कहा करती थीं कि रसूलके नाममें बड़ी ताक़त होती है।"

ब्रह्मचारी एक क्षण स्तब्ध रहे फिर बोले : "रसूलका नाम मनमें जपना बेटी, लेकिन इस वक्त कोई पूछे तो अपना नाम कुलवन्तसिंह ही बतलाना और मैं तुम्हारा पिता हूँ बेटी। कोई पूछे तो कृपालसिंह नाम बतलाना; अच्छा। और कोई तुम्हें सताये तो ज़ोरसे चिल्ला पड़ना, मैं यहीं पास हूँ।"

कुल्सुमको अच्छी तरह समझा बुझाकर ब्रह्मचारी चले, उनका मन उस समय अनगिनत चिन्ताओंसे घिरा हुआ था। इस बालिकाको वे कैसे अपने पास रक्खेंगे ? धर्म-कर्मकी शिक्षा-दीक्षा किस प्रकार होगी ? मुसलमानी राज्यमें मुस्लिम बालिकाका अपहरण घोरतम अपराध है। कोई यह न जानेगा कि किस भावनासे वे इसकी रक्षा कर रहे हैं। मुसलमान ही सही पर भाईकी सन्तान, उनकी एक मात्र निशानी है। "क्या होगा–राम।" ब्रह्मचारी बड़े ही चिंतामग्न थे। उनके कन्धेका घाव भी दुःख रहा था।

कुल्सुम नीमके पेड़के नीचे बैठी पासके कंकड़ उठाकर पँचगुट्टे खेलने लगी थी, उसी समय मछली पकड़नेकी बंसी लिये नईमउल्ला उधरसे गुज़रा। एक छोटेसे बच्चेको अकेले पेड़के पास बैठे देख उसका कौतूहल जागा।

"परदेसी हो बच्चे ?"

"हाँ।"

"तुम्हारे साथ कौन है ?"

"मेरे वालिद—पिता—आप कौन हैं ?"

नईम पास आ गया। कुल्सुम उसे टकटकी बाँध सशंकित दृष्टिसे देखने लगी।

"कहाँ से आ रही हो ?"

"मैं लड़का हूं जनाब, मेरा नाम कुलवंतसिंह है।"

"कहाँसे आ रहे हो?"

"बड़ी दूरसे।"

"और कहाँ जाओगे?"

"बड़ी दूर।"

नईमउल्ला उसे बड़े ग़ौरसे देखता रहा। फिर कुल्सुमके गाँवका नाम पूछा। कुल्सुम बोली: "आप ये सब क्यों पूछते हैं, जाइये यहाँ से।"

नईमउल्ला कुल्सुमकी तेज़ी देख हँस पड़ा। उसी समय कुछ दूर पर गंगा तटकी ओर जाते हुए दिग्विजय ब्रह्मचारीने अपनी भतीजीके पास किसी व्यक्तिको खड़े देख कर ललकारा: "को आय।"

नईमने मुड़कर देखा, चेहरा कुछ पहचाना सा लगा। रुस्तम नगरसे भागनेके बाद नईमने अपनी भटकनके दिनोंमें कहीं देखा था। कहाँ— यह ध्यान नहीं पड़ रहा था। दुलारीके प्रेमकी डोर टूट जाने पर कटी पतंगकी तरह वह न जाने कहाँ-कहाँ भटका था। अपनी स्मृति पर ज़ोर देते हुए वह लम्बी-चौड़ी देह और दाढ़ीयुक्त, भव्य मुखमंडल वाले ब्रह्मचारीकी ओर सीधा देखते हुए आगे बढ़ा। ब्रह्मचारीके कंधे पर पट्टी बँधी थी।

"कौन हो, बच्चेसे क्या पूछ रहे थे?" दिग्विजयसिंहने कड़कदार स्वरमें पूछा।

कुछ दूर पर एक अंगरेज़ पुरुष और महिला घोड़े दौड़ाते चले जा रहे थे। नईम उन्हें देख चटसे पीठ फेर कर खड़ा हो गया। ब्रह्मचारीने भी अँगरेज़ोंको तनी भृकुटी और सशंक नेत्रोंसे देखा। घुड़सवार इन लोगोंकी ओर बिना दृष्टिपात किये ही दूर चले गये। नईमउल्ला अपना भय छिपाते हुए फिर बोला: "मैंने आपको पहले कहीं देखा है।"

"तुम हो कौन?"

"मैं यहीं निलहे साहबकी कोठीमें बावर्ची हूँ। कौमका पठान हूँ, मेरा नाम नईमउल्ला है। आप कहाँसे आ रहे हैं?—मुझे याद पड़ता है, आपको मैंने गंगापार इंग्लिशोंकी अमलदारीमें कहीं देखा था।"

ब्रह्मचारीको हीले बहाने करनेमें हिचक हुई, सोचा युवक देखनेमें कुटिल नहीं मालूम पड़ता, इसके साथ विश्वासका आदान-प्रदान शायद किया जा सकता है, पूछा : "इसी गाँवके रहनेवाले हो जवान ?"

"पिछले साढ़े तीन बरसोंसे तो यहीं रहता हूँ।"

"यह गाँव किसकी अमलदारीमें है ?"

"संजरखाँ ज़मींदार हैं, वे भी पठान हैं।"

"यहाँ ठहरनेको जगह मिल सकेगी ?"

"यहाँ ऊँची कौमोंके हिन्दू कम हैं, एक भगवन्त साह महाजन है मगर बेहद कमीना, एक पण्डित है। पहले इस गाँवमें पठान बहुत थे अब उनके भी घर उजड़ गये हैं।"

"चौधरी कौन है ?" ब्रह्मचारीने फिर प्रश्न किया।

"मज्झूखाँ।"

"कैसा आदमी है ?"

"बहुत शरीफ़, लेकिन उनके यहाँ आप कैसे रहेंगे।"

"कक्कू—अ-अ-अब्बा, अ-उँ-उँ बप्पा।"—कुलसुम घबराहटमें कुछका कुछ बोल कर फिर और सकपका गई। नईमउल्ला उसे ग़ौरसे देखने लगा। दिग्विजय ब्रह्मचारीने यह परिस्थिति देख एक मुसलमान युवकके सामने कुलसुमकी जाति छिपाना उचित न समझा। बोले "जवान तनिक यहाँ ठहरो, मुझे तुमसे बातें करनी हैं—अभी आता हूँ।" ब्रह्मचारी तट पर हाथ-पैर धोने चले गये। नईमउल्ला रहस्यको जाननेके लिए उत्सुक गम्भीर भावसे खड़ा रहा। कुलसुमकी ओर उसने ग़ौरसे देखा, उसका शक फिर जागा, इतना नाज़ुक चेहरा लड़कोंका आमतौर पर नहीं हुआ करता, और यह बोलनेमें ग़लती भी कर जाता है।

हाथ धोकर ब्रह्मचारी नईमके पास आकर बैठ गये। पूछा : "मुसलमान हो या बेईमान ?"

नईमउल्लाका गोरा चेहरा तमतमा उठा। दिग्विजय मुस्कुराये; बोले : "बुरा न मानना भइया, मैं तुम्हें अजमा रहा था।"

नईमउल्लाके चेहरेसे अब भी आवेशकी छाप छूट न पाई थी, उसने रुखाईके साथ ही प्रश्न किया : "मुझे आज़मानेकी ज़रूरत ?"

"तुम्हारी बहनकी रक्षाका सवाल है।"

नईमउल्ला घूम कर कुल्सुमको देखने लगा।

ब्रह्मचारी कहते रहे : "मैं तो कहीं भी पड़ रहूँगा—बजरंगबलीका मन्दिर होगा, शंकरजीका होगा, कुछ नहीं तो यहीं गंगा किनारे कुटिया बना लूँगा, पर इसको तो इसके धरमकी ही शिक्षा-दीक्षा देना है, फिरंगियों ने इसका घर तबाह कर डाला।"

नईमउल्लाके मुख पर कौतूहल झलका। ब्रह्मचारी बोले : "क़िस्सा कभी फ़ुरसतसे सुनाऊँगा। असल बात इसे सरण देनेकी है, बोलो मेरी मदद कर सकते हो ?"

नईमउल्ला जोशमें आकर कहने लगा : "ज़रूर, आपने इसे मेरी बहन कहा है, आजसे यह मेरे साथ ही रहेगी। तुम्हारा नाम क्या है बहन ?"

"कुल्सुम।"

दिग्विजय बोले : "बहनके लिए भाई अपनी जान सदा हथेली पर लिये रहता है, जानते हो।"

नईम बोला : "जानता हूँ या नहीं यह तो आप मौक़ा पड़ने पर देख सकेंगे, पर इतना जानता हूँ कि मैं पठान हूँ और पठान अपनी बातके सच्चे होते हैं।"

ब्रह्मचारीने सन्तोषकी एक साँस ली।

× × ×

कुल्सुमके आनेसे नईमउल्लाके जीवनमें नया रस और ज़िम्मेदारी की नई भावना जागी। गाँवमें, निलहे साहबके नौकरों-चाकरोंमें यह प्रसिद्ध हो गया कि कुल्सुम नईमकी अनाथ चचेरी बहन है, उसके पिता मरते समय ब्रह्मचारी बाबाको नईमका पता बतला गये थे सो उसे वे यहाँ ले आये। ब्रह्मचारी गंगा तट पर कुटी बनाकर रहने लगे।

नईमउल्ला कोठीके बड़े मुनीम मिस्टर स्मिथका बावर्ची था। स्मिथकी कारगुजारियाँ दूर-दूर तक विख्यात थीं। वह किसानोंकी बढ़ियासे बढ़िया ज़मीनें नीलकी खेतीके लिए छाँटता था और कभी-कभी तो वह किसानोंके अपने भरण-पोषणके लिए खेती करने योग्य ज़मीनें भी ज़बरदस्ती नील बोनेके लिए ही प्रयोगमें लानेका दुराग्रह करता था। किसान अधिकतर पठान थे। वे स्वयं खेती नहीं करते थे बल्कि उसी तरह मज़दूरोंसे करवाते थे जैसे कि ब्राह्मण ठाकुर करवाते हैं। खेतिहर मज़दूरोंमें, उस गाँवमें आमतौर पर चमार, धानुक, बसोर और गोड़िया कहार जातिके लोग थे। किसानोंकी ओरसे उन्हें भी ज़मीनें मिली हुई थीं। जबसे हर अच्छी जमीनें नीलके लिए हथिआई जाने लगीं तबसे किसान अपने खेतिहरोंकी धरतीमें साझा बटाने लगे थे; बहुतोंके नाम ऊसर पड़ी ज़मीनें चढ़वाकर अच्छी ज़मीनें पठानों द्वारा हड़प ली गईं। इस प्रकार खेतिहर मज़दूर अपनी स्त्रियों और बच्चोंको कोठीमें नौकरी करवाने पर मजबूर हुआ। नीच क़ौमोंके घरके घर अपनी हर साँसके साथ दासताके कटघरेमें दैन्य और अपमानके शेरके आगे डाल दिये गये।

गज्जू बसोरकी तेरह वर्षीया बेटी भुलनी अपनी माके साथ कोठीमें ही काम करती थी। वह लड़की हीन कुलमें जन्म लेकर भी बड़ी सुन्दर थी। उसकी मा उसे हरदम बहुत बचाव और निगरानीके साथ रखती; भुलनी बड़े साहबकी कोठीमें सफ़ाईका काम करती थी। कोठीका बड़ा मुनीम स्मिथ बहुत दिनोंसे इस लड़कीको अपनी वासनाकी ख़ूराक बनानेके लिए

प्रयत्नशील था किन्तु उसका बस नहीं चलता था। भुलनी उस लाल मुँहके मोटे, अधेड़ साहबको देखते ही दूरसे भाग जाती थी।

जबसे कुल्सुम आई, भुलनी अक्सर उससे बातें करनेके लिए नईमकी कोठरीमें आने-जाने लगी। एक दिन जब कि वह नईमकी कोठरीके बाहर दीवालसे सटाकर मिट्टीसे गुड़ियाका घर बना रही थी, स्मिथ उधरसे गुज़रा भुलनीको देखकर उसकी बहुत दिनोंकी भूख जाग उठी। वह दबे पाँव उधर बढ़ा।

गुड़ियाके घरकी एक मञ्जिल बन चुकी थी, दूसरी बनानेके लिए लकड़ीके तख्तेकी ज़रूरत थी; भुलनी बोली : "कुल्सुम सुनौ, कारखानेकी कइती चली जायव, फैजुल्ला बढ़ैवा ते कहेव कि तखता दै देव।"

"भइ फ़ैज़ुल्लाके पास मैं नहीं जाऊँगी, मुझे माँगते शरम लगती है। तुमी ले आओ न।"

भुलनी बोली : "न! हम न जाब।"

"क्यों?"

"ऊ बड़ा मुरहा है, हमका बहुत छेड़त है। हम न जाब। अच्छा तुम नईम···।"

भूखा भेड़िया स्मिथ बिलकुल पास आ गया। कुल्सुमकी नज़र पड़ी, घबराकर उठते हुए बोली : "साहब!"

मिट्टी सने हाथोंको ऊपर उठा गर्दन घुमा कर भुलनीने देखा—भेड़िया! वह भागनेका प्रयत्न करने लगी।

"किडर जायगा, नेईं बागने सक्टा।" स्मिथने भुलनीका हाथ पकड़ लिया।

विवश क्रोध भरी दृष्टिसे आक्रमणकारीको ताकते हुए भुलनीने अपने छुड़ानेके प्रयत्नमें सहसा साहबकी बाँह पर दाँत गड़ाये।

"यू लिटिल रास्कल।" स्मिथने भुलनीके कपाल पर बायें हाथकी हथेलीसे ज़ोर लगा कर उसका सिर पीछे ढकेल दिया और उसे अड़ियल

बछियाकी तरह घसीट कर आगे बढ़ा। भुलनी क्रोधसे काँप रही थी, उसके तमतमाये चेहरे पर रह रह कर नया आवेश चढ़ता था। वह ज़मीनमें एड़ियाँ टेक कर अड़ गई। नन्ही कुल्सुमने आक्रमणकारी गोरेके हाथों फँसी हुई अपनी सहेलीको छुड़ाने लिए और कोई साधन न देख गुड़िया का घर बनानेके लिए रक्खी मिट्टीका लोंदा उठा स्मिथके मुँह पर खींच मारा। नाक, मुँह और गालों पर मिट्टी पड़ते ही गोरा आक थू आक थू करता अंगरेज़ीमें बड़बड़ाया, भुलनीने एक बार और छूटनेके लिए दाँत बढ़ाये परन्तु स्मिथ दोनों हाथोंसे पकड़ घसीटते हुए उसे नईमकी कोठरीके अन्दर ही ले गया। दरवाज़े बन्द करते समय कुल्सुमने अपने नन्हें-नन्हें हाथोंकी पूरी शक्ति लगा कर किवाड़ बन्द करनेसे रोकना चाहा परन्तु उसकी शक्तिकी सीमा थी। आस-पास बनी कोठरियोंमें बसे नौकर-परिवारोंके बच्चे-स्त्रियाँ दूरसे ही इस दृश्यको देख रहे थे। दो-चार नौकर-चाकर भी अलग खड़े थे। कुल्सुम उन्हें देख कर बचाओ—बचाओकी गुहार लगा रही थी परन्तु कोई भी गोरे रूपी शेरके पञ्जोंमें फँसी कन्या की रक्षा करनेके लिए आगे नहीं बढ़ा।

छः बरसकी कुल्सुम हैरान थी। उसके महल पर तो बहुत सारी गोरी फ़ौजका हमला हुआ था, लेकिन कोई आदमी इस तरह चुप नहीं खड़ा रहा, महलकी बहुत सी औरतें तक तलवार लेकर लड़ी थीं—और यहाँ कोई न बोला, कोई भी पास तक न आया। कुल्सुम दहल गई, उसका दिल कक्कूके लिए हुड़क उठा। कुल्सुम तेज़ीसे भागी।

कोठीमें चारों ओर खबर भूत-सी फैल गई। नईम स्मिथके घर पर था। उसे खबर लगी। काण्ड उसकी ही कोठरीमें हो रहा है, भुलनी कुल्सुमके साथ खेल रही थी—इस कारण इस काण्डसे उसे व्यक्तिगत आघात लगा, उसका पठान खून खौल उठा। स्मिथके दूसरे नौकरने उसका हाथ थाम लिया : "पागल जिन बनौ। एकका कतल करिकै सबका कतल न कराओ। कुण्डी चढ़ाकर कुलुफ दै देव।"

नईमने ताला लगा दिया। खबर आनन फाननमें फैली। गाँव भरके बसोर लठ्ठ गँड़ासे और भाले ले-लेकर हुल्हड़ मचाते उमड़ आये। बड़े साहबकी कोठीकी चौहद्दीपर गुहार पड़ गई।

नईम बड़े साहबसे सारी घटना कह चुका था। हुल्हड़ सुनकर उन्होंने तैशमें ताली छीन ली और नईमको गालियाँ देते हुए तेज़ीसे अपनी बन्दूक उठाकर बाहर निकले। दूसरे साहब लोग भी जो कोठीके मालिक मिस्टर जार्ज सैण्डसे इस हंगामेंका कारण जानने आये थे, बड़े साहबका आदेश पा घरसे बन्दूकें ले लेकर नौकरोंकी कोठरियोंकी ओर लपके।

ताला खोल सैण्ड साहबने स्मिथको बाहर निकलनेका कड़क आदेश दिया। मोटा अधेड़ स्मिथ मालिकके सामने नज़रें नीची किये बाहर निकला। अंग्रेजोंने उसे अपने घेरेमें ले लिया। सैण्ड साहबने एक नौकर को बुलाकर कहा: "लरकीका बाप को बोलो, सबका बोलो, फ़साड नेंई माँगटा। लरकी अब्बी ले जाने माँगटा।—समझा? बाग जाओ। फ़ौरन बागो।"

सैण्ड साहब और अंग्रेज़ दल बन्दूकोंके घेरेमें अपराधीको निकाल ले गये।

नईमको कुल्सुमकी चिन्ता पड़ गई थी। सोचता था, हज़ार हाथ बिरमचारीजीके यहाँ गई होगी, फिर भी उसका ज़ी नहीं माना, दौड़ा हुआ बाहर गया। उस समय ज़मींदार संज़र ख़ाँ और चौधरी मज्झू ख़ाँ लठैतोंसे घिरे फाटक पर पहुँचे। बसोरोंका दल इस समय अकेला नहीं सारी नीची मानी जानी वाली जातियोंकी जनशक्तिसे समृद्ध था। नईमने देखा, कुल्सुमको साथ लिये बन्दूक तलवार धारी ब्रह्मचारी चले आ रहे थे।

उसी समय एक नौकरने बड़े साहबका सन्देश बसोरोंके चौधरीको सुना दिया। अन्य जातियोंके चौधरी भी निकट आ गये। परामर्श होने

लगा। ब्रह्मचारीजीको देखकर हरखू बोले : 'इनते पूछौ। विरमचारीजी का हुकुम है मालिक—पताल महियाँ धँसि जाई की धरती पै चली ?"

"धरतीको छुड़ायि सकत है रे ?—यू हमार आय रामजीकी आय। औ जब लग हम ठाढ़ हयिं, सीना फुलाय कै चलौ। अस निसाचरी अन्याय कोऊ क न सहा जाई।"

नईम बोला : "ये साले विलायती सौदागरोंके बच्चे पठान ठाकुरोंके गाँवोंमें बस कर हमारी ही रिआया को लूटते हैं।··· (गाली) की नौकरी पर लानत भेजता हूँ। नमक खाया है इसलिए जानसे तो न मारूँगा। पर पकड़ पाया तो ऐसी कुंदी बनाऊँगा कि दो जिन्दगी तक याद रक्खेगा।"

चार बन्दूकधारी सिपाहियोंके साथ कोठीका एक नौकर और भुलनी की मा उसकी दोनों बाहें थामे चले आ रहे थे—थोड़ी देर पहलेकी स्फूर्तिमयी खिलती कली सी भली लगने वाली भोली कन्या बेजान लाशकी तरह घिसटती चली आ रही थी।

भुलनीको देखकर एक बार फिर जनरव ज़ोरसे उठा। बन्दूक वाले सिपाहियोंकी बन्दूकें सीधी हो गईं।

अङ्गरेज़ बनिया हर तरहसे अपनी अड़ पर अड़ा हुआ था। उसके लेखे जैसे कोई खास बात ही न हुई थी। बसोरोंकी माँग थी कि बिरादरी को भात देनेके लिए भुलनीके पिताको सौ रुपये मिलने चाहिए, जब तक बिरादरी राज़ी न होगी तब तक भुलनी अपने घरमें प्रवेश नहीं पा सकती। साहब डाँड़ भरनेके लिए तैयार न था। इस पर प्रजामें घोर असन्तोष फैल गया।

मझ्झू खाँ और ज़मींदारने समझाया कि अंगरेज़से लड़कर कोई पार न पायेगा, और यदि प्रजाजन लड़ने पर ही आमादा हों तो ज़मींदारके लठैत भी अंगरेज़ोंका ही पक्ष समर्थन करेंगे।

ब्रह्मचारी बोले : "हम यू जानिति है की तुम पंच जीति न पइहौ मुदा जो चुप चाप लौटि जइहौ तो पंचौ, आजु गज्जू कै बिटेवा पै यू जुलुम

भवा कालिह अउरनेव पै होई। हार-जीतका कै परवाह न करौ, गोरे होंय चहै जमींदार, अन्याव केहू क न सहा जाई।"

परन्तु गाँव वाले टूटने लगे। गाँवके चौधरीने अन्य जातियोंके चौधरियोंको ऊँच नीच समझा कर तोड़ लिया। बसौर भी अपनी मरजाद नहीं छोड़ सकते थे। गज्जू जब तक अपनी बिरादरीको भोज न दे तब तक उसकी लड़कीको समाजमें स्थान नहीं मिल सकता।

विवश गज्जू अपनी लड़कीको त्याग कर चला गया।

× × ×

इस घटनाको हुए चार दिन बीत गये। भुलनीने अन्न जल तक त्याग कर रक्खा था। नीलकी कोठीके बाहर पेड़ तले वह बिना किसीसे एक शब्द बोले मुँह ढाँके पड़ी थी। नईमउल्ला दिन रात वहाँ पहरा देता था। भुलनीकी मा विवश-सी आती और दूर खड़ी रह कर आँसू बहाती थी। वह अपनी बेटीको स्पर्श भी नहीं कर सकती थी क्योंकि वह सदोष और बिरादरीके बाहर थी। वह और नीच कौमोंकी अन्य स्त्रियाँ अत्याचारीकी नौकरी भी नहीं छोड़ सकती थीं। सारा गाँव अंगरेज़ोंका बँधुआ था!

हर किसान बन्दोबस्तके काग़ज़ पर अंगूठा लगानेके लिए बाध्य था। और चूँकि किसान अपने हाथ कटा बैठा था इसलिए उसके मज़दूर भी काम करनेके लिए बाध्य थे। यदि वे काम न करें तो पठान और अंगरेज़ दोनों मिलकर उन्हें सताते थे। नीच कौमवाले मज़दूरोंकी झोपड़ियाँ जला दी जातीं, उन पर सामूहिक हमले होते, बर्बरता और बलात्कारका ताण्डव होता।

नईमउल्लाने स्मिथकी नौकरी छोड़ दी थी। पर वह चूँकि पठान था इसलिए कोई उसे ज़बरदस्ती काम करनेके लिए मजबूर न कर सकता था। हाँ भुलनीके प्रति उसकी उदारतापर आपत्ति अवश्य की जा रही थी, परन्तु नईम भी अपने हठ पर ही अड़ा हुआ था। भुलनीके अनशन

और नईमउल्लाके विरोधने नीच मानी जानेवाली कौमोंके नवजवानों—विशेष रूपसे बसोर नवयुवकोंमें बड़ा मौन आन्दोलन मचा दिया था।

दिग्विजय ब्रह्मचारी बड़े धर्म-संकटमें थे। कुलसुमको लेकर इस गाँवमें रहना उन्हें श्रेयस्कर न जान पड़ता था, परन्तु भुलनीको निराधार छोड़कर जाना भी उन्हें उचित नहीं मालूम होता था। भुलनीका सहायक बनकर नईमउल्ला और उसके साथ ही साथ दिग्विजय ब्रह्मचारी भी अंगरेज़ोंकी आँखोंमें चुभ रहे थे। ब्रह्मचारी अपनी परिस्थिति जानते थे और उसीको लेकर वे कुलसुमके कारण बड़े चिन्तित भी थे। उन्होंने गज्जू बसोरको समझाया कि वह सपरिवार गाँव छोड़कर उनके साथ लखनऊ चले, गज्जू पहले तो हिचकिचाया परन्तु बादमें राज़ी हो गया।

परन्तु भुलनी आमरण अनशनका मौन हठ ठान कर पड़ी थी, और नईमउल्ला उसे छोड़कर जानेके लिए तैयार न था।

तभी विलायतसे बड़े साहबके पोता होनेका समाचार आया।

१५

कारखाने और बड़े साहबकी कोठीकी मध्य-दूरी पर एक छोटा-सा गिरजाघर बना था। पादरीके अभावमें बड़े मालिक सैण्ड साहब स्वयं ही प्रार्थना-पाठ-प्रवचनादिके पुरोहित थे। पोतेके जन्मोत्सवके उपलक्षमें प्रभुको धन्यवाद देनेके लिए लगभग बीस-पचीस विलायती लोग-लुगाइयोंका दल गिरजाघरकी ओर जा रहा था।

आधी फलाँग दूर एक टीले पर बैठी युवक-मण्डलीने साहबों, मेमोंको देखा; बुधुआ बोला: "ई द्याखौ, जाय रहे हयिं ई सब रावन केर नाती।"

"उयि बड़कई मिमियाँ क द्याखौ कस धरतीधमकु चाल ते चली जायि रही है। अच्छा बल्लू, जब यू मरिहै तब कितने मनई यहिकी लहासि उठाय पइहैं?"

बल्लू लापरवाहीसे कंकड़ उछालते हुए बोला : "अरे यू मरै नाईं सकति। हमार सबका जिउ खाय-खाय कै यू गोरे लोग सब अम्बर होइगे हैं।"

अर्जुन बोला : "आजुकी बतावौ हो, तुमरे हियाँ मू दिखाई क का परबन्धु भवा।"

"यू मू दिखाई तौ ज्यू लइ लिहिसि है हमार, अबहीं तलक जमींदार का दे'क परत रहै अबतौ यू साहेबौ माँगै लाग। आठ-आठ मेहरारू, ससुर, जमींदारके हैं, रोजुइ पिल्ला पिल्ली होंय रोजुइ मू दिखाई देव—कहाँ लै देव ससुर।"

"अरे अब यू साहेबौ जुगुति जानि गा, बिलाइति ते मेंमन की फउज बोलाई। यहिके घरमां भी रोजु मुर्गीके अंडा जस बेटवा होइहैं।"

हरदेव जो इस युवक मंडलीमें सबसे बड़ा था, खोई आँखोंसे नील कोठीकी ओर देखते हुए धीमें थके स्वरमें कुछ शर्म और कुछ बेशर्मी से मुसकराते हुए बोला : "अरे अबहींका, याक दिन ई ललमुँहें यहाँ अउरु निकासि देहै कि हमारि पंचनकी जौन मेहरुअनका ई पंच दबोचि लेति हैं उनते जउन बेटवा होंय उनहूँ की मू दिखाई कोठी मा पहुँचाई जावा करै।"

सबके चेहरों पर बेशर्मी और अवसादसे भरी हँसी आ गई। मातादीन की आँखोंमें खून उतर आया। भुलनीके साथ उसका सम्बन्ध जुड़नेवाला था, जो इस काण्डके कारण रह गया। अपनी तड़प और शब्दोंको चबाते हुए वह बोला : "यू ग़ोरा कारिन्दाका फाँसी दइ कै ईकी लहास गंगा जी मा न बहावा तौ हमार नाँव मातादीन नायँ।"

विलायती दलने गिरजेसे बाहर आते हुए नीमके पेड़के नीचे ओढ़नी से मुँह ढके, गुड़मुड़ी मार कर पड़ी हुई भुलनीको देखा। नईमउल्ला पेड़के तनेसे टिका हुआ बैठा था।

मोटी मिसेज़ सैण्डने भुलनीकी ओर एक नज़र डाल नाक-भौं सिकोड़

कर कहा : "ये निगर्स कितने जाहिल और बेशर्म होते हैं। उन्हें अपनी इज़्ज़तका खयाल तो होता ही नहीं।"

विलायतसे ताजे आये हुए नौजवान जेम्स ब्राउनने कहा : "कुछ भी हो मिसेज़ सैण्ड, स्मिथकी यह आदत बहुत नामाक़ूल है, मेरी समझमें नहीं आता कि आप लोग उसे बरदाश्त क्योंकर कर पाते हैं।"

छोटे मालिक जॉन निकल्सन साहब बोले : "स्मिथकी बुराई ही मत देखो ब्राउन, वह जिस तरह इन काले कुत्तोंके हलक़से पैसा निकाल लेता है वैसा हममेंसे कोई भी नहीं कर सकता।"

ब्राउनको स्मिथकी सूरतसे नफ़रत थी, वह बोला : "वह जो कुछ भी हों, पर स्मिथका यह काम मनुष्यताके हर स्तरसे गिरा हुआ है। तेरह चौदह बरसकी छोटी सी लड़कीको भेड़ियेकी तरह तबाह करनेवाले व्यक्तिको शूट कर देना चाहिए।"

मिसेज़ लॉयन्स हँस कर बोली : "चूँकि नये ही नये आये हो, इस-लिए ऐसी भावुक बातें कर रहे हो। अरे यहाँ तो इतनी उमरकी लड़कियाँ मा बन जाती हैं, इन्हें छोटी क्यों समझा जाय ?"

हाथमें इन्जीलकी पोथी लिये भारी भरकम शरीर वाले मिस्टर सेण्ड ने कहा : "प्यारे ब्राउन, क्या तुम कभी कीड़े मकोड़ोंके बारेमें भी सोचते हुए अपना वक्त़ जाया करते हो ? यह हिन्दुस्तानी शैतान इसी तरह सोचनेके काबिल नहीं।" एक क्षण रुककर फिर मुसकराते सेण्ड साहबने कहा : "कानपुरके रिक्रूटिंग ऑफिसर मिस्टर बरोने एक बार कहा था कि इन गड़बड़ जबान बोलने वालोंके साथ तो बस एक ही व्यवहार करना उचित है। इन शैतानोंको ठोकरें लगाई जाँय और जरूरत पड़ने पर काट डाला जाय और इनके पास जो रुपये रहते हैं उन्हें छीन लिया जाय।"

ब्राउनने फ़ौरन बात काटते हुए तेज़ीसे कहा : "लेकिन मिस्टर सैण्ड उनके पाससे हम रुपया पानेकी आशा ही क्योंकर कर सकते हैं। मैंने

अपने दो महीनेके मामूलीसे अनुभवमें यह देखा है कि उनके पास पहनने को सिर्फ़ चिथड़े ही हैं, मैंने इनको भरपेट खाते हुए भी नहीं देखा।"

मिस सैण्ड 'हो हो' कर हँस पड़ीं। बोलीं : "भोले ब्राउन, तुम्हें अभी इनका तजुर्बा ही नहीं। ये काले शैतान जानबूझ कर इस तरह रहते हैं और इनके घरों या छिपावकी जगहोंमें पीढ़ी दर पीढ़ीकी जमा की हुई बेशुमार दौलत गड़ी होती है।"

ब्राउनके चेहरे पर यह साफ़ झलक रहा था कि जैसे उसे इस बात पर विश्वास नहीं हुआ। मिस्टर सैण्डने कनखियोंसे उसे भाँप, उसके कन्धे पर हाथ रखते हुए अपनी बनावटी शान्त गम्भीर आवाजमें कहा : "अफ़सोस यही है कि हम लोग शाही इलाक़ेमें हैं वर्ना इनके ऊपर जितनी ही सख्तियाँ की जाती हैं उतने ही ये खुश रहते हैं।"

ब्राउन बोला : "जो भी हो, पर उस लड़कीका इस तरह बेपनाह हो जाना यों भूखे मरना मुझे अच्छा नहीं मालूम होता। लार्ड जीज़स इसके लिए हमें क्षमा नहीं करेंगे।"

सैण्ड बोले : "अगर यह लड़की ईसाई हो जाय तो इसकी रक्षा करना ज़रूर हमारा फ़र्ज़ हो जायगा। मैंने अपने बैरा अब्दुल्लामसीहसे कहलवाया था, मगर वह राज़ी न हुई।"

"मैंने तुमसे कहा न कि ये काले शैतान सोचनेके क़ाबिल ही नहीं, ये जिद्दी शैतान हैं।"

"मगर मिसेज़ सैण्ड, यह औरतकी अस्मतका सवाल है। कमसे कम औरत होनेके नाते तो आपको इस पर विचार करना ही चाहिए।"

"तुम इन काले शैतानोंकी औरतोंको औरत कह कर हमारी स्त्री जातिका अपमान कर रहे हो ब्राउन। क्या जानवरोंकी मादाओंको भी औरत कहा जा सकता है?"

इसके बाद बात ख़त्म हो गई।

गंगा किनारे अपनी कुटीके सामने चारपाई पर बैठे हुए दिग्विजय

ब्रह्मचारी और चौधरी मज्झूखाँ बड़े ही गंभीर भावसे सिर झुकाये बैठे थे। एक उसाँस खींच मज्झूखाँने मौन भंग करते हुए कहा : "ठाकुर साहब ये कोई नहीं समझेगा कि गाँव पूरी तरह तबाह हो चुका है। बड़े साहब यही कहेंगे कि हरखूकी लौंडियाकी वजहसे कोई मुह-दिखाई नहीं दे रहा है। बड़े साहबके यहाँ यह पहला मौका आया है—हर तरहसे आफ़त है।"

दिग्विजय गम्भीर स्वरमें सिर झुकाये हुए बोले : "लड़के अलग सिर उठाये हुए हैं; राम न करे जो भुलनियाँको कुछ हो गया, तब तो किसीके मनाये न मानेंगे, प्रलै मच जायगा चौधरी। मुझे इसी बातका सोच है। आज सबेरे मैं देखने गया था, नाड़ी कमज़ोर चल रही थी। नईमा अलग भट्ठी-सा सुलग रहा है……लेकिन मैं सोचता हूँ चौधरी, भगवान् जो करता है सब भलेके लिए करता है। लौण्डे जूझना चाहते हैं तो जूझ जाने दो। अरे ज्यादासे ज्यादा दस-पाँच जानें ही तो जायेंगी, मगर इन परदेसियोंको गाँवके पानीका पता तो लग जायगा। सिसकनेसे यह बहुत अच्छा है कि आदमी रणक्षेत्रमें वीरगति प्राप्त करै।"

चौधरी बोले : "तुम्हारी बातसे इख्तिलाफ़ नहीं, बाक़ी हम यह चाहते थे ठाकुर साहब कि भेड़-बकरीकी तरह आदमियोंको कटवा देनेसे कोई फ़ायदा नहीं। ये आसानीसे क़ाबूमें आनेवाली क़ौम नहीं है। नवाब वज़ीरअलीने ऐसी ज़बरदस्त साज़िश रची थी इनके खिलाफ़ कि अगर चल जाती तो आज हिन्दुस्तानमें अंगरेज़का कहीं पता न होता।"

"कौन वज़ीरअली, नवाब आसफुद्दौलाके बेटे?"

"हाँ आसफ़ुद्दौलाके बेटे। जो अब बादशाह हैं, उनके वालिद नवाब सआदतअलीख़ाँने कम्पनी बहादुरकी सरकारसे कहा कि ये मेरे भाई आसफ़ुद्दौलाकी जायज़ औलाद नहीं है। कम्पनीकी सरकारको शह मिल गई। वह वज़ीरअलीसे सौदा करने लगी कि कुछ इलाक़े दो, फ़ौजका खर्च भारी है। मगर नवाब वज़ीरअली अपनी आनके आदमी थे।

अंगरेज़ोंने उन्हें ज़बरदस्ती गद्दीसे उतार कर नवाब सआादतअलीखाँको बिठला दिया।"

"ई तौ हम भी सुन रखा है। वज़ीरअली कैद करके काशीजीमें रक्खे गये। हुँआँ उन्होंने कुछ गड़बड़ मचाई थी।" ब्रह्मचारीने अपना दोहरेका बटुआ खोलते हुए कहा।

"अरे ठाकुर साहब, वो मामूली गड़बड़ नहीं थी। ये कहिये तक़दीर ही ख़राब थी हमलोगोंकी वरना आज इन बन्दरोंकी सूरत न दिखलाई देती हिन्दुस्तानमें। हमारे ये नवाब संजरख़ाँ हैं न, इनके वालिद मरहूम नवाब वज़ीरअलीके ख़ास आदमियोंमेंसे थे। उन्होंने बतलाया था एक बार कि नवाब वज़ीरअलीने बनारसमें बैठे-बैठे ही काबुलके बादशाह ज़मनशाह और गवालियरवाले दौलतराओ सेंधिया और दकनके सुल्तान टीपूशाह और ढाकाके नवाब वग़ैरह बड़े-बड़े रजवाड़ोंसे ख़तकिताबत की।"

"वाहरे शेर! फिर का भवा?" दिग्विजय ठाकुरने उत्साहित हो सरौतियासे सुपारी काटते हुए पूछा।

"अंगरेज़ोंको ख़बर लग गई ठाकुर साहब। उन्होंने नवाब साहबको हुक्म देनेकी जुरअत की, कहा कलकत्ते चलकर रहिये। इस पर शाही ख़ून उबल उठा। बनारसमें गोरोंकी मारकाट मचाई, फिर वहाँसे नेपाल भागे, फिर वहाँसे राजपूतानाकी तरफ़ भागना पड़ा, फिर जयपुरके राजाने उन्हें गिरफ्तार करा दिया।" कह कर चौधरीने एक निःश्वास डाली और बुझी आँखोंसे सामने कुछ देखने लगे।

दिग्विजय ठाकुर भी गंभीर विचारमग्न हो गये, दो चार पल रुक कर बोले: "ऐसा अन्धेर मचाय रक्खा है इन राक्षसोंने कि धरती हाहाकार कर उठी है चौधरी। और ऐसे पुण्य प्रतापी नक्षत्र पड़े हैं इन लोगनके कि हमारी पंचनकी एकौ जुगत नहीं चलती। बड़े-बड़े शक्तिसाली राजे-

महाराजे, मराठा, बंगाला, सिख सरदार, हैदरसाह, टीपूसाह और मुर्शिदा-बादके नवाब,—एकसे एक जोधा परास्त हुइ गये इनके आगे—"

"इनमें एका बहुत है ठाकुर साहब। और ये लोग मेहनती भी बहुत हैं।"

"हाँ भइया, बैर फूटके कारनै तो हमारा देस तबाह हुआ, नहीं तो कौन सी कमी है हियाँ। सोने ऐसी धरती, गंगा-जमुनी जी जैसी नदियाँ, जोगी जती, धरम करम, बड़े बड़े जोधा महारथी—और फिर भी पहिले हम पंच तुम लोगनसे हारे, अब हम दूनौ मिलिकै अंगरेजन ते हार रहे हैं......खैर जैसी बजरंगबलीकी इच्छा। बाकी इतना तो हम जरूर कहेंगे चौधरी साहब, अकि इस बार जो ई लोग मूंदिखाईके बदे परजा लोगनको दबावैं तो तुम सब पठान भर एक हुइ कै परजाका साथ देना।"

चौधरी मज्भूखाँके जानेके बाद दिग्विजय ठाकुर अपनी कुटीके अन्दर गये, देखा कुलसुम सो गई थी। जिस दिनसे भुलनी काण्ड हुआ है, ब्रह्मचारी उसे एक क्षणके लिए भी अपनी कुटीसे बाहर नहीं निकलने देते थे। उनके मनमें यह आशंका समा गई है कि नईमसे नाराज़ होनेके कारण अंगरेज़ उसकी बहनसे भी बदला ले सकते हैं। कुलसुमको लेकर गाँव वालोंकी ओरसे भी उनका मन ऊँचा ही रहता है। कौन जाने लोभ-वश कोई उनकी बेटीको उड़ा ले जाय। कुलसुमके मोहने दिग्विजय ब्रह्मचारीको एक जगह कमज़ोर बना दिया था, वे उसे लेकर लखनऊ जानेका विचार बार-बार करते थे, परन्तु यह सोचकर फिर-फिर चुप हो जाते कि गाँव वाले अपनी आपदाके समय उनके इस प्रकार चले जानेसे उन्हें कायर समझेंगे। वे इसीलिए कुलसुमको छोड़कर एक क्षणके लिए भी दूर नहीं जाते।

हाथ पैर धोकर ठाकुर चौकेमें गये, चूल्हा ठीक किया, तवा चढ़ाया, रोटियाँ बनाईं, कुलसुमके लिए बाहर कोनेमें रक्खे मिट्टीके पात्रोंमें रोटी

दाल दूध भात आदि सब परोसकर बेटीको जगाया : "कुल्सुमियाँ ! उठ बिटिया उठ !"

बेटीको गोदमें लेकर वे उसे अपने हाथसे खिलाने लगे। दिग्विजय ब्रह्मचारी कुल्सुमकी रक्षाका भार लेनेके बादसे म्लेच्छके प्रति छुआ-छूतका भाव एक प्रकारसे भूल गये थे। इधर जबसे नईमका घर छोड़कर कुल्सुम आई है वे उसे दोनों समय अपने हाथसे खिलाते पिलाते, अपने कलेजेसे लगाकर रखते हैं। कुल्सुमके कारण ही वे भुलनीको भी छू लेते हैं।

खाते खाते कुल्सुम बोली : "कक्कू, भुलनियाँ भूखी पड़ी है, मुझसे खाया नहीं जाता।"

एक निश्वास ढाल कर ब्रह्मचारी बोले : "क्या करें बेटी, रामजीकी यही मरजी है, तू खाले।"

"अच्छा कक्कू, रामजी यह क्यों चाहते हैं कि भुलनीको इतनी तकलीफ़ सहनी पड़े ? हमारे अल्लामियाँ तो यह कभी न चाहेंगे। कक्कू, आप उसे मस्जिदमें ले जाइये। मुल्ला साहब वज़ीफ़ा पढ़ देंगे, भुलनी बच जायगी। कक्कू उसे बचा लीजिए। भुलनी अगर मर गई तो मैं भी मर जाऊँगी कक्कू।"

ब्रह्मचारीने उसे फ़ौरन अपने कलेजेसे चिपका लिया। राजपाट, धन वैभव, भोग-विलास स्त्री सुखका क्षणमात्रमें परित्याग करनेवाला व्यक्ति अपने मुसलमान भाईकी आख़िरी निशानीके प्रति कठिन मोहपाशमें बँध गया था। कुल्सुमका वह किसी प्रकार भी अनिष्ट नहीं देख सकता था।

दिग्विजय ठाकुर भावावेशमें ही एक नया विचार पाकर बोले : "अच्छा बेटी तेरी भुलनियाँको मैं ख़ुदाको ही सौंप दूँगा। तू जीती रह मेरी बच्ची, तेरे लिए भुलनियाँको भी जिलानेका उपाय करूँगा।"

थोड़ी देर बाद कुल्सुमको गोंदमें लिये हुए ब्रह्मचारी भुलनी और नईमके पास गये। नईमउल्ला उदास बैठा भुलनीका सिर गोंदमें लिये

धीरे-धीरे दबा रहा था। ब्रह्मचारीने भुलनीकी नाड़ी देखी, कमज़ोर चल रही थी। आँखें खोल भुलनीने फटे-फटे डोलोंसे ब्रह्मचारी और कुल्सुमको देखा, फिर बोली : "बाबा का करी जिहिते जल्दी ते हमार परान निकसि जाँयें—

"नहीं। मैं तुम्हें नहीं मरने दूँगी, मैं अब किसीको नहीं मरने दूँगी। तू मरेगी तो मैं भी मर जाऊँगी।" कुल्सुम भुलनीसे बड़ी जोरसे चिपक गई थी। भुलनीकी पीड़ित ठठरी प्रेम भारको सहन तो कर गई, पर कराह उठी। उसने अपने कमज़ोर शरीरको हिलाकर मुक्त होनेका प्रयत्न किया।

ब्रह्मचारीकी आँखोंमें आँसू आ गये, बोले : "कोई नहीं मरेगा बेटी, भगवान् सबकी रक्षा करेंगे।" ब्रह्मचारी नईमको संकेत कर अलग ले गये, बोले : "बेटा क्या जान जानेके सिवाय और कोई उपाय नहीं है इसके लिए ?"

नईम फटी आँखोंसे ब्रह्मचारीको देख बोला : "क्या उपाय हो सकता है।"

"उपाय है भइया। इसे कलमा पढ़वाय दिया जाय।"

"उससे क्या बच जायगी ?"

"हाँ। कलमा पढ़ायके इसके हाथ पीले कर दिये जाँय।"

नईमउल्लाके चेहरे पर चमक आई, बोला : "क्या ये राज़ी हो जायगी।"

"जरूर—जो तुम राज़ो हुई जाव।"

नईम चौंक कर पीछे हट गया, जैसे ब्रह्मचारीकी बातने नहीं साँपके फनने उसे छू लिया। यह प्रतिक्रिया देखकर ब्रह्मचारी बोले : "छोटी जात देखकर घिन करने लगे ? जो मनमें अटक थी तो इसे बचानेके लिए काहे भूखे प्यासे बैठे थे ?"

"ये-ये बात नहीं कक्कू—"

"देखो बेटा, पहले नहीं सोच पाता था पर अब मेरे मनमें सब कुछ

साफ है। गुसाँई जी कह गये हैं 'जाति पाँति पूछे नहिं कोई, हरिको भजै सो हरि का होई।' हमारे हिन्दू लोग यह बात भूल गये, अब क्या तुम भी—"

नईमउल्लाकी आँखोंमें अन्तरका भावावेश छलछला आया। बच्चे की तरह दोनों बाँहें ब्रह्मचारीके गलेमें डाल उनकी छातीमें मुँह गड़ाते हुए बोला : "अब शर्मिन्दा न कीजिये, कक्कू। आप—आप–" भावावेश और भी उफनने लगा, ढलकते आँसुओंकी लकीरें लिये आवेशसे तम-तमाये गोरे गुलाबी मुखको ऊपर उठाया, ब्रह्मचारीकी स्नेहभरी दृष्टिसे उसकी श्रद्धा-ज्वारसे उमड़ती नज़रें मिलीं, रुँधा हुआ कण्ठ हिचकीके साथ खुला, वह बोल उठा : "आ—प बहोत बड़े हैं कक्कू—बहोत बड़े हैं।"

ब्रह्मचारीने नईमउल्लाके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा : "बिचार बड़ा होता है बेटा, आदमी बड़ा-छोटा नहीं होता। यह अब हमारी समझमें आ गया है। क्या जाने, सूर्य भगवान् और बजरंगबलीमें से कौन मेरी कुल्सुमियांके जीवमें बैठकर हुकुम लगाय गया। भुलनीको बचना चाहिए। पुन्यातमा या निर्बल जीवकी रक्षा करना सबसे बड़ा धरम है। कुल्सुमियां बोली इसे खुदाके पास ले जाओ कक्कू। पहले तो मनमें धक्का लगा फिर सोचा नाममें ही तो भेद है। मेरी कुल्सुमियां ने मुझे बहुत कुछ सिखाया है बेटा। इसने मेरी तपस्याको अरथ दिया है।"

कुल्सुम भुलनीके सिरहाने बैठी उसका सिर दबा रही थी। भुलनी मुर्दे सी निश्चेष्ट आँखें बन्द किये पड़ी थी; उसके मासूम चेहरेपर अनायास छा जानेवाली गम्भीरताकी काली छाया थी और देह वैसी ही पीली पड़ गई थी जैसी कि मुर्दा हो जाने पर होती है।

ब्रह्मचारी और नईमउल्ला लौट आये। ब्रह्मचारी कुल्सुमके पास भुलनीके सिरहाने बैठ गये।

"बिटिया ! भुलनियां !—आँखी खोलो बिटिया।"

ग़फ़लतकी नींदसे जागते हुए भुलनीने आँखें खोलीं। कुछ दिनों पहलेकी मृगछौने सी भोली काली पुतलियाँ अपनी चमक खोकर पथरा गईं थीं। उसका चेहरा पीड़ासे कठोर, किसी पकी हुई आयु वालेके चेहरे सा लगता था। प्याससे सूखे होठोंकी पपड़ियाँ सिकुड़कर मरणेच्छा से कठोर उसके अन्तर्मनका चित्र उपस्थित करती थीं।

ब्रह्मचारी अपने स्थानसे खिसककर इस तरह बैठ गये कि भुलनीको उन्हें देखनेके लिए नज़रें ऊँची न उठानी पड़ें। वे बोले: "तेरा पराश्चित पूरा भया बिटिया।"

"कहाँ कक्कू ? परान बड़े पापी—" अन्तिम शब्द साँसके साथ ही धीमा और अस्पष्ट हो गया, उसने दर्दसे आँखें मींच लीं।

कुल्सुम अपने कक्कूसे लगकर बैठी हुई अपनी सखीका मुँह निहार रही थी। दुर्घटनाके दिनसे लेकर आज तक नन्हीं कुल्सुमकी समझमें यह नहीं आया था कि भुलनीसे ऐसा क्या-कुछ अपराध बन पड़ा जिसके कारण उसके माता पिता उसे घर नहीं ले गये, जिसके कारण भुलनी भूखी प्यासी मरणहठ ठान कर यों पड़ी है।

ब्रह्मचारी बोले: "परान काहे निकसै बिटिया, तुमसे कोई पाप भया है?" फिर रुककर बोले: "तेरे माँ-बाप और बिरादरीवाले साहबसे डाँड़ पाये बिना तुझे घर नहीं ले जायेंगे, पर नईमा तुझे अपने घर ले जानेके लिए तयार है बिटिया। नईमाने तेरी बड़ी सेवा की है।"

नईमउल्ला कक्कूसे बचाकर भुलनीको देखने लगा। भुलनीके निष्क्रिय चेहरे पर कोई भाव व्यक्त न हुआ, वह ज्योंकी त्यों आँखें नीचे पड़ी रही।

ब्रह्मचारी फिर बोले: "तू हाँ कर ले। बस फिर तुम लोगोंको लेके मैं कहीं अन्ते चला जाऊँगा। तुम्हारा निकाह हुइ जाय, कुल्सुमियाँको तुम्हारे पास रख दूँ फिर सब सुख ही सुख होगा बेटी।"

कुल्सुम और नईमउल्ला दोनों भुलनीके चेहरेको ताक रहे थे, उस पर ब्रह्मचारीकी बातकी कोई भी प्रतिक्रिया अब तक न उभरी थी। ब्रह्मचारी भी बात कह कर भुलनीके चेहरेको सतर्क दृष्टिसे देख रहे थे, उत्तर न पाने पर उन्होंने फिर कहा : "नईमा लड़का नहीं देउता है भुलनियाँ, बड़ी तपस्यासे ऐसा पति मिलता है।"

भुलनीने आँखें खोली; कुल्सुम, नईमउल्ला और ब्रह्मचारी उत्सुकतासे उसे देखने लगे।

"धरम न दूँगी कक्कू, परान दूँगी।···जाने काहेमें अटके हैं राम! राम!" भुलनियाँ हँफनीके साथ कराह उठी। सूखे होठोंकी पपड़ियों पर कमज़ोर ज़बान फेर उसने फिर अपनी आँखें बन्द कर लीं।

कुल्सुमका चेहरा गहरी उदासीसे एकदम कुम्हला गया, नईमउल्लाने अपने चेहरेको कस लिया, ब्रह्मचारी गम्भीर हो गये। मौन छा गया, पेड़के ऊपर चिड़ियाँ चहचहाती रहीं।

उसी समय भुलनीकी माँ वहाँ आई। दूर हट कर खड़ी हो गई। अछूत बिरादरीके निर्णयके अनुसार उसकी बेटी उसके लिए भी अस्पृश्य हो गई थी। भुलनीके पास बैठे तीनों जन उसकी माँको देखने लगे। ब्रह्मचारी कुछ सोच कर उठे, भुलनीकी माँके पास गये, संकेतसे उसे और आगे चलने को कहा। कुछ दूर ले जाकर बोले : "क्यों री, जो भुलनियाँ कलमा पढ़ लेनेसे बच जाय तो तू राजी हुइ जायगी?"

भुलनीकी माँ ब्रह्मचारीके इस प्रस्तावको सुनकर स्तब्ध रह गई। ब्रह्मचारी फिर बोले : "नईमाको मैंने राजी कर लिया है। भला लड़का है। तुम सब मुझसे ज्यादा उसे जानती हो। दोनों कहीं आन गाँव जायके बस जायेंगे। मैं उन्हें लखनऊ ले जाऊँगा। बिरादरीमें चरचा करनेकी जरूरत नहीं, अपने मरदके कानमें धीरेसे बात डाल देना।"

स्त्रीकी आँखोंमें आँसू आ गये, बोली : "जउन हुकुम महराज क। जउनि जुगति ते बिटेवा मोरि बचि जाय, वहै करौ महराज। हत्यारन

के हिंयाँ करेज पै पाथर धरिकै दिनराति टहल करति हों मुल मोर भगवान जानित है महराज—का कहौं।"

"अच्छा तौ तू चलके उसके सामने खड़ी हुइजा, जब मैं कहूँ तौ तू भी उसे राजी करना।" परन्तु ब्रह्मचारी भुलनीको राज़ी न कर सके। वह बोली : "जमराज ते मोर बियाहु होइ चुका महराज। जियैके बदे अपन धरम न छाँड़ब।"

भावावेशमें ब्रह्मचारीने भुलनीके चरण स्पर्श कर लिये; बोले : "बिटिया तू धन्य है।"

भुलनीकी माँकी आँखोंसे धारोंधार आँसू बह रहें थे। कुल्सुम अपनी सखीके निश्चयसे सकपका गई थी, और नईमउल्ला आँखोंमें नमी होनेके बावजूद पत्थर-सा खड़ा था।

१६

अमावसकी रात किसी लाचार अन्धेकी जीवन घड़ियोंकी तरह घुट रही थी। पेड़के नीचे पड़ी हुई भुलनी कुछ दूर पर बैठे नईमउल्लाके लिए रातकी स्याहीमें गहरी स्याह आकृतिके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं बची थी।

ख़ुद नईमको भी अपनी तमाम ज़िन्दगी इसी तरहका एक दर्द भरी स्याह बोझ लग रही थी—ऐसा बोझ जिसे आज शामके बादसे वह सहसा सह नहीं पा रहा था। स्वयं अपने लिए ही जितना वह ऊपरसे जड़ हो गया था उतना ही उसके अन्तरका तार तार खिंच गया था। अपने दिल की धड़कनों पर हर बार ध्यान जाने पर उसे महसूस होता मानो ऊँचे-ऊँचे आलीशान और पुख्ता लगनेवाली इमारतोंके टूट-टूट कर गिरनेके धमाके हो रहे हैं। दिलकी धड़कनोंमें जिन्दगी नहीं बल्कि मौतकी मनमानी मचलन भरी हुई थी।

नईमउल्लाके जीवनके पिछले छः वर्ष बड़े ही कठिन बीते हैं। दुलारी से बिछोह होनेके बाद, रुस्तमनगर छूटनेके बाद ठसाठस भावुक जवानीमें

पहला धक्का खाकर उसके जीवनमें जैसे सब कुछ निःशेष हो गया था। वह दिशा, कुदिशा, दसों दिशाओंमें जाने कहाँ-कहाँ भटका। बस्ती, जंगल ठाँव-कुठाँव पर उसे सुख और दुःख, इन्सानियत और हैवानियतके लगातार इतने रूप देखनेको मिले कि उसके अन्दरसे निर्णयात्मक शक्ति ही निकल जाती अगर दुलारीकी गहरी यादसे वह बँधा न होता। दुलारीसे बिछुड़नेका ग़म इस तरहसे उसके जीवनमें समा गया था कि उसके बाद सारे दुख-सुख उस पर अपना असर डाल सकनेके लिए बोथरे हो गये थे। पिछले साल-सवासालसे उसका मन धीरे-धीरे थमाव पाने लगा था। इस जगह आकर उसने स्मिथ साहबकी नौकरी भी कर ली और अपनेको भुला कर मनका बहलावा भी पा लिया था। अचानक यह भुलनीकाण्ड हुआ, उसकी कोठरीमें उसके विदेशी अन्नदाता द्वारा भुलनी पर उस समय अत्याचार हुआ जबकि वह उसकी मुँहबोली बहन कुल्सुमके साथ खेल रही थी। इस घटनाने उसका सारा जीवन नये सिरेसे फिर उलटा दिया। भुलनीके बिरादरी वालोंकी मरजादकी समस्या और भुलनीका आमरण अनशन नईमसे अपना कर्तव्य पालन कराने लगा। यहाँ तक तो वह पराये दुःखसे पीड़ित परसेवाव्रती होकर हल्का था, परन्तु आज शाम फिर ऐसा भूकम्प आया कि उसके मानस जगत्का कण-कण अस्तव्यस्त होकर बिखर गया और इस समय रातके अँधेरेमें नईम-उल्लाके जीवनकी सारी निराशा एक साथ असह्य बोझ होकर उसकी कमर तोड़े डाल रही थी। उसे लग रहा था वो अब स्वयं अपने लिए ही भार है। अबसे यह जीवन उसके चलाये न चल सकेगा। यह ज़िन्दगी अभी खत्म हो जाय; यह मायूसी उसका पीछा छोड़ दे, मौतके आग़ोशमें उसे मुँह छिपा लेने दे। मौतका दामन माँके दामनकी तरह मधुर होगा।

डेढ़ पहर रात बीत चुकी थी। गाँवमें अलम्ख़ामोशी छाई हुई थी। दूर बस्तीके आस-पाससे कुत्तोंका शोर, रातके परिन्दोंका कर्कश स्वर और बड़े साहबकी कोठीके नीचेवाले हालमें ज़नानी मर्दानी हँसीके सामूहिक

नशीले ठहाके कभी-कभी उस सन्नाटेको भंग करते थे और बड़े मनहूस लगते थे। आसमानके चमकते तारे, यों नज़रें मिलानेके लिए एक बहाना तो ज़रूर थे, मगर बड़े बेमानी लगते थे। तारोंकी चमकमें उसके लिए कोई सन्देश नहीं था। ज़िन्दगी ख़ामोश सवालकी गूँज-सी उसकी साँसोंमें सिमटी घुटनके ऊँचे-ऊँचे पहाड़ोंसे टकरा कर बार-बार उसके पास लौट आती थी, और वह यही नहीं चाहता था।

अँधेरेमें खड़खड़ाहट हुई, दवे पाँवोंकी आहट मिली, नईमउल्ला चौंककर होशमें आ गया। पास ही रक्खी हुई तलवार म्यानसे बाहर निकल आई, वह उठ खड़ा हुआ। पेड़के पीछेसे दो काली आकृतियाँ सामने आईं। नईमकी कड़कदार तलवारके जवाबमें भुलनीके पिताका धीमा स्वर और भुलनीकी कराह प्रायः एक साथ ही सुनाई पड़ी। नईमउल्लाकी तलवार म्यानमें वापस चली गई, वह उनके नज़दीक चला आया। भुलनीकी मा अपनी बेटीके पास बैठ प्यारसे उसके सर और गालों पर हाथ फेरते हुए कह रही थी: "भुलनियां ज्यू कइस आय बिटिया ?"

उत्तरमें भुलनीकी एक कमज़ोर कराह फिर सुनाई पड़ी। उसका पिता बोला: "सातों सुख पाओ नईम भइया। चोला नीक रहै गंगामाई करैं। हम अपनि खाल उतारि कै तुमरी पैरकीं जूती कै खातिर दै देयि तबौ तुमते नाहीं उरिन होय सकिति है भइया। तुम मनई नाहीं देउता है।"

नईमने कुछ न कहा। भुलनीकी माँ अपनी बेटीको ब्रह्मचारीकी बात मान लेनेके लिए तरह तरहसे समझाती रही। भुलनीका पिता भी उसे यही समझानेके लिए रातके अँधेरेकी आड़ लेकर आया था। जातीय पंचायतका फ़ैसला और साहबकी नौकरी उसे सबके सामने अपनी निर्दोष बेटीके पास आनेसे रोक लेती थी, आख़िर उसके और भी सन्तानें थीं। एकके पीछे वह अपनी गृहस्थी तबाह नहीं कर सकता था, फिर भी उसे

अपनी बेटीका मोह था। वह चाहता था कि उसकी बेटी जिये, भले ही धर्म परिवर्तन कर जिये।

नईमउल्लाके मनमें नई आशाका संचार हुआ। उसका आँधियों भरा मन थमकर भुलनीके माता पिता की चिरौरियाँ सुनने लगा। बड़ी देर तक धीमे स्वरोंमें समझावन बुझावन चलती रही, भुलनीके पिताका रुँधा हुआ स्वर और उसकी माँका फूट-फूट कर रोना बिलखना उसके पावों पर सिर रखना, उसे कलेजेसे चिमटाना एक ऐसा कारुणिक दृश्य उपस्थित कर रहा था जिसे स्वयं नईम भी नहीं सह पाया। अँधेरेके पर्देमें छिपी हुई उसकी आँखें चुपचाप आँसू बहानेके लिए स्वतन्त्र थीं—वह न जाने कितने दुखोंकी टीस लिये रो रहा था।

परन्तु जवाबमें भुलनी एक बार भी न बोली, केवल कभी कभी कराह पड़ती थी।

समझाने वालोंने हार कर निसाँस ढाल दी। रातका तीसरा पहर बीत चला। आसमानमें हिरनी डूब गई, सूक उग आया, भुलनीके माता-पिता हारे जुआरीकी तरह दाँव छोड़कर लौट गये। नईमउल्ला फिर खो गया। कुछ रात और बीत गई।

भुलनी फिर कराहने लगी। नईमउल्ला उसके पास गया पूछा: "करवट लोगी?"

"ऊँहु।"

"सिर दाब दूँ?"

"न।···सुनौ।"

नईमउल्ला उसके पास झुक आया।

"माफ कइदेव।"

"किसलिए भुलनी?"

"तुमका बहुत दुख दिया।"

"पगली हो, सो जाओ।"

थोड़ी देर फिर सन्नाटा रहा। नईम पास ही बैठा रहा।

"सुनौ।"

"क्या है ?"

"यू परान हमार कइसे निकसैं ? भगवानौ हमार नाहीं सुनित हैं।" भुलनी फिर कराह उठी।

"भगवान ग़लत बात नहीं सुनते। खुदकुशी करना भगवानकी नज़रोंमें पाप होता है। मेरा मज़हब भी यही कहता है और तुम्हारा भी।"

"अरे महिका का ? दीन-धरम मात-पिता—भगवान मोर सबु कछु छीनि लिहिन। पापी परान जाने काहे अटके हैं। कइसे निकसिहैं ?" भुलनीके स्वरमें स्वयं करुणा बोल रही थी।

नईम सहसा उत्तर न दे पाया। भुलनीकी बातमें निहित तर्कको काटनेके लिए नईमउल्लाके पास भी अच्छे तर्क थे, विचार थे परन्तु उसके स्वरकी करुणाका प्रभाव वह नहीं काट पाता था। अब तक उसके कानोंमें छः वर्ष पहलेका एक करुण स्वर गूँजता था, दुलारीने बड़े दर्द भरे स्वरमें उससे कहा था 'अब नहीं सहा जाता। मुझे कहीं निकाल ले चलो।' दुलारीकी इस टीसभरी फरियादने नईमको रातों रुलाया है परन्तु करुणाका यह नया दर्शन उसे दुलारीकी याद भुला रहा है। उसे लगता है कि जिसे वह अब तक असली माने बैठा था वह रूप नकली है। करुणा स्वाभिमानकी विवशतासे फूटती है और स्वाभिमानके ऊँचे नीचे स्तर भी होते हैं—इस प्रकारकी अनुभूतिके सहारे जो शब्दोंसे अधिक अपने मर्मको लेकर स्पष्ट थी नईमउल्लाके मुक्त सूने मनमें दुलारी और भुलनीका अन्तर अचानक सामने आ गया। नईमउल्लाको नई रौशनी मिली। अस्मत परस्ती इसको कहते हैं, खुद्दारी इस ऊँचाईपर अपना सिर तानती है ! दुलारी बड़ी आकर्षक, बहुत प्यारी होकर भी अपने सतीत्वका मूल्य नहीं जानती थी। दुलारी इस समय उसके लिए जूठी पत्तलके रूपमें स्पष्ट थी; जिस जूठनको वह अब तक बड़े शौकसे खानेके लिए लालायित था उस

पर ही इस समय उसे उबकाई आने लगी। भुलनी औरत और मर्द दोनोंकी इज़्ज़त जानती है, वह बेवसीसे समझौता करना नहीं जानती, अपनी लुटी लाजको शौहरको सौंपनेसे उसे सख्त परहेज़ है—इसे खुद्दारी कहते हैं।

उन दिनों खुद्दारीके दर्शनका बोलबाला था, शायरोंसे लेकर उनके कलाम सुनने और फैलानेवालों तक हर एक इसी दर्शनकी कसौटीपर अपने परायोंके गुण दोष परखता था। नईमउल्लाके सामने भी वही कसौटी आई; भुलनीके सहारे उसे अपने स्वाभिमानकी पहचान हुई।···दुलारीके नशेका खुमार यों अब भी उसके मन पर छाया था मगर नया दर्शन अधिक ओजस्वी था और भुलनी प्रत्यक्ष आदर्श सी पड़ी थी। करुणा नईम को विकल बना रही थी। वह क्या करे कि भुलनीकी पीर मिट जाय। भुलनी मौत चाहती थी—सिर्फ़ मौत। विचारकी तेजीसे विवश, बिजली-सा नईमउल्ला भुलनीके सिरहाने आया। झुककर उससे बोला: "मरना चाहती हो?"

भुलनीके फीके चेहरे पर कान्ति छा गई, ठीक वैसी ही जैसी कि घटा-टोप बादलों भरे आसमानमें सूरजकी चमक होती है। उसके होंठोंकी फीकी मुस्कानमें, आँखोंमें, सारे शरीरमें आनन्दकी दीप्ति दमक गई। अपना आँखोंका स्नेह अँधेरेमें भी उड़ेलते हुए, नईमकी अँधेरे भरी आकृतिकी ओर देख उसने कहा: "बड़ा पुन्न होई तुमका। पापी परान कसस निकसैं। मँहिका गंगा किनारे लै चलौ। मोर रकत गंगाजी मा बही, मोर जलम जलमके पाप धुलिहैं, तुम्हैं जलम जलमका पुन्न मिली।"

तेरह वर्षकी बालिका भुलनीकी मरणेच्छाप्रेरित उत्तेजना उसकी देहकी शक्तिसे प्रबल थी; एक बहावमें ढेर सारा बोल कर वह थक गई। नईम सुन कर गहरेमें डूब गया।

नईमके मौनने भुलनीके स्वरमें आतुरता भर दी। गहरी डुबकी मारे हुए नईमके होशको भुलनीकी आवाज़ सुनाई दी: "हम जियब न—

मरा चहिति है। हमका भगवानके घर पठै देव। अउरु कुछु न सोचौ, मोर भला सोचौ।"

"अच्छा।"'खुदावन्दे करीम अगर मेरे हाथों यही चाहता है तो फिर—यही हो। मौतके लिए तड़पते रहनेसे मौतका आ जाना कहीं बेहतर है।" एक गहरी साँस लेकर नईम खड़ा हो गया और फिर उसे उठानेके लिए झुका, एकाएक बोला: "एक बार फिर कहता हूँ। तुम्हारे जैसी पाकदामन लड़कीका शौहर होकर मेरी भी आक़बत सुधर जाती।... खैर, मैं तुम्हारे पाक जिस्मको छूता हूँ, तुम्हें अपनी पीठ पर लादकर दरिया तक यों ले जाऊँगा जैसे रूह सबाबोंकी गठरी पीठ पर लादकर बहिश्त जाती है।"

भुलनी आँख बन्द किये पूर्ण समर्पणके भावमें तन्मय शान्त पड़ी थी। नईमके हाथोंमें फूल सी उठी और नईमकी गोदमें—मानो गंगाकी गोदमें चली गई। पेड़के नीचेकी धरती सूनी हो गई। इन्सानकी इन्सानके ऊपर जुल्मकी कहानी उस धरतीके साथ यादगार बनकर जुड़ गई—याद जो कि भुला ही दी जाती है।

१७

भोर होते ही टाँईंकी अम्मा खेतोंसे लौटीं। लौटते हुए उधरसे गुज़री। साथवालियाँ तनिक पीछे थीं। टाँईंकी अम्माने पेड़तलेकी धरतीको इधर कई रोज़के अभ्यस्त दृश्यसे खाली पाया—भुलनी भी नहीं, नईम भी नहीं। टाँईंकी अम्माके मनमें उपजा अनायासपन, शंका अपना समाधान खोजनेके लिए चटसे औरतवाले कोठेपर पहुँच गई; उसके भेजेमें समाया कि नईमउल्ला भुलनीको लेकर भाग गया। टाँईंकी अम्माने गुहारकर अपनी साथिनोंको बुलाया। औरतोंकी ज़बानोंपर बड़ा लंकादहन होने लगा।

पर ही इस समय उसे उबकाई आने लगी। भुलनी औरत और मर्द दोनोंकी इज़्ज़त जानती है, वह बेबसीसे समझौता करना नहीं जानती, अपनी लुटी लाजको शौहरको सौंपनेसे उसे सख्त परहेज़ है—इसे ख़ुद्दारी कहते हैं।

उन दिनों ख़ुद्दारीके दर्शनका बोलबाला था, शायरोंसे लेकर उनके कलाम सुनने और फैलानेवालों तक हर एक इसी दर्शनकी कसौटीपर अपने परायोंके गुण दोष परखता था। नईमउल्लाके सामने भी वही कसौटी आई; भुलनीके सहारे उसे अपने स्वाभिमानकी पहचान हुई।...दुलारीके नशेका ख़ुमार यों अब भी उसके मन पर छाया था मगर नया दर्शन अधिक ओजस्वी था और भुलनी प्रत्यक्ष आदर्श सी पड़ी थी। करुणा नईम को विकल बना रही थी। वह क्या करे कि भुलनीकी पीर मिट जाय। भुलनी मौत चाहती थी—सिर्फ़ मौत। विचारकी तेजीसे विवश, बिजली-सा नईमउल्ला भुलनीके सिरहाने आया। झुककर उससे बोला: "मरना चाहती हो?"

भुलनीके फीके चेहरे पर कान्ति छा गई, ठीक वैसी ही जैसी कि भटाटोप बादलों भरे आसमानमें सूरजकी चमक होती है। उसके होंठोंकी फीकी मुस्कानमें, आँखोंमें, सारे शरीरमें आनन्दकी दीप्ति दमक गई। अपना आँखोंका स्नेह अँधेरेमें भी उड़ेलते हुए, नईमकी अँधेरे भरी आकृतिकी ओर देख उसने कहा: "बड़ा पुन्न होई तुमका। पापी परान कसस निकसैं। मँहिका गंगा किनारे लै चलौ। मोर रकत गंगाजी मा बही, मोर जलम जलमके पाप धुलिहैं, तुम्हैं जलम जलमका पुन्न मिली।"

तेरह वर्षकी बालिका भुलनीकी मरणेच्छाप्रेरित उत्तेजना उसकी देहकी शक्तिसे प्रबल थी: एक बहावमें ढेर सारा बोल कर वह थक गई। नईम सुन कर गहरेमें डूब गया।

नईमके मौनने भुलनीके स्वरमें आतुरता भर दी। गहरी डुबकी मारे हुए नईमके होशको भुलनीकी आवाज़ सुनाई दी: "हम जियब न—

मरा चहिति है। हमका भगवानके घर पठै देव। अउरु कुछु न सोचौ, मोर भला सोचौ।"

"अच्छा।...खुदावन्दे करीम अगर मेरे हाथों यही चाहता है तो फिर—यही हो। मौतके लिए तड़पते रहनेसे मौतका आ जाना कहीं बेहतर है।" एक गहरी साँस लेकर नईम खड़ा हो गया और फिर उसे उठानेके लिए झुका, एकाएक बोला: "एक बार फिर कहता हूँ। तुम्हारे जैसी पाकदामन लड़कीका शौहर होकर मेरी भी आक़बत सुधर जाती।... खैर, मैं तुम्हारे पाक जिस्मको छूता हूँ, तुम्हें अपनी पीठ पर लादकर दरिया तक यों ले जाऊँगा जैसे रूह सवाबोंकी गठरी पीठ पर लादकर बहिश्त जाती है।"

भुलनी आँख बन्द किये पूर्ण समर्पणके भावमें तन्मय शान्त पड़ी थी। नईमके हाथोंमें फूल सी उठी और नईमकी गोदमें—मानो गंगाकी गोदमें चली गई। पेड़के नीचेकी धरती सूनी हो गई। इन्सानकी इन्सानके ऊपर जुल्मकी कहानी उस धरतीके साथ यादगार बनकर जुड़ गई—याद जो कि भुला ही दी जाती है।

१७

भोर होते ही टाँईंकी अम्मा खेतोंसे लौटीं। लौटते हुए उधरसे गुज़रीं। साथवालियाँ तनिक पीछे थीं। टाँईंकी अम्माने पेड़तलेकी धरतीको इधर कई रोज़के अभ्यस्त दृश्यसे खाली पाया—भुलनी भी नहीं, नईम भी नहीं। टाँईंकी अम्माके मनमें उपजा अनायासपन, शंका अपना समाधान खोजनेके लिए चटसे औरतवाले कोठेपर पहुँच गई; उसके भेजेमें समाया कि नईमउल्ला भुलनीको लेकर भाग गया। टाँईंकी अम्माने गुहारकर अपनी साथिनोंको बुलाया। औरतोंकी ज़बानोंपर बड़ा लंकादहन होने लगा।

आँच सारे गाँवको आनन फाननमें तपाने लगी। पेड़तले मजमा जुड़ गया। नीची मानी जानेवाली क़ौमोंके जवानोंके दिलोंमें उस जगहके सूनेपनने होलियाँ दहका दीं। कुछ बूढ़े बुज़ुर्ग औरतोंकी तरफ़से फैलाई गई शंकाकी धारामें बहते हुए नईमको चकमेबाज़, दग़ाबाज़ साबित कर रहे थे। अपनी कचोटको जोरसे उछाल रहे थे। मगर युवकोंका खयाल था कि यह काम बड़े साहबका है। उन्होंने दोनोंको मरवा डाला। जवानोंने अपने माता-पिताओंको ललकारा और कहा कि हम इसका बदला लेंगे—और किसीके घरसे बड़े साहबके यहाँ आज मुँह-दिखाई न भेजी जाय, अगर गाँवके खानज़ादे हमारे न्यावमें शरीक न होंगे तो हम सब पंच जो इनके हाथों आये दिन सताये जाते हैं मिलकर अकेले अपना न्याव लेंगे।

युवक बेहद उत्तेजित थे। जाति-समाजके बड़ोंका, बड़े-बड़ोंका तर्क रोब-दबाव उनपर कुछ भी असर नहीं डाल पाता था। कल युवकोंकी टोलीमें हरदेवाने दुःखभरी बेशर्मीके साथ जिस सत्यको प्रकट किया था वह भुलनीके अभावमें विद्रोहका स्वर बनकर फूट रहा था। जब बाप-दादोंके सामने चुप रहनेकी कड़कदार डाँट आई तो हरदेवने मुँहतोड़ उत्तर दिया कि हम क्या, हमारी सात पीढ़ीमें कलेजेपर हाथ धरकर कोई यह न कह पायेगा कि हमारा बाप-दादा कौन और कौन क़ौमका है। बात होते ही उजागर हो जाय तो बिरादरी ऐसे दंड देती है और जो बात गुपचुप रहकर धीरे-धीरे फैले, जिसे डर या पैसेसे थामा जा सके उसपर बिरादरी का कोई दण्ड नहीं होता। सबकी बिरादरियाँ, सारा गाँव, एक दूसरेके घरोंकी सुन्दर स्त्रियोंके ऊँचे वर्णके हिन्दू-मुसलमानोंसे अवैध सम्बन्धोंकी कहानी जानता है, उसपर खुले हँसी-मज़ाक होते हैं—तब किसीकी कोई मरजाद नहीं जाती।

हरदेवाकी उत्तेजनाने सारे जवानोंमें और अनेक बूढ़ोंमें भी उत्तेजना फैला दी थी।

और पेड़तले खड़ी स्त्रियोंका जनसमुदाय विवश प्रश्नचिह्न-सा लाजसे सिमटा खड़ा था कुछ बूढ़ियाँ जोशीली भी थीं। अपनी फटी आवाज़ोंसे घाँटे फाड़-फाड़कर, उँगलियाँ नचा और हाथ बढ़ा-बढ़ाकर अपने मर्दुओं को दोष देने लगीं कि जब उनमें हमें सम्हालकर रखनेका बूता नहीं तो हम क्यों न दूसरोंके साथ जाँय। औरत और गाय बराबर होती है जो हाँक ले जाय।

कुछ बड़े बूढ़ोंका कुचला स्वाभिमान हिंसात्मकरूपसे अपनी स्त्रियोंपर झपट पड़ा। युवक झपटकर बीचमें आये। एक अजब कौवारोर मच गया। हर कोई बोल रहा था, कोई किसीकी नहीं सुन रहा था। सब ज़ोर-ज़ोरसे बोल रहे थे। क्या बोल रहे थे, यह कुछ भी स्पष्ट नहीं था। स्पष्ट केवल इतना ही था कि सब विद्रोह बोल रहे थे।

परम्पराकी शृंखलासे हाथ पैर बँधा अन्धा विद्रोह अपना अस्तित्व सिद्ध कर रहा था।

उस जगह जहाँ कि कुछ घड़ी पहले तक एक बहुत कम बोलनेवाला सुकुमार अन्याय पीड़ित घायल प्राण पंछी पड़ा रहता था, इस समय पीड़ित धरतीके लालोंका स्वर गूँज रहा था।

शोरके घटाटोपमें किसीको सूझ आई, गाँवके चौधरीसे, ज़मींदारसे, ब्रह्मचारीजीसे बात तो कर लें। बात सूझकी थी और कौवारोर फैले देर भी हो चुकी थी इसलिए इस बातका समर्थन तेज़ीसे होने लगा, समर्थनका शोर फैला। शोर जब एक तानमें बँध जाता है तो दूसरे शोरको भी उसी तरह नई तान लेकर आगे बढ़ना पड़ता है। शोर शोरको काटता है जैसे हीरोंको हीरा। दूसरे हंगामेने अन्धे विद्रोहको दृष्टि दी और मजमा 'हाँ हाँ जमींदारके पास चलो, ब्रह्मचारी, चौधरीके पास चलो' कहता हुआ बढ़ चला।

× × ×

बड़े साहबका कारिन्दा स्मिथ ज़मीदार संजरख़ाँके घर पर बैठा उनसे और चौधरीसे बातें कर रहा था। वह सफ़ाई देने आया था, कह रहा था : "साहब बाहूर बोलटा, आप हमारा हक मारनेका वास्टे उस लरकीको, अउर मैंरा बावर्चीको गायब करा डिया। हाम इसको कूच समजने नेई माँगटा। साहब बाहूर अऊर मेम साहबको मू-डेकाई डेनेका वास्टे गाँवका रेआयाको आना माँगटा।"

हक़की बात पर ज़मीदारका पठान खून जोश खा गया। वो बोले : "साहब, हमारे मुल्कमें राजाके बेटोंको मुँह-दिखाई दी जाती है। आपके मालिक सौदागर हैं। मेरी रिआया अगर खुशीसे बड़े साहब बहादुरकी नज़र नियाज़ पेश करती है तो मुझे कोई एतराज़ न होगा, मगर मैं अपनी रिआया पर किसी तरहका ज़ोरोजब्र नहीं बर्दाश्त करूँगा।"

स्मिथ गरमा गया, बोला: "हाम आपको एक बाट बोलना माँगटा। हमारा कोठीसे आप लोगका बौट फ़ायडा हाय। हाम बाजूका गाँवसे बन्डो-बस्ट करेगा। हाम हुवाँका टैकूर रैमगूलाम सिंगाको बरा आडमी बनायेगा। आप राजा हाय टो हमारा मार्जीसे हाय। कम्पनी बाहूर आपका बैडशाका सरपरस्ट हाय। याड रक्खे खानज़ाडा साहब, हाम इंगलिश मैन हाय, हमारा कौम डोष्ट लोगका मडड करटा हाय, फ़ायडा करता हाय अऊर हमारा डुश्मन लोगको हाम टबा करने माँगटा, एकडम नेस्टब्ड करने माँगटा। हाम आपको डो घरएटाका मोलट डेटा हाय, आप सोंचे अऊर गऊर करें। हाम फिर आने माँगटा।"

स्मिथ उठ खड़ा हुआ। चौधरी मज्भू ख़ाँ बोलेः "ग़ौर किया जा चुका है। हम बहुत ग़म खा चुके फ़िरंगी साहब। आपने हमारी रिआया पर ज़ुल्म किये, हमारे गाँवके दो बच्चोंको गायब करवा दिया। कसम ख़ुदा की जो नवाब साहबका दबाव न होता तो आप और आपकी कौमका हर आदमी अब तक इस गाँवके चील गिद्धोंके पेटोंमें दफ़न हो चुका होता।

पड़ोसियोंसे हमारी लागडाँट करानेकी धमकी देते हैं। हम धमकियाँ देने वालोंका सर काट लेते हैं, यह याद रखिये।"

स्मिथ तमतमाता हुआ बाहर निकल गया। ज़मीदारकी ड्योढ़ी पर कोठीके दस सिपाही स्मिथ साहबका घोड़ा लिए खड़े थे। स्मिथ घोड़े पर सवार हुआ। घोड़ा और सिपाही धीरे धीरे दौड़ने लगे।

सघन अमराईके नीचेसे स्मिथका जुलूस निकल रहा था। अचानक एक डालसे रस्सीका फन्दा स्मिथके गलेमें पड़ा और इतनी तेज़ीसे खिंचा कि स्मिथके हाथ भी अपनी रक्षाके लिए पहुँच न पाये। स्मिथकी देह रस्सीके सहारे घोड़ेकी पीठ छोड़ ऊपर चढ़ गई, रस्सीका दूसरा सिरा अपने मज़बूत हाथोंसे पकड़े भुलनीका मँगेतर नीचे आ रहा था। पीछे दौड़ते आते सिपाही गुहारते हुए आगे दौड़े। मातादीन रस्सी पकड़े हुए नीचे आने वाली आपदासे बचनेके लिए तेज़ीसे पेंगे लेने लगा और पैर पर उचटता सा लट्ठ पड़ते-न-पड़ते तक वह एक डाल पर पहुँच गया। उसकी फाँसीमें फँसा स्मिथका मोटा शरीर उसके हिलने डुलनेके साथ ही साथ ऊपर नीचे झोंके खाता हुआ दम तोड़ रहा था।

दो सिपाही दो ओरसे पेड़ पर चढ़े। मातादीन रस्सी अपनी कमरसे लपेटता हुआ, एक ऊँची डाल पर उसका दूस रा सिरा बाँधनेका उपाय करते हुए, तेज़ीसे अपनी ओर बढ़े आते आदमियोंको देखने लगा। स्मिथ साहबकी फाँसी बँध गई। मातादीनने आते हुए हुजूमका शोर सुन अपने बचावके लिए हाँक मारी जिसे सुन कर भीड़का हुल्लड़ जोशीला हो गया। मातादीन पेड़ पर चढ़े अपने शत्रुओंसे कतरानेका प्रयत्न करने लगा। पेड़ के नीचे भी शत्रु उसे घेरे हुए खड़े थे। एक सिपाहीका भाला मातादीनकी पीठमें लगा और वह पेड़से धरती पर गिर पड़ा। तीन चार भाले एक साथ और झुके। चीखें निकली; पेड़ पर चढ़े सिपाही भी धमाधम कूद पड़े और भीड़के निकट आते हुए शोरसे दहल कर दसों सिपाही मातादीन के खूनसे सने हुए भाले लिये भागे। साहबके हत्यारेको पकड़नेके ज़ोम

में साहबकी चिन्ता तो छूट ही गई थी फिर अब अपने प्राणोंके मोहके आगे भला क्या जागती।

भीड़ने पास आकर मातादीनको खूनसे सना सिसकता हुआ पाया। भीड़ वहीं थम गई। शोर हुँकोरियाँ भरने लगा, उस पर हैवानियत छाई। भुलनीके मँगेतरकी हत्या भुलनी और नईमके ग़ायब होनेकी कथामें मोहर सी लगा गई। मातादीनकी नानी और माँ उस भीड़में ही थीं। उनका क्रन्दन हिंसाकी लपटोंमें घी बनकर पड़ने लगा।

तभी किसीका ध्यान पेड़ पर लटके हुए मोटे स्मिथकी लाश पर गया; फिर तो सारी भीड़ उसे देखने लगी। भुलनीके अत्याचारीका अन्त लोगों को आँखों सुख कलेजेको ठंडक पहुँचा रहा था। आततायीके प्रति समाजकी घृणा देखते बनती थी। और मातादीनकी लाश अन्य गोरे साहबोंकी हत्याके मनसूबे बाँधनेके लिए न्यायसिद्ध बहाना बन रही थी। युवक तो आपेसे छूटे-छूटे पड़ते थे। दौड़ मच गई कि घरोंसे हरबे हथियार लेकर कोठी वालों पर टूट पड़ा जाय। चौधरी और कई खानज़ादे भी आ गये थे। चौधरीने कालेकी लाशके साथ गोरेकी लाश देख दूरन्देशीसे काम लिया। ज़मींदारको ख़बर भिजवाई, लोगोंसे पूछताछ की, बयान लिये और भीड़को तितर-बितर हो जानेके लिए डाँटा।

ज़मीदार आये, आपसमें सलाह मशविरा हुआ, गोड़ैतोंको बुलवा स्मिथकी लाश उतरवाई गई। एक पलँग पर उसे लिटा कर ढँक दिया गया और बड़े साहबको ख़त लिखकर संदेशा भेजा गया कि लाश बाइज्ज़त बाहिफ़ाज़त रक्खी है। आप अपने इन्तज़ाममें ले जाना चाहें तो आदमी भेजें वरना हमारे आदमी यह ख़िदमत कर देंगे। अपनी जनताको निर्दोष सिद्ध करनेके लिए स्मिथके खूनकी सफ़ाई देते हुए ख़तमें लिखा गया, चूँकि मातादीनकी मँगेतरको स्मिथ साहबने बेइज्ज़त किया था, इसलिए यह बदला ज़ाती तौर पर लिया गया, किसी दूसरे गाँव वालेकी साज़िश इसमें न थी। बेचारे मातादीनको उसकी सज़ा भी मिल गई, आपके

सिपाहियोंने उसकी जान ले ली। हमें अफ़सोस है कि दोनों तरफ़से बग़ैर सोचे समझे जो काम किये गये उसका अन्जाम मेरी रिआया और आपको साथ साथ भोगना पड़ा। हम सबको इस अफ़सोसनाक हादसेसे नसीहत लेनी चाहिए।

× × ×

दिग्विजय ब्रह्मचारी अपनी कुटीके द्वार पर बैठे किसी गहरी चिन्तामें डूबे हुए थे। इतनेमें ही उत्तेजित युवकोंकी एक टोली वहाँ आई। उन्होंने स्मिथ और मातादीनकी हत्याका विवरण सुनकर विचार करते हुए कहा: "सावधान बेटा! आज मतइया अपने गाँवमें जमराजको न्योत गया है। सब जने तैयार होयि जाव बेटा, गोरा जरूर हमला करैगा। औरतोंते कहौ जमींदारके यहाँ जायके सरन लें औ तुमलोग चारो अलँग बात साधिके बैठि जाव। आगे और जो कुछ विचार आवैगा सो कहेंगे। याद रक्खौ औरतैं एक भी पीछे न छूटने पावैं।"

कुल्सुम सख्तीसे अपना चेहरा कसे हुए न जाने कितने दूरके ख़याल से टकटकी बाँधे कुटियाके दरवाज़े खड़ी थी।

ब्रह्मचारी उठे, घोड़े पर जीन कसी और कुटीके अन्दर जाकर कोनेमें टँगी एक गठरी उतारी। आटा दाल आदि बचा हुआ सामान भी एक कपड़ेमें बाँध उसी गठरीमें धरा। कुल्सुम देखती रही, फिर पूछ बैठी: "हम यह जगह छोड़ रहे हैं कक्कू?"

"हाँ बेटी।"

"अब कहाँ जायेंगे कक्कू?"

ब्रह्मचारीने निसाँस ढाली और कहा "आज भर तो तुम मज्झू खाँके यहाँ रहोगी और फिर जहाँ अन्नजल ले जाय बेटी।"

"और कक्कू, भुलनी?—और नईम भैया?"

"वे इसी गाँवमें मिले थे, यहीं छूट भी गये?...जैसी प्रभूकी मरजी। चलो चलें।"

कुल्सुमको लिये ब्रह्मचारी घोड़ेके पास आये, एक बार कुटियाकी ओर देखा, शरण देने वाली भूमिको प्रणाम किया, इतनेमें कुल्सुम बोल उठी : "अब तो मेरा असली घर इस चम्पककी पीठपर है कक्कू।"

ब्रह्मचारी सुनकर मुसकराये, फिर स्नेहसे अपने घोड़े चम्पककी गर्दन थपथपा कर बोले: "हाँ बेटी वीरोंका घर सदा घोड़ेकी पीठ पर होता है। तू भी बड़े वीरकी बेटी है। और आप भी बड़ी वीर बनेगी।" कहते हुए उन्होंने कुल्सुमको चम्पककी पीठ पर बिठला दिया और आप भी रकाबमें पाँव डाला।

× × ×

जब तक स्मिथकी लाश गोरे उठा न ले गये तक तक अमन चैन रहा। उसकी अन्तिम क्रियाके साथ ही साथ साहबने लड़ाईका आदि कार्य भी सम्पन्न किया। शाही नाज़िमको पत्र भेजा गया कि गाँवके ज़मींदार अपनी रिआयाके साथ साज़िश कर हमारी कोठी लूटना चाहते हैं। हमारे एक ज़िम्मेदार कारकुनकी उन्होंने धोखा देकर जान भी ले ली है। हमारा जान माल खतरेमें है। अगर ज़मींदारने हम पर हमला किया तो उसकी जवाबदेही आपकी सरकारको करनी पड़ेगी और हम उस वक्त अपने बचाव में लड़ेंगे।

नवाब संजरखाँके पास संदेशा गया कि सावधान रहें, पड़ोसी ठाकुर रामगुलाम सिंह और राजा मौलाबख्शकी सेनाओंके साथ हमारे सैनिक आपसे स्मिथकी मौतका बदला लेने आरहे हैं। आज राततक आपकी गढ़ीकी ईंटसे ईंट बजा दी जायगी।

संजरखाँका सारा जोश उबाल हवा हो गया। ठाकुर रामगुलाम और मौलाबख्श दोनोंही से उनकी खान्दानी अदावत थी। निलहे साहबोंकी कोठीकी वजहसे ही उनके प्रबल शत्रु निबल पड़ गये थे। संज़रखाँ नाज़िम और प्रभावशाली शाही अमलोंसे सदा मेलमिलाप रखकर चलनेवाले व्यक्ति थे; उनकी जागीर दिनोंदिन बढ़ी थी। उनके विरुद्ध कभी किसी

प्रकारकी शिकायत भी नहीं हुई थी। केवल कोठीके मालिक सैएड साहब और उनके मुनीम स्मिथके बदतमीज़ रूखे व्यवहारसे संजरखाँकी शान शौकतको बुरा लग जाता था, इसीसे कभी-कभी मुँह फुलावन हो जाया करता था जिससे कि नाज़िमको बीच-बचाव करवा देना पड़ता था। संजरखाँ चूँकि ग़रज़मन्द थे इसलिए रूठकर फिर मान भी जाते थे। इस बार बात ज़रा बढ़ गई थी। नईमउल्ला अगर पठान न होता तो उसके ग़ायब होने पर गाँवके पठान खानज़ादोंको कुछ बुरा न लगता। नईम उनके कबीले-का, गाँवका आदमी न होकर भी उनकी क़ौमका अवश्य था इसलिए उसके अचानक ग़ायब होजानेसे ज़मीदार और दूसरे पठानोंकी नाराज़गी बढ़ी। इसके अलावा कोठीके साहबने अपने पोतेको मुँह दिखाई गाँववालोंसे तलब की थी। यह हक़की बात थी, ज़मीदार बहुत बुरा मान गये थे। ग़रीब प्रजाके जोशसे उनके क्रोधको अनायास बढ़ावा भी मिल गया था। पर इन सबके बावजूद पड़ोसी शत्रुओंकी सहायतासे कोठीवालोंके हमलेका धमकी भरा संदेश पाकर संजरखाँके पाँव टिक न सके। उन्होंने फ़ौरन जॉर्ज सैएड साहबको खत भेजकर उन्हें यह विश्वास दिलाया कि स्मिथ साहबकी हत्यामें उनका या किसी खानज़ादेका तनिक भी हाथ नहीं है, वे किसी तरह भी अपनी प्रजाके विद्रोहमें सहायक नहीं हैं; और यदि इस पर भी उन पर किसी तरहका आक्रमण हुआ तो वे शाही दरबारमें फ़रियाद करेंगे। हाँ, साहब अगर रिआयाके उन लोगोंसे, जिन्होंने यह हंगामा बरपा किया है, बदला लेना चाहें, बदअमनी फैलानेकी सज़ा देना चाहें तो ज़मींदारकी ओरसे किसी प्रकारकी बाधा नहीं होगी; परन्तु वे किसी प्रकारकी सहायता भी नहीं करेंगे।

इस तरह संजरखाँ अपने और अपनी अकड़के बचावके लिए किले-बन्दी करनेमें व्यस्त हो गये। उन्होंने अपने सजातीयोंको बुलाकर नई परिस्थिति समझाई। चौधरी मज्भूखाँ राज़ी न हुए, उन्होंने कहा कि अपनी रिआयाको दूसरेके हाथों तबाह करवानेमें खुद अपनी ही तबाही है।

और भी दो चार लोग चौधरीकी बातका समर्थन करने लगे। नवाब संजरख़ाँ बुरा मान गये। चौधरी मज्भूख़ाँ अपनी बात पर डटे रहे और उठकर चले आये।

दिग्विजय ब्रह्मचारी चौधरीकी चौपाल पर बैठे उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

नई बातें सुनकर ब्रह्मचारीका चेहरा उतर गया, दो क्षण मौन रहे फिर बोले : "मैंने तो सोचा था कि कुल्सुमको तुम्हारे घर छोड़कर एक बार गोरोंकी हेकड़ी भुला दूँगा...मुल कोई बात नहीं, भगवान् परीक्षा ले रहे हैं। अब एकके साथ इतनी जनी और हैं।"

"पर आप उनकी हिफ़ाज़त कर ही कैसे सकेंगे? परजा गाँव छोड़कर जा नहीं सकती—उसे जाने नहीं दिया जायगा। उसे क़ाबूके करनेमें लिए सबक़ भी दिया जायगा। आप अकेले कैसे बचा सकेंगे? और हम दो चार और भी अगर मददको आ जाँय तब भी क्या उनकी हिफ़ाज़त हो सकेगी?"

दिग्विजय ब्रह्मचारी अपने अन्दर भयंकर ऊहापोहमें फँस गये। जिन निरीह व्यक्तियोंको उन्होंने अपनी सहायता प्रदान करनेका वचन दिया था उनको बेसहारा छोड़ना उन्हें उचित नहीं लगता था। इसके साथ ही साथ उनका मन यह बार-बार बोल रहा था कि कुल्सुमकी सुरक्षाके हित उन्हें तत्काल यह स्थान छोड़ देना चाहिए। ब्रह्मचारी अपने मानसिक अनिश्चयके कारण ज्वारके समुद्रसे उफन-उफनकर कभी डटने और कभी पीछे हटनेका निर्णय करते।

इसी बीचमें उन्होंने देखा कि उनके आदेशानुसार निम्न जातिकी अनेक स्त्रियों-बच्चों और बूढ़ोंकी टोली अपनी गृहस्थीकी गठरियाँ लादे ज़मींदार संजरख़ाँकी गढ़ीकी ओर घबराहट और चिन्ताजनित अपने अनिवार्य शोरके साथ जा रहे थे। उन्हें देखकर ब्रह्मचारीने चौधरीसे

कहा : "ये जंगलकी आग जा रही है चौधरी, समै रहते इसे बुझाय सकौ तौ बुझा लेओ नहीं तो फिर सब कुछ स्वाहा है।"

चौधरी गहरे सोचमें बैठे रहे, ब्रह्मचारीने उनका हाथ झिंझोड़कर कहा : "चौधरी सोच क्या रहे हो, इन्हें सरन दिलाओ नहीं तो मैं सबको लैके तुम्हारा गाँव छोड़ता हूँ।"

एक ठंडी साँस छोड़कर मज्झूखाँ उठते हुए बोले : "एक बार और कोशिश करता हूँ ठाकुर साहब, पर न जाने क्यों ऐसा लगता है कि इस गाँवके अच्छे दिन लद गये। ये सचमुच जंगलकी आग है।"

मज्झूखाँ ज़मींदारसे मिलने गये। ज़मींदार उस समय अपनी सारी अकड़ भूलकर नीलकोठीके बड़े साहबसे मिलने गये थे। उनके लौट आने तक चौधरी प्रतीक्षा करते रहे; गढ़ीके फाटकपर तबतक ग़रीब प्रजाके परिवारोंकी भीड़ इकट्ठा हो गई।

संजरखाँ जब सैंड साहबसे मिलकर लौटे तो बहुत उदास थे। एक अँगरेज़की हत्याने अँगरेज़ोंको बुरी तरह उत्तेजित कर दिया था। सैंड साहब बदला लेनेपर तुले हुए थे। उन्होंने जमींदारसे हरजानेका एक लाख रुपया माँगा। संजरखाँके फ़रिश्ते कूचकर गये। वे जितनी ही ख़ुशामद करते, बड़े साहब उतना ही अकड़ते थे। उन्होंने जमींदारको यह चेतावनी भी दे दी थी कि यदि वे उनकी माँग पूरी नहीं करेंगे तो उन्हें अपनी ज़मींदारी तकसे हाथ धोना पड़ेगा, क्योंकि वे इस मामलेकी रिपोर्ट सीधे कलकत्तेके गवर्नरजनरलको करेंगे और उसके परिणामस्वरूप शाहे अवध संजरखाँके साथ जो बरताव करेगी उसकी कल्पना वे सहज ही में कर सकते हैं।

संजर खाँ जब अपनी गढ़ी पर लौट कर आये तो उनका मन चिंताओं से उबल रहा था। गढ़ीके बाहर भीड़ देखते ही धोबीसे बस न चलने पर गधेके कान उमेठने वाली कहावतके अनुसार ही उन्होंने दूरसे देखते ही

कड़क-हुकुम लगाया : "इन सबको डंडे मार-मार कर भगा दो। इनके घरोंमें आग लगा दो। इन कमीनोंकी यही सज़ा है।"

शरण पानेके लिए गई हुई दुर्बल स्त्रियों, बच्चों और बूढ़ोंकी भीड़ अचानक डंडों और गालियोंसे खदेड़ी जाने लगी। ज़मींदारके लठैत भागती भीड़को रपटा रहे थे। रास्ते भरमें फटी गठरियोंके जुन्हरी-बेझरके दाने बिखर रहे थे, टूटी हँड़ियाँ, सूप, फटे चिथड़े बिखरते चले जारहे थे, औरतें बूढ़े बच्चे अपनी अपनी जान बचानेके लिए एक दूसरेको भूल कर धक्का-मुक्की चीखगुहार करते बेतहाशा भागनेकी होड़ ले रहे थे। माताओं की गोदियोंसे बच्चे छूट-छूट पड़ते थे, लोग-बाग एक दूसरेकी ठोकरोंसे लड़खड़ा कर गिर रहे थे। डंडे उठाये सिपाहियोंके प्रति मुड़-मुड़ कर हाथ जोड़ना हा-हा खाना और फिर आगे बढ़ना एक ऐसा क्रम था जिसमें कोई किसीको देख नहीं पाता था। माताओंकी ममता अपने उन बच्चोंके लिए बिलख रही थी जो कहीं छूट गये थे; उन्हें ढूँढ़ें अपनेको खोजें चिल्लायें कि हा-हा खायें, अपनी जान बचायें, कहाँ जाँय क्या करें— अबल-अबलाओंकी भीड़ मुक्त शोकार्तनाद कर भागती जा रही थी। बूढ़े थके शरीर जल्द ही लथपथ गिर पड़ते परन्तु पैर पर डंडा पड़ते ही फिर उठ कर भागते, लोगोंके दम फूल रहे थे। इस असहाय भीड़को मारनेसे अधिक खदेड़ा जा रहा था, आतंकसे उसके होश फ़ना किये जारहे थे।

कुहराम सुन कर भीड़ दौड़ पड़ी।

मझ्झू चौधरी गढ़ीमें ही फँसे रह गये थे। कुहराम सुनकर ब्रह्मचारी उनकी प्रतीक्षामें बैठ न सके; पर चिन्ता थी कुल्सुमकी। वे फिर अनिश्चित से हुए व्यग्र हुए, नई परिस्थितिमें वे कुल्सुमको चौधरीके घर भी नहीं छोड़ना चाहते थे। सहसा उन्होंने मुड़ कर कुल्सुमसे कहा : "कुल्सुमिया, तू घड़ी-दो-घड़ी चम्पकके पेटसे चिपकी बँधी रह जायगी? रोयेगी तो नहीं?"

कुल्सुम एकाएक इस प्रश्नको सुनकर चौंक गई, वह अचानक कुछ सोच या बोल न सकी। ब्रह्मचारी बोले : "डर लगेगा बिटिया?"

"नहीं नहीं कक्कू, अब डर तो मुझे लगता ही नहीं। मगर मुझे बाँधते क्यों हैं। अपने साथ क्यों नहीं बैठाते?"

"नहीं, लड़ाईका मौका है। तो चल आ सुभस्य सीघ्रम्।"

ब्रह्मचारीने चौधरीके घरसे दो मज़बूत रस्सियाँ लीं, एक मज़बूतसे खारेमें उन्हें फँसाया, पुआल और चादरके पर्त्त बिछा, लड़कीको पेटके बल उस पर लिटा रस्सियोंको घोड़ेकी पीठ पर कस कर बाँध दिया। ऊपर से चम्पक पर खारवेकी झूल पड़ गई। बाहरसे कुल्सुम दिखलाई नहीं पड़ती थी।

ब्रह्मचारीको इस प्रकार युद्धके लिए प्रस्तुत होते देखकर कई पठान युवक और प्रौढ़-जनोंका खून जोश खा गया। गाँव वाले कुल्सुमको नईमउल्लाकी बहनके रूपमें जानते थे; नईमउल्ला इस समय ग़ायब है, यह क़ौमी कचोट उनके मनमें फिरसे उभर आई। एक हिन्दूका इस प्रकार अपनी क़ौमकी बच्चीकी रक्षा करना, अपनी प्रजाको वचन देकर उसके लिए अपना क्षात्र कर्तव्य निभानेकी तत्परता कई पठानोंको भी धर्मयुद्धके नशेमें बहा ले गई।

और इन लोगोंका पहुँच जाना आगमें घीका काम कर गया। अपने स्वामियोंका सहारा पाकर प्रजाजन उद्दण्ड हो उठे। थोड़ी ही देरमें ज़मींदार के लठैत भाग गये। जनबल विजय मदमें बहकने लगा। ब्रह्मचारीने उन्हें तनिक भी समय न खोते हुए भाग चलनेको कहा; परन्तु शत्रु भयसे मुक्त होनेके बाद तुरन्त ऐसा होना मुश्किल। हर व्यक्ति अपने परिवारको समेट कर देखनेके लिए बावला हो उठा। जिसका जो नहीं मिल रहा उसके नाम पर स्त्रियोंका फुक्का फाड़ रुदन और पुरुषोंकी उत्तेजित चीखगुहारमें, बच्चोंके सामूहिक रुदन रवमें ब्रह्मचारी अथवा पठानोंकी बात उनके कानोंमें नहीं पहुँच पा रही थी। व्यग्र होकर ब्रह्मचारीके आदेशसे नेताओंने अपनी

जनताको खदेड़ा लेकिन इस खदेड़नेमें केवल डाँट फटकार और रौब-दाब से ही काम लिया जा रहा था। गुमशुदा स्वजनों वाले जिस प्रकार अपने स्वामियोंके सामने गिड़गिड़ा कर, हाथ जोड़ और पाँवों पड़-पड़कर बिलख रहे थे उसे देखकर कोई भी सहृदय प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता था, सारे मार्गमें घायलोंकी तलाश हुई, एक बच्चेके प्राण छूट गये थे।

घायलोंको कंधों पर लादकर चलते हुए, परिवारोंको बीचमें बटोरकर धनुषबाण, लट्ठ, गड़ासों और ब्रह्मचारी तथा पठानोंकी तलवारों और टोपीदार बन्दूकोंसे सुरक्षित कर यह काफ़िला गाँवकी सीमा पारकर कुछ ही आगे पहुँच पाया था कि सामने संजरखाँ और नीलकी कोठीके धनुर्धारी, बन्दूकधारी, कुछ सवार और लट्ठधारी तैयार खड़े मिले। तीरों और बन्दूकोंकी बाढ़ें दगने लगीं। प्रजादलकी अबलाओं और बच्चोंमें फिर कुहराम उठा। लड़ाकू लोग जोशसे चिल्लाते-दहाड़ते हुए घेरा छोड़कर शत्रुओंसे जूझने आगे निकल गये, अरक्षित स्त्रियों-बच्चोंको शत्रु सेनाकी एक छोटी-सी टुकड़ी बड़ी चतुराईसे गाँवकी ओर खदेड़ ले गई। पुरुष अपने परिवारोंसे काट दिये गये। बाकी सारी शत्रु सेना प्रजादलको गाँवसे बाहर खदेड़ने लगी। परिवारोंसे अकस्मात् बिछुड़ जानेका धक्का लोग न सम्हाल पाये और क्षणभरके लिए किंकर्तव्यविमूढ़ रह गये। शत्रुदल मानो इस परिस्थितिको अपनी नक़्शेबन्दीमें शामिल करके आया था और उस हक्के-बक्केपनका पूरा लाभ उठाकर उसने भयानक आक्रमण किया। ब्रह्मचारी आदिके साहस और शौर्यसे उत्साह पाकर भी, क़दम-क़दम पर भरसक मोर्चा देते हुए भी प्रजादलके पाँव जम न सके; उन्हें भागना पड़ा।

ये लोग अपनी धरतीसे उखड़ चुके थे। डाकू बन जानेके अतिरिक्त इनके सामने और कोई चारा ही नहीं रह गया। यह सर्वहारा मानव-समुदाय घृणासे कठोर और बदला लेनेकी भावनासे उद्दण्ड हो गया था।

फिर ब्रह्मचारी कैसे अछूते बच सकते थे।

१८

अपने परिवारोंसे बिछुड़, इस प्रकार अनिश्चित जीवन बितानेकी परिस्थितिमें पड़ कर भागे हुए गिरोहका प्रत्येक व्यक्ति चिड़चिड़ा, कठोर और उद्दाम हो उठा था। खानेकी समस्या थी, कहीं बसेरेकी समस्या थी, बदला लेनेकी उत्कट इच्छा थी—धरतीसे उखड़ा प्रत्येक व्यक्ति बावला बेक़ाबू हो रहा था।

ब्रह्मचारी इस परिस्थितिमें पड़कर अपने आपको विवश पा रहे थे। उनका मन अब छात्रवृत्तिसे कुछ अधिक साधुवृत्तिका पोषक हो चुका था। लूट-पाट, डकैती, युद्ध इन सबसे उनको क्रमशः विराग हो चला था, यह रजोगुण उनकी ब्रह्मचर्यसाधनाके लिए महँगा पड़ता था। अंगरेज़ोंको छोड़कर वे अब किसी औरसे दुश्मनी नहीं मोल लेना चाहते थे; परन्तु यहाँ तो नित्यके भोजनकी समस्या थी। पठानोंने तय किया कि पड़ोस गाँवके ज़मींदार-साहूकारको लूट कर सबसे पहले इतना मालपानी तो जुटा ही लिया जाय जितना गिरोहको संतुष्ट रखनेके लिए यथेष्ट हो।

ब्रह्मचारी बोले : "तुम लूट-पाट करोगे तो अनेक निर्बल-निर्धनोंकी जानें भी जायेंगी।"

नत्थूखाँ बोले : "यह ज़रूरी नहीं, मगर जो सामने ही आ जायगा उसे हम ज़रूर खुदाको सौंप कर अपना फ़र्ज़ अदा करेंगे। और ये कोई नई बात नहीं, अज़ाब नहीं। मुसीबतके वक्त बहादुर जो करते आये हैं वही हम भी करेंगे।"

"हमारा दाँव फिरसे घर लौटनेका है, निलहे साहबसे बदला लेनेका है।"

"वो अब भी है ठाकुर साहब, लेकिन तब तक पेट भी भरना है, ताक़त भी जुटानी है। इस जंगलमें कबतक छिपे रहेंगे? और ठाकुर

साहब, जो ये सूफ़ियाना फ़क़ीराना धरम ही निभाना था तो तीर-तलवार क्यों बाँधे, हमलोगोंको उकसाया क्यों ?"

ब्रह्मचारी ठाकुर दिग्विजयसिंह चौहान निरुत्तर थे। 'क्यों ?'— प्रश्न अनेक रूपोंमें उनके सामने था—नईमउल्लासे क्यों नाता जोड़ा, भुलनीकी चिन्तामें क्यों पड़े, दईमारी प्रजाके फेरमें क्यों पड़े; घर राजपाट स्त्री सुख क्यों छोड़ा—'क्यों' का अन्त नहीं था। और इन सबका उत्तर केवल एक था—कर्तव्यकी भावनासे प्रेरित होकर किया। यह कर्तव्यकी भावना ही इस समय उनके साथियोंकी मनोभावना, कर्तव्य भावनाके आड़े आ रही थी। सदियोंका नियम था, पराजित क्षत्रिय अपने बचे खुचे गिरोहको लेकर जंगलोंमें छिप जाता, डाके डालकर धन और जनशक्ति बढ़ाता, फिरसे या नये सिरेसे राज्य पाता और तब राजनैतिक सम्बन्धों द्वारा उच्च स्थितिमें प्रतिष्ठित हो जाता। चाहे हिन्दू हो या मुसलमान, क्षात्र सामंत धर्मी यही करते थे। फिर ब्रह्मचारीको यह बुरा क्यों लगता है ? प्रतिष्ठित राजा होकर भी मनुष्य अपना राजपाट बढ़ाता है, अपनेसे कमजोरोंको दबाता है, अपनेसे अधिक शक्तिशालियोंसे आवश्यकतानुसार दोस्ती करता है, षडयन्त्र रचकर उन्हें कमज़ोर बनाता है, इस प्रकार सामन्ती क्षात्र-जीवनमें मनुष्य हर स्तरपर लुटेरा बना रहता है। भगवान् रामचन्द्र और धर्मराज युधिष्ठिरने भी राजसूय यज्ञ रचाये थे; जो उन्हें स्वेच्छासे धन सम्पत्ति दास-दासियाँ और कर देते थे वे न लूटे जाते जो अनिच्छा प्रकट करते वे पराजित किये जाते लूटे जाते थे। दिग्विजय ब्रह्मचारी अपने अन्तरमें इस तर्कका दर्शन कर हतबुद्धि, हतप्रभसे हो जाते थे। भरी जवानीमें उनका जीवन कहाँसे कहाँ वह आया था, यह सोच-सोचकर वे इन दिनों हैरान हो रहे थे। कभी उन्हें भी भोग विलाससे अरुचि नहीं थी, उनके लिए भी दो-चार बार सुन्दरियाँ उड़ा कर लाई गई थीं। उनके पिता, पितामह आदि भी कमज़ोर ज़मीदारोंकी जमा ज़मीन लूटते थे। आज भी सब लूटते हैं; अवधका बादशाह उसका

हर अमला, नाज़िम ताल्लुक़ेदार राजा नवाब कौन लुटेरा नहीं है ? सबसे बड़े लुटेरे ये अंगरेज़ आये हैं। लूट दुनियाका धरम है। ब्रह्मचारीने चूँकि एक नियम साधनेका व्रत लेकर दुनियादारीका धरम बहुत अंश तक छोड़ दिया है इसलिए उनके मनमें दुविधा थी; साथ ही उन्हें कुल्सुमकी रक्षा भी करनी थी। उन्होंने इस ऊहापोहको समाप्त करनेका निश्चय किया, थोड़ी देर बाद उठ कर नत्थूखाँके पास गये, बोले : "मैं उस समै तुम्हारी बातका जवाब अपने मनमें नहीं खोज पाया था नत्थू खाँ भैया। अब विचार कर लिया है। मैं दो जगह बचनबद्ध हूँ, एक तो इस कन्या की रक्षाके लिए और दूसरे तुमलोगोंको घर पहुँचानेके लिए। मैं तुम्हारा साथ दूँगा पर नित्यकी लूट-पाटमें नहीं जाऊँगा, तुम्हारे लिए शक्तिशाली राजे रजवाड़ोंसे मेल बढ़ाऊँगा, तुम्हें तुम्हारे गाँवमें शानसे स्थापित कर दूँगा पर तुम्हारा अन्न नहीं खाऊँगा।"

दिग्विजय ब्रह्मचारी उच्च कुलीन क्षत्रिय थे। उन दिनों अवधमें बैस ठाकुरों, रैकवार, बिसेन, जनवार, गौड़, अहिबन आदि क्षत्रिय राजपूतोंका प्रभुत्व मुसलमानोंके समान ही था। इनमें अनेक ऐसे थे जिन्होंने नवाबी शासनको कभी एक कौड़ी भी अदा नहीं की थी। अनेक राजे शाही दरबारमें अपना प्रभुत्व भी रखते थे, वे छोटे-मोटे उपद्रवी सामन्तोंकी संकट समय आड़ लेकर उन सबका सहज नेतृत्व प्राप्त कर लेते थे। ऐसे सफल सम्पन्न व्यवस्थित दुनियादारी बुद्धिके सामन्त साहूकारी भी चला लेते थे, जमानतके अवसरपर सरकारमें एक मुश्त रक़म तोड़ और समझौते के बाद अदा कर देना और उसके बदलेमें गरजू सामन्तका इलाका रेहन रख लेना सफल और प्रभावशाली राजे-राजवाड़ोंकी नीति थी। इन क्षत्रियोंमें कुलीनता और आर्थिक ऊँचाई-निचाईके झगड़े भी थे, बड़ा वैमनस्य था। स्वयं बैस ठाकुरोंमें भी बहुत एका नहीं था; डौंडियाखेराके राव, नैहस्ता और सैम्बसी घरानेके बैस आम प्रतिष्ठाकी दृष्टिसे एक दूसरे को अपना प्रतिद्वन्दी मानते थे। सामन्ती दुनियादारीकी रूढ़ मर्यादाएँ

और उनकी बारीकियाँ आठों पहर उनके अहम्‌की सान पर चढ़ी रहती थीं।

दिग्विजय ब्रह्मचारीने पड़ोसके एक प्रभावशाली किन्तु विद्रोही राजा शिवनन्दनसिंहके पास अपने पठान बंधु द्वारा संदेश पठाकर मिलनेकी अनुमति चाही। दिग्विजय ब्रह्मचारी उच्च कुलके थे, एक समय उनका वंश बड़ा प्रभावशाली माना जाता था। एक भाईके मुसलमान हो जानेसे उनके कुलमें कलंक लग गया और जिस सौतेले भाईके लिए ब्रह्मचारी इतना बड़ा त्याग कर आये वह पुराने वैभवको क्रमशः खोता जा रहा है। अपने समयको सोच दिग्विजय ब्रह्मचारीने शिवनन्दनसिंहका मन टटोलनेके लिए नत्थूखाँको भेजा। शिवनन्दनसिंहने आग्रह पूर्वक उनसे भेंट करनेकी इच्छा प्रकट की।

राजा शिवनन्दनसिंहने यथोचित मान-मर्यादाके साथ गढ़ीसे बाहर निकल कर उनका स्वागत किया, उनके नामका डंका बजवाया, यथोचित मानमर्यादाके साथ उनका मुजरा किया। दिग्विजय ब्रह्मचारी अपने त्याग के कारण सबके श्रद्धाभाजन हो गये थे। शिवनन्दनसिंहने दिग्विजयसिंहको सम्मानपूर्वक पाँच मोहरें भेंट कर भोजन कराया। अपने दिन बुरे होने के कारण दिग्विजय ब्रह्मचारीने यह सद्भावपूर्ण स्वागत-शिष्टाचार पानेकी कल्पना नहीं की थी। कुल्सुमको भी उचित मान-मर्यादा, धर्म-मर्यादा और लाड़-प्यारके साथ सत्कार मिला। दिग्विजय ब्रह्मचारीने अपने आनेका उद्देश्य बतलाया।

राजा शिवनन्दनसिंह गम्भीर हो गये, कुछ देर तक विचार किया। फिर कहा : "लालजू, वो इलाका नफेका नहीं है, गोरा पहलेसे कब्जा किये बैठा है। फिर मैं इस समय नीतिवश खुद गोरों और मियाँ लोगोंसे अटकना नहीं चाहता। हाँ, जो फँस जायँ उन्हें तो फिर साम, दाम, दण्ड, भेदसे देखना ही पड़ेगा। एक बात हो सकती है, अगर साहब और नवाबको उड़ा ले आनेमें मेरी सहायता कर सको तो अलबत्ता आपके

साथ हूँ। मैं अब राजदरबारसे समझौता करना चाहता हूँ। ये लोग अगर इमामबकस नाजिम पर जोर डालेंगे तो वह झख मार कर मेरी बात मान जायगा। अगर आप इस कामको करनेका बीड़ा उठाओ तो जितने आदमी कहो साथ कर दूँ।"

दिग्विजय ब्रह्मचारीने रुककर विचार किया। फिर बोले: "मैं दोनोंको पकड़ लानेका वचन दे सकता हूँ पर उनसे अमली कार्रवाही करानेका जिम्मा नहीं लूँगा। दूसरी बात यह है कि आदमी बहुत फुर्तीले और संकेत पर चलनेवाले लूँगा।"

"दोनों बातें मंजूर हैं। कितने आदमी चाहिए?"

"चार गोयन्दे और हुकुमके ऊपर तैयार हो जानेवाले पाँच सौ आदमी।"

"अकेले गोरेकी कोठीमें ही हजार आठ सौ आदमी हैं लालजू, फिर संजरखाँके आदमी?"

"सब विचार कर लिया है राजा साहब! जरूरत तो चतुर गोयन्दोंकी है। सिपाही केवल सावधानी वश माँग रहा हूँ, उनकी आवश्यकता नहीं पड़ेगी।"

"एक पखवारे बाद लखनऊमें सुलेमानजाहका निकाह होवेगा, उसका न्योता लेना है मुझे। तभी दरबारसे सनद भी लूँगा। इसलिए मोहलतका करार करो लालजू, तो विचार आगे बढ़े।"

"मुहलतका करार भी करायेंगे सिंहजू?"

"उसीका लालच है। आपकी बातमें मुझे रस इसीलिए आया कि सामनेका मौका अच्छा देख रहा हूँ, नहीं तो जहाँ फिरंगियोंका मामला हो वहाँ सोच समझकर ही काम करना पड़ता है। फिरंगी शिकारी कुत्तोंकी तरह पीछे लगते हैं।"

"और मान लो कि साहब आपके दबावमें न आया तौ?"

"तो-वो कुछ नहीं। यह तो दाँव है लालजू। बड़े कुँअरजू सब तरहसे

लायक हैं पर उनमें वो बात नहीं जो मेरी तरहकी जिंदगानीका उलझाव साध सकें। अगर दाँव लग गया तो साहबकी सिफ़ारिश और संजरखाँका पैसा मेरा काम बना देगा। लखनऊमें राजा गालिबजंगको साध लूँगा। और जो दाँव उलट गया तो हर इच्छा—और उपाय चलाऊँगा ?"

"कितने दिनकी मुहलत देंगे आप ?"

"चार दिनकी। अधिकसे अधिक एक दिन और।"

ब्रह्मचारी विचार करने लगे, फिर कहा : "मंजूर है; मेरी कुल्सुमियाँ का भार आप पर रहा।"

"मेरे कुँअरोंकी तरह उसका मान होगा।"

दिग्विजय ब्रह्मचारी सप्रबन्ध चले गये। राजा शिवनन्दनसिंहके मुख पर आशाकी चमक आ गई। उन्हें विश्वास था कि उनका काम बन जायगा।

राजा शिवनन्दनसिंहके पिता बैस वंशके एक सुप्रतिष्ठित राजकुलके छुटभैये थे। पिता बड़े सीधे साधु प्रकृतिके पुरुष थे; उनके जीवनकालमें ही इन लोगोंको अक्सर बहुत नीचा देखना पड़ता था, उनके मरनेके बाद इन लोगोंका हिस्सा भी बहुत कम कर दिया गया। शिवनन्दनसिंह अपने भाइयोंमें मझले थे। वे आरम्भसे ही उद्धत थे; राजा तथा उनके दीवान द्वारा किये गये जिन अपमानोंको उनके पिता अनदेखा कर जाते थे अथवा उनके बड़े भाई विवश हो जाते थे, उनका जवाब शिवनन्दनसिंह सदा सेरके मुक़ाबलेमें ढैयासे दिया करते थे। जब बातें तूल पकड़ गईं तो एक दिन रातमें अपने सबसे बड़े शत्रु बूढ़े दीवानजीके घरमें घुस, उसकी नाक काट, मालमता लूट, उसकी सुन्दर नौजवान हालकी ब्याहता चौथी पत्नी को लेकर उड़ गये।

शिवनन्दनसिंहने धीरे धीरे अनेक ज़मीदारों और साहूकारोंको लूटा, अनेकका राज्य छीनकर उनका कर भी वसूल करने लगे। यह सआदत

अलीखाँके शासनके अन्तिम दिनोंकी बात है जब वे अंगरेज़ों द्वारा अपना आधा राज्य हड़पकर लिये जानेके बाद शासनकी ओरसे चिड़चिड़ाहटमें लापरवाह हो उठे थे। सआदतअलीखाँके कठोर अंकुशके ढीला पड़ते ही राज्यमें अव्यवस्था फिरसे सिर उठाने लगी थी। शिवनन्दनसिंहने ऐसे समयको अपने लिए सुसमय बनाया। शिवनन्दनसिंहका गिरोह क्रमशः बहुत बड़ा और बहुत मज़बूत बन गया। उन्होंने दो आमिलोंका भी वध किया, सरकारी ख़ज़ानेकी गाड़ियाँ भी लूटीं, कभी सरकारी फ़ौजकी पकड़ाईमें नहीं आये; शिवनन्दनसिंहके नामसे बड़े-बड़े थर्राते थे।

अब ढलती उमर थी, शिवनन्दनसिंह धन-जनसे सम्पन्न थे। वे अब अपने लिए सामाजिक मर्यादा चाहते थे। वे अब तक स्वविभूषित राजा थे, परन्तु अब दरबार अवधसे सनद पानेके इच्छुक थे। वे कंजूस तो नहीं थे पर अपने पैसेके सयाने अवश्य थे। अपनी थेली बचानेके फेरमें दूसरेके लाख लुटवा देना उनका अटल सिद्धान्त था; अपनी स्वार्थ निष्ठाके लिए वे पाप पुण्य कुछ भी कर सकते थे, किसी भी हद तक जा सकते थे। उन्होंने यही सोचकर ब्रह्मचारीको सहायता दी कि कलंक उनके माथे चढ़ेगा; जब दोनों पकड़कर आ जायेंगे तब ब्रह्मचारीसे नकली लड़ाई लड़ साहबको यहाँ ले आयेंगे, उनकी खातिर-बात करेंगे, उन्हें लूटमें हिस्से की लालच भी देंगे, गोरा पैसेपर फिसलता है, मान जायगा। उधर ब्रह्मचारीकी आड़में संजरखाँको ठिकाने लगाया जायगा। औसेरी नाऊको उस पर लगा दूँगा, एक लाखके लिए दबाऊँगा, जब रुपया निकल आयेगा तो उसका भी भला बनकर छुड़ा लाऊँगा। दोनों तरहसे मेरी बात बन जायगी। संजरखाँसे झटके हुए लाख रुपये नाज़िमको भेंट किये जायेंगे और गोरे साहबको जो दस बीस हज़ार चटाने पड़ेंगे उसके लिए भगवती और कोई बकरा भेज देंगी।

शिवनन्दनसिंह अपने मनमें सब नक़शा बनाकर सुचित्त बैठ गये।

नत्थूखाँ और अन्य पठान तथा उनकी प्रजा भी लुटकी चिंतामें पड़ी

थी, उनका जितना नुकसान हुआ है आखिर उसकी भरपाई भी तो होनी चाहिए। नत्थूखाँको ब्रह्मचारीके संबंधमें दो दिनसे कोई सूचना नहीं मिली थी। ये लोग गढ़ीके बाहर जंगलमें ही डेरा डाले पड़े थे। वहींके जानवर मार कर पेट भरा था, शिवनन्दनसिंहने जान-बूझकर उनकी ओर रुख़ भी नहीं किया था।

नत्थूख़ाँ गढ़ी पर गये। आधा दिन राजा साहबसे भेंट करनेकी जुगत में लगाया, बाहरके चौकीदारोंसे मेल-मिलाप बढ़ाया, शामके समय उन्होंने राजा साहबके दर्शन करनेकी आज्ञा चाही, ब्रह्मचारीके साथका आदमी होनेके कारण उसे आज्ञा मिल भी गई।

सूर्य भगवान् गढ़ीकी दीवालके नीचे उतर गये थे। पेड़ों पर बसेरेके लिए आनेवाले पंछियोंका कलरव पूरे ज़ोर पर था। चिड़ियाँ डालों पर थीं, कुछ उनके आस-पास ही बैठनेके लिए मँडरा रही थीं; कभी एक झुण्डके बैठने पर दूसरा झुण्ड फरफरा कर उड़ता, आकाशमें एक हलका-सा चक्कर लगा फिर बैठनेका प्रयत्न करता; उनमें हलका-सा संघर्ष भी होता पर इस समय सब थके थे, विश्राम चाहते थे इसलिए धीरे-धीरे व्यवस्था होने लगी, पंखसे-पंख जोड़ डालों पर पंछी बैठने लगे। मैदानमें तख्त पर बैठे राजा शिवनन्दनसिंह भी भाँगके गहरे नशेमें रक्तरंजित दृष्टिसे टकटकी बाँधकर यह दृश्य देख रहे थे, हुक्केकी निगाली पर उनका हाथ थमा हुआ था।

नत्थूखाँने आकर जुहार की और अदबसे खड़ा हो गया।

पैनी नज़र तिरछी घुमाकर राजा साहबने नत्थूखाँको देखा, पूछा : "काहे ?"

"सरकारको सलाम करने आया था अन्नदाता। बरमचारी ठाकुरके साथ हूँ, नरसों हुज़ूरकी ख़िदमतमें उनकी तरफ़से मैं ही हाज़िर हुआ था माईबाप।"

"जानिति हयि। ई बखत कौन काम है ?"

"हुज़ूर, बरमचारी ठाकुरके हाल-चाल लेने आया था। मुसीबतमें वही हमारे सरपरस्त हैं माईबाप, हम तो हर तरहसे लुट गये—फिरंगीने तबाह कर दिया। संजरखाँ यों तो हमारे रिश्तेदार हैं, पर वो पठान क्या ग़रीबपरवर जो अपनी बातसे डिग जाय। ठाकुरों पठानोंमें दूसरी और खूबी ही क्या हो सकती है अन्नदाता। तो जब वो निलहे साहबकी धमकियोंसे डर गये और ठाकुर साहब अकेले हमारी रिआयाका बचाव करने चले तब हमारा ईमान भी खामोश न बैठ सका। संजरखाँने बड़ा दोगलापन दिखलाया अन्नदाता।—"

अन्नदाता बड़े तकियेके सहारे ढुलके हुए आँख मीचे हुक्का पीते रहे, उनके चेहरे पर किसी प्रकारकी प्रतिक्रिया अंकित नहीं हो रही थी।

नत्थूखाँ बात करते-करते रुक गया, उसे अन्नदाताका रुख भाँपते नहीं मिल रहा था। बात रुकनेसे राजा साहब यह न समझें कि उन्हें देख रहा है, नत्थूखाँने तनिक अटक कर बातमें बात जोड़ी, कहा: "यों संजर खाँ आदमी बुरे नहीं हैं हुज़ूर। खान्दानी हैं आप लोगोंकी तरहसे। बड़ी शौक़ीन तबीयत पाई है; चुन-चुन कर नायाब जोबनका खज़ाना इकट्ठा किया है—"

नत्थूखाँकी पैनी कनखी चली, राजा साहब जसके तस बैठे थे; नत्थूखाँने संजरखाँके प्राकृतिक विलासके साधन बतलाते-बतलाते उनके अप्राकृतिक विलासके साधन बतला कर भी देखा, राजा साहब जसके तस थे; नत्थूखाँने फिर निलहे साहब पर बात झोंकी, कहना शुरू किया: "क्या कहें सरकार, अपने गाँवमें हम ही लोग मालिक नहीं। अजी हम पट्टीदारान खानज़ादगानकी तो कुछ न पूछिये, खुद संजरखाँके अच्छे खेत भी अब साहबके क़ब्ज़ेमें हैं। और नीलकी खेतीमें तो आप जानते ही हैं सरकार ज़मीनका सत्तियानास हो जाता है। समझमें नहीं आता क्या करें, अजी हमारा बादशाह तक इन ललमुँहोंके आगे बेबस है, हमारी तो बिसात ही क्या है? हुज़ूर अन्नदाता माईबाप आप जैसे शेर मर्द कुछ

इधर-उधर सूरजसे तप रहे है जिनकी तपिश से ये थर्राते हैं—"

"अच्छा अब जाओ, काल्हि आयो।"

"जी—औऽतच्छा माईबाप! कल इसी वक्त गुलाम हाजिर होगा। और गुस्ताखी माफ़ करें अन्नदाताजू, बरमचारी ठाकुर--"

"तीरथ नहाये गये हैं।"

"जी बहुत अच्छा—तो कल हाज़िर हूँगा—औ-औ-और एक गुज़ारिश यह करनी थी माईबाप कि आपकी शरनमें आये हैं, कुछ परवरिश हो जाय, पड़ोसके गाँवमें झुमरीसाहुके यहाँ बरात आई है अन्नदाता। चार दिनसे ठहरी है, कल सुबू चली जायगी माई बाप। बरमचारी ठाकुरसे पूछा था, वो तो साधू आदमी हैं, कहने लगे महाराजसे हुकुम लेलूँ तो कहूँ। मगर यहाँ से वो अचानक तीरथ चले गये। आपके ज़ेरसाये हमारे और हमारी रिआयाके बाल-बच्चे पल जायँगे। बहुत नुकसान सहके आये हैं, अल्ला आपको जीता रक्खे, दरबारका रुतबा दिनोंदिन बुलन्द हो—"

"औसेरी।"

"का महराज?"

"झुमरी काहे बचिगा रे?" राजाने कड़ककर पूछा।

"दुइ हजार भेंट दैगा है महराज।"

"दान दहेज कइसि दिहिस?"

"पाँच हजारु अपने मुँहे कहिसि है, यतनै औरु दिहिस होई।"

"औ' वहिकेर समधी?"

"अब झुमरीसावक मुँह देखिकै—"

"सारे, नउआकी जात, अबहीं दस ठे जूता लगाउब, यू छत्तीसापना भूल जायी तुम्हार। हजार दुई हजार कुछु झटक लावा होई हुँआते—"

"अरे तौ अन्नदाता हम कुछु लिखे-पढ़े थ्वारौ हैं जो हिसाब-किताब

मा भूल-चूक न परै। अरे भगवंता रे, आजु महाराजके लगे पान नाहीं धरे रे ! ला जल्दी ते सारे, तोरी बहिनी क'—"

कुछ दूर दालानमें घुटने बाँधकर बैठे औसरी नाऊ—राजा साहबके दाहिने हाथ—ने दरवाज़ेके अन्दर नौकरको गाली फेंक दी और फिर एक तीखी कटी नज़र नत्थू खाँ के चेहरे पर फेंक बैठ गया।

राजा शिवनन्दनसिंहने कनखी घुमा उसे देखा फिर नत्थूखाँसे बोले : "नसीब अच्छा है तुम्हारा। जाओ, औसेरियासे निपटि लेओ।"

कह कर 'महाराज' ने दूसरी ओर मुँह फेर लिया।

× × ×

दूसरे दिन डेढ़पहर दिन दहाड़े झुमरी साहुके गाँवसे लगभग पाँच कोस उत्तर ढाकके जंगलमें नत्थूखाँका दल जंगल किनारेके रास्तेसे कुछ दूर हटकर डटा था। यह मील डेढ़ मीलका जंगल बारातके रास्तेमें पड़ता था। नत्थूखाँकी टोली पिछली रातमें चलकर सुबह ही यहाँ पहुँच गई और इस समय ताज़ादम थी। उसने अपना जाल भी अच्छी तरहसे बिछा दिया था। बारातके साथ पाँच हाथी, पचास घुड़सवार और बीस सजे-बजे रथ और पाँच गाड़ियाँ तथा वर-वधूकी पालकी थीं। पैदल और विभिन्न सवारियोंपर आरूढ़ लगभग चार सौ आदमी थे। जंगलके मार्ग पर कुछ आगे चलनेके बाद बारातवालोंने देखा कि रास्तेके दोनों ओर कुछ फासला छोड़कर कटे हुए ढाक पेड़ोंके ढेर सुलग रहे थे, कुछ आगे बढ़नेपर देखा कि सामनेका रास्ता बन्द है, वहाँ भी कटा जंगल सुलग रहा है। बारातवाले अपनेको घिरा हुआ पाकर दहल उठे। आगके तितरफ़ा घेरेके बाहर नत्थूखाँकी टोलीकी हुँकारें उठीं और घेरेके अन्दर बारातवालोंकी। बाहर भीतरसे कुछ तीर तुपकचियाँ भी बरसने गरजने लगीं। रास्ता निकालनेके लिए बारातवाले एक छकड़ेपर लदे पीनेके पानीके आठ-दस भरे मटकोंसे पानीके लोटे भर-भर चिड़ी-चोंचसे आग बुझाने

चले। आग, हुल्लड़, बन्दूकों और तीरोंने हाथियों और उनके कारण सवारियोंमें जुते बैलों और घोड़ोंमें भयानक हड़बोंग मचा दी; पैदलोंके लिए तो मुसीबत ही खड़ी हो गई; गाड़ियों रथोंमें बैठे लोग मानो भूकम्प की धरतीपर बैठे थे; बड़ा कोहराम मचा। निकलनेका केवल एक ही रास्ता बचा था और उधर नत्थूख़ाँकी टोली मोर्चा साधे खड़ी थी। अपनी अस्तव्यस्ततासे हारे, घायल बदहवास बाराती लट्ठोंकी मारसे पस्त हो गये; अनेक घायल पड़ गये, अनेक बदहवासीमें जिधर सींग समाया बगटुट भागे। हाथियोंकी बदहवासीने डाकुओंको भी दहला दिया, पर नत्थूख़ाँ बहुत होशियार था उसने हाथियोंको निकल जाने दिया और उसके आदेश से दस-बीसकी टुकड़ी उनपर तीर बरसाने लगी, हाथी चिग्घाड़ते भागे। घोड़े तीरोंसे पनाह माँगने लगे। बाराती संख्यामें अधिक होनेपर भी बुरी तरह परास्त हुए। अपने जानवरोंके कारण उनके अनेक जन घायल हुए, कुचले और मरे, कई रथ टकराकर उलट गये, वर-वधूकी पालकी भी उल्टी पड़ी थी, आठ-दस बरसकी आयुवाले पति-पत्नी भयसे चिपके पड़े सिसकियाँ भर रहे थे। बारातियोंने हथियार छोड़कर पनाह माँग ली; भीड़-भाड़के हाथ-पैर बाँधकर पटक दिया गया, साहुओंको घसीट-घसीटकर उनकी मिट्टी पलीद की गई। डाकू उनकी मूँछें उखाड़ते, बाल नोचते, गर्म सलाखोंसे दागते, पट लिटाकर ठौर-कुठौर लट्ठ घुसेड़ते। इस प्रकार पद्रह-बीस हज़ारके मौजूदा मालके अतिरिक्त डकैतोंने साहूकारोंको त्रस्त कर उनके रिश्तेदारोंके नाम लगभग इतनी ही रक़मकी चिट्ठियाँ भी लिखा लीं। चार पतुरियाँ थीं उन्हें भी लूट ले चले। सेठोंकी आँखोंमें पट्टियाँ बाँध उन्हींकी दो गाड़ियोंपर लूटका माल और कैदी लादकर नत्थूख़ाँकी टोली चल दी।

राजा शिवनन्दनसिंह लूटका माल और ज़मानतके क़ैदी पाकर नत्थूख़ाँसे बड़े प्रसन्न हुए। नक़द लूटसे राजा साहबने कृपापूर्वक पाँच हज़ार स्वीकार कर लिये और उदारतापूर्वक बाक़ी रक़म नत्थूख़ाँके पठानों

और परजाजनोंको बाँट दी ! सबको गढ़ीमें जगह दी और भोजन-पानीकी व्यवस्था कर दी ।

शिवनन्दनसिंह और औसेरीमें मंत्रणा हुई; दोनोंका ही यह मत था कि नत्थूखाँ कामका आदमी है । अगर इसे पटा लिया जाय तो घरके भेदीसे संजरखाँकी लंका ढह जायगी । दिग्विजय ब्रह्मचारी उसे कैद तो कर ही लायेंगे इधर अगर नत्थूखाँ साथ दे गया तो उससे गढ़ीके अन्दर रक्खे धनके अते पते मिल जायेंगे ।

रातमें नत्थूखाँ की नशे-पानीसे खातिर-बात हुई और धीरे-धीरे करते औसरीने नत्थूखाँके सम्मुख सारी योजना प्रकट कर दी । नत्थूखाँ भारी लालचको मुँहबगासे खड़ी देख रिश्तेदारीकी ओरसे आँखपर ठीकरी रख प्रस्तावपर कूद गया । शिवनन्दनसिंहकी सहायतासे वह बड़ा आदमी बन जायगा, उसने सोचा ।

कामकी बात हो जानेपर उसे गहरा पुट देनेके लिए कुछ अपनपौकी बातें होने लगीं, नशेका बहाव भी था, शिवनन्दनसिंह बातकी रौमें बहते हुए नाज़िमको एक लाख रुपयोंकी रिश्वत देकर सनद प्राप्त करनेकी अपनी महद् इच्छा भी प्रकट कर गये ।

सुनकर नत्थूखाँका भेजा भी चलने लगा । उसने मन ही मन सोचा कि देखो यह कितना घाघ है, अपना धेला खर्च किये बिना दूसरेको लूटकर यह तीसरेको रिश्वत देगा और अपना काम बनायेगा, साहबको भी उसी लूटमें से हिस्सा देकर अपनी तरफ़ मिलायेगा । सचमुच बड़ा शातिर है ये ठाकुर । मेरी कमाईमेंसे आज आधीसे ज्यादा गटक गया, सालेने नक़दीमेंसे भी पाँच हजार मार दिये । काफ़िर साला !"

नत्थूखाँके मनमें भी घावपन जागा, स्वार्थ जागा, ईर्ष्या और मज़हबी तअस्सुब भी जागा । नत्थूखाँ शिवनन्दनसिंहके बात करते करते तक सूझकी बिजलीके सहारे अपने दिमाग़में कहाँसे कहाँ पहुँच गया । ज़ाहिरा तौर पर बोला : "अन्नदाता, हुज़ूरने ये मुझसे पहले क्यों नहीं कहा । अरे

नाज़िम इमामबख्श तो बेचारे मुझ पर बहुत मेहरबान हैं; दरअस्ल उनकी छोटी बेगम मेरी साली लगती हैं। संजरखाँसे उनका जाहिरा तौर पर मेल होने पर भी अन्दरकी कुछ तनातनी है, यह तो शायद आपने भी सुना होगा। इसलिए उसकी लूट तबाहीसे वे दिल ही दिलमें बड़े खुश होंगे। हुकुम दीजिये हुज़ूर तो कल सुबूमें ये गुलाम नाज़िम साहबके यहाँ चला जाये, आपकी और उनकी खुफ़िया मुलाकात तय करा दे; बाक़ी हुज़ूर संज़रखाँका सारा माल मुझे दिलानेका वादा कीजिये।"

शिवनन्दनसिंहको लगा कि सौभाग्य उनके आगे हाथ जोड़कर खड़ा है।

१९

नत्थूखाँके मनमें संज़रखाँके पैसेसे भी एक और बड़ी लालच समा गई थी। प्रसिद्ध विद्रोही शिवनन्दनसिंहको गिरफ्तार करा वे सहसा नाज़िम की नज़रोंमें चढ़ जायेंगे, संज़रखाँ और निलहा साहब भी उनका उपकार मानने लगेगा। और…"इस काफ़िरकी गढ़ी जब लूटी जायगी तब लाख रुपयेसे कम बखशीश नहीं लूँगा, पहले ही नाज़िमसे क़रार कर लूँगा।"

अपने सुखद भविष्यके नक़शे लिये नत्थूखाँ नाज़िम इमामबख्शसे मिलने चला। शिवनन्दनसिंहसे पचीस मोहरें और एक उम्दा नस्लका घोड़ा नाज़िमको भेंट करनेके लिए माँगा। वह मिला, राहखर्च भी मिला। नत्थूखाँके पीछे गोंयन्दा भी लगा दिया गया ताकि शिवनन्दनसिंह यह जान सकें कि नत्थूखाँने जो कुछ कहा वह सच है।

छोटे-मोटोंको रुपया धेली चटानेके लिए नत्थूखाँके पास रक़म थी। नाज़िमके लिए भी उम्दा भेंट लेकर आया था, इसलिए उसे नाज़िमकी सेवामें पहुँचते अधिक देर न लगी। इमामबख्श नाज़िमने सारी कहानी सुनकर नत्थूखाँकी बड़ी प्रशंसा की। उसने संजरखाँ और साहबको सावधान

रहनेका संदेश भेजा, नत्थूखाँके हाथ शिवनन्दनसिंहको पत्र भेजा जिसमें उन्हें राजासाहब बहादुर लिखा गया था तथा मुलाक़ातके लिए खुफ़िया स्थल और समय देते हुए उन्हें यह आश्वासन भी दिया गया था कि आपकी इच्छा पूरी कर दी जायगी।

जनम भरके घाघ शिवनन्दन सिंह अपनी एक कमज़ोरीकी भँवरमें फँसकर चकमा खा गये। यद्यपि वे कुछ आदमियोंको साथ लेकर नाज़िमसे मिलने आये थे लेकिन नाज़िमकी तैयारी पक्की थी। शिवनन्दन सिंह और औसेरी दोनों ही गिरफ्तार हो गये, उनके आदमी पिटकर भाग गये।

जिस समय शिवनन्दनसिंह नाज़िमकी जेलमें कड़ी निगरानीमें रक्खे गये, लगभग उसी समय दिग्विजय ब्रह्मचारी अपने कार्यमें सफल हो दोनों बंदियोंको लेकर उनकी गढ़ी पहुँचे थे। नया काण्ड सुनकर उन्हें नत्थूखाँकी गद्दारी पर क्रोध आया। वे फिर अपनी नई कारगुजारियोंमें लगे—उन्हें शिवनन्दनसिंहको छुड़ाना ही था।

स्वयं प्रतिष्ठित राजा शिवनन्दनसिंह सरकारी दृष्टिमें इनामी फ़रार थे। कई बार सरकारी आदमियोंको उनके कारण करारी क्षति उठानी पड़ी थी, इसलिए नाज़िम इमामबख्श उन्हें बन्दी बनाकर बड़ा ही प्रसन्न था।

सुबह नाज़िम साहबकी कचहरीमें दोनों बंदी हाजिर कि[illegible] नाज़िमने शिवनन्दनसिंहको देख मूँछों पर हाथ फेर मुसकराते हुए कहा।

“हूँः तो आप राजा बनना चाहते हैं?—क्यों? हिन्दुओंमें राजगद्दीकी रस्मके वक्त राजाको सात दरियाके पानीसे गुस्ल कराया जाता है लिहाज़ा आपको भी नहलाया जायगा। करामत हुसैन, इंतज़ाम हो।”

सात भंगी चमार आये। नाज़िमके हुक्मसे भरी कचहरीमें सातोने फ़र्श पर ज़बर्दस्ती पकड़कर बैठाये गये शिवनन्दनसिंहके सिर पर बेशर्मीसे पेशाब किया। नाज़िम और उनके अमले हँसने और मज़ा लेने लगे।

दुबला-पतला सींक-सलाई करामतहुसैन, जिसकी आँखोंमें चमककी कनी कभी थिर नहीं रहती, आँखें बंद किये पत्थरसे बैठे शिवनन्दनसिंहकी

तरफ़से हट पास ही जकड़े बैठे औसेरी नाऊकी सकपकाई कटती नज़रोंसे नज़र मिलाने लगा, औसेरीने चटसे नज़रें चुरा लीं और गुम बैठ गया। करामतहुसैन बोला : "हुज़ूर आप जैसे क़द्रदानोंके रहते मुहावरेमें कमी रह जाय तो ज़माना क्या कहेगा ग़रीबपरवर? नाऊ तो काना ही बामुहावरा बैठता है।"

नाज़िम इमामबख्श मुसकराए। औसेरी नाऊकी एक आँख तपते सूएसे फोड़ दी गयी। नाज़िम राजासे बोले : "कहिए महाराजा साहब, अब हमारा हिस्सा भी तो मिलना चाहिए। क्या नज़र देते हैं? क्यों करामत हुसैन, महाराजा शिवनन्दन सिंह साहब बहादुरकी हैसियतका अदब रखनेके लिए इनसे क्या तोहफ़ा माँगा जाय?"

करामत हुसैन छिन भर अपनी उँगलियोंके नाखूनों पर अँगूठा फेरता रहा। नज़रोंकी चमक अँगूठेकी गति पर सध गयी फिर पलकें ऊँची कर बोला : "ग़रीबपरवर चालीस बरसोंसे तो मेरे ख्यालमें महाराजा साहबने इधर हम लोगोंको कुछ दिया नहीं, अब आपही हिसाब लगा लीजिए।"

नाज़िम तड़पड़ मसनदसे उस बैठे, तन गये। बोले : "इससे दस लाखकी चिट्ठी लिखवाओ और जो इलाक़े इसके पास हैं उनका हिसाब देखा जाय।" नाज़िम उठे, शिवनन्दनसिंहके मुँहपर थूका और चल दिये। चालीस वर्ष तक नाज़िमोंसे लेकर हर सरकारी अमलेके लिए आतङ्क बना हुआ एक नाम, ठाकुर शिवनन्दनसिंह, अब प्रत्यक्षरूपसे सन्मुख था। शिवनन्दनसिंहको देखनेके लिए गाँवकी भीड़ जुट आयी थी। औसेरी नाऊ शिवनन्दनसिंहका दाहिना हाथ था और अपने स्वामीके साथ उतना ही कुख्यात भी। नाज़िम इमामबख्शके औसेरी नाऊ यानी मियाँ करामतहुसैन अपने जलवे दिखाने लगे। ठाकुरसे चिट्ठी लिखनेको कहा गया। ठाकुरने न आँखें खोलीं न ज़बान खोलीं और न उनके बदनमें जुम्बिश हुई, दण्डस्वरूप उनको कोड़े लगने लगे। उनकी सहनशक्तिसे चोट जब अधिक बैठती थी तो बदन हिल जाता था, चेहरेपर तनिक-सा

दृढ़ कसाव झलक जाता था पर न आँखें खुलीं न होठ खुले। विद्रोही सामन्तोंके पकड़े जानेपर नाज़िमों आलिमों द्वारा इस प्रकारके अत्याचार करना आये दिनका काम था। राजासे लेकर प्रजा तक जो जिसके दाँवपर चढ़ जाता था एक दूसरेसे इसी स्तरपर आकर व्यवहार करता था। जब कोड़े भी खत न लिखा सके तो पाखानेसे भरा तोबड़ा उनके मुँहसे बाँधा गया। उन्हें मल स्नान कराया गया पर राजाने खत तब भी न लिखा। आधा दिन बीत गया। ठाकुरको नहलानेकी आज्ञा हुई। करामतहुसैन रोटी खाने गया। देखनेवाली भीड़ भगा दी गयी। तीसरे पहर नहला-धुला और एक अँगौछा पहनाकर ठाकुर शिवनन्दनसिंहको नाज़िम इमामबख्सके खास कमरेमें लाया गया। नाज़िम थोड़ा नर्मीसे पेश आया, ऊँच-नीच समझाई, लालच दी, उन विद्रोही सामन्तोंके हवाले भी दिये जिन्हें बादमें नाज़िम इमामबख्शसे बड़ी-बड़ी सहूलतें मिल गयी थीं। वे सब शिवनन्दनसिंहको भी मिलेंगी। राजाकी सनद दिलाना तो कोई बड़ी बात नहीं।

"पर दस लाख हमारे पास नहीं हैं।"

"तो कितनेकी हैसियत रखते हो?"

"लाख रुपया नज़र कर सकता हूँ।"

"और चालीस बरसमें कितना लूटा?"

शिवनन्दनसिंहके होठ बन्द हो गये। नाज़िमने दूसरा तीर फेंका कि अगर शिवनन्दनसिंह अपने खान्दान सहित मुसलमान हो जाय तो एक लाख मंजूर कर लिया जायगा।

शिवनन्दनसिंहके होठोंने जुम्बिश न ली।

दस लाखकी चिट्ठी लिखानेके लिए फिर नये सिरेसे अत्याचार शुरू हुए, नाखूनोंके पोरोंमें गरम बारीक कीलें ठोकी जाने लगीं। अब आँखें भी बन्द हो गयीं, होठ भी मिंच गये। दस लाख की चिट्ठी लिखाई न जा सकी। शिवनन्दनसिंह रातभरके लिए तहखानेमें डाल दिये गये।

ये रियासती जेलोंके तहखाने अपने आपमें सारी नारकीय यातनाओंके कारखानेसे बने होते थे। सीलन, बदबू, चूहे और चिमगादड़ वहाँ अपने एक छत्र राज्यमें बन्दीके आ जानेपर बाधा पाकर जो प्रहार करते थे उससे बन्दीको वह एक रात अनेक वर्षोंकी यातनाओंसे अधिक मँहगी पड़ जाती थी। बँधे हाथोंको जुम्बिश देकर आस-पास घूमते माँस नोचनेकी फ़िराक़ में आगे बढ़नेवाले मोटे-मोटे चूहोंसे लड़ना, बँधे पावों और बदनको इधर-उधर फेंककर विवश जुझाव लेना बन्दियोंके साहसकी ऊँची-ऊँची सीमाओंसे भी टकरा जाता था। शिवनन्दनसिंह जिन्होंने अनेक सरकारी आमिलोंके साथ, अनेक छोटे-बड़े हिन्दू मुस्लिम सामन्तोंके साथ यही सब बर्ताव किया था, आज मानो अपनी ही पूर्व आज्ञाओंका प्रत्यक्ष अनुभव कर रहे थे : "मुदा धरम न द्याब; दस लाख न द्याब। धन हमार नाहीं, लरिकवन केर आय। हम तउ छत्री धरम निभावा। बहुत दायिं औरेन क दाँवपर हम चढ़ावा आजु हम चढ़गे। दस लाख तौ न द्याब। धरम न द्याब। जूझि जा शिवनन्दनसिंह पट्ठे, इमामबख्स सारेके फिरिस्तौ न पइहैं तुहिंसे दस लाख, सारे नहिंके तोरी...।"

शिवनन्दनसिंह चूहोंसे जूझते रहे, गालियाँ बकते रहे, हुँकारें भरते रहे।

× × ×

लेकिन दिग्विजय ब्रह्मचारीके दोनों बन्दी संजरखाँ और निलहासाहब जॉर्ज सैण्ड ठाकुर शिवनन्दन सिंहकी गढ़ीमें आरामसे थे। चिन्ता केवल दिग्विजय ब्रह्मचारीको थी। नत्थूखाँने दग़ा देकर शिवनन्दनसिंहको बन्दी करा दिया। इससे दिग्विजय ब्रह्मचारी और नत्थूखाँके साथ आये हुए सारे गिरोहको शिवनन्दनसिंहके आदमियोंने बन्दी कर लिया था। ब्रह्मचारीके आदेशसे वे सब मुक्त हुए। इस बन्दी होनेके प्रकरणमें बारातकी लूटका सारा माल शिवनन्दनसिंहके आदमियोंने नत्थूखाँके गिरोहसे छीन लिया। ब्रह्मचारी उस धनको वापस न करा सके। वह उनकी नीतिमें नहीं

था। और उनकी चिन्ताका एक मात्र केन्द्र यह था कि शिवनन्दनसिंहको किस प्रकार मुक्त किया जाय। शिवनन्दनसिंहके चार गोयन्दोंमें हरखू पासी ही ब्रह्मचारीको अनोखा जँचा था। उन्होंने उसे बुलाया और अपना आयोजन बनाकर चल दिये। शिवनन्दनसिंहकी सेनाके पाँच सौ आदमी निश्चित स्थानपर एक पहर रात रहते चलने वाले थे। नाज़िमके गाँव पहुँचकर हरखू पासी और ब्रह्मचारीने डेरा डाल दिया। हरखू मुसलमान किसानके भेसमें गाँव दरबारकी टोह लेने गया। सारी बातें सुनी समझीं, कचहरीमें घुस-पैठ की, चौकीदारों दरबानोंसे चिलम-तमाखू किया, इधर-उधर दो चार रुपये चटाये, यारबाशी की; चतुराईसे हल्के-हल्के खेलता रहा। दिग्विजय ब्रह्मचारी गेरुए वस्त्रमें अलग धूनी रमाकर बैठ गये। उनके हाथ और जन्मकुण्डली देखनेकी धूम मच गयी। घरों-घरोंके मनोंका दुखड़ा सामने आने लगा। ब्रह्मचारीने एक भविष्यवाणी की कि आज नाज़िम इमामबख्श और उसकी परम प्रिया वेश्या हैदर बाँदीका झगड़ा रातके दूसरे पहरकी ढाई घड़ी बीतनेपर अवश्य होगा यह टल नहीं सकता और जिसके फलस्वरूप कल सबेरे हैदर बाँदीकी नाक और कान काटे जायँगे।

अफ़वाहने रसके साथ कानोंकान घर कर लिया। हैदरबाँदी तक भी यह खबर पहुँच गयी। उसके भयका ठिकाना न रहा। साधू फ़क़ीरोंकी बात झूठी नहीं हो सकती। उसका मन थर्रा उठा।

सारे बानक बन गये। हैदरबाँदी ब्रह्मचारीकी शरणमें आनेको बाध्य थी।

हैदर बाँदीके नाक-कान कटनेकी अफ़वाह इमामबख्शके हरममें भी पहुँची थी। दो-चार बेगमोंके महरा-महरियाँ फल-फूल लेकर बाबाजीकी टोहमें भी आये। पर इससे पहले ही बाबाजीने किसीके न मिलनेका व्रत लेकर पल्टू चौधरीकी चौपालमें बनी कोठरीको बन्द कर एकान्त साध लिया। पल्टू चौधरी बाबासे पूछकर जिसे उनतक पहुँचा दें वही पहुँच

सकता था। हैदर बाँदीके आदमी पहुँच गये, बड़ी बेगम, छोटी बेगमके आदमी पहुँच गये, करामत हुसेन न पहुँच सका। इमामबख्श तक खबर पहुँची। उसने मिलनेकी ख्वाहिश ज़ाहिर की, बाबाजीने मिलनेसे इनकार किया। इमामबख्शने धमकी भिजवाई। बाबाजीने भी अपनी ज्योतिष चमत्कार भरी धमकी भिजवाई, उन्होंने कहलाया कि तू अपनी ख़ैर मना, दुलारी नसीरुद्दीनकी ब्याहता बनते ही उन सबको नाकों चने चबवाएगी जो बादशाह बेगमका साथ देते हैं। नाज़िम इमामबख्श सिर्फ़ सत्रह दिन तक और अपनी ख़ैर मनाले। आजके सत्रहवें दिन शादीके दरबारमें लखनऊमें सुलेमानजाहको नज़र देनेके बाद उसपर क्या बीतेगी यह वह तभी जानेगा।

धमकियाँ बड़ी सटीक थीं, हवामें संन्यासीका तेज एक श्रद्धा भरा आतंक बनकर छा गया। हरखू पासी नाज़िम इमामबख्शके दसवर्षीय जेष्ठ पुत्रको पढ़ानेवाले मौलवी मुईनुद्दीनका स्नेह पात्र हो गया। कुछ गण्डे वण्डे बनवाये, अपनी मुसीबतें रोईं—बड़ी दूरसे आपका नाम सुनकर आया हूँ, फ़लाँ जगह मालूम हुआ कि बड़े बड़े जिन्नातों पर आपका क़ाबू है, अमीरुज्जिनात आपके दोस्त हैं—यह सब कारगुज़ारियाँ हरखू पासीने बड़ी तरकीबसे करदीं। मौक़ा कुछ ऐसा था कि एक अनजान साधूने आकर सारा जस लूट लिया था इसलिए मौलवी मुईनुद्दीनको अपने पास बहुत दूर गाँवसे आये हुए एक भक्तका बड़ा ज़बरदस्त सहारा मिला। बड़ी-बड़ी शेखियाँ हाँकते रहे, बड़े मगनमन हुए, दोनोंके बीच ज़रा-सी अफ़ीम वफीम भी घुली। हरखू पासी मेंहदीहुसैन बने हुए बड़े भक्ति भावसे यथा सम्भव पैसा खर्च कर रहे थे। चखौतियाँ चलने लगीं, मीठे लुक़में उड़े, नाज़िम और उनके घरवालोंकी बात-चीत हुई, लड़का कैसा बढ़ रहा है, यह भी पूछा जाँचा, लड़केको देखनेकी अपनी इच्छा इस ढंगसे प्रकट की कि मौलवी साहबका रौब अपने शिष्य नाज़िम पुत्रको अपने घर पर बुलानेके लिए भड़क उठा। लड़का आया, मीठी मीठी बातें हुईं।

रातों रात नाज़िम इमामबख्शका लड़का खुदाबख्श और उसकी परम प्रिया हैदर बाँदी उड़ गयीं ।

अब दूसरी ओरसे सौदेकी बात थी । नाज़िम इमामबख्शको झुकना पड़ा । ब्रह्मचारीने मनमाना सौदा किया, शिवनन्दनसिंह और औसेरी नाऊ ससम्मान मुक्त हुए । शिवनन्दनसिंहके बड़े लड़के रघुनन्दनसिंहको राजा पद दिलानेके लिए नाज़िमसे खत लिखवाया गया, राज्यकोषमें ढाई लाख बक़ाया मालगुज़ारीके रूपमें जमा करवा कर बाक़ायदा रसीद ली गयी: इलाक़ेकी आमदनी घटनेका कारण ऊसर ज़मीनका होना लिखवाया गया । इस तरह समझौता हुआ । जार्ज सैण्ड और संजरखाँ जिस नीयतसे लाये गये थे वह परिस्थितियोंके दूसरी तौर पर ढल जानेके कारण अपने आपमें उद्देश्य रहित हो गयी थी । फिर भी आतंक जमानेके लिए उनकी उपस्थिति बड़ा काम कर गयी ।

ब्रह्मचारीके हाथों अपने ज्येष्ठ पुत्रको राजतिलक करवा कर शिवनन्दन सिंहने उसी साँझ गंगा तटपर आत्महत्या कर ली । उनका धर्म भ्रष्ट हो चुका था परन्तु तब भी उन्होंने अपना 'धरम' नहीं दिया था । उन्होंने गंगा तटपर क्षत्रियकी भाँति अपना देह प्रायश्चित्त किया ।

२०

रघुनन्दनसिंह विधिवत् सनदयाफ्ता राजा मान लिये गये । दिग्विजय ब्रह्मचारीका रौबदाब दूर-दूर तक बैठ गया । अँगरेज़ोंके लिए वे आँखोंका काँटा बन गये । निलहे साहब जार्ज सैण्डका उड़ा लिया जाना ही अँगरेज़ों के राष्ट्रीय स्वाभिमानमें चुभ गया । पुरानी खरोंचें भी दुखने लगीं । परन्तु यह सब होने पर भी अँगरेज़ मौक़ा देखकर उनकी गिरफ्तारीके लिए शाही मदद लेनेकी वह चाल न चल सके जैसी उन्होंने लालकुँअरसिंहके यहाँ बरती थी । ब्रह्मचारी रघुनन्दनसिंहकी गढ़ीमें ही रहते थे । कुलसुमके लिए एक धर्मपरायणा पठानी गुरुकी व्यवस्था कर दी गयी थी । दिग्विजय

ब्रह्मचारी उसे बड़े चावसे शस्त्रविद्या भी सिखाते थे। रघुनन्दनसिंह ही नहीं, उस गढ़ीमें धीरे-धीरे सारे इलाक़ेके लोग ब्रह्मचारी ठाकुरको बड़ी श्रद्धाकी दृष्टिसे देखने लगे थे। उनका व्यक्तिगत आचरण उनकी शारीरिक और मानसिक दृढ़ता, उनकी करुणा सहज रूपसे सबको बाँधती थी। शिवनन्दनसिंहकी सेना, जिसे अनुशासनबद्ध होनेके साथ ही साथ क्रूर और लुटेरा बननेकी आदत थी दिग्विजय ब्रह्मचारीकी व्यवस्थामें बहुत हद तक प्रजाकी रक्षक बन गई।

आग़ामीरके मन्त्रित्वकालमें लूट और आपाधापीका अन्त नहीं था। हकीम मेहदीअलीखाँकी व्यवस्थामें इतनी लूट नहीं थी। आग़ामीर जो कभी शाहज़ादा ग़ाज़ीउद्दीनका खानसामा था आज शाहे अवधका वज़ीर बनकर हैसियत और प्रभुतामें अपने प्रभुसे बराबरकी होड़ लेता था। ग़ाज़ीउद्दीन हैदरशाह उसके आगे बेबस थे। बादशाहबेगम सदा उसके ऊपर दाँत किटकिटाती ही रहती थीं। अँगरेज़ उससे चौकन्ने रहते थे परन्तु फिर भी कोई उसका कुछ बिगाड़ नहीं पाता था। अवधकी प्रजाको उजाड़ कर राजकोषको वह सदा इतना भरापूरा अवश्य रखता था कि शाही विलासिताके खर्चे पूरे होते रहें। शाही अमलोंमें दर्जा-ब-दर्जा हैसियतके हिसाबसे रिश्वतकी सीढ़ियाँ लग गयी थीं, रिश्वतमें औरत भी चलती थी और रुपया भी।

लुटी हुई प्रजाके लोग लुटेरे बन गये। गिरोहके गिरोह छुटे साँड़ोंसे घूम रहे थे जहाँ जिसका दाँव लगता था, मार खाता था। आये दिन हर गाँव डाकुओंके हमलेसे आतङ्कित रहता था। रास्ते ठगों और लुटेरोंसे भरे हुए थे।

ब्रह्मचारीके सामने आये दिन क़िस्से और शिकायतें आया करतीं। आसपासके अनेक ज़मींदार लुटेरे बन गये थे और व्यक्तिगत कारणोंसे किसीको सतानेमें उन्हें इतना रस आने लगा था कि अपनी मनो-वृत्तियोंको लेकर ये हिन्दू-मुसलमान ज़मींदार प्रायः निर्मम और अति क्रूर हो

गये थे। एक ज़मींदार डाकूका एक ऐसे व्यक्तिसे झगड़ा हो गया जिसका बेटा कलकत्तेमें गवर्नर जनरलके बॉडीगार्डोंमें नौकर था। ज़मींदारने उसके पूरे परिवारको बेदर्दीसे मरवा डाला। बापको ज़मीनमें गड्ढा खुदवा कर उसमें ज़िन्दा तुपवा दिया। बच्चोंकी टांगें चीरी गयीं। स्त्रियाँ खिलौना बनीं। मामला चूँकि अँगरेज़ी बड़े लाटके सिपाहीका था इसलिए रेज़ीडेण्टकी मार्फ़त बड़ी बड़ी फ़रियादें पहुँचायी गयीं। शाही फ़ौज जमींदारको पकड़ने भेजी गयी मगर यूँ तो शाही फ़ौजें रोज़ ही किसी न किसीको पकड़ने भेजी जाया करती थीं, नादिर शादिर कोई पकड़ाईमें आ जाय तो आ जाय वरना सब सबको ठेंगे पर मारते थे।

एक मुसलमान ज़मींदारने अपने पड़ोसके सैयदोंके क़स्बे पर चढ़ाई की। तीन सैयद मालिकानको मार डाला, खूब लूट पाट मचाई, मनमानी की। कोई उसका कुछ बिगाड़ न सका। एक दूसरे मुसलमान ज़मींदारने अपने सब पट्टीदारोंको मार कर सबका हिस्सा हड़प लिया। जहाँ जिसकी अच्छी ज़मीन देखी जुतवा ली। वह खड़ी फ़स्लें कटवा लेता था, जो चाहता था करता था। लखनऊकी रेज़ीडेन्सीमें काम करनेवाले दो चपरासी भाई अपने गाँवमें इतने शक्तिशाली हो गये थे कि उनसे बड़े बड़े थर थर काँपने लगे। होते होते स्वार्थवश एक भाईने दूसरे भाईको मारकर उसकी जायदाद हड़प ली और जब इस रहस्यका पता लगा तब फ़रार हो गया। रुस्तम खाँका दल भी बड़ा आतंक जमाये हुए था। उसने बैस राजपूतोंकी सैंतीस गाँवकी एक जागीर लूट ली। बहुतसे राजपूत मारे, बहुतोंको मुसलमान बनाया। एक ब्राह्मणके इलाक़ेसे, जिसकी पाँच सौ निन्यानवे रुपये सालाना मालगुज़ारी थी अब ज़्यादा माँगी जाने लगी। वह न दे सका तो हमला किया गया। ब्राह्मण हारा। उसका एक लड़का मारा गया। दो लड़के जिनकी अवस्था सोलह सत्रह वर्षके लगभग थी, पकड़ लिये गये। एक भतीजेको भी बाँध ले गये। उनपर जंगलमें बलात्कार किये गये। उन्हें पेड़ोंसे बाँध कर तीरोंसे मार डाला गया। यही ज़मींदार

जब किसीकी स्त्रीको लूटता तो दो चार दिन आप भोग करता फिर उसके सहायक उसपर अत्याचार करते। स्त्री घरसे निकाली जा कर हाथोंहाथ वेश्या बन जाती थी। फिर उसका समाजमें और कहीं स्थान ही न था। शहरमें औरतोंकी माँग थी। छोटी खूबसूरत लड़कियाँ और चढ़ती नौजवान औरतें लूटी जातीं। वे बाक़ायदा मशहूर कुटनियोंके हाथ बिकतीं। वहाँ उनकी नाच गानेकी शिक्षा-दीक्षा होती और वे फिर रईसों अमीरों अमलों शाह और शाहज़ादोंके हरमोंमें बेची जाती थीं। ज़रा कम खूबसूरत बाँदियोंके तौर पर बिक जाती थीं। गुलाम बेचनेका सीग़ा बुर्दाफ़रोशीके रूपमें बराबर चल रहा था। शहरके रईसोंके लिए गाँवसे हूरें, ग़िल्मान, पैसा—सब कुछ ज़बरदस्ती खिंचा चला आता था। सामन्त हिन्दू हों या मुसलमान समान रूपसे अधिकतर संकीर्ण स्वार्थी और बड़े अत्याचारी हो गये थे। उनका क्षात्र स्वाभिमान, उनका अहं इतना निरंकुश हो गया था कि बेमतलबकी बातें करने लगा था जिसमें आपसी फूटके सिवा और कुछ भी सम्भव नहीं था।

पड़ोसके एक महाराजके सगोती एक छोटी रियासतके राजा थे। छोटी रियासत वाले राजा मर गये। उनके सन्तान नहीं थी। उन्होंने अपने एक भाईके छह महीनेके बालकको मरते समय अपनी छाती पर बिठाकर राजतिलक दे दिया। राजाके मरनेके बाद छोटेसे बालक राजाके पिता अपने पुत्रकी ओरसे राजकाज करने लगे और आम तौर पर राजा साहब ही कहलाने लगे। उनकी अपने सगोती महाराजसे एक दिन शराबके नशेमें कुछ कहन-सुनन हो गयी। छोटे राजा चले आये। बड़े महाराजाने अपने मुसाहबोंकी कृपासे यह प्रण किया कि जब तक उस छोटे राजाका सिर काट कर उसपर रण नहीं पूज लूँगा तब तक चैन न लूँगा। इस प्रतिज्ञाके अनुसार ही बड़े महराजने छोटे राजाको एक गाँवमें, जब वे दौरा कर रहे थे, धोखेसे घेर कर मार लिया और उनका सिर पृथ्वी पर रख अपना झण्डा गाड़ कर रण पूज लिया। इस पर छोटे

राजाके एक भाईने प्रण किया कि महाराजने गोत घात किया है मैं इसका बदला लूँगा। मैं भी उनका रण पूजूँगा। महाराजको इस प्रतिज्ञाकी खबर लगी तो ज़ोममें आकर छोटे मुँह बड़ी बात करनेवाले पर बड़ी सेना लेकर चढ़ाई कर दी और स्वयं उसके कमाण्डर इन्चीफ़ बनकर पालकी पर चढ़कर आये। छोटे राजाके भाईकी छापेमार नीतिसे चकमा खाकर बुरी तरह हारे और पीछा किये जाने पर भाग कर सेना-शिविरमें अपनी एक वेश्याके तम्बूमें घुस गये। उनके भाटने तत्काल भड़ौवा बनाकर अपने महाराजको लाख गालियाँ सुनाईं मगर असर न हुआ। छोटे राजा के भाई तम्बूमें घुस गये और उन्होंने महाराजको खूब खरी-खरी सुनाई कहा : "तूने ज़ोममें आकर गोत घात किया है, अब तू अपने ज़ोमकी मिट्टी पलीद होते भी देख ले। जो आदमी भागकर अपनी रंडीके यहाँ शरण माँगने आये उसे क्या मारूँ! मगर रण पूजनेकी प्रतिज्ञा की है तो दण्ड ज़रूर दूँगा।" छोटे राजाके भाईने महाराजके सिरकी पगड़ी खींच कर उतार ली और उनकी वेश्याके स्तनकी एक घुण्डी काट ले गये। उसी पर उन्होंने अपना झण्डा गाड़कर रण पूजा।

ब्रह्मचारी इन उद्दाम अत्याचारियोंसे लोहा लेने लगे। उन्होंने कइयों को दबाया। अपनी अर्थात् राजा रघुनन्दनसिंहकी प्रजाको भय मुक्त किया। उन्होंने एक ऐसी ताज़ी साँस दी जिसकी शक्ति देखकर डकैत स्वार्थी थर्रा उठे।

राजा रघुनन्दनसिंह पर भीतरी दबाव पड़ने लगा। नाज़िम इमाम-बख्श, जार्ज सैण्ड, शाही फौजके एक अँगरेज़ कप्तान और दो-चार पड़ोसी ज़मींदारोंके बराबर कहन-सुनन करते रहनेसे रघुनन्दनसिंह लालचमें आकर दिग्विजय ब्रह्मचारीको धोखा देनेके लिए फिसल गये।

कुसुम्भीमें सोमवती अमावसका मेला था। ब्रह्मचारी ठाकुरसे बड़ा इसरार किया गया कि मेला देखा जाय, दाल बाटी चूरमेकी सैल हो, ज़रा मौज-बहार ली जाय। ब्रह्मचारी राजी हो गये। कुलसुमको भी आग्रहसे

मेला दिखानेके लिए ले जाया गया। तलावके दूसरी ओर इन लोगोंके खेमे पड़े। चारों ओर मस्तीका वातावरण छाया हुआ था। नहाये-धोये, भाँग-बूटी छनी, देवीके दर्शन हुए और जब लौट कर आये तो ब्रह्मचारीने देखा, कुल्सुम नहीं थी। उसे जिन सिपाहियोंकी रक्षामें छोड़कर वे दर्शन करने गये थे उनमेंसे एक भी नहीं था। खीमे उखड़ चुके थे। ब्रह्मचारी ठाकुरने अपनी दुनिया ही लापता देखी। जिस दिनसे कुल्सुमको पाया उस दिनसे उनके जीवनका उद्देश्य वही हो गयी थी। उसीके लिए वे जीते थे। कुल्सुमका ग़ायब हो जाना ब्रह्मचारीको अत्यधिक आलोड़ित कर गया। उन्होंने मेलेकी भीड़को ललकारा, बड़ी उत्तेजना फैलाई और अपने साथ राजा रघुनन्दनसिंहका पीछा करनेके लिए हजार लठैतोंका हुजूम लेकर वे दौड़ पड़े।

दूसरी ओरकी तैयारी पूरी-पूरी थी। नाज़िम तक मौजूद था। आठ-दस हज़ार आदमी मेलेके बहाने ही बिखरे हुए थे। ब्रह्मचारीके हिमायती बुरी तरह पिटकर भागे और ब्रह्मचारी सरेआम बदअमनी फैलानेके जुर्ममें गिरफ्तार कर लिये गये।

कुल्सुम कंजरोंके हाथ बेच दी गई। ब्रह्मचारीका अनिष्ट कर राजा रघुनन्दनसिंह लज्जित अवश्य थे परन्तु नाज़िम इमामबख्श और निलहे साहबके स्वार्थगत राजनीतिक गुटमें शामिल होकर बेहद संतुष्ट थे।

दिग्विजय ब्रह्मचारीका सिर काट कर बादशाहकी खिदमतमें तोहफ़ा पेश करनेकी आज्ञा नाज़िम द्वारा जारी कर दी गई। हाँ इसके साथ यह हिदायत भी उन्होंने दी थी कि उससे पहले उन्हें और किसी क़िस्मकी तकलीफ़ न दी जाय, शायद नाज़िमने अपनी रक्षिता और पुत्रके बंदी किये जानेपर उनके साथ होनेवाले सद्व्यवहारके कारण ब्रह्मचारीके प्रति कुछ उपकार माना हो।

अंधेरे एकान्तमें दिग्विजय ब्रह्मचारी भूखे सिंहकी तरह चक्कर काट रहे थे। उन्हें अपने बंदी होनेका होश भी नहीं आ रहा था, कुल्सुमके लिए

उनके प्राण बावले हो रहे थे। वह कहाँ होगी, किस स्थितिमें होगी, उस पर क्या बीत रही होगी—रह-रह कर उनका दम फूल उठता था। उत्तेजनाके कारण उनके सिरकी नसें मानों फटी जारही थीं, उनकी विवशता सब कुछ नष्ट कर, सारे ब्रह्माण्डको तोड़-फोड़ कर अपनी कुल्सुमको प्राप्त करनेके हेतु उबल रही थी। ब्रह्मचर्य व्रत धारण करनेके उपरान्त पिछले छह वर्षोंमें दिग्विजय ठाकुरका मन कभी किसी परिस्थितिमें इस तरह हाथ-बेहाथ नहीं हो सका था; उनकी शक्ति आवेशोंमें नष्ट न हो स्थिर मतिसे किसी कार्यमें केन्द्रीभूत हो संचालित होना सीख गई थी। वे इसके लिए प्रति क्षण सतर्क रहते थे; परन्तु आज एक मोह उनकी सारी साधनाको बहाये लिये जा रहा था और उन्हें उसका होश नहीं था, परवाह नहीं थी। वे भावके एक ऐसे तेज़ बहावमें थे जिसमें शब्दोंकी पार्थिवता ठीकसे ढल नहीं पाती थी, केवल एक ध्वनि एक रूप एक प्रश्न था—'कुल्सुम ! मेरी कुल्सुमिया ! कहाँ है बिटिया ?'

अंधेरेमें टकटकी बाँध कर आँखें खोयेपनमें टँगी रह जाती थीं, सोये हुए ज्वालामुखीकी तरह देह थिर हो जाती जिसमें अनायास बीच-बीचमें उद्दाम उत्तेजनाका विस्फोट हो उठता था, वे बार-बार हिल उठते थे। उनके अन्दरका अन्धा क्रोध तहखानेकी दीवालोंसे अपना सिर फोड़-फोड़ लेता था। दिग्विजय ब्रह्मचारी अपने ही को लहू-लुहान कर लेते थे। ऐसा क्यों हुआ ?—पुण्यका फल पाप क्यों ?—विश्वासका फल विश्वासघात क्यों ? हे सूर्य नारायण ! हे बजरंग, तुम झूठे हो। ईश्वर नहीं है, प्रेम नहीं है, आस्था नहीं है—सब मिथ्या है, मिथ्या है।

दिग्विजय ठाकुर कालसे जूझ रहे थे। यह सन् १८२६का काल था।

२१

रबीउल्-अव्वल सत्ताइस, सन् बारह सौ तेंतालीस हिजरी अर्थात् बीस अक्टूबर सन् अट्ठारह सौ सत्ताइस ईसवीको अबुल् मुज़फ्फ़र मुइज़ुद्दीन

शाहेज़माँ रफ़तुद्दौला रफ़ीउलमुल्क ग़ाज़ीउद्दीन हैदरखाँ बहादुर शाहमात जंगने सदाके लिए आँखें मीच लीं और उसी दिन मुर्शिदज़ादा सुलेमानजाह उम्दुतुलमुल्क नसीर-उद्दीन हैदरखाँ बहादुर असदजंग अवधके भाग्य-विधाता हुए।

बादशाहबेगम विधवा हो गईं किन्तु उनका वैधव्यशोक उनके आवरण मात्र तक ही छाया हुआ था। वे आज राजमाता बनी थीं। उनकी सत्ता का सपनों भरा दिन आज उदय हुआ था। नसीरुद्दीनने ताजपोशीके बाद माताके चरणोंमें झुककर राजमाताके दम्भको जो नयी आस्था दी थी वह शासनके सभी छोटे-बड़े पुर्ज़ोंको भविष्यमें बादशाहबेगमके सम्मान के प्रति सदा सावधान रहनेकी कड़ी चेतावनी बन गई।

आग़ामीरका दिल ज़रूर दहला हुआ था। ग़ाज़ीउद्दीन हैदर—वह हथियार जिसके सहारे आग़ामीर बादशाहबेगमसे लड़ता था अब न रहा था और नसीरुद्दीन हैदरने अपने आचरणसे यह सिद्ध कर दिया था कि आग़ामीरको अबसे बादशाहबेगमके क़दमोंपर मजबूर होकर झुकना होगा। आग़ामीर अपने दम्भकी इसी कुण्ठाको लेकर चिन्तित था। आग़ा-मीरने अबतक बहुत लूटा था। वज़ीरकी हैसियतसे पचीस हजार रुपया मासिक उसका वेतन था, तेइस लाख रुपया सालाना शाही मालगुज़ारीकी आयसे उसकी दस्तूरी बँधी थी और लगभग तेंतीस लाख रुपया सालाना वह तरह तरहकी मदोंसे अपने लिये निकालता था। इसके अतिरिक्त शाही ख़ज़ानेका कितना माल उसके निजी ख़ज़ानेमें पहुँच गया था इसका अन्दाज़ नहीं लग सकता। सन् १८१८ में जब ग़ाज़ीउद्दीन हैदरको अँगरेज़ोंने दिल्लीसम्राट्की वज़ारतसे स्वतन्त्र कर बादशाहका पद दिया था तब उसके लिए सिंहासन भी बनवाया गया था। अँगरेज, आग़ामीर और साह बिहारीलाल महाजनने मिलकर सिंहासन सजानेके उपयुक्त जवाहिर चुननेके बहाने कितने अमूल्य हीरे-जवाहरात लूटे थे इसका कोई अनुमान नहीं लगाया जा सका। शाहेअवधकी सवारीसे वज़ीरेअवधकी सवारी

टक्करमें बीस बैठती थी। रेजीडेन्सीके अँगरेज़ हाकिम उसे नापसन्द करते थे मगर उसकी राजनीतिसे मजबूर थे। ख़ानसामाके पदसे वज़ीरके पद तक पहुँचनेवाला व्यक्ति ऊँचे-ऊँचे अमीर ख़ान्दानोंकी नाकें अपने दम्भके पत्थर पर घिसता था। उसने बादशाहबेगम तकको ख़ूनके आँसू रुला मारे थे—वही आग़ामीर अब बादशाह बेगमकी मर्ज़ीके आधीन रहेगा ! उसे बहुत खल रहा था। वह भयभीत हो रहा था! आग़ामीर यदि सत्ता चाहता है तो उसे बादशाह बेगम और नसीरुद्दीन हैदरका विश्वास जीतना होगा जोकि असम्भव है। बादशाहबेगम एक क्षणके लिए भी उसकी सत्ताको सहन नहीं कर पाएँगी यह वो अच्छी तरह जानता था परन्तु बादशाहबेगम सहसा आज ही उसे उखाड़ फेंकनेका प्रयत्न करेंगी इस पर भी आग़ामीरको विश्वास नहीं होता था। शासनसूत्र अब तक उसीके हाथमें थे। वह अब भी जो चाहे कर सकता था, नसीरुद्दीन हैदर या बादशाहबेगम अन्दरूनी परिस्थितियोंको भला क्योंकर समझ सकतीं। आग़ामीरने शाहे अवध पर बादशाहबेगमकी तरह ही पूर्ण प्रभाव रखनेवाली दुलारीको अपनी गोट बनानेका निश्चय किया।

आग़ामीरके बाद अवधके शासनमें दूसरा महत्त्वपूर्ण व्यक्ति राजा दर्शनसिंह ग़ालिब जंग था। उसकी सेवाएँ भी नवाब सआदत अलीख़ाँके शासन कालसे चली आ रही थीं। सआदत अलीख़ाँने दर्शन कुरमीको अवध सेनाकी एक रेजीमेण्ट शैतानकी पल्टनमें भर्ती किया था और दर्शन कुरमी इस पल्टनमें ऐसा चमका कि 'शैतान पल्टन' के प्यादेसे कर्नल बन गया। राजा दर्शनसिंहको ग़ाज़ीउद्दीन हैदरका विश्वास भी प्राप्त था। आग़ामीरसे उनकी ऊपरी तौरपर बड़ी घनीना थी। यों बादशाहबेगम के साथ उनका निजी द्वेष न था फिर भी वे आग़ामीरके साथ अपने सम्बन्धोंके कारण सहमे हुए थे। उन्हें विश्वास था कि बादशाह बेगमकी सत्ता रहते आग़ामीर निश्चित रूपसे करारे धक्के पाएगा पर उनका यह भी विश्वास था कि आग़ामीर कच्ची मिट्टीका बना हुआ खिलौना नहीं

है। बादशाहबेगम हों, नसीरुद्दीन हैदर हों या अंगरेज़ हों, सहसा आग़ा-मीरको कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकते। शासनके सारे सूत्र आग़ामीरके हाथमें हैं। राजा दर्शनसिंह ठीक ठीक सोच नहीं पा रहे थे कि किसका साथ देनेसे उनका भविष्य निरापद रहेगा इसलिए उन्होंने बादशाहबेगम और आग़ामीरके दैरोहरमसे छूटकर दुलारीका दामन थामा। कुछ हो, गई बीती हो मगर दुलारी आख़िर है तो उनके किसी सजातीयकी ही सन्तान। दुलारीका ख़ून आख़िर इतना सफ़ेद तो हो न गया होगा। राजा दर्शनसिंहने अब तक अपने आपको दुलारीकी राजनीतिसे सदा अलग रखा था परन्तु आज वही उन्हें अपना एकमात्र सहारा नज़र आ रही थी।

दुलारीके लिए आजका दिन जीतका दिन था। वह बादशाहबेगम और अपनी विजयमें अपनी ही विजयको अन्तिम रूपसे स्थापित करनेके लिए कटिबद्ध थी। उसने अपनी निश्चित योजनाएँ बना ली थीं। नसी-रुद्दीन हैदर बादशाह होकर अपनी अटल मातृभक्तिका परिचय दे आये थे, ठीक है पर वे अपनी माताकी इच्छानुसार अपने बेटे मुन्नाजानकी माता अफ़ज़ल महलको मलिके ज़मानिया न बना सके। दिल्लीके सम्राट् शाह आलमकी पोती, नसीरुद्दीनकी विवाहिता पत्नी भी पटरानीके पदपर न बैठ सकी—वह ओहदा दुलारीको मिला। क़र्ज़में क़ुर्क कर लाई गई दीन हीन कुरमी किसानकी बेटी, साईसकी भूतपूर्व पत्नी, नईमुल्ला पठानकी प्रेमिका, अपने सौतेले देवरोंकी प्रणय पात्री, मुन्नाजानकी धाय और नसीरुद्दीनकी मनोसूत्रधारिणी दुलारी अवधकी महारानी बनी—मलिकए ज़मानियाके पद पर वैधानिक रूपसे प्रतिष्ठित हुई। बादशाह बेगम चुप मार गयीं।

कोठी छतर मंज़िलके अपने कमरेमें मसनद पर अकेली बैठी हुई दुलारी बहुत गहरेमें डूबी हुई थी। उसके लिए भी ये क्षण जीवन और मरणका प्रश्न बनकर उपस्थित थे। राजमहलोंमें अपने छह वर्षके अनुभवसे उसने यह जान लिया था कि वहाँ दीवारोंके सिवा और कुछ भी

स्थायी नहीं रहता। क़ीमतीसे क़ीमती सजावटके सामान आते हैं, जी खुश होता है, फिर नया क़ीमती सामान आता है पुराना हट जाता है, कभी-कभी एक ही दिनमें पुराना पड़ जाता है। राजमहलोंमें जो कुछ नया है वह केवल एक क्षणके लिए नया है। उस क्षणको यदि कोई खींच ले जाय तभी वह नया रह सकता है। जितनी दूर तक खींच ले जाय तब तक वह नया बना रहेगा। राजमहलोंमें केवल नूतनकी ही सत्ता है, चिरनूतन की। दुलारी मलिकए ज़मानिया बन चुकी है। अब वह और नया क्या करे जिससे उसका पद-स्थायित्व अटल हो जाय।

राजा दर्शनसिंह मलिकए ज़मानियाकी ख़िदमतमें हाज़िर होकर आदाब पेश करना चाहते हैं, इजाज़तके लिए उन्होंने बड़ा पुरतकल्लुफ़ बाअदब और बाअन्दाज़ रुक़्क़ा भेजा है। अन्दाज़ यह है कि उसमें दुलारीको उसकी जातिकी याद गौरवके साथ बड़ी खूबीसे दिलाई गई है। और दुलारीको आग़ामीरकी तरफ़से भी हल्के-हल्के संदेशे मिले हैं। इन दो के अलावा मलिके ज़मानियाका पद प्राप्त करते ही दरबारी नवाब और बादशाहके खुशामदी खान्दानी भी उसकी ख़िदमतमें नज़रें भिजवा रहे हैं। हर रईसकी बेगम उसे सलाम करने आ रही है और दुलारी इस समय सबसे हटकर एकान्तमें अपना मन टटोल रही है। उसे क्या करना चाहिए? नसीरुद्दीन हैदरको प्रेमके वशमें किये रखना तो मात्र सत्ताके प्रतीकको अपने वशमें किये रखना ही है। परन्तु उसे अपनी सत्ताका सूत्र संचालन किस प्रकार करना चाहिए यही विचारका विषय था। दुलारी अपने आपमें बहुत अकेला अनुभव कर रही थी। उसे विश्वस्त सलाहका सहारा तो चाहिए ही, परन्तु किस पर विश्वास करे? दर्शन सिंह आग़ामीर के आगे कुछ भी नहीं है। परन्तु शासनका महत्त्वपूर्ण अंग है। आग़ामीर जानता है कि बादशाह बेगम उसे टिकने न देंगी। वह स्त्री, जैसा कि दुलारी उसे जानती है, एक क्या सात जन्ममें भी अपना कीना नहीं छोड़ सकती। वह आग़ामीरको ज़रूर नीचा दिखायेगी और मीर फ़ज़ल अली

और फ़ैज़न बुआ ज़रूर बुलाई जायँगी। तब एकसे तीन हो जायँगे और ये तीन मिलकर मुझे शैतानकी तरह लगेंगे।

दुलारी आग़ामीरसे बहुत मिलना चाहती थी मगर उससे सीधे मिलते हुए भय भी लगता था। आग़ामीर घाघ है। इस समय विवश होकर वह दुलारीकी शक्तिका सहारा चाहता है परन्तु शक्ति प्राप्त करने पर वह धोखा न देगा इसका क्या ठिकाना। जिस तरह अपनी सत्ताके लिए वह इस समय मुझे ढाल बना रहा है उसी प्रकार नयी परिस्थितियोंमें वह बादशाह बेगम के तलवे भी चाट लेगा और अन्तमें अपनी ही गोटी सर कर लेगा। नहीं, मुझे आग़ामीरसे पहले नहीं मिलना चाहिए। दर्शन सिंह कुछ भी हो नयी गोटी रहेगा। उसकी जाति भी पुकारेगी—जाति जिसकी याद आज न जाने कितने बरसों बाद उसके होशमें ताज़ा होकर आयी थी। जातिके सहारे उसे अपने बचपनका होश आ गया था। वह टूटी-सी झोपड़ी, उसका दुबला-पतला चिड़चिड़ा पिता, उसकी सुन्दर सुन्दर माँ, माँ-बापका झगड़ा, मारपीट काँव काँव सब कुछ मानो जल्दी जल्दी एक साथ झलक गया और उस स्मृतिके साथ ही उसे अपने वर्तमान वैभवका होश जुड़ कर तुरन्त आया। दुलारीने अपना मस्तक उठाया, सजा-बजा अपना वैभव देखने लगी। सुनहरी नक़्क़ाशीके कामकी वेलदार महराबें, बेशक़ीमती फ़ानूस, बड़े-बड़े आईने, रंगीन दीवालगीरियाँ, विलायती मेज़ें, फ़ारसी क़ालीन, मखमली गद्दे, रेशमी चाँदनी और उसपर फिर बेशक़ीमती क़ालीन, मख़मली ज़रदोज़ीकी मस्नद और तकिये, मोतियोंकी झालरसे टँका हुआ सोनेका पेचवान—उसकी देह पर कई लाख रुपया मढ़ा था, उसकी जूती भी डेढ़लाखकी थी। दीन-हीन कुरमीकी बेटी दुलारी मलिके ज़मानिया थी और उस पद पर दृढ़ताके साथ जमे ही रहना था।...हाय अफ़सोस इतना डर न होता जो वह मुन्नाजानकी माँ होती, बादशाहके बेटेकी माँ होती! उसने नसीरुद्दीनकी प्रेमिका होकर इतने वर्षोंमें माँ बननेके अनेक प्रयत्न किये। अच्छे-अच्छे हकीमों और

दाइयोंसे अपना इलाज करवाया मगर रुस्तमअलीके सिवा वह और किसीके बेटे बेटीकी माँ न हो सकी; फ़तहअली, वारिसअली, नसीरुद्दीन कोई भी उसे माँ नहीं बना सके। हकीम हार गये थे, प्रकृतिने उसका वह अधिकार छीन लिया था। दुलारी यहीं कट रही थी और इसी ज़ख्म पर उसे मरहमका सहारा चाहिए था। दुलारीने सबसे पहले राजा दर्शन सिंहसे मिलनेका निश्चय किया।

उसने अपने मँझले सौतेले देवर और प्रेमी फ़तहअलीको बुलवाया। फ़तेहअली और वारिसअली तभी लखनऊ आ गये थे जब बादशाहबेगम से उसका पहला झगड़ा हुआ था और इतने वर्षोंमें उन्होंने दुलारीके कारण अच्छी सत्ता पा ली थी। फ़तेहअली गम्भीर था, दुलारीको उसपर अधिक विश्वास था। ख्वाजासरा दुलारीका आदमी था इसलिए दुलारीके पास इन दोनोंको आनेमें तनिक भी असुविधा नहीं होती थी। फ़तेहअली हुक्म पाते ही पहुँच गया। कमरेमें तख़लिया था, दरवाज़ों पर सख्त पहरा था। इतना होने पर भी दुलारी आश्वस्त नहीं थी। वह फ़तेहअली को लेकर बराबर वाले छोटे कमरेमें चली गयी। भीतरसे दरवाज़े बन्द कर लिये। उसे हाथ पकड़कर अपनी सोनेकी पलँगड़ी पर बिठा लिया। फ़तेहअली झिझका बोला: "मलिकए ज़मानियाँका अदब—"

"फ़िज़ूलकी बातें रहने दो। तुम जानते हो कि मलिकए ज़मानियाँ के दिलोजिस्मका असली मालिक कौन है! ख़ैर अब कामकी बात पर आओ। होश सँभालो, हमारी यह सेज आगकी भट्ठियों पर बिछी हुई है। मुझे हर वक्त हर घरकी ख़बर मिलती रहनी चाहिए।"

"खातिर जमा रखो, कोई शाही महल, किसी भी रईसोउमराका महल तुम्हारे आदमियोंसे खाली नहीं। दाइयों, पालकी कहारोंसे लेकर हर घरके दारोग़ा दीवान तक तुम्हारा दम भरते हैं। मैं भी तुम्हारा दम भरता हूँ। तुम्हारे लिए नहीं, अपने लिए।"

"मैं जानती हूँ। तुम ईमानदार हो, साफ़ कह देते हो। इसीसे मुझे

तुमपर भरोसा भी होता है। फिर भी इस वक्त ख़ासतौरपर चौकन्ने रहनेकी ज़रूरत है। बादशाह बेगम, आग़ामीर दोनों ही अपने-अपने वास्ते उसी चारेपर दाँव फेंकेंगे जो कि तुम्हारा है। उनका जाल भी वही है जो कि तुम्हारा है। हर महलके नौकर बाँदियाँ हर तरफ़से रिश्वतकी भरमार पाकर सबसे दग़ाबाज़ हो जायेंगे। ख़बरें मिलनेका ज़रिया सही और मज़बूत होना चाहिए। इसके लिए क्या कर सकोगे?"

मलिके ज़मानिया फ़िज़ूलमें समय न गवाँ अपनी चौकसीके लिए हर प्रश्नका उत्तर पाना ही चाहती थी। उसके स्वरमें शासकीय दृढ़ता थी।

फ़तेहअली उसीके अनुरूप गम्भीर स्वरमें सोचकर बोला—"देखो दुलारी, यूँ होनीकी तो मैं नहीं जानता मगर तुम्हारे इस सवालकी छाँवमें बार-बार अपने दिलकी धड़कनोंसे पूछकर मैं यह बात कह रहा हूँ कि मेरे आदमी मेरे ही रहेंगे।"

फ़तेहअलीका इतना आश्वस्त स्वर सुनकर, दो चार पलतक उससे प्रभावित होकर भी, दुलारीने फिर ठंडी साँस छोड़ी। कहा—"तुम भूलते हो मुन्ने मियाँ। ताक़त आग़ामीरके हाथमें है और ताक़तके तीन उम्मेदवार।...ख़ैर, तुम जहाँ तक बने सही ख़बरें भेजते रहनेकी टोहमें रहो। शहरमें कोई नई बात हो तो फौरन ख़बर करो। भले ही वह मामूली-सी बात क्यों न हो। और इस वक्त तुम्हें जिस कामके लिए बुलवाया है वह ख़ास और बहुत पोशीदा है। मैं रात होनेसे पहले राजा दर्शनसिंहसे मिलना चाहती हूँ। दूसरी बात, आग़ामीरसे भी तुम्हें आज ही मिलना होगा। मैं चाहती हूँ कि उनकी बेगम साहबा कल मुझे अपने यहाँ खाने की दावत दें।"

फ़तेहअलीको यह हुक्म अच्छा न लगा। बोला—"सोच समझकर दाँव चलना दुलारी; इस वक्त तुम्हारी सौतेली सासका पलड़ा बहुत भारी है। आग़ामीरसे इस तरह खुलकर मेल-जोल न बढ़ाओ।"

दुलारी बोली—"सोच लिया है मुन्ने मियाँ, सौतेली सासके ग़ुस्सेकी

आग बढ़ानेके लिए ही यह दावत .कुबूल करना चाहती हूँ। आग़ामीरको भी ढाढ़स बँधेगी कि मलिकए ज़मानिया उसके साथ हैं।"

"हाँ, मगर शाहे ज़मानाका रुख़ भी तो देखो समझो।"

"सब देखा समझा है। तुमसे जो कहा गया उसकी तामील करो और बहुत जल्दी ही तुम अपने आपको नव्वाब फ़तेहअली खाँके लक़बसे लोगोंको पुकारते सुनोगे।"

फ़तेहअलीने दुलारीको कलेजेसे लगाकर चूम लिया। कहा—"तुम ख़ुश रहो दुलारी। तुम्हारे लिए, अपने लिए मैं कुछ भी करने को उठा न रखूँगा। बरसोंसे इसी दिनकी तो चाहत थी, आज वह मिला है। मैं इसे बाँधकर रखूँगा क्योंकि जिस तरह मलिके ज़मानिया फिरसे दुलारी नहीं बनना चाहती उसी तरह मैं भी फिर किसी हाथीकी सूँड़पर लटकना नहीं पसन्द करूँगा।"

दुलारी हँस पड़ी, बोली—"पुराने दिन लौटकर नहीं आते मुन्ने मियाँ। नया दिन, ख़ुदा न करे, अगर बुरा आया तो हाथीके सरपर बैठनेके बजाय तुम्हारा सर जल्लादके पत्थरपर झुका होगा।"

राजा दर्शनसिंह बड़ी पोशीदगीके साथ ख़ास महलमें लाये गये। दुलारी उनके सामने आ गई और हिन्दुआने ढङ्गसे उनके पैर छुए। राजा दर्शनसिंह गद्‌गद हो उठे। मलिके ज़मानिया उन्हें इतना महत्त्व देंगी इसकी उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी। राजा दर्शनसिंहको सहसा अपना भविष्य परम उज्ज्वल दिखाई पड़ने लगा। मलिके ज़मानियाने उनसे रेज़ीडेंसीके हाल-चाल बार-बार कुरेद कुरेद कर पूछे। रेज़ीडेण्ट मार्डेण्ट रेकेट्स किस मिज़ाजका है, आग़ामीरकी तरफ़से वहाँका पैरोकार कौन है, यह सब दुलारीने पूछा-जाँचा। राजा दर्शनसिंहको अपने बापकी जगह बतलाया; रोई—नसीबने उसे क्या-क्या नहीं दिखलाया? मुन्नाजानकी धाय बनकर वह शाही महलोंमें क्या आई कि अपने-आपको मुसीबतमें ही डाल लिया। वह धर्मपरायणा एकव्रती जीवन बिताना

चाहती थी परन्तु भाग्यने उसे कहींका नहीं रखा और ज्वालामुखीके मुखपर उसे ला बिठाया है, जाने कब भस्म कर दे । उसका कोई नहीं ।

राजा दर्शनसिंहने पिताकी तरह ही ढाढस बँधाया, कहा—"आपको मैंने बेटी कहा है, खातिरजमा रखें अपनी बेटीकी खुशहालीका ज़िम्मा अब मुझ पर है ।"

मलिके ज़मानियाने संकेतमें उन्हें यह भी बतला दिया कि वे आग़ामीरको फ़िलहाल नीतिवश बल प्रदान करनेवाली हैं । राजा दर्शनसिंहने परिस्थितियोंको देखते हुए मलिके ज़मानियाकी नीतिको उचित माना परन्तु आग़ामीर पर पूरा भरोसा न रखनेके लिए भी दबी जबान सलाह दी। दुलारीने बाअदब बुज़ुर्गवारकी बातको सदा ध्यानमें रखनेका वादा किया। साथ ही बुज़ुर्गवारसे भी यह प्रार्थना की कि वे उसके और उनके सम्बन्धोंकी चर्चा किसीसे भी न करें ।"

राजा दर्शनसिंह इस भेंटसे बड़े-बड़े मतलब निकालते हुए खुश-खुश बाहर आये । उस दिन खवास बाँदियोंको उनसे अच्छी बख़शीश मिली ।

२२

शामका वक़्त था; छोटी और बड़ी छत्तरमंजिलोंके बीचका बड़ा तालाब देखनेमें बहुत सुकून भरा लगता था । तालाबके बीचोबीचकी बारहदरीमें चारों कोनोंकी बुर्जियोंपर और बीचमें जगह जगह रंगीन कुमकुमे जगमगा रहे थे, रोशनी बड़ी भली लगती थी । दूर तक फैले हुए महलोंके कलश कँगूरे और मीनारें मानो रातके सन्नाटेको बसेरा दे रही थीं । मलिके ज़मानिया अपने कमरेमें थीं, बाँदियाँ उनका सिंगार कर रही थीं । बादशाह सलामतने ताजपोशीकी ख़ुशीमें अपनी परमप्रियाको नौरतनी पोशाक दी है । क़ीमती ज़वाहरातके बेल फूलों और नक्क़ाशीसे सजी मुग़लिया पोशाक मलिके ज़मानियाके साँवले सलोने बदनपर फबन पा गयी । रोशनियोंकी जगमगाहटमें पोशाकके नग, ज़ेवरोंके नग, सरोपा और

पापोशके नग इस तरह जगमगा रहे थे कि मलिके ज़मानियाके चेहरे पर निगाह ही न ठहर पाती थी। आईनेमें अपनेको भर नज़र देख मलिके ज़मानिया उठीं। जाम पेश हुआ, फिर पान पेश हुए, फिर यह खबर पेश हुई कि शाहे ज़माना दस्तरख्वान पर तशरीफ़ लानेके वास्ते तैयार हो चुके हैं।

कोठी फ़रहबख्शके ऊपरवाले हालमें क़ीमती विलायती डायनिंग टेबुल और कुर्सियाँ सजी थीं। झाड़-फ़ानूसोंमें जलती सैकड़ों शमाओंकी जगमगाहट आमने-सामने दीवारोंपर लगे कदे-आदम आईनोंसे दस गुना बुलन्द होकर उस कमरेको जादूघर बना रही थी। कमरेमें चमक-ही-चमक भरी हुई थी। विलायती सूट, ड्रेस कोट काली रेशमी नेकटाई और पेटेण्ट लेदरके बूट पहने नसीरुद्दीन हैदर मस्तीसे झूमते हुए तशरीफ़ लाये। सुनहले कामकी ख़ास आराम कुर्सीपर अपने आपको फेंक दिया। एक दो अँगरेज़ मुसाहब, राजा दर्शनसिंह आदि उनके साथ थे। बादशाहकी कुर्सी औरोंकी अपेक्षा तनिक ऊँचेपर रक्खी हुई थी। बादशाहके मुसाहब उनके दाहिने बायें दोनों ओर बैठ गये। सामने नाच हो रहा था। बाईं ओर सामने ही जालीदार परदा टँगा था जिसके पीछे हुज़ूर मलिके ज़मानिया अपनी बाँदियोंके साथ तशरीफ़ रखती थीं। बादशाह सलामतके बैठते ही लगभग आधा दर्जन ख़ूबसूरत बाँदियाँ पंखे मोरछल वग़ैरह लिये हुए परदेके पीछेसे बाहर चली आयीं। उनकी पाज़ेबों और करधनियोंके घुँघुरुओंने संगीत उत्पन्न किया। बाँदियाँ करीनेसे आकर शाही कुर्सीके पीछे खड़ी हो गयीं, ख़िदमत चलने लगी। शाही महलोंकी ये बाँदियाँ निहायत ख़ूबसूरत थीं। क़ीमती ओढ़नियाँ और घाघरे पहने, सोने चाँदी और मोतीसे मढ़ी हुई खूबसूरत नाज़नीन, जिनके बारीक कपड़ोंसे जवानी लालच बनकर देखनेवालोंकी नज़रोंपर हमला करती थी, दिलोंको ग़ुलाम बनाती थीं। चेहरोंपर खूबसूरत जालीदार नक़ाब डाले ये सितमगर परियाँ बादशाहको पंखा झलने लगीं। मोरछलवालियोंके हाथ अपने कामपर सध गये। नंगी

बाँहें एक अन्दाज़ लेकर मोरपंखियाँ झलती हुई ऊपर उठतीं नीचे गिरतीं और इस क्रममें उनका साँचेका-सा ढला बदन अपने जादूकी मार मार जाता था। देखनेवालोंके लिए ये मार वेपनाह थी और यों शाही अदबकी वजहसे कोई उन्हें देख भी नहीं सकता था।

विलायती खाना और विलायती शराब, शाही दस्तरख्वानकी विशेषता थी। उम्दा क़िस्मकी शैम्पेन, मेडीरा और क्लैरेट पुखराज और पन्नेके जामोंमें चल रही थीं। शराब अपना असर दिखलाने लगी। बादशाह सलामतके दस्तरख्वानपर आज एक नया अँगरेज आया था, पहली बार लखनऊ आया था। रेज़िडेण्ट साहबने उसे अँगरेज़ीका बहुत बड़ा विद्वान् बतलाया। नसीरुद्दीन हैदर अँगरेज़को देखकर यों ही खुश हो जाता था फिर वह तो विद्वान् अँगरेज़ था लिहाज़ा उसे खानेपर बुलाया गया था। जब शराबके दौर गरमाने लगे तो नसीरुद्दीन अँगरेज़से बोला : "आई-आई लव यू। आई लव योरोपियन्स।" शाहे ज़माना ज़ोर-ज़ोरसे बोलने लगे : "मैंने अपनी तमाम ज़िन्दगी यूरोपियनोंको दिलसे चाहा है। मैं उनकी ज़बान, उनकी तहज़ीब, चाल-ढाल, शानो-शौक़त—उनकी हर चीज़का आशिक हूँ। मैं हिन्दुस्तानियोंको नफ़रत करता हूँ। और शायद हिन्दुस्तानी भी मुझसे नफ़रत करते हों। आप यक़ीन मानें मिस्टर-मिस्टर—खैर जो कोई भी हों आप, मेरे कहनेका मतलब है कि अगर मेरे खान्दानवालोंका बस चलता तो वे मुझे ज़हर दे देते। लेकिन उनका बस ही नहीं चल सकता। क्योंकि वे मुझसे बेहद डरते हैं। वल्लाह, बेहद डरते हैं!" वह ज़ोरसे हँस पड़ा।

"आक़ा-ए-आलमका नाम हर गुनहगारको डराता है।" अंग्रेज कप्तानने कहा।

"ठीक है। ठीक है!—आपने लखनऊमें लोगोंको अक्सर लड़ते हुए भी देखा होगा।" बादशाहने नवागंतुक अंगरेज़से फिर पूछा।

"जी हाँ योर मेजेस्टी।"

"और उन्हें आपसमें जानें लेते भी देखा होगा।"

"जी हाँ, योर मेजेस्टी।"

"अहा! तो वे एक दूसरेको मार डालते हैं। लेकिन-लेकिन वे आपलोगोंको तो अपनी हवासे भी छूनेकी जुरअत नहीं करते होंगे।"

"जी कभी नहीं, योर मेजेस्टी।" अंगरेज़ने कहा।

"ठीक है, ठीक है। शैतान जानते हैं कि मैं उन्हें बुरी से बुरी सज़ा दूँगा। वे जानते हैं कि मैं यूरोपियनोंको बेहद चाहता हूँ।"

सामने नाच और गाना चल रहा था; मगर वह तो चलता ही रहता है। शाही दस्तरख्वान पर प्लेटें आईं गईं, डिनर पूरा हुआ। कठपुतलियोंका नाच होने लगा : ये मेहतर आया, भिश्ती आया, नक्क़ारची आकर बैठ गया, फिर दरबारी आने लगे, एक-एककी तारीफ़ें चलने लगीं, फ़लाँ नवाब ऐसे और फ़लाँ वैसे।

बादशाह सलामतने एक खिदमतगारको इशारेसे बुलाया और धीरेसे कुछ हिदायत दी।

कठपुतलियाँ अपना करिश्मा दिखलाती ही रहीं, बादशाह सलामत उठे और पास खड़े होकर तमाशा देखने लगे।

कठपुतली वाला गा-गाकर बयान कर रहा था कि ये नवाब फ़लाँ हैं, इनके ये ये करिश्में हैं, लोग इनके नामसे थर्राते हैं—

खचसे शाही हाथोंकी कैंची चली, अपने नामसे थर्रा देनेवाले नवाब साहब बेजान होकर गिर पड़े। बादशाहके चेहरे पर खुशीकी चमक आ गई। कठपुतलीवाला जरा सहम कर ठिठका मगर बादशाह तमाशा देख रहे थे, वह रुक न सका। बादशाह सलामतने हुक्म दिया कि सबकी तारीफ़ एक साथ करो। बेचारा कठपुतलीवाला घबरा गया, उसका सधा-बँधा गाना भूल गया, पुतलियोंके फ़र्ज़ी नामोंको लयमें जैसे-तैसे जोड़कर गाने लगा—खचाखच शाही कैंची चली, कठपुतलियाँ ढेर हो गईं।

बादशाह सलामत कठपुतलियोंके ढेरको देखकर बेहद खुश हो तालियाँ पीटने लगे।

पर्देके पीछे अपनी बाँदियोंसे घिरी, ज़िल्लेसुब्हानीके शौक़का आलम देखते हुए मलिकेज़मानिया भी खिलखिला कर हँस पड़ीं। बादशाह सलामतने नज़र उठाकर पर्देकी तरफ़ देखा, मुसकुराये और पास ही रक्खे शमादानसे एक मोमबत्ती उठा कर कठपुतलियोंमें आग लगाना शुरू किया। पुतले जलने लगे, बादशाह सलामत खिलखिला कर हँस पड़े और अपने मुसाहबोंकी ओर देखा; शाही रुखके तावेदारोंने ज़ोरदार ठहाका लगाया, गोया हुज़ूरेआलमने कमालका मज़ाक़ किया हो।

"मैंने इस दरबारमें आग लगा दी। टेढ़े खाँ और कौये खाँ बड़े पैंतरे दिखला रहे थे। मैंने हत्थे परसे इन्हें उड़ा दिया। हः हः हः। ये भला मेरा क्या बिगाड़ सकते हैं?"

खुशामद और शराबके दौर चलने लगे। अँगरेज़ कप्तानने मौक़ा देखकर कहा: "हुज़ूरेआलमके हुक्मके मुताबिक कानपुरसे फ़रान्सीसी दर्ज़ी हाज़िर हुआ है और एकदम नये फ़ैशनके नायाब कपड़े लाया है।"

हुक्म हुआ कि उसे हाज़िर किया जाय।

पर्देके पीछे बैठी हुई मलिके ज़मानिया सोच रही थीं कि कब दरबार खत्म हो, बादशाह सलामत भीतर तशरीफ़ लायें और कब वह अपनी नयी नक़्शेबन्दीके लिए उनके मिज़ाज़के मोरचे साधे। उसी वक़्त उनकी नज़र सामनेकी ओर गयी। फ़रान्सीसी दर्ज़ी झुककर कोर्निश कर रहा था और उसके पीछे बड़े-बड़े तश्तोंमें क़रीनेसे सजे हुए कपड़े लिये खिदमतगार खड़े थे।...और उनमें एक था—वह एक जिसे देखकर मलिके ज़मानियाको दुलारीकी याद आ गयी—दुलारी जो कि मलिके ज़मानिया की तड़क-भड़कमें एक खामोश दिल छुपाये बैठी थी। उसकी खामोशीमें जो चेहरा बरसोंसे राज़की तरह छिपा बैठा था, वह अचानक सामने आ गया था। मलिके ज़मानियाने एक बार दो बार ग़ौरसे देखा; उन्हें यक़ीन

हो गया कि जो देख रही है वह धोखा नहीं है। फ़रान्सीसी दर्ज़ीके साथ उसकी ख़िदमतमें वह खड़ा है जो बरसोंसे मलिके ज़मानियाकी जानो-जिस्मका मालिक है। सच, दुलारीके सामने नईमउल्ला ही खड़ा था।

दुलारी बेताब हो उठी। क्षण भरके लिए मलिके ज़मानियाका पद और वैभव उसके मनसे तिरोहित हो गया, जैसे सूरजकी चमकसे कुहरेका घना घटाटोप उड़ जाता है। वह भूल गयी कि बादशाहबेगमसे उसकी लड़ाई चल रही है; वह भूल गयी कि उसे आग़ामीरसे किस तरहके रिश्ते बाँधने हैं या नसीरुद्दीन हैदरको किस नये नक्शेसे अपनी मनमानी करनेके लिए साधना है। दुलारीके सामने नईमउल्ला था, हूबहू वैसा ही; थोड़ा संजीदा हो गया था। दुलारीका कलेजा धड़क रहा था। तमन्ना बेताब हो उठी। अपनी ख़ास बाँदी सलोनीको इशारा किया। उसके कानमें कुछ कहा और फिर एक टकटकी लगाये उसे देखती रही जिसे देखनेके लिए वह इतने बरसोंसे बेक़रार थी।

बादशाह सलामतने कपड़े पसन्द किये। दर्ज़ी ज़नाने विलायती फ़ैशन भी लाया था। बादशाह सलामत बेहद खुश हुए। एक सूझ उनकी आँखोंमें चमक उठी और वह सूझ फ़रांसीसीका नया मुक़द्दर बन गयी। बादशाहने हुक्म दिया कि दामके अलावा दर्ज़ीको इनाम भी दिया जाय। अँग्रेज़ कप्तानने मौक़ा देख दर्ज़ीकी तारीफ़को बढ़ाया, कहा इसके मुक़ाबिलेका दूसरा दर्ज़ी नहीं। बादशाह सलामत आँखें फाड़ कर उसे देखने लगे और कहा कि मक्का दर्ज़ीके मुक़ाबिले दुनिया भरमें कोई दर्ज़ी ही नहीं। वह एक बार कपड़ेकी काट देखले और फिर उसका मुक़ाबला आप किसीसे करा लीजिए। फ़ौरन मक्का दर्ज़ीकी तारीफ़ोंके पुल चारों ओरसे बँधने लगे। शैम्पेनका नया दौर चला। मक्का दर्ज़ीके नाम पर बादशाहने जाम पिया। हर मुसाहबको मक्का दर्ज़ीकी ही यादमें हिचकियाँ आने लगीं।

आधी रात सन्नाटेमें सलोनी नईमउल्लाको साथ लिये शाही महलों

की दीवारके सहारे गोमती किनारेकी ओर बने एक दरवाज़ेके पास आई। इधर-उधर देख दरवाजेका ताला खोला, नईम उसके साथ अन्दर गया। सलोनीने दरवाज़ा अन्दरसे बन्द कर उस पर दोनों बेलन भी लगा दिये और बटुएसे कपूरी बत्ती निकाल उजाला कर मेहराबके पीछे बना सकड़ा दरवाज़ा खोला। नीचे ज़ीने नज़र आ रहे थे। सलोनी नईमउल्लाकी तरफ़ देखकर बोली : "तशरीफ़ लाइए।"

नईमउल्ला बोला : "मैं नहीं जाऊँगा।"

"क्यों?"

"आप मुझे किसी अज़ाबमें फँसा रही हैं। यहाँ मेरी जान-पहचान वाला कोई नहीं है।"

"हुज़ूर किसीकी इज़्ज़तका खयाल करें। यह जगह यूँ खड़े होने की नहीं है। जल्दीसे अन्दर तशरीफ़ ले आयें। आइए मैं आपको यक़ीन दिलाती हूँ कि आपके साथ धोखा नहीं कर रही। हुज़ूरके एक बहुत अज़ीज़ने मुझे भेजा है। तशरीफ़ लाइये।"

नईमउल्ला निरुत्तर हो गया। न जाने क्यों अपने जीसे मजबूर होकर आगे बढ़ गया। चार सीढ़ियाँ उतर कर दीवारके सहारे सँकरी-सी राह पर सलोनी नईमउल्लाको लिये हुए बढ़ती गयी। लम्बी अँधेरी सँकड़ी राह थी। सलोनी नईमउल्लासे एक क़दम आगे कपूरी बत्ती हाथमें लिये दमदम पर पीछे मुड़कर नईमउल्लाको देखती हुई बढ़ रही थी। सलोनीकी तड़क-भड़कके आगे सादे लिबासमें नईमउल्ला यों लगता था जैसे हज़ार तारोंके मुक़ाबलेमें एक चाँद लगता है। सलोनी उसके चेहरे पर एक ऊब-सी देखकर बोली: "लम्बी राह देखकर हुज़ूर परेशान न हों। बस अब मंज़िले मक़सूद पर पहुँचा ही चाहते हैं। वैसे ये कनीज़ आपको इतमी-नान दिलाती है कि किसी ख़तरेकी जगह नहीं चल रहे और हम जहाँसे गुज़र रहे हैं वह दीवार गोमतीके किनारे किनारे है। मैं हुज़ूरको एक झलक दरिया पर छिटकी चाँदनी दिखला ही न दूँ।" कह कर उसने चट

हाथ बढ़ा उछलकर एक खिड़की खोल दी। नईमउल्लाने एक नज़र उधर देखा। सलोनीने चटसे खिड़की बन्द कर दी और मुसकुराते हुए कहा: "चाँदनी देख ली मगर चाँद हुज़ूरको और ऊपर चलकर ही नज़र आयेगा।"

सीधी राह खत्म हुई, सीढ़ियाँ आयीं। कुछ ऊपर पहुँच एक चौकोर जगहमें दीवारसे लगकर खड़ी हो सलोनी बहुत देर तक इधर-उधर झाँकती रही। नईमउल्लाने सिर झुकाकर ग़ौरसे देखा, दीवारमें बहुतसे बारीक सूराख़ बने थे जिनसे बाहरकी रोशनी छनकर आती थी। सलोनीने दीवारके दाहिनी तरफ़ सूराख़ोंसे देखा, बाईं तरफ़ जाकर देखा और फिर दीवारके आलेमें औंडे हाथ डालकर फिर निकाल लिया। दीवार दरवाज़ेसी आगे खुलने लगी। सलोनी नईमउल्लाको एक छोटेसे कमरेमें ले आयी। दरवाज़ा बाहरसे क़देआदम आईनेसे जड़ा था। कमरेमें आकर सलोनीने क़ालीनका कोना हटा लकड़ीका एक चौकोर टुकड़ा उठा औंडे हाथ डाल कर दरवाज़ा उसी तरह बन्द किया। नईमउल्ला देखता रह गया। कौन कह सकता था कि आईनेकी आड़में एक खुफ़िया दरवाज़ा है। कमरा फ़र्श पर बिछी क़ालीन और फ़ानूसकी हल्की-सी सजावटके सिवा ख़ाली था। सलोनी बोली: "अब अगर मैं थोड़ी देरके लिए आपको बन्द कर जाऊँ तो सहम कर चीख़ न उठिएगा।"

नईमउल्ला तड़प उठा। मुसकुरा इठलाकर जाती हुई सलोनीका हाथ पकड़कर बोला: "कान खोलकर सुन लीजिए मुझे किसी भी शर्तपर किसी शाही नाज़नीनकी दिलबस्तगीका सामान नहीं बनाया जा सकता। मैं यहाँ शोर मचाकर जान देना कुबूल करूँगा मगर—"

"आहिस्ता हुज़ूर, 'शाही महलोंकी दीवारोंके कान होते हैं।' मुहावरा ग़लत नहीं है, आप अभी कान रखनेकी जगह देखते चले आ रहे हैं। और मैं आपको यक़ीन दिला चुकी हूँ कि आपके साथ किसी क़िस्म का धोखा नहीं हो रहा। आप अपने एक बहुत बड़े अज़ीज़से मिलेंगे।"

"कौन है वह ?"

"वह जो अवधके तख्तोताजकी मलिका होकर भी बरसोंसे आपके नामकी माला जप रही हैं।"

"मैं ऐसी किसी बड़े घरानेकी औरतको नहीं जानता।"

"मगर आप उन्हें जानते हैं जिन्हें आप बेहद अज़ीज़ हैं।"

पठान पहेलीसे झुँझला उठा। दुबारा उसका हाथ झटककर बोला : "मेरी बातका सीधा जवाब दो। कौन है वह ?"

सलोनी फिर इठलाकर बोली : "होगी कोई आपकी दुलारी !"

"दु—ला—दुलारी !" नईमउल्लाको अन्दरसे ऐसा लगा जैसे नाम लेनेके साथ ही एकबारगी सारी साँस खिंच आयी, अन्दर खोखला हो गया। सलोनी मुसकुराई, इतराकर कहा : "अब न कहिएगा हुज़ूर आहोंमें कुछ असर नहीं। मैं हुज़ूरको असीरे इश्क़में क़ैद किये जाती हूँ। तबलग उनका नाम जपें।"

सलोनीने कमरेका दरवाज़ा खोला। बाहर सिर निकालकर झाँका और फिर चटसे बाहर हो ली। बाहरसे कुण्डी बन्द करनेकी आवाज़ आयी, ताला लगा, सन्नाटा हो गया। दुलारीका नाम नईमउल्लाके सारे शरीरको बिजली-सा छू रहा था। उसका मन फुई फुई होकर उड़ रहा था। उसकी समझमें नहीं आ रहा था कि दुलारी यहाँ कैसे आ गयी। दुलारीने कैसे उसे देख लिया, इतने बरसों बाद वह दुलारीसे कैसे मिलेगा। वह अब शादीशुदा है, एक बच्चेका पिता है। दुलारीकी तड़पसे भरे हुए वे दीवाने दिन अब एक कहानी हो गये हैं, एक ऐसी कहानी जिसे भुलाये रखनेके लिए दिमाग़ने उसे कहीं गहरेमें छिपा रक्खा था। दुलारीका नाम आते ही वह सारी कहानी—वे दीवाने दिन और बरस बड़ी तेज़ीसे सामने आ गये। गाढ़ेका कुरता, पाजामा और धानी रंगकी मोटी ओढ़नी ओढ़े हुए बड़ी बड़ी शराबी आँखो वाली सुन्दर सलोनी दुलारी उसकी आँखोंके सामने आ गयी। दूर छतसे, दरवाज़ों-दरवाज़ोंसे आँखों-आँखोंमें

बातें करनेवाले वे दिन नईमउल्लाको गहरे नशेमें डुबा ले गये। कभी बहानेसे फ़तेहअलीके यहाँ जाता था, किस तड़पसे दुलारीको एक झलक देखनेके लिए नज़रें बावली हो उठती थीं। कभी कभी बहानेसे बड़ी तेज़ी से घूँघट काढ़े 'कोई' फ़तेहअली या वारिस अलीसे बात करते हुए नईमउल्ला के पाससे अपनी ओढ़नीकी हवा छुलाते हुए निकल जाती थी तो नईम मस्त हो जाता था। फिर वे सुरंग खोदनेके दिन, वो मीठी प्यासी अधूरी रह जानेवाली मिलन घड़ी, वो आखिरी रोज़ और फिर···आजका रोज़··· ठीक साढ़े सात बरस बाद!

नईमउल्ला बेताबीसे कमरेमें टहलने लगा। थोड़ी देर बाद फिर कुण्डी खटकी, दरवाज़ा खुला, इस बार पूरी आज़ादीके साथ खुला, सलोनी आयी और नईमउल्लाको ले चली। इस बार उसने ताला नहीं बन्द किया। छोटा-सा मुठिया ताला उसके बटुएमें चला गया। एक लम्बा दालान पार करते हुए, जिसमें बराबर-बराबर कमरोंके दरवाज़े बने हुए थे, नईमउल्ला सलोनीके साथ दाहिनी ओर मुड़ा। सलोनीने उसे बतलाया कि इन कमरोंमें हुज़ूर बेगम साहिबाके मेहमान आकर टिकते हैं। अक्सर तीज त्योहार या किसी और बहानेसे शाही बेगम जब शहरके रईसोंकी स्त्रियोंको अपने यहाँ बुलाती हैं तो बाज़ बाज़ मर्तबा कई रोज़ तक उन्हें अपने पास ही रख लेती हैं। वे सब स्त्रियाँ इन्हीं कमरोंमें टिकाई जाती हैं। दो मेहराबें पार कर नईमउल्ला एक बहुत सजे हुए कमरेमें दाख़िल हुआ। कमरेकी सबसे बड़ी सजावट मलिकेजमानिया थीं, जो सलोनीके पास खड़ी रहनेकी परवाह न कर सब कुछ भूल दीवानी हो दौड़ पड़ीं और नईमउल्लाको कसकर कलेजेसे बाँध लिया। नईमउल्ला उस क्षणके जादूसे बच न सका। दोनों एक गहरे बहावमें साथ-साथ बह गये। नईमउल्लाकी छाती पर सिर रखकर दुलारी फूट-फूटकर रोने लगी। सलोनी बाहर चली गई।

नईमउल्ला दुलारीको अच्छी तरह देख नहीं पाया था। वह उसे देखना चाहता था; वह उस चेहरेको देखना चाहता था जो बरसों तक उसके

मनमें आठों पहर नाचा है। नईमउल्लाने दुलारीका सिर उठाया; आँसुओंसे डूबी चार नज़रें मिलीं।...हाँ फ़र्क़ था, बहुत फ़र्क़ था, फिर भी मलिके ज़मानियाकी सजावटमें नईमउल्लाने गाढ़ेका कुरता, पाजामा और मोटी धानी ओढ़नी पहने दुलारीको एक झलक भरपूर देख लिया। नज़रें मिलते ही दिलोंकी गहराइयोंकी थाह दिलोंको मिल गई—प्यार था, लगावट थी, मगर अन्तर भी था। बरसोंके बिछुड़े हुए दो पुराने प्रेमियोंके बीच ज़माना नदीके पाटकी तरह चौड़ा हो चुका था। नईमकी बाहरी हैसियत क़रीब-क़रीब वही थी और दुलारीकी देहपर मलिके-ज़मानियाका वैभव था। बरसों पहलेकी दुलारी अब सुखमें रहकर और भी निखरी हुई जँचती थी, परन्तु उसका शोख़ मासूम चेहरा कठोर हो गया था।

मिलनेके पहले आवेशके बाद नईमउल्ला सावधान हो गया।

दुलारी सुहागवतीकी तरह लाज और पुलक भरी नज़रोंसे नईमको देखती हुई उसका हाथ पकड़कर पलँगड़ीकी ओर बढ़ते हुए बोली: "तुम मिले, मेरी दुनिया मिल गई।"

दुलारी बैठ गई, नईमका हाथ पकड़े रही लेकिन नईम न बैठा, बोला: "अब उस दुनियासे तुम्हें निस्बत? तुम नई दुनियामें हो।"

"बैठ जाओ।"

"मज़ेमें हूँ।"

"बैठना गुनाह होगा?"

नईमउल्ला बैठ गया। वह दुलारीके इस भाग्यपरिवर्तनके सम्बन्धमें जाननेको उत्सुक था। इतनेमें सलोनी आई, मेवे, मिठाई, फल और शराबका सामान एक छोटी मेज़पर सजाकर रख गई।

मलिके-ज़मानियाने उसे बादशाह सलामतका ध्यान रखने की हिदायत दी। वह दरवाज़ा बन्द कर चली गई। दुलारी जाम भरनेके लिए उठी, नईमउल्लाने उसे रोक दिया, अपना क़िस्सा सुनानेका आग्रह किया। दुलारीने जहाँ तक उससे बना सच-सच सारा हाल बयान किया और

अपनी वर्तमान परिस्थितिका सहमा हुआ चित्र खींचकर उसने बहाने-बहाने कई बार कहा कि वह नितान्त अकेली है उसका कोई विश्वासपात्र नहीं, कोई ऐसा नहीं जिसके भरोसे वह अपने परम शक्तिशाली शत्रुओंसे मोर्चा ले सके।

नईमउल्ला बोला : "तलवार की धार पर दौड़नेका लालच ही क्यों लगाती हो? जिस दुनियामें इतना मक्रोफ़रेब हों उसमें रहकर क्या करोगी? ये क़ीमती ज़ेवरात, ये आराइशें अगर इतनी खतरनाक़ हैं तो दुलारी, इनसे बाज़ आओ। मैं तुम्हें नेक सलाह दूँगा; जैसे और जितनी जल्दी हो सके अपने शौहरके पास लौट जाओ। सादे लिबासमें दुलारी मुझे बहुत अच्छी लगती थी। अब भी लगेगी।"

दुलारी खामोश बैठी रही। नईमने फिर पूछा : "रुस्तमअली है कहाँ?

दुलारी मुसकुराई, उठकर शराबके जाम भरे और एक नईमउल्लाकी ओर बढ़ाते हुए बोली : "क़ैदखानेमें!"

"क्यों?"

"मेरी शादीके वक्त आया था, उससे मेरी इज़्ज़तको खतरा था।"

"और फ़तेहअली, वारिसअली?"

"यहीं हैं। खुशहाल हैं।"

"और तुम्हारे बच्चे?"

"वो भी यहीं हैं। इंशाऽल्लाहताला मेरा मुहम्मदअली एक दिन...।" सुनो जानेमन, अब कहा मान जाओ। तुम मेरे पास रहोगे तो खुदा जानता है, जग जीत कर दिखला दूँगी। लो—लो!"

"मैं अब शराब नहीं पीता—और—मैं अब तुम्हारी दोस्तीके लायक़ भी नहीं रहा।"

दुलारीके तेवर चढ़े। शराब होंठोंसे लगी और लगते ही जाम खाली हो गया। नईमके लिए भरा हुआ जाम भी उसी तरह एक घूँटमें खाली

हो गया। दुलारी बोली : "ख़ुदा जानता है तुम्हारे लिए मेरे दिलमें अब भी वही जगह है। तुम यहीं रह जाओ। मैं महफ़ूज़ हो जाऊँगी, तुम अमीर हो जाओगे।"

नईम उठ खड़ा हुआ। दुलारी उसके इस अचानक खड़े हो जानेपर चौंक कर देखने लगी। नईमउल्ला बोला : "शादीशुदा हूँ, बच्चा है, मशक्कतकी रोटी खाता हूँ। अपने मालिकका नमक अदा करता हूँ और दीनोदुनियाके मालिककी बन्दगी करता हूँ। मुझसे बढ़कर अमीर है कौन ?"

दुलारीकी भवें चढ़ीं फिर सधाव ले लिया, ठण्डे मीठे बोली :

"दुनियामें मुझे एक भी ऐसा बशर नहीं दिखलाई देता जो उसूलकी बातों पर अमल कर खुशहाल हो।"

"मुझे देख लो। मुझे तुम्हारी ये तमाम चमक-दमक ज़रा भी नहीं लुभा सकी। तुम्हारी नौकरानीने जब तुम्हारा नाम लिया तो ज़रूर ललचा उठा।"

"मैं तुम्हें अपनी ही लालच तो दे रही हूँ।" कहकर दुलारीने फिर बड़े भावसे कटाक्ष पात किया। नईमउल्ला नज़रें काट गया, बोला : "अब तुम भी मेरा लालच नहीं रहीं। भूल चुका तुम्हें।"

"क्या बदसूरत हो गयी हूँ ?"

नईमउल्ला ग़ौरसे उसे देखने लगा, बोला : "हाँ।"

"तुम्हारी बीवी बहुत ख़ूबसूरत है ?"

"बहुत नेक है।"

"मैं ख़ूबसूरतीको पूछती हूँ।"

"बहुत पाक है!"

दुलारीके तेवर चढ़ते गये। वह अपने आप पर जब्र कर रही थी। फिर भी नईमउल्लाके प्रति उसका आकर्षण बहुत तेज़ था। नईमउल्ला बहुत

खूबसूरत है, बहुत ताज़ा है। उसके बहाने दुलारी उसी ताज़गीको पाना चाहती है। फिर हल्की सी-मिन्नत चिरौरी की, बैठा लिया, शराब न सही कोई मिठाई खालो, कहकर बड़े इसरारसे खिला भी दी और बोली : "तुमने मेरा हाल तो पूछ लिया, खुद न बताया, मुझे छोड़ कर कहाँ-कहाँ भटके ? और कहाँ किस पाक परीरूके रूबरू मुझे अपनी नज़रोंसे गिरा फेंका ?"

नईमउल्लाने बहुत संक्षेपमें अपनी सारी कथा सुना दी। भुलनीको लेकर किस तरह वह गंगा किनारे गया था, किस तरह खुदाको गवाह कर भुलनीके आग्रहसे उसने बीच गंगामें उसका वध किया, शवप्रवाह किया और उसके बाद महीनों इधर उधर भटकता रहा। सूफ़ी फ़क़ीरोंके चक्करमें पड़ा पर सब उसे झूठे लगे। जितना मक्रोफ़रेब दुलारीमें उसे दिखलाई पड़ रहा है उतना ही बहुतसे शाहों-फ़क़ीरोंमें उसे देखने को मिला। नईमउल्लाको ज़िन्दगीसे नफ़रत हो गई होती अगर उसे ब्रह्मचारी और भुलनी न मिले होते। वही उसके जीवनका सैद्धान्तिक कसाव थे। नईमउल्ला उन्हींके सिद्धान्तोंके सहारे अपने आपको भी आदमी बना सका है। कानपुरमें भटकते हुए उसने अन्तमें इस फ़रांसीसी दर्ज़ीके यहाँ नौकरी कर ली और इसीके यहाँ काम करने वाले एक पठान दर्ज़ीकी पाकदामन लड़कीसे उसका निकाह भी हो गया।..."माँ बाप बिरमचारीजी और मेरे लाख समझाने पर भी जब उस भंगीकी लड़कीने शादी करनेसे इनकार किया, जान बचानेसे इनकार किया तो मुझे तुम्हारी याद आयी। सोचने लगा कितना फ़र्क़ है तुममें और उसमें। वह जो सिर्फ़ एक बार अपनी मर्ज़ीके खिलाफ़ बेबस की गयी थी, अपनी आनके लिए मरतान् मर गयी मगर आन न छोड़ी। और एक तुम थीं जिसने एक ही घरमें तीन भाइयोंको बरबाद किया और चौथे मुझे भी लपेट रही थीं। तुम्हारे इश्क़की मुझे हक़ीक़त नज़र आ गयी, उसमें रूहानियत न थी, महज़ जिस्मानी प्यार था।"

"जिस्म एक हक़ीक़त है नईम, रूह भी अगर है तो उसीमें रहती है।"

"रूह ! पाक जिस्ममें वह दूरसे ही झलकने लगती है दुलारी। ख़ैर होगा इजाज़त दीजिए मलिके ज़मानिया, मैं यहाँ आकर बहुत ख़ुश हूँ। तुम्हें लेकर मेरे दिलमें जो एक नापाक हलचल थी वह आज सदाके लिए मिट गयी।"

दुलारी बोली : "और जो मैं तुम्हें क़ैद करवा दूँ।"

"मुझे ताज्जुब न होगा। तुम सचाईको सदा क़ैद करोगी। तुम शादी शुदा हो इस सुबूतको ग़ायब करनेके लिए तुमने रुस्तमको क़ैद करवा दिया। तुम पाकदामन हो यह ज़ाहिर करनेके लिए मुझे भी फँसा सकती हो। कोई हर्ज नहीं। शाही अमलमें किसी न किसी तरह हज़ारों बेगुनाह रोज़ फँसते हैं। समझ लूँगा आज मेरी बारी आ गयी।"

"नादान न बनो नईम ! मैं तुम्हें यक़ीन दिलाती हूँ—"

"उसकी ज़रूरत नहीं, मुझे यक़ीन है कि तुम एक दिन ज़रूर ख़ुदा को याद करोगी और उस हालतमें मैं ज़रूर तुम्हारी खिदमत भी अंजाम दे सकूँगा मगर आज नहीं। मुबारक हो तुम्हें यह ख्वाब, यह शानो शौक़त, ये बादशाही ! तुम्हारी बड़ी इनायत होगी अगर मुझे मेरी मड़ैया में भिजवा दोगी।"

दुलारीने देखा नईम दृढ़ था और न जाने क्यों अपने अन्दर दर अन्दर उसे नईमकी यह दृढ़ता बहुत भाई। उसने कहा : "तुम यहाँसे बाइज़्ज़त जाओगे लेकिन ऐसी जल्दी भी क्या हुई। तुम आये हो गोया इस घुटन और सड़ाँधमें मेरे लिए ताज़ा साँस आयी है···ख़ैर होगा। तुम्हारा बच्चा कितना बड़ा है ?"

"क़रीब साल भर का।"

"नाम क्या रक्खा है ?"

अज़ीमउल्ला !"

दुलारी टकटकी बाँध कर दूर देखती रही फिर बोली : "अगर उस दिन हालात दीगर न हो जाते तो अज़ीमउल्लाकी माँ शायद मैं होती। ठहरो नईम, शायद तुम यही कहना चाहते हो कि अगर मैं उसकी माँ होती तो बहुत बुरा होता। माँ बुरी नहीं होती, औरत बुरी होती है। मैं दो बच्चोंकी माँ होकर भी औरत ही बनी रही। बुरी बनती रही। मगर अब मेरे अन्दरकी माँ जाग पड़ी है। वक्त रहते मैं अपने बच्चोंका भला देखना चाहती हूँ। मेरे कैवाँजाह और ज़ीनतुन्निसाके लिए दुआ करते रहो। वे अच्छे रहें, मेरा चाहे जो अंजाम हो।"

कुछ पल मौन गम्भीरताके बीते। दुलारीने दरवाज़ेके पास जाकर धीरेसे खटखटाया, सलोनी आगयी। चलते समय अपने गले से मोतियों का एक हार उतार कर नईमउल्लाकी ओर बढ़ाते हुए दुलारी बोली : "इसे मेरे लड़केको दे देना, तुम्हें मेरी क़सम है इनकार न करना।"

"नहीं दुलारी इसे न ले जा सकूँगा। लड़का तुम्हारा ही सही मगर उसकी वालिदा जब यह हार देखकर पूछेंगी तो मैं क्या जवाब दूँगा? तुम कैसी भी सही, एक दिन मुझे जानसे ज्यादा अज़ीज़ रही हो। मैं किसीके सामने अपने हाथों तुम्हें दाग़ न लगाऊँगा। मैं उस नेक औरतको यह न समझा सकूँगा कि वह चाँद-सा मुखड़ा जिसने कभी मुझे रिझाया था, अब अपने रिझा पानेके हुनरके बूते पर मलिके ज़मानियाका रुतबा पा गया है और उसने ये हार दिया है।"

नईमउल्ला चला आया, दुलारी उस हारकी क़सक लिये बड़ी देरतक अकेलेमें पड़ी रही और फिर फूट-फूट कर रोती रही। उस रात उसका शाही रंग खुद अपनी ही नज़रोंमें फीका पड़ गया था।

२३

सुबहकी किरणें बादशाह सलामतकी ख्वाबगाहमें फ़र्श और दीवारों पर ताज़गी बन खिल रही हैं। सुबहकी बाँदियाँ अपने चोटी सिंगारसे लैस,

कपड़ोंसे चुस्त ताज़ा दम हो महलोंमें हर जगह चिड़ियों-सी चहचहा रही हैं। मेल-जोल वालियोंसे नज़रों ही नज़रों भवोंके करिश्मे, मुसकानकी छेड़ और गर्दनकी मचलनके साथ इधर-उधर दुआ सलाम होता चलता है, किसीसे 'मुई-दुई' के दो बोल भी हो जाते हैं, दुश्मनोंसे फिर नये दिनका नाता मुँह फुला कर फेर कर राह कतरा कर ही शुरू होता है। दो-चार खास कमरोंको छोड़ कर और हर जगह कड़े-छड़े और झाँझोंकी झनकार, करधनी, पाज़ेबों और इज़ारबंदके घुँघरू धूम मचा रहे हैं, रंगबिरंगी ओढ़नियाँ फरक रही हैं, गोटे पट्टे टँके रंग-बिरंगे लहँगोंके घेर चलते-फरकतेमें सुबहकी नसीमको लहरा रहे हैं।

नीली फ़ौजी वर्दियोंमें तलवार, तमंचे, कटार और बन्दूकोंसे लैस ज़नानी पल्टनके सिपाही बरामदोंमें, कमरोंके दरवाजों पर, छतों पर, ज़ीनोंके मुहानों पर, बादशाह, मलिके ज़मानिया बादशाहबेगम आदिके निजी कमरोंके आस-पास, दूसरी बेगमातकी हैसियतके हिसाब दो-एक हर जगह तैनात रहते हैं। शाही महलोंमें क़दम-क़दम पर पहरा है।

बादशाह सलामतकी ख्वाबगाहके दरवाज़ेपर जनरल गफ़ूरन बुआ खुद खम्भे-सी तनी खड़ी थीं। मर्दोंकी सी ऊँची पूरी ग्राण्डील देहवाली हब्शिन गफ़ूरन बुआ बड़ी कड़े खाँ थीं, महलोंमें क्या सिपाही क्या बाँदियाँ ग़फ़ूरन बुआके नामसे थर-थर काँपती थी, ख़ाली एक धनिया महरीपर उनका बस नहीं चलता।

बरामदेसे झूमती हुई धनिया दरवाज़ेकी ओर बढ़ी, गफ़ूरनबुआ की फ़ौजी देहने ज़रा भी जुंबिश न खाई, फ़क़त गर्दन ज़रा तिरछीकर देखा और तेवर चढ़ा लिये। धनिया मुसकुराई, पास गई, मुसकुराहट दबा संजीदगीसे कहा : "सलाम वालेकुम जण्डैल साहब।"

"वालेकुम—" जण्डैल साहबने अकड़कर कहा।

"कैसे मिज़ाज हैं?"

"ठीक हूँ। खुदाका शुक्र है।"

"आप हमसे नाराज़ हैं ?" धनियाने आँखें उठाकर अदासे ग़फ़ूरन बुआको देखा।

ग़फ़ूरन बुआ अकड़ी रहीं, मुँह फुलाकर कहा : "हमसे न अटको।"

"ऐ हम अटक रहे हैं ?—हम तो पूछ रहे हैं कि जानेमन नाराज़ हो ?" कहते हुए धनियाने जनरल साहबकी वर्दीपर हाथ फेर उनके ज़नानेपनको छेड़ दिया।

बस यही तो लड़ाईकी जड़ थी। ग़फ़ूरन बुआ फ़ौजी क़ायदे और शाही नींद सब कुछ भूलकर तोपके गोले-सी फट पड़ीं।

ग़फ़ूरन बुआ ड्यूटीसे मजबूर थीं लिहाजा वहीं खड़ी खड़ी गरजती रही। ग़फ़ूरन बुआ जनरल होनेके कारण अपने आपको मर्द मानती हैं, उसी तरह कहलाना पसन्द करती हैं, मगर धनिया बादशाहकी मुँह लगी होनेके कारण उनके रौबको छेड़कर ज़नानेपनकी याद दिला देती है। धनिया अपने आपको ग़फ़ूरन बुआका आशिक कहती है, और ग़फ़ूरन इससे चिढ़कर घण्टों बुरी-बुरी और फ़ोहश गालियाँ सुनाती है। खुद बादशाहको भी उसे छेड़कर गालियाँ सुननेमें मज़ा आता है।

धनिया अन्दर चली आई, रातकी ड्यूटीकी बाँदियोंमेंसे एक दो इधर उधर अब भी सोती पड़ी हुई थीं, धनियाने उन्हें झटककर डाँटकर उठाया और भगा दिया, इधर उधर इन्तजाम पर नज़र डाली। ठोस सोनेके जड़ाऊ पलँगपर आलमपनाह सो रहे थे। यह पलँग नसीरुद्दीन हैदरके दादा नवाब सआदत अलीख़ाँने अपने लिए बनवाया था, तबसे उसपर बादशाह सोते चले आते हैं।

धनियाने मैनाका पिंजरा साफ़ करवाया, अपने हाथों दाना पानी दिया। मैना आदतके अनुसार बादशाहको जगाने लगी। धनिया शाहे-ज़मानाके सिरहाने खड़ी हुई, दो बाँदियाँ तलवे सुहलाने लगीं। जड़ाऊ तश्तमें रक्खे छोटे-छोटे आलम पञ्जे लिये एक, और दूसरी बाँदी बड़ा आईना लिये बादशाह सलामतके सामने खड़ी हो गई ताकि आँख खुलते

ही वे पवित्र वस्तुओंको देखें तथा अपने समान भाग्यशाली व्यक्तिका मुखड़ा आईनेमें अपनी छविके रूपमें देख कर अपना दिन मंगल करें। बादशाह सलामतका सुबह उठना एक बहुत बड़ी घटना होती थी। इस बातकी यथाशक्ति कोशिश होती थी कि सुबह-सुबह उनका मिज़ाज खुश-रंग हो जाय। इसके लिए तरह-तरहके उपाय किये जाते थे। उन उपायोंमें अक्सर ग़फ़ूरन बुआकी गालियोंसे सवेरा शुरू करना भी एक उपाय था।

धनियाने हुज़ूरे आलमकी पलकोंपर गुलाबजलके हल्के-हल्के छींटे दिये, सर और कनपटियोंपर अँगुलियाँ चलाती रही। हुज़ूरे आलम बच्चों की तरह मचल-मचल कर आख़िरकार जागे। क़ुरान शरीफ़ पढ़ी जाने लगी, बादशाहने शकुनकी वस्तुएँ देखीं, जमीन पर पाँव रखनेसे पहले सोना, चांदी, आठो धातु, सतनजा, सातो रंगके कपड़े वग़ैरह ख़ैरातमें बाँटनेके लिए उँगलियोंसे झटपट छू दिये। धनिया हुज़ूरके हाथ मुँह धुलाने लगी। बाहर दरवाज़ेपर जनरल ग़फ़ूरन बुआ गरज रही थीं। बादशाहके कान इधर गये फिर धनियाकी तरफ़ देखा, कहा—"धनिया तेरा माशूक़ क्यों मचल रहा है सुबह-सुबह ?"

धनिया मुस्कुराई, कहा—"हुज़ूर आप दुनियाके मालिक हैं, चाँद सूरज तक पर आपका बस है पर कहे देती हूँ सरकार, मेरे और मेरे माशूक़के बीचमें आप न बोला कीजिए।"

नसीरुद्दीन मुसकुराये, देखकर बाँदियोंकी नज़रें खिल उठीं, महलोंकी नई सुबह खिल उठी। धनियाका खेल कारगर हुआ, बादशाहने ग़फ़ूरन को बुलवाया। आमने-सामने धनिया और ग़फ़ूरनकी चार-चार चोंचें हुईं, थोड़ी ही देरमें हँसीके कहक़हे पर क़हक़हे लगने लगे। इसी वक्त हुज़ूर मलिकेज़मानियाकी तशरीफ़आवरी हुई। रंगमें रंग जुड़ गया। बादशाह सलामत ख़ुश-ख़ुश उठे थे, मलिकेज़मानिया उनकी ख़ुशीके लिए हर जतन कर रहीं थीं।

उस दिन संयोगसे इतवार था और उसका लाभ उठाते हुए बादशाह से यह कहा गया कि आज अंगरेज़ी क़ायदेके बमूजिब मलिकाज़मानिया उन्हें इतवारकी छुट्टी देती हैं। आज वे कहीं बाहर न जा पायेंगे। दिन का खाना पीना भी मलिकाके साथ ही हुआ, उसके बाद दिनमें बाँदियों को मुहरे बनाकर हुज़ूरे आलमने मलिका ज़मानियाके साथ शतरंज खेली। खूब हँसी-खुशी रही, बादशाह सलामतने जीतके हज़ार रुपयोंमें दो हज़ार अपनी तरफ़से जोड़कर नौकरों बाँदियोंको मिठाई खानेके लिए दिये। इसके बाद तखलिया हो गया।

नसीरुद्दीन उम्रमें जवान हो जाने पर भी अपनी आदतों और मनसे सात बरसका जिद्दी बच्चा था। मलिकाज़मानिया और बादशाहबेगम उसे उसी तरह खिला बहलाकर अपने क़ब्ज़ेमें रखती थीं।

मलिकाज़मानियाकी गोदमें सिर रक्खे नसीरुद्दीन कुछ देर तक ख़ामोश आँखें बन्द किये पड़ा रहा। मलिकाकी हिनाई, क़ीमती अँगूठियों से सजी उँगलियाँ धीरे-धीरे नसीरके बालों पर फिरती रहीं।

अचानक बादशाहने आँखें मीचे हुए कहा : "मलिका।"

"आलम पनाह!"

'हम सचमुचके बादशाह होना चाहते हैं।"

"ज़माना हुज़ूरके क़दमोंमें सर झुकाता है, बादशाहत और किसे कहते हैं?"

"बहलाओ मत जानेमन। हम अँगरेज़ोंकी शतरंजके बादशाह हैं हम उसकी चाल पर चलते हैं। मुझे यह खलता है, बेहद खलता है"— नसीरुद्दीन आवेशमें उठ बैठा, उसकी बड़ी-बड़ी आँखें लाल हो उठीं। उनमें पागलपन चमक उठा। दुलारी इन तेवरोंको पहचानती है। बादशाहका जब इस किस्मका जुनून उठता है तब एकाएक उन्हें सँभालना मुश्किल हो जाता है और अगर उनकी आँखोंकी वह पागल चमक कुछ

देर तक ठहर जाती है तो किसी न किसी जान पर ज़रूर ही बनती है। दुलारी नसीरुद्दीनको अपने हाथोंमें लेनेके लिए सतर्क हो उठी। नसीरुद्दीन बहावमें कहते ही चले जा रहे थे—"हर रोज़ रेज़ीडेण्टका एक ख़रीता, हर रोज़ गवर्नर जनरलकी एक शिकायत—यह सब क्या है? रियासत हमारी है, हमारे बुज़ुर्गोंने तलवारके ज़ोर पर इसे जीता मगर हुकूमत अँगरेज़ कर रहे हैं। यह अच्छा खासा मज़ाक है, इसे बरदाश्त करना किसी भी आबरूदार इन्सानकी शानके ख़िलाफ़ है—बादशाहोंके लिए तो और भी ज्यादा।"

नसीरुद्दीनका दुबला-पतला जिस्म-गुस्सेसे काँप रहा था, उसके दाँत और मुट्ठियाँ भिंची जाती थीं। आँखोंमें खून उतर आया था। दुलारीसे और कुछ न बन पड़ा, बड़ी दीन दृष्टिसे अपने बादशाह पतिको देखते हुए बड़ी तड़पके साथ बैठे ही बैठे आगे बढ़कर अपने आपको नसीरुद्दीन की छाती पर फेंक दिया और दोनों हाथोंसे जकड़ उसके गाल चूमते होंठसे होंठ रगड़ते हुए कहा—"नहीं जानेमन नहीं, नहीं। तुम्हें हमारा, अपने बच्चोंका, अपना ख़याल रखना ही होगा। मैं तुम्हें ऐसा कुछ भी न करने दूँगी—हरगिज़ न करने दूँगी।"

नसीरुद्दीनका आवेश इस प्यार भरे हमलेसे थम गया, आँखें खोई टकटकीसे दुलारीके चेहरे पर गईं। उन्होंने उसकी आँखोंमें आँसू देखे, देखते रहे। फिर एकाएक नसीरुद्दीनकी हँसीसे कमरा गूँज उठा, रेशमी रूमाल उठा प्यारसे झटपट उसकी आँखें पोंछ कहने लगा—"वल्लाह मेरी नादान दोस्त, तुम डर गयीं? क्या तुमने यह समझा कि मैं अँगरेज़ोंके खिलाफ सचमुच लड़ाईका एलान करने जा रहा हूँ? (टुक ठहर कर एक ठंडी साँस खींचते हुए) वो तेवर हमारे खानदानमें शुजाउद्दौला और वज़ीरअलीके ही थे। मैं?—ऊँह: हमें तो छुटपनसे इश्ककी जंज़ीरोंमें जकड़ दिया गया है। हम महज़ आशिकोमाशूककी लड़ाई जानते हैं; हममें वह ताब कहाँ जानेमन? ताजपोशीके दिन रेकेट साहब रेज़ीडेण्ट

मुझसे कहने लगे —"आप यह न भूलें कि हुक़ूकके साथ-साथ बादशाहों के कुछ फ़रायज़ भी होते हैं और आप पहला फ़र्ज़ ही भूले जाते हैं।"

नसीरुद्दीन तनिक रुके, दुलारीके चेहरेपर उत्सुकता बढ़ी। रेज़ीडेण्ट की बातका बुरा मानते हुए उसकी भवें भी सिकुड़ीं, कहा—"फिर?"

नसीरुद्दीन गम्भीर स्वरमें बोला—"फिर मैंने पूछा कि मेरी भूल क्या है? बोले कि गद्दीनशीन होनेसे पहले ही तुम इन्साफका खून कर रहे हो, फ़रीदूनबख्तका हक़ कैवांजाहको दे रहे हो। मैंने कहा कैवाँजाह मेरा लड़का है। वो बोले कि कैवाँजाहकी वालिदा फ़रीदूनबख्तके पैदा होनेके बाद महलोंमें आई फिर वह तुम्हारा बेटा कैसे हो सकता है?"

दुलारीके चेहरेपर एक रंग आता था एक जाता था; अपने आपको बड़े कसावमें रखते हुए भी उसके दिलकी धड़कनें उसके चेहरेपर झलक-झलक पड़ती थीं। नसीरुद्दीन कहता रहा—"सुनकर मुझे बड़ा गुस्सा आया, मैं गद्दीका क़ानूनी हकदार हूँ, ज़रा-सी देरके बाद बादशाह होने-वाला हूँ, फिर भला तुम कौन हो जो मुझसे सवाल करते हो? मेरी मर्ज़ी है, मेरी सल्तनत है, मैं जिसे चाहूँ अपना वलीअहद मुक़र्रर करूँ। मगर नहीं···मुझे हुक़ूमते इंग्लिशियाके अहलकारों तकको जवाब देना पड़ता है। यह बहुत बुरा है। सुनो दुलारी, अगर हम तुम कहीं भाग चलें, बादशाह बनकर नहीं मामूली इन्सानकी तरह कहीं खामोशीसे गुज़र बसर करें तो कैसा हो?"

दुलारी मतलबकी बातोंपर गौर कर रही थी, उसने अपने बादशाह पतिकी बेमतलबकी बातोंको झिड़क दिया, बोली—"तुम संजीदगीके वक्त भी मज़ाक करते हो यह मुझे अच्छा नहीं लगता। हाँ, तो तुमने जवाब क्या दिया?"

नसीरुद्दीनकी बड़ी-बड़ी आँखें दुलारीके चेहरेपर गड़ गयीं। मुसकुरा-कर पूछा—"अपने लड़केकी गद्दीनशीनीके लिए बेक़रार हो?"

"नहीं, अपनी और तुम्हारी आबरूको मरती हूँ। अपने पाक इश्कपर

फ़िरंगी चालका कोई धब्बा न बैठे मैं इसे लेकर सहम रही हूँ। इसीलिए सुनना चाहती हूँ।"

दुलारीने नसीरुद्दीनकी बातको मोड़कर ऐसा सटीक तैश दिखलाया कि बादशाहके लबादेमें लिपटा नसीरुद्दीनका भोलाभाला इन्सान प्यारके विश्वासमें बह गया। दुलारीको पास खींचते हुए, शरबती आँखोंसे उसे देखकर कहा—"क्या तुम समझती हो कि मुझे इस बातका ख़याल नहीं आया था। मैंने ऐसा माक़ूल जवाब दिया कि रेज़ीडेण्टका मुँह बन्द हो गया। मैंने कहा मैं कैवाँजाहकी वालिदाको अपने हरममें लाना चाहता था इसलिए मुन्नाजानकी धाय बनकर वही महलोंमें आ भी सकी। मैंने कहा कि अपनी वालिदाके ग़ुस्सेकी वजहसे मैं सहम-सहम जाता था। मगर जब मुन्नाजान पैदा हुआ तो मुझे लगा कि मेरी इन्साफ पसन्दीको धब्बा लग जायेगा अगर मैं अपने बड़े बेटे और उसकी माँको दूर गाँवमें ही अपने एक गुनाहकी तरह छिपा रहने दूँगा। मैंने रेकेट साहबको तुम्हारे और अपने मिलनकी एक बड़ी ही नायाब कहानी गढ़कर सुनायी और उन्हें यक़ीन दिला दिया कि मुहम्मदअली मेरे ही नुत्फ़ेसे पैदा हुआ है।"

दुलारीके चेहरेपर विजयकी कान्ति दमक रही थी। अपने उल्लासको भावावेशका जामा पहनाते हुए उसने कहा—"ख़ुदा गवाह है वह तुम्हारा ही है।"

नसीरुद्दीनको एकाएक झटका लगा, नाकसे हल्की-सी फुफकार छोड़ी मगर फिर अपनेको सँभाल लिया और हँसते हुए बोला—"यह भी अजब पहेली है। मेरी समझमें ही नहीं आता कि मैं वाक़ई किसी बच्चेका बाप हूँ भी या नहीं? जब मुन्ना होनेवाला था अम्मीजान कहतीं कि तुम वालिद होनेवाले हो। फिर उसका क़िस्सा चला, सुखचैनके बारेमें कहा गया कि वह मुझसे हामिला है; फिर एक दिन अम्मीजान न जाने उससे क्यों नाराज़ हो गयीं और वह ज़िन्दा दीवारमें चुनवा दी गयी। फिर अनवरी

भी यही कहने लगी, अम्मीजान फिर वही कहने लगीं। अनवरीको उन्होंने मुझे सुखचैन ही कहकर पुकारनेकी हिदायत दी। अजब-अजब तमाशे हुए, हः हः। एक ऐसा तूफ़ान उठा था कि आग़ामीर समझाते, जन्नतमकानी अब्बा हुज़ूर समझाते कि तुम्हारी अम्मी तुम्हें एक फ़रेबमें फँसा रही हैं तुम मर्दकी तरह उससे इनकार कर दो। मेरी समझमें ही नहीं आता था कि किस बातसे इनकार करूँ, कौन मर्द यह जान सकता है कि बेटा उसका है या नहीं?—यह तो सिर्फ़ माँ ही बतला सकती है।"

दुलारीने फिर बाँध बाँधना मुनासिब समझा, बोली—"नाराज़ न होना प्यारे, अम्मीजान कोई मेरी सगी सास तो हैं नहीं जो उन्हें…मेरे कहनेका मतलब है, तुम्हें बहुत चाहनेके बावजूद उन्होंने अपने खाविन्द और आग़ामीरसे अपनी तनातनी बढ़ाते हुए तुम्हें खेलके मुहरेकी तरह इस्तेमाल कर लिया। खुद मुझे कहते बड़ा अजीब लगता है, उस बातको याद करो जो मैंने तुम्हें उस वक्त बतलायी थी। मैंने अपनी आँखों मीर फ़ज़लअली साहब और अफ़ज़ल महलको देखा था। मैं मुन्नाजानको लिवा लानेके लिए गई थी, अफ़ज़ल महल और मीर साहब दोनों मुन्नाजानको गोदीमें लिये प्यार कर रहे थे। मैं तो तुमसे पहले ही कह चुकी हूँ, खुदाकी खुदाईमें किसीकी दख़लन्दाज़ी नहीं चल सकती, वह जो तय कर देता है वही होता है। भला बतलाओ, मेरी सात बरसकी उमर थी जब शाह साहबने मेरे दामन पर तुम्हारी शबीह उतार दी थी। उन्होंने ही कहा था कि यह शाही औलादकी माँ होगी और इसका बेटा ऐसा ताक़तवर बादशाह होगा कि जिससे दुनिया थरथर काँपेगी और जो अपने माँ बाप का नाम रोशन करेगा। यों कोई कुछ भी कहले मगर मेरा खुदा जानता है कि मेरे कैवाँजाहके वालिद तुम्हीं हो। जब मजबूरन मेरी वालिदाके मरनेके बाद मेरी शादी कर दी गयी तो शाह साहब मेरी ससुरालके दरवाज़े पर चुटकी माँगने आये। खुदाका करिश्मा था मेरी सासने कहा कि चुटकी दे आ वरना मैं क्योंकर दरवाज़े तक आ पाती। शाह

साहबको देखा तो एकदम क़दमोंपर गिर पड़ी और फूट-फूट कर रोने लगी। उन्होंने मेरे सिर पर हाथ फेरा और कहा बेटी ग़मगीन न हो, खुदा बड़ा कारसाज़ है उसके हर काममें कुछ न कुछ मसलहत होती है। तू पिछले जनमके एक क़ौलसे मजबूर है इसीलिए यहाँ ब्याह कर आई। मगर तेरा असली खाविन्द शाही महलोंमें बैठा है वहाँ भी खुदाई खेल चल रहा है। वह भी मज़बूर है मगर तू अपनेको सँभाले रखियो। तेरा शौहर कन्हैया जी की तरह कभी तुझसे ज़रूर मिलेगा। मेवाड़की मलिका मीरा बाई जिस तरह दूसरेकी बीवी होकर भी कन्हैया जी की ही होकर रही थीं, वैसे ही तू भी रह। फिर हुज़ूर अम्मीजानकी नज़ीर पेश करते हुए भी उन्होंने कहा कि जैसे मुबशिशरखाँ नजूमीकी बेटी—फिर जन्नत मकानी बादशाह हुज़ूरका नाम लेकर कहा कि उनके साथ ब्याही जाकर भी हमेशा अमीरुजिन्नतकी सुहागिन बनी रहती हैं उसी तरह तू भी अपने प्यारे शाहज़ादेकी सुहागिन बनेगी और अल्लाहका करिश्मा होगा, तू अपनी औलाद अपने मजबूरीके शौहरसे नहीं बल्कि अपनी ज़िन्दगी दर ज़िन्दगी के दिलवरसे पायेगी। आज रात तुझे लगेगा कि तू ख्वाब देख रही है। मगर दर हक़ीक़त तुम दोनोंका रूहानी मिलन होगा और तुम हमलसे रह जाओगी। खुदा गवाह है वही हुआ, जानेमन, हुबहू वही हुआ। उसी रात मेरी मजबूरीका मर्द भी, खुदा उसे शैतानके सुपुर्द करे, अचानक अपने मालिकके हुक्मसे बुला लिया गया। वह रात खुदाई नूरकी रात थी, मैं उस रातको अबतक भूल नहीं पाती हूँ। जब तुम्हारा जलवा मुझमें समा गया मैं बेहोश हो गयी थी। खुदाई खेलका इससे बड़ा क्या सबूत हो सकता है आलमपनाह कि मेरे मुहम्मदअलीका नाक नक्शा रंग उसकी आदतें तक हूबहू आपकी तस्वीर पेश कर देती हैं और मेरे मुँहसे कहनेमें अच्छा नहीं मालूम पड़ता मगर किसी भी सच बोलने वाले से पूछ देखिए कि मुन्नाजानका चेहरा किससे मिलता है?"

दुलारी आवेशमें कहते-कहते रुक गयी। नसीरुद्दीन हैदर उसकी

बातोंके जादूमें बँधे और भटकते मनको थोड़ी देर खामोशीमें अनुभव करता रहा फिर एक साँस ढीलकर बोला—"खुदा जाने सच क्या है। मैं तो कभी-कभी खुद यह भी एहसास नहीं कर पाता हूँ कि मैं ज़िन्दा हूँ या मुर्दा ? हः हः क्या अजब पहेली है। हः हः ! हः हः हः हः हः—" नसीरुद्दीन बड़ी देर तक हँसीके दौरेमें हँसता रहा।

नसीरुद्दीन हैदरके लिए अपना जीवन सचमुच एक जटिल पहेलीके समान ही था। यद्यपि वह अवगत नहीं था पर हल्के-हल्के उसे स्वयं अपने जन्मको लेकर भी शंकाएँ थीं। उसकी शुरूकी चहेतियोंमें एक आध बाँदी ऐसी थी जो मौक़ा पाकर उससे दिलकी बातें किया करती थीं। सुखचैन खवास, जो बादशाहबेगमके गुस्सेका शिकार हो चुनवा दी गई, नसीरुद्दीनको बहुत कुछ बतलाया करती थी। बादशाहबेगमने एक दिन शाही खान्दानकी औरतोंके सामने कहा था कि सुलेमानजाह शाही औलाद नहीं, सुब्हदौलतकी किसी धोबीसे पैदा हरामी औलाद है। इसपर बादशाह ने बड़ा बुरा माना था। लेकिन ज़मानेमें बुरी अफ़वाह फैल गई। नवाब सआदत अली खाँने किसी तरह अपने बेटेकी बहूको समझा-बुझाकर थामा क्योंकि गाज़ीउद्दीन इतने नाराज़ हो गये थे कि तलाक़ देने पर आमादा थे। नसीरुद्दीन उनकी ही औलाद थे।

यह जानते हुए भी कि वह बादशाह बेगमकी औलाद नहीं, नसीरुद्दीन दिलसे बादशाह बेगमको अपनी माँ मानता था। होश सँभालनेसे लेकर बराबर वह यही देखता आया कि बादशाह बेगमसे उसे जो स्नेह मिला है वह जीवनमें किसीसे नहीं पा सका। इसीलिए उसे यह भी शंका होती थी कि सुखचैन द्वारा बतलाई गई बात झूठ थी, बादशाह बेगम ही उसकी असली माँ है। खुद बादशाह बेगमने उन्हें इस बातका यक़ीन दिलाया था और बहुत नाराज़ होकर उस शैतानका नाम पूछा था जिसने शाहजादेके दिलमें झूठा शक डाल दिया। नसीरुद्दीन अपनी जन्मदात्री माताको लेकर शंका-युक्त था, नसीरुद्दीन अपने प्रत्यक्ष पुत्र मुन्नाजान और दैवीमायासे उत्पन्न

कैवाँजाहके सम्बन्धमें शंकायुक्त था—उसे ठीक-ठीक किसी बात पर भी भरोसा नहीं होता था कि अमुक सच है या झूठ ? एक समयमें उसे अपनी माता बादशाह बेगममें अटूट विश्वास था, अब भी अटूट ही है, परन्तु उसमें कहीं फाँक भी पड़ गयी है। उसे दुलारीपर पूरा विश्वास है पर न जाने क्यों इस बात पर उसे दिलजमई नहीं हो पाती। नसीरुद्दीन किसीका विश्वास चाहता है, किसीका सच्चा प्यार पानेके लिए तड़प रहा है, उसे हरदम यही महसूस होता है कि उसका कोई नहीं, सब उसे ठगते हैं। इसीलिए वह सनक गया है। उसका भोला भाला सहज विश्वास करनेवाला हृदय सनकके बावजूद विश्वास किये बिना रह नहीं पाता और इसी वजह से रोज़ अपने लिए एक नई मुसीबत खड़ी कर लेता है। चूँकि मुसीबतसे कतराना चाहता है इसलिए परिस्थितियोंके प्रति लापरवाही बरतता है और लापरवाही जब उसके लिए दुनियावी घुटन पैदा कर देती है तो कमज़ोरोंके प्रति क्रूर हो उठता है। नसीरुद्दीनका मन खुद उसके लिए ही एक तेज़ भँवर है जिसमेंसे कभी वह उबर नहीं पाता।

नसीरुद्दीन बादशाह बेगमके यहाँ सलाम करने जाता तो उसे दूसरी नसीहत मिलती। बादशाह बेगम हमेशा अपने बेटेको पहले कोई न कोई धार्मिक काम करनेके बहाने आदेश देना शुरू करतीं और फिर राजकाजके अनेक मामलोंमें अपने आदेशोंसे बाँधती चली जातीं। नसीरुद्दीन उनके आगे कभी किसी बातसे इनकार नहीं कर सका। यह डरके कारण नहीं इस आस, इस भोली चाहके कारण कि यह मेरी माँ है, यह कभी मेरा बुरा न करेगी—और दुलारी उसकी रससम्बन्धी निर्मलताका बल थी। दुलारी उसे सदा यह आश्वस्त करती रहती थी कि उसमें कोई शारीरिक कमज़ोरी नहीं, उसमें कोई मानसिक कमजोरी नहीं, वह पूर्ण पुरुष है, पूर्ण समर्थ है, कमसे कम एक नारीके सम्पूर्ण हृदयका स्वामी है। यहाँ भी नसीरुद्दीन एक आस, एक चाहमें ही हर बार बह जाता था।

उसे कभी यह समझ ही न आयी कि दुनिया बरतनी क्योंकर चाहिए?

बादशाह बेगमने फरीदूनबख्त उर्फ़ मुन्नाजानकी शादी मुहसानुद्दौला की बेटीसे तय थी। वह नसीरुद्दीनके भविष्यको भी उसी तरह फाँस लेना चाहती थी जिस प्रकार उसने मुन्नाजान द्वारा अपने पति ग़ाज़ीउद्दीन हैदरको बाँधना चाहा था। परन्तु ग़ाज़ीउद्दीनके मंत्री आग़ामीरने बादशाह बेगमको बासबूत वही जवाब दिलवाया जो कभी उन्होंने नसीरुद्दीनकी बाबत कहा था। आग़ामीरने बादशाह गाज़ीउद्दीन हैदरको खुश करनेके लिए ऐसे सबूत इकट्ठा करवा दिये कि जिनसे मुन्नाजान धोबीकी औलाद सिद्ध होता था। बादशाह बेगम इस बार सतर्क थीं। वे बाँदियोंके गर्भसे मुन्नाजानकी सन्तान नहीं चाहती थीं इसलिए उम्र आनेसे पहले ही वे मुन्नाजानको अच्छे रिश्तेमें बाँध देना चाहती थीं।

मलिके जमानियाने अपनी सौतेली सासके यह नक्शे देख अपने नक्शे भी फैलाने शुरू कर दिये। उसने अपने बेटेका रिश्ता नसीरुद्दीनके चचा रुकुनुद्दौलाकी बेटीसे तय करनेके लिए बाँधनू बाँधने शुरू किये। उसने अपनी लड़कीका विवाह सम्बन्ध ग़ाज़ीउद्दीन हैदरके स्वर्गीय भाई शम्सुद्दौलाके बेटे नवाब मुमताज़ुद्दौलासे तय किया। उसने प्रतिदिन नसीरुद्दीनको घेरकर रेज़ीडेण्टको यह कहलाया कि कैवाँजाह ही उसका बड़ा बेटा है और वह उसे वलीअहद मुकर्रर करना चाहता है। इस बातको लेकर आगे बढ़नेमें आग़ामीर पोशीदा तौरपर मलिका ज़मानियाकी पूरी मदद कर रहे थे और राजा दर्शनसिंह भी उसके पूरे हिमायती थे। नतीजा यह हुआ कि दिसम्बरमें अँगरेज सेनापति लॉर्ड कोम्बरमियरके लखनऊ पधारनेपर कानपुरमें ही अवधराज्यकी ओरसे उनका स्वागत करनेके लिए प्रधानमन्त्री आग़ामीर और युवराज पदके उम्मीदवार कैवाँजाह गये थे।

जब बादशाह बेगमने यह ख़बर सुनी तो खीझमें अपने होंठ काट लिये। उन्होंने निश्चय किया कि आग़ामीरको मन्त्रिपदसे हटाना ही होगा। दुलारी और आग़ामीर मिलकर बादशाह बेगमको अवश्य परास्त कर देंगे।

राजमाताने मलिका ज़मानिया या कैवाँजाहके प्रति एक शब्द भी न कहते हुए हर रोज़ आग़ामीरके खिलाफ़ बादशाहके कान भरने शुरू किये। बादशाह बेगम नयी राजनीतिक परिस्थिति उत्पन्न करने लगीं।

२४

महा सेनापति लार्ड कोंबरमियर लखनऊ पधारे। बादशाहकी ओरसे उनकी बड़ी खातिरें होने लगीं। दावत, दरबार, जानवरोंकी लड़ाई, नायाब आतिशबाज़ी—सेनापतिके स्वागतमें लाखों रुपये पानीकी तरह बहाये जा रहे थे। नसीरुद्दीन हैदरको किसीकी खातिर-तवाज़ीह करनेमें कुछ आपत्ति नहीं पर किसीके सामने छोटा बनकर बैठना, दरबारी अदब क़ायदोंकी बंदिशमें रहना उसे बहुत खलता था। मनकी ऊँची नीची लहरोंके साथ उठने गिरने और बहनेवाला इंसान, पत्तेकी तरह चंचल, थिर क्योंकर बैठे यह समस्या थी। जबसे लार्ड कोंबरमियर आये तबसे उसे मनमानी करने की फ़ुरसत नहीं मिलती थी। झुँझलाहट लाज़िमी थी; करेलेपर नीम यों चढ़ा कि लाटसाहबने भी उनसे कहा: "योर मेजेस्टी, आपकी सल्तनतका इंतज़ाम ठीक नहीं है। रिआया तकलीफ़में है। सल्तनतकी आमदनी दिनोंदिन कम होती जा रही है।"

शाहेअवध चिढ़ गये, अपने आपको सँभालनेकी बेहद कोशिश करते हुए भी उनके मुँहसे निकल गया: "इसकी शिकायत आपको मेरे वज़ीरसे करनी चाहिए। मुझे गद्दीनशीन हुए अभी चंद महीने ही गुज़रे हैं। दो-तीन माहके अरसेमें मेरी सल्तनतमें कोई क़यामत बरपा नहीं हुई, कमसे कम मुतमातुद्दौला आग़ामीरने मुझे यह यक़ीन दिला रक्खा है।"

आग़ामीर वहीं मौजूद था, उसकी बाज़की चोंच जैसी नाकके नकसोरे फड़फड़ा उठे, स्याह चेहरेपर एक झाईं और चढ़ गई। वह रेज़िडेण्टकी

कुर्सीके पीछे ही खड़ा था, झुककर अदबसे बोला : "ज़िल्ले सुब्हानी, यह फ़िदवीकी खुश क़िस्मती है कि साहबे आलीशान यहाँ तशरीफ़फ़रमा हैं। फ़िदवीके सिरपर बड़ोंका साया है।"

साहबे आलीशान हुज़ूर रेज़ीडेण्ट साहबके चेहरेपर परेशानी झलकी, कुछ तेवर भी चढ़े और फिर करीनेसे सम्हल कर मीठी भाषामें हुज़ूर लाट साहबसे फ़रमाया : "मुतमातुद्दौला सल्तनतके पुराने नमकख्वार हैं योर एक्सेलेंसी।"

बात ज़ाहिरा तौर पर आई गई होगई पर इसका असर बहुत दूर तक हुआ। बादशाहबेगम बहुत खुश हुईं। उन्होंने रेज़िडेन्सीके मीर मुंशीको बुलवा कर खातिरबात नज़राने आदिसे संतुष्ट कर उनकी मार्फ़त लार्ड कोंबरमियर और रेज़ीडेंट मार्डेएट रिकेट्स साहबको बहुत कुछ कहलाया। उन्होंने कहा कि आग़ामीर सल्तनतकी तमाम दौलत लूट कर अपना घर भर रहा है। साहबाने आलीशान उसकी जायदाद देखकर ही अन्दाज़ लगा सकते हैं। जन्नत मकानी ग़ाज़ीउद्दीन हैदर शाह भी आग़ामीर की हरकतसे बुरी तरह आजिज़ आ चुके थे। वह बादशाह ग़ाज़ीउद्दीनको शराब पिलाकर नशेमें अपने लिए बड़ी-बड़ी रक़में लिखवा लेता था। उन्होंने उसकी अनेक शिकायतें कीं, प्रजा पर उसके अत्याचारोंकी अनेक कहानियाँ बासबूत भेजीं और साथ-ही-साथ यह भी कहलवाया कि हुज़ूर कम्पनी बहादुरके तमाम आला ओहदेदारान यहाँसे लेकर कलकत्ता तक जानते हैं कि आग़ामीर बादशाहबेगम और नसीरुद्दीन हैदरका पुराना दुश्मन है। उसकी जानिबसे शाही सुरक्षाको खतरा है।

आग़ामीरने तुरन्त ही मलिका ज़मानियाकी शरण ली और उसे यहाँ तक विश्वास दिलाया कि अगर इस मौक़े पर मलिका ज़मानियाकी सिफ़ारिशसे बादशाह सलामत उसके लिए अँगरेज़ों पर ज़ोर डाल देंगे तो वह अवधकी सल्तनतको अँग्रेज़ोंके बहुत बड़े बोझसे बचानेका बीड़ा उठा लेगा। आग़ामीरने मलिका ज़मानियाको बहुत-सी शासकीय बातें गुप्त

और महत्त्वपूर्ण तथा अन्देशेभरी कह कर बतलायीं। उसने कहा कि अँग्रेज़ नसीरुद्दीन हैदरके मनमें मैल डालकर आग़ामीरको सल्तनत से अलग करना चाहते हैं ताकि उन्हें अवधकी आधी बची हुई सल्तनत भी हड़प जानेका मौक़ा मिल जाये। उसने धमकाया कि अगर नसीरुद्दीन हैदर अँग्रेज़ों या बादशाह बेगमके बहकावेमें आकर उसे अलग करेंगे तो यक़ीनन् उन्हें बहुत बड़ा नुकसान उठाना पड़ेगा और मलिका ज़मानियाँके सारे सपने भी मनकी खूँटी पर ही टँगे रह जायेंगे। वह विलायतसे लिखा पढ़ी कर इस बातके सबूत दे देगा कि कैवाँजाह नसीरुद्दीन हैदरकी औलाद नहीं। आग़ामीरने यहाँ तक धमकी दी कि अपनी बातके प्रमाण स्वरूप वह मुहम्मद अली उर्फ़ कैवाँजाहके असली पिता रुस्तम अलीको भी गवाही के तौर पर कलकत्तेके हुज़ूर गवर्नर जनरल साहबके दरबारमें पेश कर देगा।

मलिका ज़मानिया आतंकित हो उठीं; उन्होंने बड़े ही कौशलसे नसीरुद्दीनके सामने आग़ामीरकी वकालत की। बादशाह सलामत उसके सामने यह प्रण कर गये कि वे अड़ जायेंगे और आग़ामीरको वज़ीरके पद पर अपने पिताकी तरह ही प्रतिष्ठित रखेंगे। उन्होंने खुद आग़ामीरको बुलाकर इस बातका आश्वासन दिया।

लेकिन कम्पनी सरकारके गोरे अफ़सर भी अब आग़ामीरको हटानेके लिए कटिबद्ध हो चुके थे। आग़ामीरके पास ऐसे अनेक प्रमाण थे जिनसे खुद रेज़ीडेण्ट साहब तक फँस सकते थे।

अँगरेजोंने सआदत अलीखाँ और ग़ाज़ीउद्दीन हैदरके शासनकालसे ही अवधके वज़ीरोंको सदा अपनी गोटी बनाकर खेला था। अँगरेज तरह-तरहसे रुपये झटकनेके लिए आयेदिन तरकीबें करते थे। वज़ीरअलीके ज़मानेमें एक करोड़ बारह लाख पचास हज़ार रुपया झटकते थे, सआदत अलीखाँसे सर जॉनशोरने एक करोड़ बयालीस लाख पचास हज़ारका सौदा किया और वज़ीरअली दूधकी मक्खीकी तरह निकाल कर फेंक दिया गया।

सआदतअलीखाँने बड़े जतनसे अपने राज्यका ख़ज़ाना भरा और अँगरेज़ोंने कसते-कसते उसका आधा राज्य ही हड़प कर लिया। हकीम मेहदीअलीख़ाँ नायब थे, अँगरेज़ उनके बहाने नवाब वज़ीरको कसते थे। जब सआदत अलीख़ाँको दुह लिया तो हकीम मेहदी अँगरेजोंकी नज़रमें दुर-दुर मारे हो गये। सन् १८१३ में हकीम मेहदीपर कोड़े तक बरसे थे। ग़ाज़ीउद्दीन हैदरके गद्दीपर बैठनेके बाद जब अँगरेज़ोंको अवधकी सरकारसे रुपया झटकनेका कोई बहाना न मिला तो आग़ामीरको बढ़ावा देना शुरू किया। उसके द्वारा ग़ाज़ीउद्दीन हैदरको दो करोड़ रुपया देनेको मजबूर किया और जब उसकी एवज़में ग़ाज़ीउद्दीनको बादशाह बनाया तो शाही सिंहासन बनवानेकी सलाह और ज़ोर देकर इसी आग़ामीरकी मार्फ़त अँगरेज़ोंने राज्यकोषसे बहुमूल्य हीरे, माणिक, मुक्ताओंकी चोरी करवा ली। ब्रह्मदेशमें अँगरेज़ोंकी लड़ाईके समय आग़ामीर उनके बड़े काम आया। ग़ाज़ीउद्दीन हैदरको शराबके नशेमें धुत्तकर आग़ामीरने एक करोड़ रुपया अपने नाम लिखवा लिया और दूसरे ही दिन कम्पनी सरकारके यहाँ वह एक करोड़ आग़ामीरके नाम जमा हुआ। कम्पनीके डाइरेक्टरों और गवर्नर जनरलके हुक्मसे एक रक्म कम्पनीके लिए लूटी जाती थी और उसके साथ घातेकी रक्मके तौर पर रेज़ीडेण्ट, आग़ामीर और छोटे बड़े गोरी काली सरकारके अमले चाट जाते थे। रेज़ीडेण्ट जानता था कि आग़ामीर उसे फँसा [illegible] है इसीलिए वह भी बादशाह बेगमका हिमायती हो गया और [illegible] कोम्बर मीयरके सामने आग़ामीरका एक भयानक व्यक्तिके रूपमें वर्णन उसने किया।

तय हुआ कि एक अति गोपन गोष्ठीमें हुज़ूर लाट साहब, साहबे आलीशान हुज़ूर रेज़ीडेण्ट साहब और आक़ायेआलम हुज़ूर नसीरुद्दीन हैदर साहब ऊँची नीतिके मसलोंपर बात करेंगे।

बादशाह बेगमको यह सूचना मिल चुकी थी कि दुलारीके कहनेसे नसीरुद्दीन आग़ामीरका दम भरने लगा है। बादशाह बेगमने दुलारीकी

शक्तिका पूरा-पूरा अन्दाज़ रखते हुए भी इस कठिन मोर्चेपर विजय पाने का दृढ़ निश्चय किया। उन्होंने नसीरुद्दीन हैदरको धमकी देकर कहा कि यदि वह उनके पुराने शत्रुको किसीकी भी सिफ़ारिशसे बल देगा तो वे हज़रत अब्बासकी दरगाहमें जाकर आत्महत्या कर लेंगी। इस धमकीके दुलारी और आग़ामीरको दिये हुए अपने वचनको नसीरुद्दीन चटपट भूल गया।

तीनों महाप्रभुओंकी विचारगोष्ठी बैठी, रेज़ीडेण्ट लाटसाहबके कान भर चुके थे, बादशाह सलामतने भी वही बातें कीं; सुनकर लार्ड कोम्बर-मीयरने कहा कि शाहे अवधको अपनी सल्तनतमें हर अधिकार प्राप्त है, वे आग़ामीरको पदच्युत कर सकते हैं, उसे गिरफ्तार करा सकते हैं। लाट साहबने यह भी पूछा कि आग़ामीरका पद किसे दिया जावेगा? बादशाह ने राजमाताकी इच्छानुसार मीर फ़ज़लअलीका नाम पेश किया। अँगरेज़ों को कोई आपत्ति न थी क्योंकि अवध राज्यसे उन्हें अब और कुछ मिलनेकी आशा न थी। अवधके शासनको अधिकाधिक बुरा बनाकर निकट भविष्यमें प्रजाकी जानमालकी रक्षाका नारा बुलन्दकर वे इस आधे राज्यको भी हड़पकर जाना चाहते थे।

नसीरुद्दीन आग़ामीरसे डरता था। उसने रेज़ीडेण्टसे कहा कि आग़ा-मीरको बहानेसे वह उनके पास भेजेगा, वे उसे गिरफ्तार कर लें।

नसीरुद्दीनहैदर और आग़ामीरकी भेंट हुई। नसीरुद्दीनने आश्वासन दिया कि लाट साहबसे उनकी बातचीत हो चुकी है जिसके फलस्वरूप मंत्रिपदपर आग़ामीर ही बने रहेंगे।

दूसरे दिन सुबह लखनऊमें मीर फ़ज़लअली और उनकी फूफी फ़ैज़ुन्निसा बीबी दिखलाई दीं। मीर फ़ज़लअलीको शाही महलोंके फाटकपर देखा गया। ग़ाज़ीउद्दीन हैदरके शासनकालसे, बरसोंसे बादशाह बेगमके ये दोनों प्रिय पात्र आग़ामीरके कुचक्रके कारण बाहर ही रहते आये थे। उनका अचानक शहरमे दिखाई पड़ना तरह-तरहकी गर्म अफ़वाहोंका

कारण बन गया। आग़ामीर सकपकाया हुआ बादशाहके ख़िदमतमें दौड़ा गया। बादशाहने उसके शकको हँसकर टाल दिया और फिर-फिर उसे आश्वासन दिया।

बीस दिसम्बरकी सुबह आग़ामीर बादशाहको सलाम करने गया। बादशाहने नायाबत की वह ख़िलअत आग़ामीरको दिखलाई जो उन्होंने उसके लिए बनवायी थी। उन्होंने कहा कि इसके पेश्तर कि ख़िलअत बख्शी जाय तुम्हें रेज़ीडेण्ट साहबके पास जाना होगा और जो हिदायत वह दें उसें बसरोचश्म बजा लाना होगा।

आग़ामीर ख़ुशी-ख़ुशी रेज़ीडेंसी गये। रेज़ीडेण्टने उन्हें बाइज़्ज़त कुरसी दी, कुछ इधर-उधरकी बातें कीं और जैसे वह विदा लेकर उनके कमरेसे बाहर निकला वैसे ही कैप्टन सैमुएल पिचकी कमानमें अँगरेज़ सोल्जरों की दो कम्पनियोंने उसे घेरकर गिरफ्तार कर लिया और उसकी तलवार रखवा ली।

सुतमातुद्दौला मुख्तारुल्मुल्क सैयद मुहम्मदखाँ बहादुर ज़ैग़ामजंग आग़ामीर साहब जिन्होंने बड़े-बड़े ख़ान्दानी अमीरोउमराकी नाकें रगड़वा बड़े-बड़े तीसमारखाँ लोगोंकी चीं बुलवा दी थी, जिन्होंने बादशाह बेगम को नाकों चने चबवाये और ग़ाज़ीउद्दीन हैदरशाहको मनमाना उँगलियों पर नचाया था, इस विषम नाटकीय परिस्थितिके सामने घुटने टेक गये। उन्होंने बहुत गिड़गिड़ाकर रेज़िडेण्टसे प्रार्थना की कि वे उनकी पगड़ी सरेआम उछाली जानेसे बचा लें। उनकी प्रार्थना स्वीकार की गई। अँगरेज़ सिपाहियोंकी निगरानीमें हाथीपर सवार करा उन्हें उनके घर भेज दिया गया।

बादशाह बेगमने सोचा था कि आग़ामीर जब गिरफ़्तार होकर उनके क़ब्ज़ेमें आयगा तो मनमाने ढंगसे उससे बरसोंका बदला निकालेंगी, पर जब उनकी साध इस तरह अनबुझी ही रही तो स्वयं रेज़िडेण्टको पत्र लिखकर शाही-अपराधीकी माँग की। रेज़िडेण्टने अस्वीकार कर दिया।

बादशाह बेगमने डेढ़ लाख रुपये तककी रिश्वत देनी चाही, पर चिथड़े उड़ानेके लिए आग़ामीर उन्हें न मिल सका। वह अँगरेज़ी सुरक्षामें कानपुर चला गया।

परन्तु बेगम इतनेसे ही सन्तुष्ट हो जानेवाली न थीं। उन्होंने नसीरुद्दीनको सलाह दी कि आग़ामीरके नाते-रिश्तेदारों दोस्त अहबाब, हर एकके घर घेर लिये जाँय, उनपर शाही पहरा बैठा दिया जाय और उन सबके साथ ऐसा सलूक किया जाय कि फिर किसीको इस तरह सिर उठाने की हिम्मत ही न हो। बादशाह बेगमने अपने बादशाह-पुत्रको प्राचीन कालके बादशाहोंकी नज़ीरें दीं, कहा, वे लोग ऐसे नमकहरामोंके घर खुदवाकर उस ज़मीनपर गधेका हल चलवाते थे, उनके खान्दानवालों रिश्तेदारोंको कोल्हूमें पिलवा देते थे, भंगीके हाथों जूते लगवाते थे—और इन्हीं सब उपायोंसे प्रजापर अपना आतंक स्थापित करते थे।

बादशाह सलामतने अपनी माताको पुराने शासनकर्ताओं द्वारा सिद्ध की गई आतंककारिणी पद्धतियोंका प्रयोग करनेकी पूरी छूट दे दी और इन तमाम शासकीय दर्देसिरसे घबराकर शराबकी गोदमें दुबक गये।

२५

गोमतीपार अहिबनपुर गाँवकी सीमापर पँच-बरगदियातले छोटे-छोटे फूस और चिथड़ोंके झोंपड़े पड़े थे। एक तम्बू भी था जो नफ़ासतकी दुनियामें निहायत बोसीदा और गन्दा माना जाने लायक़ होकर भी उन छोटी-छोटी झोपड़ियोंके बीच राजमहल-सा लगता था। कञ्जरोंने डेरा डाला था और राजधानीमें प्रवेश करनेसे पूर्व वे अपने पेशेकी तैयारियोंमें लगे हुए थे। लड़कियाँ तेल और गोंदसे अपने सिर की पटिया चिपकाकर गिलट के गहने पहन लखनऊके बाज़ारोंमें गा-गाकर भीख माँगनेके लिए सजने लगीं। चिरैतुआ अपनी दाहिनी टाँगपर चिकचिकाता तेल मल उसपर गेरू और चूनेसे सफ़ेद कोढ़के दाग़ लगाने लगा। वह कमरमें टाट बाँध-

कर इन दाग़ोंके ऊपर राव छोड़कर उनपर भिनभिनाती मक्खियोंकी सेना लेकर जनसाधारणकी सदाशयतासे भीख माँगने जाने लगा। फक्कूने गरम मोमसे अपनी पलकोंके पपोटे रगड़-रगड़कर इतने मोटे और भद्दे बना लिए हैं कि केवल आँख मींचते ही वह अन्धा जँचने लगता है। जोखन के पास पहाड़ी जड़ी-बूटियाँ हैं, साँडेका तेल है, शेरकी नाफ़ है, जाने क्या-क्या जवानीको मज़बूत बनानेके करिश्मे हैं जिन्हें खोल-खोलकर अलग पोटलियोंमें बाँधते हुए वह खारवेके झोलेमें डालता जा रहा है; घड़ीभर बाद लखनऊकी सड़कोंपर माल बेचता नज़र आयगा। प्रौढ़ा स्त्रियाँ भी बीमारियोंके टोने टोटके लिये शहर जानेको तैयार होने लगीं। सत्तर-अस्सी आदमियों औरतों और बच्चोंकी बस्ती नये शहरमें अपना करतब दिखलानेके लिए तय्यार होने लगीं। कञ्जर भीख माँगते हैं, जड़ी-बूटियाँ बेचते हैं, हाथ सफ़ाईके खेल दिखलाते हैं। वे अपनी लड़कियोंसे वेश्यावृत्ति कराते हैं और बहुओंसे अपनी चलती-फिरती बस्तीका प्रबन्ध। चोरी, हत्या, आगज़नी, मारपीट, ख़ूबसूरत लड़कियों-लड़कोंको उड़ाना आदि काम उन्हें ख़ूब आते हैं। वे इसमें माहिर होते हैं और शहरोंके कारसाज़ किरायेपर उनकी सेवाएँ लेकर उनसे मनमाने काम कराते हैं। बकरियाँ-बकरे, दो चार गाड़ियाँ बैल, कुत्ते आदि उनकी पँचबरगदिया तलेकी नयी बस्तीके चारों ओर एक घेरेमें फैले हुए थे। प्रौढ़ाएँ "सींगी लगावैं, दर्द झाड़ैं, बाई निकालैं" की आवाज़ एक ख़ास कर्कश ढँगसे लगाती हुई कन्धोंपर झोले डाले शहरकी ओर चल पड़ीं। लड़कियाँ अपने साथियों, चिकारेवाले और ढोलकियोंसे इसरार करने लगीं कि जल्दी तय्यार हों, जल्दी चलें। जवान लड़कियों और औरतोंके लिए लखनऊका नाम और जादू बहुत बड़ा था। सामने ही गोमती पार आसफ़ुद्दौलाके इमामबाड़े, बाबरी मस्जिद और गढ़ी मच्छी भवनके दूर तक फैले हुए कलश, कँगूरे, मीनारें उन्हें ललचा रहे थे। लखनऊमें बादशाह रहता है, लखनऊकी सड़कोंपर दौलत बिखरी हुई है, लखनऊमें ख़ूबसूरत औरतों

की बड़ी क़द्र और माँग है; लखनऊकी महारानी पहले उनके जैसी ही एक मामूली-सी औरत थी, बादशाहकी नज़र पड़ते ही पटरानी बन गयी। ये सारे क़िस्से बस्ती-दर-बस्ती घूमते हुए इन कञ्जर लड़कियों और औरतोंके कानोंमें ख़ूब पड़ चुके थे। हरएक एक दूसरेसे उजागरमें मज़ाक करते हुए परन्तु मन ही मन गम्भीर महत्वाकांक्षाके साथ यह कल्पना करती थी कि उसकी ख़ूबसूरती किसी नवाब रईस या बादशाहको अवश्य खींच लेगी और वह गिरोहके चौधरी गज्जर बप्पाको मोटी-सी रक़म देकर उसे खरीद ले जायँगे, महलोंमें ले जायेंगे, ऐश कराएँगे—लड़कियों औरतोंने इस उत्साहसे अपना सिंगार-पटार किया था। वे शहर चलने की उतावली मचा रही थीं लेकिन गज्जर बप्पाका अभी हुकुम नहीं मिला था। भिखारी, बाजीगर, दवाफ़रोश, बूढ़ी ख़ुर्राट औरतें पहले बस्तीमें जाकर थोड़ी बहुत टोह ले आयँगी, शहरके लोगोंको देख-परख आयेंगी, मुहल्ले समझ आयेंगी तब नाच-गाकर भीख माँगनेवाली लड़-ड़ियोंका दल जायगा। ये लड़कियाँ दलकी सर्वश्रेष्ठ सम्पत्ति हैं। उनके सहारे ही रोज़ शिकार फँसाये जाते हैं, चोरीके बहाने खुलते हैं, इन्हें लखनऊमें सहसा छोड़ देनेके लिए गज्जर चौधरी तैय्यार न था। लखनऊ का क्या ठिकाना, बड़ा शहर है, अनजान गलियोंमें जो ये लड़कियाँ भटक जायँ तो सीधे गुण्डोंके हाथ ही पहुँच जायँगी। गज्जर चौधरी जो ख़ूबसूरत लड़किकोंको उड़ानेका धन्धा करता था, स्वयं अपने दलकी लड़कियोंका दूसरोंके द्वारा उड़ा लिया जाना हरगिज़ पसन्द नहीं कर सकता था। जब दो-चार लोगोंके बार-बार कहनेपर भी लड़कियाँ उतावली दिखाने लगीं, अपने संगियोंसे झगड़ पड़ीं, काँव-काँव मची तो गज्जर बप्पा अपने तम्बूसे बाहर निकले। गज्जरकी ऊँचाई औसतसे लम्बी थी, देह चौड़ी कसरती बड़े-बड़े चुचुआते लहरिया बाल गलमुच्छे और काला रंग मिलकर उसकी आकृतिको क्रूर बना देते थे। गज्जर बप्पाकी एक गरजने लड़कियोंके पित्ते ठण्डे कर दिये। गज्जर बप्पा बड़ा ही सख्त आदमी है। जो उसकी

मर्ज़ीके ख़िलाफ़ चले वह चाहे पाँच बरसका बच्चा हो या अस्सी बरसका बूढ़ा दोनोंको एक ही निर्ममतासे सज़ा देता है। स्त्रियों को सज़ा देनेके ढंग भी उसके ज़मानेसे एकदम निराले हैं। शरीफ़ उन तरीकोंका चर्चा अपनी ज़बानपर लाना भी बुरा समझते हैं। अपने दलके बच्चे-बच्चेपर गज्जर बप्पाका कड़ा अनुशासन था।

लड़कियाँ ख़ामोश इधर-उधर बैठ गयीं। गज्जर चारों ओर एक नज़र डालकर फिर अपने तम्बूमें लौट गया। उसके तम्बूमें इस समय बेशक़ीमती माल था, दो छोटी उम्रकी अति सुन्दरी लड़कियाँ उसके साथ थीं जिन्हें लखनऊमें बेचकर हज़ार दो हज़ार तक कमानेके सपने वह पिछले तीन महीनोंसे देख रहा था। एक लड़की कानपुरमें गंगा नहानसे उड़ाई गयी थी; पानीके अन्दर ही अन्दर नहाती हुई एक गहनों से लदी औरतका निशाना साधकर गज्जरने डुबकी लगाई थी साथमें एक लड़की भी हाथ लग गयी। उसके हाथोंमें जड़ाऊ कंगन देखकर गज्जर लोभ न रोक सका था परन्तु पानीके अन्दर दूर तक खींच कर सन्नाटेकी जगह लड़की और औरतको बाहर लाने पर गज्जरने देखा कि औरत मर चुकी थी लेकिन लड़की अच्छी ख़ूबसूरत थी।

दूसरी लड़की गंगानहानसे महीना भर पहले इमामबख्श नाज़िमके ख़ास आदमी करामतहुसैनके द्वारा दल सहित किराये पर जाकर कुसुम्भीके मेलेमें राजा रघुनन्दन सिंहके पड़ाव पर नकली छापा मारकर उड़ाई थी। करामतहुसैन लड़कीको बेचना चाहते थे, गज्जरने अपने दलके किरायेकी रक़ममें उस लड़कीको खरीद लिया। इस प्रकार दो सौ रुपयेमें कुलसुम बिककर गज्जरके पास आयी थी और इस समय गज्जरके तम्बूमें थी।

गंगाजी वाली लड़की अब बुत बन गयी है। उसके हाथ पैर खोल दिये गये हैं, खाली तम्बूसे बाहर निकलनेकी मनाही है, आपसमें बोलनेकी मनाही है। मगर कुलसुमके हाथ और पैर अब तक बाँधे जाते हैं। गज्जरने तम्बूमें प्रवेश किया। गंगावालीके चेहरे पर बरफ़ जम गयी, फटी

आँखोंसे उसके भयानक चेहरेको देखती ही रह गयी। कुलसुमने आहट महसूस की मगर सिर न उठाया। गज्जर गर्जा, गंगावालीसे बोला : "उठ।"

वह उठी।

"कपड़े उतार।" उसने सहमते हुए कपड़े उतारने शुरू किये।

"मटकेमेंसे पानी निकाल!"

उसने गड़ुए और गिलासको चुननेमें गड़बड़ी की, गड़ुआ मटकेके मुँहमें न जा सका, टकराया उसने डरी आँखोंसे गज्जरको देखा, काँपते हाथोंसे गड़ुआ गिरा दिया फिर राक्षसकी ओर ही टकटकी साधे हुए ज़रा नज़र साधकर गड़ुआ ठीक रखा, गड़बड़में गिलास उठाया और भर लिया।

"नहा!"

पाले की सर्दीमें ठंढा पानी लड़कीके बदन पर उसीके काँपते हाथोंसे पड़ने लगा। सात आठ बरसकी बच्चीका सारा बदन सर्दी और भयके कम्पनसे विवश हो इतना लड़खड़ा उठा कि अपने ही नहाये पानेकी फिसलनमें उसके पाँव न टिक सके, वह धूलमें लोट गयी।

गज्जर उसकी ओर बढ़ा। लड़की समझी कि वह उसे मारने आ रहा है। विविया कर बाहें पसार दी, चीखकर रो उठी : "अभी उठती हूँ, मुझे मारो मत; मारो मत, माऽरो मऽत!"

गजरके पास आते ही उसके पैरोंमें अपनी दोनों नन्हीं बाहें डालकर लड़की चीखकर अकड़ गयी, बेहोश हो गयी!

कुलसुम घुटनों पर सिर टिकाये तड़पती नज़रोंसे देख रही थी। गज्जरने झटकेसे उसकी बाहें खींचकर हटाईं उसके बेहोश शरीरको एक हाथसे खींचकर खड़ा किया और फिर दूसरेसे टाँग उठाकर टूटी चटाई पर लिटानेकी पूरी नीयतके साथ फेंक सा दिया।

कुलसुमकी ओर देखा, कुलसुम टकटकी बाँधकर उसे देखती रही। इतनी मार खायी, भूखी रही, उठा उठाकर धमाधम पटकी गयी, दिनों हाथ पैर और मुँह बाँधकर रक्खी गयी, अभी तक बँधी रहती है पर उसकी आँखोंमें गज्जरका डर नहीं समाया। कुलसुमकी ज़बान नहीं बोलती, दृष्टि बोलती है। गज्जर उससे हार गया है, नफ़रत करता है। दलके बड़े-बड़े कहते हैं कि ऐसी ज़बर लड़की बरसों बाद हाथ लगी है। लेकिन ग़ज़बका माल है, शाही महलोंकी दल्लाला अम्मन और अमामनके हाथ बिकेगा।

गज्जरने कुलसुमके पास आकर उसके हाथ पैर खोले, कहा : नहाले और ये कपड़े देता हूँ, बदल! उसके मुँहपर छींटे मारकर होशमें ला, उसे भी नहला। उसके भी कपड़े रक्खे जाता हूँ। झटपट तैयार हो जा।"

गज्जर आज्ञा देकर नन्हीं सी लड़कीसे बग़ैर नज़र मिलाये बाहर चला गया। वह जानता था कि उसके उपस्थित रहने पर कुलसुम उसकी आज्ञाका पालन नहीं करेगी।

गज्जर तम्बूके बाहर आकर धूपमें टहलने लगा, पाँच बड़े-बड़े जटा-धारी बरगदोंकी घनी छाँवमें सीलन बरस रही थी। दलकी झोपड़ियोंको तनिक आड़में रखनेके लिए ही गज्जरने यह जगह चुनी थी।

ठीक दोपहर थी। फेंकुआ दौड़ता हुआ आया। "गज्जर बप्पा, गज्जर बप्पा, सहरमें लूट होगी।"

गज्जर बप्पाने आँखें फाड़कर उसे देखा। फेंकुआ बोला : "मैं अभी पुलपार सहरमें गया था। सुना है कोई बहुत बड़े वजीर पकड़े गये हैं। गोरोंने पकड़ा है औ बास्साकी तरफसे वजीरका महल लूटा जा रहा है। बाजारमें सब लोग कहते थे कि वजीरके सब नाते रिस्तेदार और बहुतसे लोग लूटे जायँगे।"

गज्जर बप्पाके मनमें बड़ा तूफ़ान मचा; लक्ष्मी छप्पर फाड़े आ रही थी। वे चाहते थे कि झटपट शहरमें किसी गिरोहसे समझौता कर बहती गंगामें हाथ धो लें। लेकिन लूट होगी, भगदड़ मचेगी, हम एक तरहसे शहरमें ही है, पुल पारकर लोग इधर भी भागेंगे, बरगदोंकी आड़ होते हुए भी कोई आड़ नहीं, गुण्डोंका क्या ठिकाना, हमारी औरतें भी तो हैं। गुण्डोंका सरदार ज़मानेके गुण्डोंसे अपने गिरोहकी स्त्रियोंको बचानेके लिए चिन्तित था। वह समय ऐसा था कि औरत अगर तनिक भी जवान हुई तो अशर्फ़ियोंकी लूटमें उसके साथ बलात्कार करना गुण्डोंको शराबके नशेसे ज़्यादा जोश देता था। लूटके वक्तमें नशीली चीज़ों और औरतकी लूट इसीलिए सबसे ज़्यादा सरगर्म होती है कि उससे गुण्डोंमें क़त्ल करने और सोना चाँदी लूटनेकी भयानक शक्ति उत्पन्न हो जाती है। गज्जर बप्पाने फेकुआसे कहा कि हड़बड़ाना भूलकर वह सावधानीसे तम्बूके पास रहे। बस्तीकी सारी लड़कियाँ अपना सिंगार पटार उतारकर तुरत गंदी मैली हो जायँ। कोई अपनी झोपड़ीसे बाहर न निकले। लड़के लड़कियोंके पास न बैठने पायें। सब पेड़के किनारे घेरा डालकर सावधान होकर बैठें। ढोर बकरी बरगद तले ले लिये जायँ और नज़र चाक चौबन्द रहे—"मैं अभी आता हूँ, भला।"

शहरमें लूट मची है। आग़ामीरने बरसोंमें करोड़ोंकी सम्पत्ति कमाई थी। शाही हाथियोंसे रस्मी तौरपर कुछ ही कम उसके पास थे। शाही अश्वशालासे अधिक क़ीमती और नायाब घोड़े उसकी अश्वशालामें थे। कम्पनीके काग़ज़ोंमें उसकी लाखों करोड़ोंकी सम्पत्ति सुरक्षित थी, लाखोंका वैभव उसके महलमें सजा था। शाही खज़ानेमें रुपया वापस लानेके लिए फ़ौजनुमा पुलिस भेजी गयी। फ़ौजी प्रधान राजा दर्शनसिंहके घर भी लूटका हिस्सा पहुँचा, मीर फज़ल अलीके यहाँ पहुँचा, राजा बख्तावर सिंहने पाया; बादशाहके मुँहलगे सैयद कोका और दलजीतसिंह खवासको पटाये बिना चल नहीं सकता था इसलिए वे भी पटे; शाही फ़ौजके

आदमियोंके साथ हर दूसरे शक्तिशाली प्रतिद्वन्द्वी अमीरो उमराके सिपाही भी थे। लूटमें सबका हिस्सा था, दर्जेके हिसाबसे नियत था। एक शक्तिशाली ओहदेदार गिरा, उसके सहारे शक्ति पानेवाले अनेक अमीरो उमरा अनेक अमले साहूकार जौहरी बज़ाज़ इत्रफ़रोश कई पेशेवाले गिरे। आग़ामीरके दमपर शाही महलोंसे हजारों लाखों कमानेवाले हर व्यक्तिकी ओर ज़मानेकी उँगली उठी, अमीरोंकी प्रतिद्वन्दिता जंगलकी आगमें आँधी सी मदद देने लगी। शहरके टुटपुँजिए गिरहकट चोर तक, शाही सिपाहियोंके जोड़ीदार बाँके उस्तादोंके गिरोहोंके साथ शेर बने बड़े बड़ों की हवेलियों पर फावड़े चलाते थे। उनकी सेंध मारनेकी कला तीन दिनों तक रातके अँधेरेमें नहीं बल्कि दिनके उजालेमें बड़े विद्रोहके साथ प्रदर्शित होती रही। आदमी जब अपने गुनाहको खुले आम ईमान बनाकर घोषित कर देनेका अवसर पा जाता है तब सत्य उसके अन्दरसे बीभत्स रूपमें ही फूटता है। शाहे अवधकी राजधानीमें, हिन्दुस्तानके पेरिसमें, बादशाहके ज़ेरसाये और बादशाह बेगमके इशारेपर एककी लूटके बहाने शहरकी लूट मच रही थी। जो आँचमें जल चुके थे उनका करुणतम रूप सामने आ रहा था; जो बचे थे वे भयभीत थे। शहरमें बड़े बड़े मुहल्लोंमें तीन दिनोंमें जाने कितनी हवेलियाँ खँड़हर हो गयीं। गलियाँ, झाड़-फ़ानूसोंके चूरे, चीनी तश्तरियों, मामूली बर्त्तनों और रईसोंके घरमें कबाड़खानेके बोसीदा मालके टूटे हुए टुकड़ोंसे भर गयी। क़ीमती कपड़ोंके बड़े बड़े काठके सन्दूक़, पलंग, कुर्सियाँ, चाँदी सोना जिधर देखो उधर चार चार छह-छह आदमी लादे लिये जा रहे हैं, दूसरे गिरोहोंकी लूटसे बचानेके लिये हर गिरोहवाले उन्हें घेरकर निकाले लिये जा रहे हैं। जो जिसके हाथ लगता है, उड़ा ले जाता है। नौकर बाँदियाँ तक सताये गये, नथ-बालियोंके फेरमें बहुतोंके कान नाक नुचे, बड़े बड़ोंकी बुरी गति हुई।

तब तीसरे दिन रेज़िडेण्टके आदेशसे शाही हुक्म जारी हुआ। शहर में अमन हुआ और उसी दिन आग़ामीरको दिखलाई गई खिलअत

बादशाह बेगमके परम विश्वासपात्र मीर फ़ज़लअलीको पहनाई गई। मीर फ़ज़लअली अब एतमातुद्दौला ज़िआउलमुल्क मीर अली सोहराब जंग के बड़े बड़े खिताब पाकर बादशाहके बाद अवधमें दूसरे सबसे बड़े आदमी हो गये। जो अमीरो उमरा कल तक आग़ामीरकी एक नज़र-इनायतके तावेदार बने रहते थे वे मीर फ़ज़लअलीके लिए पलक पाँवड़े बिछाने लगे। बादशाह बेगमका सिक्का और बैठ गया। लोगोंको लगता था कि अब दुलारीका बेटा कैवाँजाह पिट जायगा। बादशाह बेगम वली अहदका ओहदा मुन्नाजानको दिलाकर ही रहेंगी।

लेकिन दुलारी—मलिका ज़मानिया—इतनी आसानीसे हारनेवाली न थी। उसके हारनेका प्रश्न ही नहीं उदय होता था, वह नसीरुद्दीन हैदरशाहके गले पड़ी जादूकी पुड़िया थी, आलमपनाहके आत्मविश्वास की टेक थी। यह सच है कि माँके सौतेलेपनका कुछ-कुछ इतिहास जानते हुए भी नसीरुद्दीन बड़ा मातृभक्त था। बादशाह होनेके बाद वह नित्य नियमसे बादशाह बेगमके दर्शन करने जाता था। नसीरुद्दीनने अपने होशसे लेकर आज तक बादशाह बेगमसे बड़ा लाड़-प्यार पाया है। बादशाह बेगम सदा उसका मन हाथोंमें लिये रहती थीं। अपने शुद्ध आचरण और धार्मिक निष्ठासे भी उन्होंने नसीरुद्दीनको अत्यधिक प्रभावित किया था। परन्तु यह सब होते हुए भी दुलारीने आकर दरार डाल दी थी। दीन-हीनकी बेटी-बहू, चंचल और हठीली दुलारीके जीवनमें जब अनहोना अवसर आया तो वह नसीरुद्दीन हैदरसे योग साधकर बैठ गई। नसीरुद्दीनमें धार्मिकता थी, दुलारी शिया मतके सारे इस्लामी व्रत नियम संयम बड़ी कठोरतासे बरतती थी। नसीरुद्दीन बच्चा था उसे दुलार और झिड़की दोनों ही की हरदम बड़ी आवश्यकता रहती थी, दुलारी उसे मातृत्वकी वह भावना भी देती थी। नसीरुद्दीन अपनेको सर्वश्रेष्ठ समझना चाहता था, दुलारी मौक़े पर उससे थर-थर काँप जाती थी; नसीरुद्दीन मूल्यवान् औषधियोंसे पोषित होकर भी क्षीण पुंसत्व वाला था और अपनी इस

कमजोरीके प्रति मन ही मन चेतन और क्षुब्ध था, दुलारीने उसे आश्वासन दे रखा था कि नसीरुद्दीनका पुंसत्व दैहिकसे अधिक आत्मिक तेजधारी है। दुलारी उससे कहती—"तुम मेरी रुहके पर्दे दर पर्देमें समाते चले जाते हो, तुम मुझे छू लेते हो तो मेरे अन्दर बिजलियाँ कौंध जाती हैं। तुम मेरे ख्वाबोंमें असलियत बनकर आते हो—और तुम मेरी असलियतके ख्वाब भी हो।"

दुलारीने नसीरुद्दीनकी नज़रोंको साध लिया था। नसीरुद्दीन कब किस वक्त क्या चाहता है यह समझनेमें दुलारीसे कभी चूक ही न होती थी और नसीरुद्दीन उसकी इसी शक्तिसे हैरान था, बँधा था। दुलारी समान रूपसे उसकी धार्मिकता और चारित्रिक हीनतम विकृतियोंका पोषण करती थी। नसीरुद्दीन इसीलिए हर क्षण उसका सहारा चाहता था। दुलारीने बादशाहका मन देखा तो उसे जहाँगीर बननेका ख्वाब दे दिया, नसीरुद्दीन हैदरने भी अपने महलोंमें घण्टी लटकवा दी। नसीरुद्दीन एक क़दम और आगे बढ़ा, खलीफ़ा हारूँ रशीद बननेको ललचाया। भेष बदलकर दो चार हफ्ते रातमें, शामोंको शहरकी सड़कोंपर टहला। दुलारी राजा दर्शनसिंह की मार्फ़त बादशाहका जी रिझानेके लिए शहरके गली कूचोंमें इन्तज़ाम कर रखती थी। बादशाहके साथ भेष बदलकर जानेवाले मुसाहब सधी-बधी जगहों पर ही बड़ी कुशलतासे शाही झकको झोंक दिया करते थे—कहीं किसी खँडहरसे मकानमें कोई ग़रीब अंधी बुढ़िया कराहते और यह कहते सुनाई पड़ती कि "हाय ऐसे रहमदिल ग़रीब परवर बादशाहकी सल्तनतमें भी मुझ अन्धी लाचारकी बीमारीमें सुध लेनेवाला कोई नहीं है? हाय मैं बड़ी पापिन हूँ, अल्लाह किसोकी आई मौत मुझे दे दे। मैं नसीरुद्दीन हैदरशाहकी नेक हुकूमतका धब्बा हूं। कोई मुझे यों लाचार देख ले तो मेरे बादशाहको क्या कहेगा? या खुदा मुझे उठा ले।"

बादशाह मामूली आदमीके भेषमें अपने मुसाहबोंके साथ उस ग़रीब बीमारकी मदद करने पहुँच जाता। बादशाह कभी-कभी शामको भी

घूमते। पानकी दूकान पर, सर्राफ़ साहूकारकी कोठी पर, बज़ाज़ेमें, पंसारी गंधीकी दूकानों पर, तवायफ़ोंके कोठों पर—गरज़की शहरी ज़िन्दगीकी हर ऊँच नीचमें वे घुमाये गये और हर जगह उन्हें नसीरुद्दीन हैदरकी तारीफ़ बहाने-बहानेसे सुनाई दी, मलिका ज़मानियाकी तारीफ़ें सुनाई दीं, 'कैवाँजाह ही वली अहमद मुक़र्रर होंगे, मुन्नाजान तो मीर फ़ज़ल अलीकी औलाद है', कहीं उसे आग़ामीरकी पिछली बुराइयाँ सुनाई देतीं, कहीं नये वज़ीर मीर फ़ज़ज अलीके ऊपर भी मीठी छीटाकशी होते देख सुन लेता, कहीं-कहीं बादशाहबेगमके ख़िलाफ़ भी सुन लेता कि आखिरको सौतेली माँ है। और हर बातको आड़ देनेके लिए प्रजाजनके इस वाक्यको भी बार-बार सुनता कि—"अमाँ चुप भी रहो। हवाके भी कान होते हैं जो बादशाहके कानोंमें यह बातें पहुँच जायेंगी तो लेने के देने पड़ जायेंगे।"

भेष बदलकर घूमनेसे बादशाहका बड़ा जी बहला, बहुत सी बातें भी अपने मनमें पोढ़ी कीं। बादशाहबेगम और मीर फ़ज़ल अलीको कभी बादशाहकी नई तफ़रीह की ख़बर भी न लग पाई। बादशाहबेगम मुन्ना-जानकीशादीकी तैयारियोंमें लगी हुई थी। उन्हें बस एक ही चिन्ता थी कि वली अहदका पद कैवाँजाहको न मिलने पाये।

मुन्नाजानकी शादीकी तैयारियाँ शुरू हुईं। बादशाहबेगमके महलोंमें रोज़ ढोलक बजने लगी। डोमिनें हफ्तों पहलेसे बन्ने गाने लगीं। नसीरुद्दीन हैदर पर धीरे-धीरे इस राग-रंगका असर होने लगा। माता हँसकर कहतीं कि अब तुम ससुर होगे, फिर अल्लाह वह वक्त भी दिख-लायेगा, जब तुम दादा बनोगे। रसके बावले नसीरुद्दीनको एक झोंकमें यह सब भी अच्छा लगा, मज़ा देने लगा। अपनी माताकी इच्छाके अनुसार उन्होंने मुन्नाजानकी शादी ख़ूब धूमधामसे करनेकी ठानी।

बादशाहबेगमको विश्वास हो गया कि वह मलिका ज़मानिया पर अपनी अन्तिम राजनीतिक विजय प्राप्त करनेके पहले मोर्चेको जीत गईं।

यह कानूनी प्रमाण हो जायेगा कि बादशाहने मुन्नाजानको अपना बेटा मानकर ही इतनी धूमधामसे उसका विवाह किया।

परन्तु विवाहके चार दिन पहले मुन्नाजानकी प्रस्तावित वधू अचानक मर गयी।

इसके कुछ दिनों बाद ही मलिका ज़मानियाके पुत्र मुहम्मदअली कैवाँजाहका विवाह नवाब सआदतअली खाँके बेटे नवाब रुक्नुद्दौलाकी साहबज़ादीसे बड़े जश्न और धूमधामसे सम्पन्न हुआ। बारातकी सजावट, आतिशबाज़ी, खैरात और इनाम इकराममें शाही खज़ानेका लाखों रुपया चला गया। शहरमें मलिका ज़मानियाकी धाक बैठ गई। मलिका ज़मानियाकी बेटी ज़ीनतुन्निसाकी शादी भी शाही वंशके नबाब मुमताज़ुद्दौलासे सम्पन्न हुई। इन दोनों विवाह समारोहोंमें तीस लाख रुपया खर्च हुआ।

इन विवाह सम्बन्धोंसे अपनी राजनैतिक स्थिति मज़बूत कर दुलारीने नसीरुद्दीनके द्वारा कंपनी बहादुरकी सरकार पर यह ज़ोर डलवाना आरंभ किया कि वह कैवाँजाहको नसीरुद्दीन हैदरका ज्येष्ठ पुत्र और राज्यका उत्तराधिकारी मान ले। बादशाहने रेज़िडेण्टसे बार बार कहा कि कैवाँजाह उनका ही बेटा है। यदि यह सत्य न होता उसके चाचा अपनी पुत्रीका विवाह कभी उसके साथ न करते और न वह स्वयं ही राजकोषके तीस लाख रुपये विवाहमें खर्च होने देता। बादशाहने गवर्नर जनरलको खत लिखा, उसमें यह भी बतलाया कि मेरा ज्येष्ठ पुत्र होनेके नाते ही कैवाँजाह मेरा प्रतिनिधि होकर लार्ड कोंबरमीयरका स्वागत करनेके लिए कानपुर गया था।

मलिका ज़मानियाने दरबारके अधिकतर प्रमुख अमीरों और शाही खान्दानके व्यक्तियोंको लाखों रुपयेकी रिश्वत चटाकर अपने पक्षमें कर लिया। मीर फ़ज़लअली बादशाहबेगमके रोज़-रोज़ उकसाते रहनेपर भी, .खुद भी बड़े-बड़े कुलाबे भिड़ानेके बावजूद कुछ न क़र सका। बादशाह-

बेगम और फ़ज़लअली यहाँ तक विवश थे कि उनके लाख चाहनेपर भी मुन्नाजानके योग्य विवाह सम्बन्ध न हो सका। बादशाहबेगमका ज्योतिष-ज्ञान बार-बार मलिका ज़मानियाके जादूसे पिट जाता था।

मीर फ़ज़लअलीके शासनको बदनाम करनेके लिए शहरमें अव्यवस्था फैलाई जा रही थी! राजा दर्शनसिंह दुलारीका साथ दे रहे थे। राज्यभर में ऐसा षड़यन्त्र रचा गया कि मीर फ़ज़लअली मालगुज़ारीकी पूरी रक़म भी न अदा कर सकें। लखनऊमें लूठ-पाट, हत्याकाण्ड और गुण्डागीरीको प्रोत्साहन मिला।

अँगरेजोंकी चूँकि राज्य हड़पनेकी योजना थी इसलिए अशान्तिको मौन बढ़ावा दे रहे थे। बहती गंगामें हाथ धोनेका लालच अँग्रेज़ रेज़िडेण्टको भी हो आया। अपने कैवाँजाहकी वकालत करनेके लिए दुलारी रेज़िडेण्टकी पत्नीको बहाने-बहानेसे बड़े तोहफ़े भेजा करती थी। रेज़िडेण्ट रिकेट्स और उसकी पत्नीने मलिका ज़मानियाको शीशेमें उतारना शुरू किया। श्रीमती मार्डेण्ट रिकेट्स अक्सर मलिका ज़मानियाकी दावत क़बूल कर महलोंमें जाया करती थीं।

आरम्भमें मलिका ज़मानियाने इसे अपनी जीत समझा पर धीरे-धीरे उसने महसूस करना शुरू किया कि ख़ूबसूरत मिसेज़ रिकेट्सका प्रभाव बादशाहपर दिनोदिन गहरा पड़ता जा रहा है। पर दुलारीका अँग़रेज़ स्त्रीपर, ख़ासतौरसे साहबेअलीशान्की मेमपर कोई हथियार कारगर नहीं हो सकता था। वह अपने आपमें पेंचोताब खाती, फिर भी मेमसाहब के सामने गिड़गिड़ाती क्योंकि उसे अपने कैवाँजाहके लिए बादशाहत चाहिये थी।

श्रीमती रिकेट्स अपने ज़मानेकी वह शमा थीं जिसपर गोरे परवाने निसार हुये थे। रिकेट्स साहबकी बीवी बननेसे पहले वे एक दूसरे अँग़रेज़, बंगाल सिविल सर्विसके जार्ज रेवेन्सक्राफ्टकी पत्नी थीं। जब मलिका ज़मानियासे उनकी बड़ी घनीघना हुई तो नसीरुद्दीनसे भी ग़ैर-

सरकारी बेतकल्लुफ़ाना नाता सहज ही जुड़ गया। मलिका ज़मानिया और मिसेज़ रिकेट्स उम्रका खासा अन्तर होनेके बावजूद बड़ी सहेलियाँ बन गयी थीं। अक्सर शाही महलोंमें उनका बुलावा होता, वे जातीं और घण्टों वहीं रहतीं। नसीरुद्दीन हैदरको दुलारी और मिसेज़ रिकेट्सकी छेड़खानियोंमें बड़ा मज़ा आने लगा। दुलारी और मिसेज़ रिकेट्स शतरंज खेलतीं, नसीरुद्दीन हैदर इस खेलमें बिल्कुल कच्चा होनेपर भी अपने आपको उस्तादोंका उस्ताद मानता था। वह मिसेज़ रिकेट्सकी तरफ़दारी करता। जिस तरफ़ बादशाह हों उस तरफ़ जीत भी निश्चित थी। मिसेज़ रिकेट्स जीततीं। दुलारी रोषसे झनझनाकर मुँह फुलाकर कहती : "जाइए भी। आप हमारे खेलके बीचमें क्यों आ जाते हैं ? आपको यहाँ किसने बुलवाया था ?"

"मैं बादशाह हूँ अपनी सल्तनतमें हर जगह हरवक्त जा सकता हूँ।"

"जी हाँ, पर यहाँ आपकी बादशाहत नहीं चलेगी ! यहाँ आप मेरी रिआया हैं। मेरे क़ैदी हैं। और मैं यह हरगिज़ पसन्द न करूँगी कि मेरा क़ैदी—"

"वेल वेल, तुमलोग बीलकुल बच्चे हो, आपसमें झगड़ा करते हो। कम आन माई डॉर्लिंग्ज़, मैं तुम्हारी नाइत्तफ़ाक़ियोंके बीच इत्तफ़ाक़का पुल बनती हूँ।" यह कहते हुए मिसेज़ रिकेट्सने मलिका ज़मानिया और शाहे अवधको एक साथ अपनी बाहोंमें भर लिया बारी बारीसे दोनोंको चूमा और फिर कहा कि अब तुम दोनों एक साथ मुझे चूम कर अपना झगड़ा मिटा लो।

रेजिडेन्टकी बीवीके साथ चूमाचाटी का यह नया शग़ल बड़ा पुर-लुत्फ़ था। बादशाहको नयी ताज़गी मिलती थी। मिसेज़ रिकेट्स मलिके ज़मानियाको कभी विलायती पोशाक पहिनाकर उसे अंग्रेज़ बना देतीं मगर उसमें वे भद्दी लगती; कभी मलिका ज़मानियाँ और नसीरुद्दीन हैदर के आग्रहसे मेम साहब हिन्दुस्तानी पोशाक पहन कर लजानेके इतने

नक़्शे दिखलातीं कि नसीरुद्दीन लुट-लुट जाता था। मिसेज़ रिकेट्‌स रफ़्ता-रफ़्ता इतनी खुल गयीं कि शाही महलोंमें आनेपर अक्सर अपना वक़्त नसीरुद्दीनके साथ ही बिताती थीं। मिसेज़ रिकेट्‌सको दुलारीकी तरह ही नसीरुद्दीनके शारीरिक पुन्सत्वसे आध्यात्मिक नाता जोड़नेमें बहुत अधिक सुविधा प्राप्त थी। वह तरह-तरहसे बादशाहके जोशको उभार-उभार कर अपनी ओर खींचतीं और फिर भी उससे हाथ दूर रहतीं। मिसेज़ रिकेट्‌स और नसीरुद्दीनका नाता मृगजल और मृगके समान है। नसीरुद्दीन उसके पीछे बेतहाशा दौड़ता चला जाता है; लाखों रुपया बहाने-बहानेसे मिसेज़ रिकेट्‌सकी जेबमें पहुँचता चला जाता है और खेलका अन्त नहीं होता। मिसेज़ रिकेट्‌सने नसीरुद्दीन हैदरके सामने प्रेमकी नयी परिभाषा रक्खी थी। प्रेम प्रेमी या प्रेमिकासे कोई बदला नहीं चाहता, वह निष्काम होता है; प्रेम चाहे माताका हो या पत्नीका उसे बदला नहीं माँगना चाहिए—प्रेम केवल दान देना जानता है दान लेना नहीं। इस प्रेम दर्शनकी आड़में मिसेज़ रिकेट्‌स बादशाह बेगमको भी काटतीं और मलिके ज़मानिया को भी। बादशाह बेगम नसीरुद्दीनको इसलिए प्यार करती हैं कि उन्हें अपनी सत्ता चाहिए। मलिका ज़मानिया अपनी सत्ता और अपने बेटेकी बहबूदीके लिए बादशाहको प्यार करती हैं। मगर मिसेज़ रिकेट्‌स बेचारी कुछ भी नहीं चाहतीं। उन्हें वह बहुत प्यारा लगता है; मिसेज़ रिकेट्‌सने दुनिया भरमें इतना ज़हीन, बहादुर, खुश एख़लाक़ ख़ूबसूरत जवान और कोई नहीं देखा। उन्होंने किसी भी हिन्दुस्तानीको स्वभावमें अंग्रेज़ोंके इतना निकट नहीं पाया जितना नसीरुद्दीन हैदर है। उसकी उदारता इँग्लैण्डके बादशाहसे भी कहीं बढ़-चढ़ कर है, और इसीलिए वे नसीरुद्दीन हैदरसे निष्काम प्रेम करती हैं। इस निष्काम प्रेमके सहारे अवधके शाही ख़ज़ानेका लगभग दो करोड़ रुपया मिसेज़ रिकेट्‌सकी ख़ातिर अदाओं को मिल गया।

शहरमें हर ओर यही सुनायी पड़ता था कि अब अँगरेज़ अपनी औरतें

बेच-बेच कर हिन्दुस्तानी बादशाहोंको लूटेंगे। शोर था कि बादशाहकी शादी मिसेज़ रिकेट्सके होने वाली है। रेज़िडेन्ट और बादशाहका सौदा अभी तय नहीं हुआ बस यही देर है। मलिका ज़मानिया भी मिसेज़ रिकेट्ससे अब मन-ही-मन डरने लगी हैं। जिस शक्तिके ज़ोर पर मलिका ज़मानिया नसीरुद्दीन पर राज करती थी वह शक्ति मिसेज़ रिकेट्सकी अदाओंके आगे छोटी हो गयी। मिसेज़ रिकेट्सने नसीरुद्दीनको हर पल अँगरेज़ बनाना शुरू किया, उसको यह विश्वास दिलाया कि अँगरेज़ ही तुम्हारे सच्चे दोस्त हो सकते हैं क्योंकि हिन्दुस्तानी तुम्हें जो कुछ भी सलाह देंगे अपने स्वार्थको समाने रखकर ही देंगे। मिसेज़ रिकेट्सने हल्के-हल्के यह कोशिश भी की कि नसीरुद्दीन हैदर ईसाई हो जाय मगर यहाँ उसे सफलता मिलनेकी सम्भावना न दिखाई दी। नसीरुद्दीन हैदर अपने ढँगका कट्टर धार्मिक था।

दिन यों ही बीतते रहे; मिस्टर और मिसेज़रिकेट्स नसीरुद्दीन हैदरके बड़े गहरे मित्र हो गये। रोज़ शर्तें बदी जातीं, नये-नये खेल होते, कम्पनी सरकारने चूँकि अवधकी सल्तनतको अव्यवस्थाकी ओर अधिकाधिक बढ़ने देनेके लिए मस्लहतन् पूरी छूट दे रखी थी इसलिए रिकेट्स साहबको किसी बड़ी नीतिपर सोच-विचार करनेकी आवश्यकता ही न थी। रेज़ि-डेन्सीमें और जो भी कमीवेश महत्त्वके आदमी थे सभीका थोड़ा बहुत घर भरता था। दरबारी अमीरोंकी पूछ अँगरेज़ोंके मुक़ाबिले रफ्ता-रफ्ता कुछ न रही।

उन्हीं दिनों इंगलिस्तानका एक नाऊ डी रसेट निजी व्यावसायिक कामसे लखनऊ आया। रिकेट्स साहबने उसे मदद दी। डी-रसेट यद्यपि इस समय विलायती मालका बिसाती बनकर आया था परन्तु रेज़िडेण्ट साहबके बाल सँवारनेमें उसने अपने खान्दानी पेशेकी बड़ी-बड़ी खूबियाँ दिखला दीं। नसीरुद्दीन हैदरको रेज़िडेण्टके बाल जो घुँघराले नज़र आये तो उसका मन भी लहरा उठा और फिर मिसेज़ रिकेट्स भी चाहती थीं

कि उसके सिरके बाल विलायती ढंगसे सजें, उनमें घुँघरालापन पैदा हो जाय। डी रसेट इस काममें जादूगर साबित हुआ। नसीरुद्दीन हैदर खुद अपनी घुँघराली लटोंपर मुग्ध हो गया। डी रसेट बादशाहको खूबसूरत बनाता, उन्हें नयीसे नयी विलायती शराबें पिलाता, विलायती जीवनकी विकृतियाँ सिखलाता। इतने कामका आदमी होनेके कारण नसीरुद्दीन हैदर उसे भला कैसे छोड़ सकता था? विलायती नाऊ नसीरुद्दीनका खास दोस्त हो गया। उसने उसे सरफ़राज़खाँका खिताब दिया।

मिस्टर और मिसेज़ रिकेट्स नाऊके इस बढ़ते प्रभावको देखकर क्षुब्ध हुए। उन्होंने हिज़ मेजेस्टीको अच्छे अंगरेज़ोंकी सोहबत करनेकी सलाह दी। बादशाहके लिए एक उम्दा पुस्तकालयकी योजना बनायी गयी। क़ीमतीसे क़ीमती अँगरेज़ी किताबें अलमारियोंमें क़रीनेसे सजनेके लिए पहुँच गयीं। क्रूप्ले नामक एक अँगरेज़ लाइब्रेरियन नियुक्त हुआ। बादशाहको विलायती संगीतका शौक़ कराया गया, मॉन्ट्स विलायती चित्र-कार और संगीतज्ञ शाहे अवधके मुसाहिबोंमें दाखिल हुआ। बादशाहको अँगरेज़ी पढ़ानेवाले मास्टर राइट साहब भी तशरीफ़ लाये। कैप्टेन मैग्नेस भी हुज़ूरे आलमको विलायती तहज़ीब बरतनेमें मदद दिया करते थे। परन्तु यह सब होने पर भी बड़े-बड़े अँगरेज़ोंकी शान उन्हींके देशवाले नाऊके उस्तरेसे मुँड़ गयी। डी रसेट उर्फ़ सर्फ़राज़खाँ बादशाहकी नाकका बाल बन गया था कोई उसके मुक़ाबिलेमें ठहर नहीं पाता था। बादशाहके महलोंमें मिस वाल्टर्स नामक एक आँग्ल सुन्दरी भी बेगम बनकर पहुँच गयी, उसने मुक़द्दरे आलियाका खिताब पाया। कुछ महीनों तक तो यह आलम रहा कि बादशाह सलामत हिन्दुस्तानी वातावरणसे कटकर सवा सोलह आना अँगरेज़ हो गये थे।

इस वातावरणमें मीरफ़ज़लअली सल्तनतके सुधारके लिए एकदम निकम्मा सिद्ध हुआ। शाही खर्च विलायती नाऊकी कृपासे दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा था। मीर फ़ज़लअली उस माँगको पूरा करनेमें असमर्थ

था क्योंकि राजा दर्शनसिंह और उनके बहाने अनेक अमीरो-उमरा मलिके ज़मानियाँके साथ थे। मीर फ़ज़लअलीने अपने मन्त्रित्वके प्रारम्भिक काल में बड़ा इन्साफ़ पसन्द और ग़रीब परवर बननेका प्रयत्न और प्रदर्शन किया। उसके महलके रास्तेमें एक जगह ग़रीबोंके छोटे-छोटे मकानात पड़ते थे। फ़ज़लअली जब हाथीपर सवार होकर उधरसे गुज़रता तो उन घरोंमें रहनेवाली औरतें बेपर्दा हो जाती थीं। फ़ज़लअली उतने हिस्सेमें हाथीसे उतरकर पैदल चलता था। उसने दौलतपुरा मुहल्लेमें एक पञ्ज-मीनारी बड़ी शानबानवाली मस्जिद बनवाई, धरम-करम मौलवी मुल्लाओंके ऊपर भी बहुत कुछ खर्चकर जस लूटना चाहा पर उसके भाग्यमें यश नहीं बदा था। वह जो भी सुधार करना चाहता अँगरेज़ अड़ंगा लगाते थे। इस विवशताके अभावमें मीर फ़ज़लअलीने किसी हद तक अपना घर ज़रूर भरा था पर आग़ामीरके मुक़ाबिलेमें वह कुछ भी न कमा सका। मीर फ़ज़लअलीसे बादशाह सलामत धीरे धीरे नाराज़ होने लगे। जो वज़ीर अपने बादशाहका ख़र्च नहीं चला सकता वह निकम्मा है। चौदह महीनोंमें मीरफ़ज़लअली चिड़चिड़ाकर अँगरेज़ोंसे कुढ़कर विलियम स्योरसे अपनी पगड़ी नुचवाकर बाहशाहकी नज़रोंसे गिर गया, अपनी गद्दीसे भी उतर गया। इसके बाद एक बरस दस महीनेमें दो वज़ीर पके, इक़बालुद्दौला आये फिर आग़ामीरके ज़मानेके दीवान राजा-रामदयाल वज़ीर बने, शाही ख़र्च कोई पूरा न कर सका। नाऊ बड़ी तेज़ी और बड़ी ख़ूबीसे शाहे अवधको मूँड़ रहा था। प्रजामें बल्वे होने लगे। हर रोज़ इलाक़े नये ज़मींदारोंको ऊँचे ठेकोंपर दिये जाते और वे उन्हें दुगना, चौगुना वसूल करनेके लिए प्रजापर इतने अत्याचार करते कि हज़ारों किसान अवध छोड़कर नेपालकी तराइयोंमें या इधर-उधर भाग गये या डाकू हो गये।

यह नयी परिस्थिति अँगरेज़ोंके लिए भी चौंकाने वाली थी। उन्हें भय लगा कि सल्तनते अवधकी बदइन्तज़ामी उनके द्वारा अनुशासित

इलाक़ोंमें भी बदअमनी फैलानेकी धमकियाँ देने लगी है। इंग्लैण्डमें भी एक दल ऐसा था जो कम्पनी सरकारकी कमीनी हरकतोंके ख़िलाफ़ आवाज़ उठाता था। इंग्लैण्डके मन्त्रिमण्डलमें भी ऐसा गुट था जो कम्पनीके डायरेक्टरोंसे सत्ता और स्वार्थकी होड़ ले रहा था। उनकी आवाज़ें ऊँची उठने लगीं, कम्पनी सरकारने अपनी नीति सहम कर बदली। विलियम बेन्टिंक गवर्नर जनरल हुआ और लखनऊके रेज़िडेण्ट पर इस बातका ज़ोर पड़ने लगा कि वह अवधके शासन प्रबन्धको सुधारनेका काम तेज़ीसे आगे बढ़ायें, वज़ीरकी गद्दीको बच्चोंका खेल न बनने दें तथा किसी ऐसे व्यक्तिको महामंत्रीके पदपर नियुक्त करनेकी व्यवस्था करें जिसका अवधके अमीरों पर प्रभाव हो साथ ही जो अँगरेज़ोंकी नीतिको आगे बढ़ानेमें पूरी पूरी मदद दे सके। इस निर्णयके अनुसार सआदतअली ख़ाँ और ग़ाज़ीउद्दीन हैदरके ज़मानेके प्रधानमन्त्री, अनेक अँगरेज़ोंकी दृष्टिमें अद्वितीय प्रबन्धकर्ता और आग़ामीरके पुराने दुश्मन मुन्तज़ामुद्दौला हकीम मेहदीअली ख़ाँ फिर अवधके प्रधान मन्त्री बनाये गये।

यह उन्तीस नवम्बर सन् अट्ठारहसौ तीसकी बात थी।

२६

चिल्लेका मौसम बीतते ही जाड़ेमें हलकाव आ गया, दोपहरकी धूप का मज़ा फिर भी था। अच्छे-अच्छे दूकानदार भी गद्दी छोड़ धूप सेंकने के लिए दूकानके सामने तख्त चारपाई डालकर बैठे थे, उनके नौकरोंको अलबत्ता यह नेमत मुयस्सर न थी, उन्हें दूकान पर ही बैठना पड़ता था। दूकान एक पलके लिए सूनी नहीं छोड़ी जा सकती, हैसियतके हिसाबसे हर दूकानमें दो चार छः आदमी हरदम मुस्तैद रहते हैं। लखनऊकी आबादी लगभग तीन साढ़े तीन लाख थी, मटरग़श्तों, आवारा लोगों, रंगबाज़ों, चलतेपुरज़ों, बहुरूपियों और निठल्ले 'आ बैल मुझे मार'वाले ज़ोमके लोगोंका हुजूम शहरके हर बाज़ारमें चौबीसों घड़ी डोलता ही रहता

है। पाटेनालेसे निकल कर बज़ाज़ा और नखासका बाज़ार है, बज़ाज़ेके ऊपरसे ही तवायफ़ोंके कोठे शुरू हो जाते हैं जो चौकके पीछेका हिस्सा बन कर सदा गुलज़ार हैं। बज़ाज़ेके सामने नीमका पेड़ है और पाटेनालेके पुल पर एक लकड़ीकी टाल है। काली पालिशकी और खूबसूरत मीनाकारीवाली हाँड़ियों, सुराहियों, जामों और तश्तरियोंवालेने उससे कुछ परे धरती पर चादर बिछाकर बड़ी सलोनी दूकान लगा रखी है। गाड़ी पर बड़ी पेंदीवाला बड़ा भारी कई नलियोंवाला हुक्का—यारखाँका लखटकिया हुक्का नीम तले सजाया जा रहा है; डेढ़ दो घण्टे उसकी सजावटमें लगते हैं। मौसमके हिसाबमें फूलोंकी लड़ोंसे, गोटे-पट्टेकी झालरोंसे, तरह-तरहसे उसका सिंगार होता है। यारखाँ शामको नखाससे होते हुए अकबरी दरवाज़ेसे चौक बाजारमें अपने हुक्केकी गाड़ीके आगे-आगे दोनों ओर दोनों हाथोंसे सलाम करते हुए कुरता-तहमद पहने अंगोछा कन्धे पर डाले आँखोंमें सुरमा चौड़ी बेलवाली चौगोशिया टोपी लगा निकलते हैं तो हटो बचो हो जाती है। अकबरी दरवाज़ेके मशहूर शामी कबाबवालेकी दूकान पर गाहक इस इन्तज़ारमें ही खड़े रहते हैं कि यारखाँका लखटकिया आता होगा। लखटकिया जब नीमतलेसे सजकर चलता है तो उसके पहले उसके चलनेकी खबर चलती है।

यारखाँ नीमके आगे मंझा डाले मामूली घरेलू हुक्का पी रहे थे, सामने लखटकियाको गेंदेके बड़े-बड़े फूलोंसे सजता देख रहे थे। लाला चुन्नीलाल बज़ाज़ भी सामने ही अपने तख्त पर अधलेटे चिलम और धूपका सेवन कर रहे थे। लाला चुन्नीलालकी दुकानके ऊपरवाली वहीदन खाना खा दाँत कुरेदती हुई अपने छज्जे पर आई; लाला चुन्नीलालकी निगाह सामने थी। वहीदनको देखके लाला बोले—"ऐ किसी वक्त तो निचली बैठा करो बीबी, हर वक्तकी कुरेद कराद अच्छी नहीं।"

वहीदन दाँत कुरेदते हुए तनिक भवें चढ़ाकर अधेड़ उम्रकी, मोटी गर्दनमें तनिक लोच लेकर खड़ी रही, जब दाँतकी अटक निकाल ली तो

सोनेकी दँतखुदनी चुटकीसे साफ़कर फूः फूः करते हुए कहा—"अपनी तरफ़ नज़र डालकर ही दूसरों पर कहा कीजिए समझे! साठा पार हो गये, मगर मुँहसे मुँह लगानेकी आदत न छोड़ी, सरे आम लिये बैठे हो।"

लाला चुन्नीलाल यारखाँकी ओर हाथ बढ़ाकर बोले—"यह तो इनका माशूक़ है। हम तो तुम्हारी यादमें इसे मुँह लगा लेते हैं। ऊपर क्या खड़ी हो? आओ तुम्हें धूप खिलायें।"

यारखाँ ठठाकर हँस पड़े। बोले—"हाँ, अब तो धूप और हवा खिलानेके ही दिन रह गये।"

लाला चुन्नीलाल बोले—"अब यह भी मुफ्त न मिलेंगे भैया, फिरंगी इसमेंसे भी कुछ कमा लेगा। सुना है—" फिर लाला चुन्नी सकपकाये, मतलब यह कि बात कहनेके अन्दाज़में इधर-उधर सड़कको देखा फिर यारखाँकी ओर झुक गये। शुरूके बोल इतनी ज़ोरसे बोले कि वहीदनके कानों तक भी पहुँच जाँय और काफ़ी बात यारखाँके कानों तक ही बखूबी पहुँची। दिन दोपहरकी सड़क थी, आम तौर पर सूनी थी फिर भी गोपनीयताकी आदतने लाला चुन्नीलालसे इतनी शारीरिक मुद्राओंकी कसरत करा ली। लाला बोले—"बादशाह सलामतमें और मलिके ज़मानियामें कल रात बड़ा झगड़ा हो गया।"

वहीदन छज्जे पर छटपटाई—"जी तुम्हें हमाई जान क़सम, यारखाँ तुम्हें मेरे पानदानकी क़सम तेरे लखटकियेकी कसम, कुछ कहना मत मैं अभी आती हूँ।"

लाला और यारखाँ दोनों मुसकराये, ज़रा थमे मगर आमने-सामने एक दूसरेकी आँखोंमें भी झाँपा, बात कहनेकी उत्सुकता थी, वहीदनके आते तक रस रोकते नहीं बनता था। यारखाँ बोले—"लाला, वो तमाशा हुआ है जो राह चलते अक्सर नीच क़ौमोंमें भठियारों चमारोंमें हम देखते हैं।"

लालाजी को बात और हुक्केकी तलब साथ-साथ उठी, रेसमें बातकी तलब तेज़ साबित हुई फिर भी हुक्केमें एक मुँह मारकर ही लाला बोले—"तब खबर सच्ची है।"

यारखाँ अपना माँझा और हुक्का लालाके तख्तके बिल्कुल क़रीब खींच लाये, यारखाँका माँझा भी बड़े नक्शेका था, पँचरंगी सुतली की बारीक बिनावटका सुते बाँसका माँझा बिछाकर यारखाँ बैठे, हुक्का रखा और बोले—"ये मेम अब किसीकी न चलने देगी। बादशाह बेगम भी कौड़ी-कौड़ीकी हो जायेंगी और मलिका ज़मानिया भी। अरे लाला क्या कहें कोई मेमके हाथों एक खबर बेच दे तो बड़ा मुनाफ़ा भी हो और ज़मानेको अजब तमाशा देखनेको मिले।...मगर यारखाँ किसूसे कह नहीं सकता।"

लाला मुसकराये, यारखाँके चेहरेकी गम्भीरता देख इत्मीनानसे हुक्केका कश खींचा और गलेकी कंठी जंज़ीर पर हाथ फेरते हुए ठंडे-ठंडे बोले—"यारखाँ, तुम कोई नई खबर नहीं सुनाओगे, रुस्तमनगरके बाज़ारसे मेरा भी बैपारका लगाव है।"

यारखाँ भी मुसकराये, बैठनेका पैंतरा बदला और चेहरे पर शान लाकर बोले—"अरे वैसे तो सारे शहरको मालूम है, पर लाला, मेरे पास इस दम किसीकी कही-सुनी नहीं, असल साबूत मौजूद है।"

तब तक अपना पानदान लिये जिसपर नीला मखमली ज़रदोज़ीका ढँकना ढका था, बड़े भारी भारी सोनेके गहने, पैरोंमें कड़े छड़े, रेशमी पाजामा, जुर्राबें, ज़रीकी चट्टियाँ पहने, पशमीनेका बेलकढ़ा कुर्ता पहने उसपर लाल विलायती मखमलकी पोर-पोर ज़रदोज़ीका काम बनी वास्कट पहने, रेशमी दुलाई ओढ़े, पचास पचपनके हेर-फेरकी उम्र वाली वहीदन आकर लालाके तख्त पर बैठ गई और आते ही मुँह फुलाकर कहा—"तुम लोग औरतोंसे भी गये बीते निकले। बड़ी-बड़ी मूँछ दाढ़ियाँ लेकर भी रुक न सके।"

यारखाँ बोले—"बीबी, बातमें जहाँ औरतका चर्चा हो वहाँ मरद रुक नहीं सकता और अभी हमारी उम्र ही क्या है ? अरे ज्यादासे ज्यादा साठ बासठके चुन्नीलाल होंगे, मैं भी आसफ़ुद्दौलाके ज़मानेमें पैदा हुआ था। अरे सब एक ही उम्रके हैं मगर ऐसे थके कहाँ हैं जो कि दुलारियों-का चर्चा हो और हम रुक जाँय ?"

कसरती बदनके लाला चुन्नी बोले—"कमज़ोरी तो उतावलीमें ही दिखा गये यार, आगे चोंच सँभालकर बोलना।"

वहीदन बैठी उछल-उछल पड़ी, लालाकी ओर हिनाई पंजेकी उँग-लियाँ समेटकर बातोंसे निछावरें लेती हुई बोली—"हाय काफ़िर तेरा मुँह चूम लूँ, मेरे मुँहकी बात ले गये तुम।"

लाला चुन्नी शानसे मुसकराये, बोले—"बीबी तुमपर जान निछावर कर दूँगा पर तुम्हारा मुँह चूमकर अपना धरम न दूँगा। हाँ आगेकी बात कहो, हम लोगोंने अभी तक कोई भी ऐसी बात नहीं की जो तुम्हारे रसमें खलल पड़े, बात अब शुरू होती है।

वहीदनकी महराजिन नौकरानी चाँदीकी डिबियामें लालाके लिए जब पान-तम्बाकू लाकर रख गई तब वहीदनने अपना पानदान खोला। वहीदन और लालाका चढ़ती जवानीके दिनोंका नाता है, एक-सा सधा-बँधा है, वहीदन और किसीकी नहीं; लाला अपनी ललाइन और वहीदनके सिवा और किसीके नहीं। वहीदनसे लालाका करार हो गया था कि बच्चे नहीं होंगे और वहीदनने वैसा इन्तज़ाम कर लिया। लाला बज़ाज़के चौधरी हैं, खानदानी पंजाबी खत्रियोंके घरानेके है। पहले नवाब सआदत खाँके साथ दिल्लीसे इनके पुरखे आये थे, एक भाईके बेटे बज़ाज़ेमें खास तौरपर गिरंटके काममें बढ़े और दूसरे भाईके बेटे आम तौरपर शाही फ़ौज और कचहरियोंमें अच्छे अच्छे ओहदोंपर। साख बहुत अच्छी थी, शहरके सभी नामी बाँके उस्ताद इनसे परवरिश पाते थे, शाही महलोंकी बाँदियों, ख्वाजासरा, दारोग़ा, दीवान, दरवान बड़े बड़े

नवाबोंके महलोंकी बाँदियाँ, दारोग़ा दीवान, दरवान लाला चुन्नीकी कोठीसे परवरिश पाते थे। असल काम मुहल्ला सोंधी टोला चौकमें उनकी पक्की पोढ़ी हवेलीके अन्दर ही होता था मगर बज़ाज़ेकी दूकान चूँकि आसफ़ुद्दौला के ज़मानेसे यहाँ ही चली आती है इसलिए लाला नित्य दोपहरको यहीं आकर गद्दी सँभालते हैं। शामको लड़के यहाँ आते हैं, लालाकी नयी ख़रीदी हुई दो घोड़ोंवाली बग्घी आ जाती है, लाला और वहीदन बैठकर बगीचे चले जाते हैं, लाला चुन्नीलालके बड़े लड़के दूकान सँभालते हैं।

वहीदनके आ जाने पर गोष्ठी नये सिरेसे जमी। पहले तो यहींसे चर्चा आरम्भ हुआ कि पिछली रात मलिका ज़मानिया और बादशाह सलामतमें इतनी ज़ोरका झगड़ा हुआ था कि दूर-दूर तक महलमें सबको सुनाई पड़ा और सबके मुँहसे यही सुननेमें आया है कि मलिका ज़मानिया ने बादशाहको कोठरीमें बन्द कर ताला जड़ दिया था। रात भर बादशाह बन्द रहे। सुबह चार बजे हकीम मेहदीअलीख़ाँ बुलाये गये; उन्होंने आके समझौता कराया और बादशाहको लेकर चले गये। बादशाहसलामत रातभर सोये नहीं। अभी घड़ीभर पहले तक की ख़बर मिली है कि बादशाहका मिज़ाज बहुत गर्म है; इस वक़्त अच्छे-अच्छोंकी हिम्मत उनके सामने जानेकी नहीं पड़ रही है।

वहीदन बोली—"तो बात क्या हुई?"

यारख़ाँ उसके हाथसे पान लेते हुए बोले—"सुना है, बादशाह मेमसे निकाह करने जा रहे हैं।"

लाला चुन्नीलाल बोले—"नहीं यारख़ाँ इन चकमेकी ख़बरोंके फेरमें न पड़ो। तनिक ये ग़ौर करो कि वो बड़े साहबकी मेम आख़िर है क्या? कलकत्तेके बड़े लाटके हुक्मकी कठपुतली ही ना? और कलकत्तेवाला बड़ा लाट सात समुद्र पार विलायतकी कम्पनीका मुनीम है; जैसा सेठोंका हुकुम आता है वैसा कलकत्तेवाला भी करता है, यहाँवाला भी करता है। और अंगरेज़ोंमें कोई औरतोंका लिहाज़ तो है नहीं—आपसमें सब एक

दूसरेकी बीवियाँ खुलेआम चूमते हैं। सो जब देखा कि बादशाह नरम चारे हैं और मेरी औरतको चूमा-चाटी या हाथ फिराईसे ज्यादा खतरा नहीं, लागत कम मुनाफ़ा ज्यादा है तो अपनी औरतको पीछे लगा दिया। गोरा लूटेगा और अपने घर ले जायेगा; यही इसकी सिफ़त है”

वहीदन पानकी गिलौरी गालोंमें दोनों ओर हेर-फेर कर एक रस करते हुए ज़रदेकी चुटकी साधे ही साधे बातमें पड़ गई, बोली—“तुम्हारा खयाल ठीक है।”

लाला बोले—“हाँ मगर यारखाँ, अब वह बात सुनाओ।”

“सौदा करो लाला, कोरा यारानेका खेल नहीं है। बड़े साहबकी मेम तक यह खबर पहुँच जाय तो मोटा नफ़ा होगा; तुम्हारा डौल हो तो बात करो।”

वहीदन साधिकार बोली—“खबरके ऊपर है यारखाँ, मेम तक खबर पहुँचानेका सीग़ा मैं निकाल दूँगी।”

यारखाँ और झुक आये, धीरेसे बोले—“अमाँ तहलका मच जायेगा, आग़ामीर क्या उजड़े थे अबकी तो शाही महल उजड़ जायेंगे। ऐसा ज़बरदस्त सबूत है।”

वहीदनकी उत्सुकता मचली, लालाका चेहरा संयत गम्भीर रहा; यारखाँ दोनोंसे नज़रें मिलाते हुए बोले—“दुलारीकी सास इस वक्त़ मेरे यहाँ हैं।”

लालाके चेहरे पर चौकन्नापन झलका, वे बोले—“तुम्हारे यहाँ कैसे हैं?”

“पंद्रह-बीस दिनोंसे खाना पकाती है। अच्छी ईमानदार मिहनती और नेक औरत है। हमारी बावर्चिन मर गई तो झंडेखाँके घरवालोंकी सिफ़ारिशसे इसे रक्खा। मगर यह सब हमें मालूम न था; उसने न कभी चर्चा किया न हमने जाना। कल बातों-बातोंमें नब्बनकी दुलहिनसे उसने कुछ औचकमें ही कह दिया फिर उससे कुरेद-कुरेदकर पूछा गया तो रो

पड़ी और सब कह दिया। दुलहिनने नब्बनसे कहा, नब्बनने आज सुबह मुझसे बतलाया, वैसे ही शाही लड़ाईकी खबर सुनी। आज तो जिसे देखो सुबूसे उसीका चर्चाकर रहा है। मैंने सोचा जो मेरी बावर्चिन, बड़े साहबकी मेमसे सब कुछ जाकर कहदे और वो उसे बादशाहके सामने पेश करदे तो दुलारी नाक-चोटी कटवाकर काले मुँहसे गधे पर सवार लखनऊकी सड़कों पर न घुमाई जाय तो यारखाँ नाम बदल दूँगा।… (गाली) बड़ी मलिका ज़मानिया बनी है ! ओफ़्फ़ोह, क्या ज़माना देखा है इसने भी, क्या मुक़द्दर पाया ! अब ऐसी ही ठोकर भी पा जाय तो मज़ा आ जाय लाला जी।"

लाला चुन्नी बातके सूत्रको लेकर दिमाग़में और आगे दौड़ गये थे, बोले—"क्या लोगे ?"

यारख़ाँ गम्भीर हुए, दाढ़ी पर हाथ फेरा, बोले—"हज़ार चेहरे शाही।"

लालाने होठ किनारेकी मूँछ खुजलाई, कहा—"यारख़ाँ जितनी दूर तक तुम नक्शा बाँध रहे हो उतनी दूर तक इस खबरका असर न होगा। मगर हाँ, तुम्हारे पास उम्दा दगनेवाला गोला ज़रूर है।…हज़ारमें मँहगा है तीन सौ नक़द लो और असर देख लो।"

यारख़ाँ बोले—"अच्छा एक सौदा करो जो असर ज़ोरदार हो तो हज़ार ही गिना लूँगा और मामूली हुआ तो जो आज मिलेगा वही बस होगा।"

वहीदनने कहा—"मैं मंज़ूर करती हूँ, खबर ये क्या पहुँचायेंगे ख़बर तो मैं पहुँचाऊँगी।"

वहीदन और लाला चुन्नीलालकी नज़रोंमें हेराफेरी हुई, लालाने मुनीमजीको आवाज़ दी, पास आने पर तीन सौ रुपये लानेको कहा; यारख़ाँ पाँच पर अड़ गये; लालाने आनाकानी न की।

वहीदन बिस्मिल्लाहबानू नामको एक नौजवान तवायफ़ लड़कीको

जानती थी। नाक नक़्शे चाल-ढाल सलीक़ा समझ, हर तरहसे सधी हुई, पढ़ी लिखी, कत्थक नाचके हुनरकी चतुर जानकार, गला भी बेजा न पाया था फ़ारसीकी ग़ज़लें गाती थी। बिस्मिल्लाहबानू बाहरसे अंग्रेज़ मेहमानोंके लखनऊ रेज़िडेंसीमें आने पर हिन्दुस्तानी नाचनेवालियोंके एक अच्छे नमूनेके तौर पर चार-छह बार बुलाई गई थी। छोटे साहबसे अच्छी राह रस्म थी, बड़े साहब मेम साहबसे भी दूरकी साहब-सलामत थी। यारख़ाँ दुलारीकी सासको रुपयेका लालच देकर, पटानेके लिए अपने घर गया। वहीदनने बिस्मिल्लाहके यहाँ जानेके लिए डोली मँगवाई। लालासे कह गई कि जो यारख़ाँ उस औरतको लेकर आये तो अपने बाग़में भेज देना। वह बिस्मिल्लाहको लेकर वहीं पहुँच जायगी।

लाला चुन्नीलाल अंग्रेज़ी कोठीमें माल बेचते थे। मार्टिन साहब द्वारा बनवाई हुई गोरोंकी सराय 'कान्स्टेंशिया' में भी उनका लड़का माल लेकर जाता था; छोटे-मोटे बहुतोंसे साहब-सलामत थी लेकिन बड़े साहब तक रसाई नहीं हुई थी। इस ख़बरके बहाने वे रेजीडेण्टके यहाँ घुस-पैठ करना चाहते थे। अगर बिस्मिल्लाहका सीग़ा न निकल आता तो ज़रा बेश दौड़-धूप होती मगर काम बन जाता। लाला अपनी आगेकी महत्त्ववृद्धि देख रहे थे। उन दिनों हर आदमी जो ख़र्च कर सकता था और महत्त्वाकांक्षी होता था, ख़बरोंकी ख़रीद-फ़रोख्तका धन्धा अवश्य करता था।

आधी घड़ी भी न बीती थी कि यारख़ाँ लौट आये, लालाके तख़्त पर आकर बैठे; फीकी हँसी हँस, जेबसे रुपयोंकी थैली निकाल कर तख़्त पर रखते हुए बोले : "तक़दीर तो तुम्हारी और मलिका ज़मानियाकी ही सिकन्दर है लाला, रुपये सम्हाल लो अपने।"

"मुनीमजी इधर आना।...कोई नई ख़बर यारख़ाँ ?"

"बादशाह फिर दुलारीके पास पहुँच गये। ये हरामज़ादी ज़रूर कोई जादू जानती है।"

"हूँ !...मगर तब भी हमें ख़बर तो पहुँचानी ही चाहिए।"

"दुलारीकी सास इन्कार करती है। कहती है मेरा एक बेटा तो तबाह हो ही गया अब दो को और तबाह न होने दूँगी।"

"उसकी नज़रसे बात ठीक ही है, पूत कपूत निकल जाय, पर माता कैसे कुमाता बने।"

"पर हमारा खेल तो बिगड़ गया लाला।...बड़ी क़िस्मतवाली है दुलारी।"

दुलारी सचमुच बड़ी किस्मतवाली थी। आज ही रेज़िडेण्टके पास गवर्नरजनरलका पत्र आया था जिसमें उनकी पत्नीके सम्बन्धमें उड़ती अफ़वाहोंके प्रति सावधान हो जानेका संकेत था। यह भी पूछा था कि आपने जो पिछत्तर लाखके कम्पनीके क़ाग़ज़ लिये हैं वह रक़म आपके पास कहाँसे आई, ब्योरा दीजिए। इस पत्रके प्रकाशमें रेज़िडेण्ट-दम्पत्तिने रातमें होनेवाली शाही हरमकी लड़ाईका अन्तिम नतीजा देखा, एक और एक दो जोड़ कर भविष्यमें लन्दनकी राजनीतिमें प्रत्यक्ष देखा। और उसके बाद ही शाही महलोंके निवासियोंने, दरबारियोंने, सौत बेगमोंने, बाहशाह बेगमने, ज़मानेने देखा कि ज़िल्लेसुब्हानी मलिका ज़मानियासे माफ़ी माँगने जा रहे हैं। दुलारीसे जलनेवालोंने ठण्डी साँसोंके साथ महसूस किया कि मलिका ज़मानियाका सितारा अब भी बुलन्द है।

× × ×

वहीदन बिसमिल्लाह बानूके कोठे पर ही थी जब कि मलिका ज़मानिया और बादशाहकी सुलह-सूचना सरेआम हो गलियों, बाजारों, छज्जों, कोठों, छतों फैल गई। सबके मुँहसे एक सुर यही निकलता था कि मलिका ज़मानिया बड़ी नसीबवाली है।

वहीदनकी बात पर दबी आहके साथ बिस्मिल्लाह बोली: "हाँ छोटी ख़ाला, नसीबकी ही बात है, जिसे पूछे वो सिकन्दर।"

बिस्मिल्लाह बानू चौदहवाँ पार कर पन्द्रहवें सालमें क़दम रख रही थी और अब तक उसकी नाकमें छोटी नथुनी ही पड़ी थी। उसके जान पह-

चानके लोग हिमायती सब यही कहते कि अच्छी खानमका नसीबा खोटा था जो उसने बिस्मिल्लाहको बेलीगारदकी कोठीमें मुजरा करने भेजा। अच्छी खानम अपनी नौजवानीमें नवाब सआदतअली ख़ाँके दरबारकी नाचनेवालियोंमें थी। ये नाचनेवालियाँ सत्रह-अठारह बरसकी होते ही नौकरीसे हटा दी जाती थीं। तब तक जिन्हें महलके चाकरोंमें कोई दिलदार मिल जाता वो अपना ठिकाना करतीं, कुछ बाँदियोंमें भरती हो जातीं, कुछ बाज़ारमें आकर धंधा करतीं। शाही महलोंमें काम कर चुकनेवाली तवायफ़ोंसे बाज़ारकी तवायफ़ें उसी तरह व्यवहार करतीं जैसे पिंजरेकी मैना से जंगलकी मैना करती है। जो बदनसीब बाहर आतीं उन्हें वेश्यावर्गके विभिन्न उपवर्गोंमें धँसकर अपनी रोज़ी कमानेके लिए बड़ा प्रयत्न करना पड़ता था। वेश्याओंमें डेरेदार, नौची, गंधर्व, रामजनी, कसबी, बेसवा आदि अनेक उपवर्गोंकी होती थीं। डेरेदार तवायफ़ें सिर्फ़ मुजरेका पेशा करतीं, अपने सारंगियेसे निकाह पढ़ाकर स्त्रीके नाते उसकी होकर ही रहतीं अथवा किसी नवाब रईसकी नज़रे इनायत हो जाने पर उसके हाथों नथुनी उतरती मेंहदी चढ़ती और वह उसीकी नौकर भी हो जाती। ऐसी डेरेदार तवायफ़ें सदा ऊँची हैसियतवालियाँ हुआ करतीं। गंधर्वोंमें भी यही डेरेदारीकी प्रथा थी, लड़कियोंसे पेशा कराते बहुओंको पर्देमें रखते। तवायफ़ोंके लड़के सारंगिये सफ़रदा बनते थे। रामजनी कसबी बेसवा आदि इधर-उधरसे शहरमें आकर बस जानेवाली वेश्याएँ थीं, इनमें भी छोटी बड़ी हैसियतवालियाँ थीं, नाच गानेका काम चलाऊ उम्दा अभ्यासकर अपने अपने नसीबोंसे लड़ती थीं। इनके संगठन थे, कई दल्लालाएँ, बड़ी अम्माएँ बड़े-बड़े मकानोंमें इन्द्रका अखाड़ा आबाद करतीं। छोटी-छोटी उम्रकी खूबसूरत लड़कियाँ ख़रीदतीं, चुन-चुनकर मालका मोल करतीं— देह नाज़ुक गुलबदन हो, आँखें बड़ी-बड़ी मछली-सी, पुतलियाँ काली हों, भवें कमानीदार हों, मुँह चौड़ा न हो, होठ मोटे न हों, नाक फैली या पसरी न हो, दाँत मोतीकी लड़ी हों, गर्दन सुराहीदार हो तो क्या कहना,

मुसकराते हुए गालोंमें भँवर पड़ जाय, आशिकदिल उसमें फँस जाय—यह सब खूबियाँ निहारी जातीं, फिर उन्हें अच्छे उस्तादोंके सुपुर्द किया जाता। खड़े होनेका ढंग आये, नज़र भौं होंठ गर्दन,—अज़ो-अज़ो फड़कानेका शऊर आये, ओढ़नी सरसे सरके तो लगे इस वक्त यही मौज़ू था और घूँघट पलकोंपर उतरे तो लगे क़यामत आ गई। किस वक्त रूठें और आशिक़को मनानेका मौक़ा दें, किस वक्त किस तरकीबसे आशिकको नाराज़ करें और फिर आप उसे मनानेका मौक़ा लें, कहाँ बोलनेकी बहार है और कहाँ मुँह सीकर बैठ जानेका मज़ा है, कैसी महफिल है, वहाँका अदब क़ायदा क्या है, इन तमाम बातोंमें उन्हें तैयार किया जाता था। उन्हें इल्मो अदब सिखाया जाता, उर्दू फ़ारसीकी अच्छी तालीम दी जाती, शायरोंकी सोहबत कराई जाती और दस ग्यारह बरसकी उम्र होते ही उसे महफ़िलोंमें उतारा जाने लगता।

फिर इनके प्रचारक होते; उनके बिना रूपके बाज़ारका रंग फीका होता। पानवाले तमोलिनें अत्तार माली सारंगिये-सफ़रदा दल्लाल-दल्लाला दर्ज़ी हलवाई चाटवाले कुल्फीवाले शराबखानेवाले जौहरी बज़ाज़ हकीम शायर—रईस आशिककी जेब काटनेमें जितनी तरहके धंधेवालोंका भला होता था वे सब तवायफ़ोंके किसी न किसी सूरतमें प्रचारक होते। तवायफ़ें, बड़ी अम्मायें इनके सहारे जीती थीं और ये उनके सहारे, सबके साथ सधे-बधे थे। किसी तवायफ़के बड़े ज़ोर बाँधे जाते, किसीको उतारा जाता, किसीके रंग बँधते, किसीके फीके पड़ते। आपसी होड़ जलन दाँव-पेंच सब कुछ आये दिनका खेल था। अच्छी ख़ानम शाही महलोंसे निकलते ही इसी जालमें फँस गई। एक मशहूर अड्डेवालीने अपनी किसी लड़कीके लिए बड़ी-बड़ी हवाएँ बाँधकर रईस फाँसा था, एक दल्लालाने उस अड्डेवालीको नीचा दिखलानेके लिए उस रईसको शीशेमें उतारा, अच्छी ख़ानमके नसीब अच्छे थे उसका शिप्पा बैठ गया। कई बरस अच्छे बीते। अचानक नवाब मर गये। अच्छी ख़ानमका सहारा टूट

गया। थोड़ी बहुत हैसियत ज़रूर बन गई थी मगर बाज़ारसे कट गई थी। जवानी ढालपर थी, अच्छी ख़ानमने आगे आनेवाला वक्त सोचकर एक लड़की ख़रीद ली, उसे तैयार किया। बिस्मिल्लाह होशियार निकली, चमककर आगे बढ़ी। अच्छी ख़ानमने उसकी हवा बाँधनी शुरू की। मगर जाने वह कौन-सी मनहूस घड़ी थी जब उसने रेज़िडेंसीकी एक महफ़िलका बयाना क़बूल कर लिया। सोचा था अँगरेज़ोंकी तारीफ़से रुतबा बढ़ेगा, दुश्मनोंने ख़बर फैला दी कि बिस्मिल्लाह कोरी न रही। अब कोई गाहक नहीं फँसता।

बिस्मिल्लाह बानूकी उदासीका यही कारण था। वहीदन जिस आसको लेकर आई थी उसके तो कन्ने कट चुके थे, मगर मुँहकी मीठी थी, दिलमें इन्सानियतका दर्द था, बिस्मिल्लाहको दिलासा देने लगी। उसने कहा : "ख़ैर ये न सही तो कुछ और सही। तू शाहीमहलोंमें नौकरी करना चाहे तो अपने लालाजीसे लाला दरशनसिंह पर ज़ोर डलवाऊँ। वो मलिका ज़मानियाके महलोंमें तुझे भरती करा देंगे। अन्दर रहेगी तो महफ़ूज़ तो रहेगी। वहाँ रहते किसी अच्छे शाही अहलकारका दामन पकड़नेमें तुझे सुभीता रहेगा। इस वक्त मलिका ज़मानियाका सितारा बुलन्द है। उसकी ख़ुशामद करने बड़े-बड़े आते हैं, उसकी बाँदियोंके बड़े ठाठबाट सुने हैं।"

बिस्मिल्लाहकी उदासी न टूटी, बोली: "अम्मीसे कहियेगा वही जवाब दे सकती हैं।"

अम्मी—अच्छी ख़ानम—अम्मन अमामनके घर गई थीं। दल्लालाओंमें अम्मन अमामनके बड़े नाम थे, शाही महलोंमें, शाहज़ादों, नवाबज़ादोंसे उनके बहुत ही अच्छे रसूक़ थे। तफ़रीहकी छोकरियोंका धंधाकर उन्होंने लाखों कमाये थे। अच्छी खानम आजकल उन्हींकी ख़ुशामदमें लगी रहती हैं। पासकी रकम अब क़रीब तली-झड़पर आ चुकी है। बिस्मिल्लाहका आधार अभीतक डगमगाया हुआ है। कुछ दिन

और टल जायेंगे तो नीचे बाज़ारमें बैठानेके सिवा दूसरा उपाय न होगा—और जो तवायफ़ नीचेके बाज़ारमें बैठी उसके दिन पर दिन गिरनेकी नौबत ही अधिक आती है, ढालपर किसके पैर टिकते हैं।

वहीदनके बैठे ही अच्छी ख़ानम आ पहुँचीं। उनके साथ एक बच्ची भी थी—बड़ी ख़ूबसूरत लेकिन पत्थरका बुत थी, सिर्फ़ उसकी बड़ी-बड़ी आँखोंमें आग थी जो देखनेवालेको बुझा देती थी।

वहीदनने देखते ही पूछाः "क्या ख़रीदकर लाई हो अच्छी ख़ानम? लड़की अच्छी है। बिटिया क्या नाम है तेरा?"

"अरे बड़ी ज़िद्दन है भाई! अच्छे अच्छोंके बसमें नहीं आती। अम्मन कहती थी कि सूरत पे जाके पाँचसौ रुपयोंमें कंजरोंसे ख़रीदा था लेकिन सीरत कुछ नहीं—न नाच सीखे न गाना। दिनों भूखी रह जाती है, मारकी परवाह नहीं, हड्डियाँ पोढ़ी हो चुकी हैं। अम्मन बोली, इसे यहाँ रखती हूँ तो नई लड़कियाँ ख़राब होती हैं। तुम ले जाओ, आधा नुकसान सहके दे दूँगी।"

"तो तुम ले आईं। घरमें नहीं दाने अम्मा चलीं भुनाने—"

वहीदनकी तेज़ी काटकर अच्छी खानम ठंडे स्वरमें बोली: "अरे बिस्मिलियाके लिए ही यह आफ़त भी मोल ली। अम्मनपर एहसान करने का मौक़ा मिला, वो कहीं इस निगोड़ीका ठिकाना लगा दे तो आँखों सुख कलेजे ठंडक पाऊँ।"

वहीदनने अपना प्रस्ताव रक्खा। अच्छी ख़ानम यह चाहती तो न थी मगर सब ऊँच-नीच देखकर राज़ी हो गई।

बिस्मिल्लाह बानू लड़कीका हाथ पकड़ अन्दर ले गई। पलँगपर बैठ उसे दोनों हाथोंसे पकड़कर पूछा: "तुम्हारा नाम क्या है?"

लड़की देखती रही जवाब न दिया। बिस्मिल्लाह बानू भी उसे देखती रही, उसका हठ भी देखा, कुछ याद आई, आँखें भर आईं, लड़कीको

कलेजेसे चिपका लिया। दमभर उसे कसे रही फिर उसका चेहरा उठाकर देखा, बोली : "मैं तुम्हारी बहन हूँ। आजसे मुझे बाजीजान कहना।"

लड़कीने आँखे बन्द कर लीं, धीरे-धीरे आँसू ढुलक आये। बिस्मिल्लाह बानूने उसे चूम लिया, फिर-फिर कलेजेसे लगाया दिलासा दिया फिर पूछा : "तुम्हारा नाम क्या है?"

"कुल्सुम।" कुल्सुम बरसों बाद किसीसे सहज स्वरमें बोली थी।

२७

श्रीमती रिकेट्स और उनके पतिके इस्तीफा देकर चले जानेके बादसे नसीरुद्दीन हैदर अपने आपको बहुत अकेला महसूस करता था। उसे ठीक उसी तरह लगता जैसे भीड़ भरे चौराहेपर नन्हें बच्चेकी उँगली अपने अविभावकके हाथसे छूट गई हो। कोई ग़मग़ुसार नहीं किसीसे जी की बात कर सकें ऐसा दिल नहीं होता। अकेलेमें दम घुटता है, घबराता है। वह तो कहिये कि बादशाह सलामतका जी दुःख या सुखमें कभी एक ठाँव निचला नहीं बैठ सकता वरना वे पागल हो गये होते। फिर भी जब घुटन सिमट आती है, नसीरकी अनुभूति बड़ी तेज़ हो जाती है, तब वह बावला हो जाता है। उसे आजतक कभी यह समझमें न आ सका कि ज़िन्दगीकी असलियत क्या है, प्यार किसे कहते हैं? भरोसा कैसे मिलता है? बचपनमें जैसा माँने कहा वैसा किया, जवानीमें पिछले ग्यारह बरसोंसे जैसा दुलारीने चलाया वैसा चला—अपनी तरफसे उसने दोनोंको पूरे समर्पणके साथ अपना मन दिया। और उन दोनोंने भी···हाँ, उन दोनोंने भी कम से कम हज़ारों बार यह विश्वास तो दिलाया ही कि वे नसीरुद्दीन हैदर पर अपनी जान तक क़ुर्बान कर सकती हैं; पर नसीरुद्दीन कभी जी भरकर इसपर विश्वास नहीं कर सका। सपनेमें जो अनुभूति सच होकर प्रभावित करती हैं वही जागनेपर झूठी हो जाती हैं; ठीक इसी तरह नसीरुद्दीन भी जब कभी अपनी स्वाभाविक बहकभरी बेहोश रोज़ मर्राहसे चौंककर जागता

है तो उसका होश दिलकी धड़कनोंमें सिमटकर बार-बार कहता है—"यह सब झूठ है, यह सब खुदग़रज़ हैं। तुम्हारा कोई नहीं।"

नसीरुद्दीन इसी प्रतीतिसे विक्षुब्ध हो उठता है, विक्षिप्त हो जाता है और अपनी कुण्ठाको किसी क्रूर कार्यसे ध्वस्त करता है। आठ दस महीनों से उसे चैन नहीं। मिसेज़ रिकेट्सका विरह उसे इतने महीनों तक किसी अनुभूतिमें स्थायी रख सका यही नसीरुद्दीनके लिए बहुत है। मिसेज़ रिकेट्सको वह चाँदकी तरह पाना चाहता है। अब तक कोई अभाव उसे दूर तक नहीं खल सका, उसने जो चाहा वह देर सबेर पा ही लिया पर मिसेज़ रिकेट्सको वह कभी न पा सकेगा। वह सात समुन्दर पार चली गई, कम्पनी सरकारने उसे उससे छीन लिया। यह कम्पनी सरकार उसकी ही सल्तनतमें अपनी हुकूमत चलाती है, बात-बातमें आलमपनाह नसीरुद्दीनको कुछ सुधरनेकी धमकी देती है। उसका बस चलता तो वह ईस्ट इण्डिया कम्पनी बहादुरके डाइरेक्टरोंको गवर्नर जनरलको, हिन्दुस्तान से लेकर लन्दन तक उनके सारे इजारे चुटकी बजाते ख़त्म कर देता, सबको बँधवाकर उनपर कुत्ते छोड़ देता, लन्दनमें आग लगवा देता।... लेकिन नसीरुद्दीनको इतना होश ज़रूर है कि अँगरेज़ोंके आगे वह बेबस है, सारा हिन्दुस्तान बेबस है, बड़े-बड़े बादशाह और नवाब, राजे और महाराजे अँगरेज़ोंके आगे पनाह बोल जाते हैं उसी तरह सिर झुकानेके लिए मजबूर हैं जैसे कि वह। आज ही शामको बातों-बातोंमें हकीम मेहदीने उसे बतलाया था कि अँगरेज़ बहुत जल्द ही सिन्धके अमीरोंको भी तबाह कर देंगे। सर अलेक्जेण्डर बर्न्स लाहौरके राजा रणजीतसिंहके वास्ते उपहार ले जानेके बहाने सिन्धु नदीके रास्तेसे जहाज लेकर जा रहा है। हकीम मेहदी कहते थे कि इस तरह मलिकुलमौत सिन्धके अमीरोंका घर देखे जा रहे हैं। हकीम मेहदी कहते थे कि अँगरेज़ोंसे कोई नहीं जीत सकता। नसीरुद्दीन भी समझता है कि इनसे कोई नहीं जीत सकता सिर्फ़ वे ही बचे रह सकते हैं जो ताक़तवर हैं। पंजाबके रणजीतसिंहके लिए

कम्पनी सरकार तोहफ़े भेज रही है क्योंकि वे ताकतवर हैं। बड़े लाट या रेज़ीडेण्ट उनसे यह कहनेकी हिम्मत नहीं कर सकते कि आपका इन्तज़ाम ख़राब है अगर आप उसे दुरुस्त नहीं करेंगे तो कम्पनी सरकारको मजबूर होकर उसे अपने हाथोंमें लेना होगा। यह धमकी बादशाहका दिल दुखा देती है—"अँगरेज़ सल्तनत छीन लेंगे— छीन लें। मगर छीन लेंगे तो मैं क्या करूँगा, कहाँ जाऊँगा? मान लो कि इन्होंने सब कुछ छीन लिया तो ज़िन्दगी कैसे गुज़रेगी? कौन मेरा साथ देगा, अम्मीजान?"

दिलकी धड़कनोंने सन्नाटेमें ज़ोर-ज़ोरसे कहा—"ना ना!" फिर पूछा—"कौन मेरा साथ देगा, मलिका जमानिया, मुक़द्दरे आलिया, ताजमहल, आयशा बेगम, हैदर बेगम, अफ़ज़ल महल, सुल्तान महल???"

"नहीं नहीं नहीं!" नसीरुद्दीन अपनेसे हार गया। उसका जी बड़ा घुट रहा है, उसका जी बैठा जा रहा है, उसे कुछ अच्छा नहीं लगता—नाच, गाना, मुसाहिबोंके खेल खिलवाड़ सब फीके लगते हैं। नसीरुद्दीन तड़पके साथ अपनी कुर्सीसे उठ खड़ा हुआ; नौकर-चाकर बाँदियाँ सब घबराकर बादशाह सलामतका रुख पहचाननेके लिए सतर्क हो गये लेकिन बादशाहको ख़ुद नहीं मालूम कि उनका रुख़ किधर है? तेज़ीसे दिमाग़ हर तरफ़ चक्कर मार गया और झुँझलाकर उसने तय किया कि वह मलिका ज़मानियाके महलोंमें जायेगा। यह उसकी मजबूरी है कि बादशाह बेगम और मलिका ज़मानिया ही उसे अब भी बाँध पाती हैं। इसी दैरो-हरमके झगड़ेसे छूटकर उसने गोरी बीवीकी छातीमें मुँह छिपाकर सुकून पानेका बहाना लगाया था लेकिन वह बहाना टूट गया और उसे बहाना चाहिए, सहारा चाहिए।

सुखपाल आई, मज़बूत हब्शी बाँदियाँ आलमपनाहको अपने कन्धों पर उठा ले चलीं।

हुज़ूर मलिकाज़मानियाके यहाँ खबर पहुँची कि बादशाह सलामत तशरीफ़ ला रहे हैं। दुलारीने चौंककर यह ख़बर सुनी, आमतौर पर

बादशाहके आनेका यह वक्त नहीं था, फिर भी वे झटपट बादशाहका स्वागत करनेके लिए तैयार हो गयीं। बाँदियोंमें हड़बड़ पड़ी, सब क़रीनेसे इधर-उधर अपने काम-काज पर लग गयीं। बादशाह सलामत तशरीफ़ लायेंगे, शायद शराब माँगें, शायद शामका नाश्ता यहीं करें, शायद ये करें, वो करें—बाँदियोंने हर शायदका इन्तज़ाम चटपट कर डाला।

बादशाह सलामत तशरीफ़ लाये। मलिका ज़मानियाने कमरेके बाहर निकलकर बड़े अन्दाज़से उनका स्वागत किया और हाथमें हाथ झुलाते हुए उन्हें अन्दर लायीं।

आठ दस महीने पहले जिस रात मलिका ज़मानिया और नसीरुद्दीन में ताजमहलके महलोंमें दाख़िल किये जानेसे झगड़ा हुआ था तबसे नसीरुद्दीन हैदर कम ही आते हैं, बल्कि मलिका ज़मानियाको बहुत इसरार कर उन्हें बुलाना पड़ता है ताकि उनके आते-जाते रहनेसे दरबारियों और बादशाह बेगमको मलिकाके ख़िलाफ़ कोई नया गुल खिलानेका मौक़ा न मिल सके, फिर भी उसकी हैसियत नरम पड़ गयी है। इसीलिए आज अचानक बादशाहके आनेसे वह पहले तो चौंकी मगर फिर बहुत ख़ुश हुई। शायद बादशाहका मन वह फिर जीत लेगी। अब वह निगोड़ी गोरी मेम नहीं जो दोनोंको अलग कर सके। ताजमहल या मुक़द्दरे आलिया या रोज़ आती जाती बादशाहकी खुशनुमा माशूक़ोंसे उसे डर नहीं लगता। बादशाहबेगमकी भी अब उसे ज़्यादा परवाह नहीं। हकीम मेहदीके आनेसे बेगम पहलेके मुक़ाबलेमें बहुत कमज़ोर पड़ गयी हैं और कैवाँजाहको वलीअहद बनानेके लिए दुलारी बहुत पहले ही बादशाह सलामतसे ख़ुद गवर्नर ज़नरलको दो-दो बार ख़त लिखवा चुकी है। गवर्नर जनरल बादशाहकी इस ख्वाहिशके ख़िलाफ़ काम नहीं करेंगे, अभी तक यही क़ायदा चला आता है। दुलारीके बेटेके लिए बादशाही तख़्तोताज महफ़ूज़ है। नसीरुद्दीन उसके क़ब्जेमें है, देखो न दौड़कर

आया है, चेहरे पर घबराहट है, मासूमियत है ! यह मुझसे बचकर जायेगा कहाँ ? दुलारीके बिना आलमपनाह बेपनाह हो जायेगा ।

बीच कमरेमें मसनदके सहारे बादशाह और मलिका एक दूसरे पर झुके हुए कन्धेसे कन्धा जोड़कर बैठे थे । कमरा आराइशोंसे भरा हुआ था, दीवालगीरी पर नायाब बेशक़ीमती जवाहरातके खिलौने सजे हुए थे । मलिकाज़मानियाने अँगरेज़ोंकी नक्लमें अपने कमरेमें अँगीठी रखनेका आला और उसपर दीवालगिरी बनवाई थी । बीचोबीच जड़ाऊ मोर था, कमरेमें ज़रा अँधेरा रहता था । इसीलिए मोरके दोनों ओर दिन में भी दो शमाएँ जलती थीं । अगल-बगल नीलम और पुखराजके छोटे-छोटे कई खिलौने सजे हुए थे । एक कोनेमें संगमर्मरकी मेज़ पर हाथी दाँतका बना हाथी एक दरख्तसे जंज़ीरके सहारे बँधा हुआ सूँड़ उठाकर मानो सलाम कर रहा है, महावत पास खड़ा है, क़िलेके फाटकके बाहर घुड़सवार और पैदल सिपाही क़रीनेसे खड़े हैं गोया बादशाह सलामतकी अगवानीमें खड़े हों । दीवारों पर विलायती चित्रकारकी बनाई नग्न नारी यौवनकी दो बड़ी-बड़ी बेहतरीन तस्वीरें टँगी हैं, एक कोनेमें संग-मर्मरकी विलायती मेज़ पर इंगलैण्डसे खासतौर पर मँगवाई हुई जड़ाऊ और नक्काशीदार फ्रेममें घड़ी रक्खी है । बाक़ी दोनो कोनों पर बड़े-बड़े झाड़ रक्खे हैं जिधर नज़र जाती है उधर ही नज़रोंमें चमक भर जाती है ।

बादशाह सलामतको रिझाने और खुश करनेके शग़ल शुरू हुए । चौपड़ हुई, जी न लगा; फ़ारसीकी नई ग़ज़लें गाई गईं, बादशाहके दिल को छू सकीं, गानेवालियोंको इनाम मिला; नाश्ता हुआ; हँसी मज़ाक चलने लगे । मुँहलगी बाँदियाँ चहचहाने लगीं, दुलारीके क़हकहे शुरू हुए, नसीरुद्दीनका जी बहलने लगा । उन्हें प्यास लगी, एक बाँदी चाँदीकी तश्तरीमें रख कर सोनेके कटोरेमें पानी लाई । नसीरुद्दीनने पानी पीकर लानेवाली बाँदीके अधमुँदे मुखड़े पर पड़ी रेशमी नक़ाब पर कटोरेका बचा-

खुचा पानी उछाल दिया; बाँदियाँ हँसीं गोया आक़ा ए आलमने बड़ा मज़ाक किया। पानीने नक़ाब गीली कर दी, नाक और होठों और ठोडीसे गीला कपड़ा चिपका, बाँदीने नक़ाब उतार दी, पानीकी कुछ बूँदें उसकी रेशमी सलवार पर फिसल रही थीं, बाँदीने दोनों हाथोंसे अपनी सलवारकी वे बूँदें बादशाहके कोट पर झाड़ दीं। बाँदीका चटपट गीली नक़ाब उतारना, एक सलोने मुखड़ेका यों परेशानीमें उरियाँ होना और फिर यह शोख़ी, यह सितम—बादशाहके जीको बेहद रुचा। बाँदियाँ मुँहलगी हो जाने पर भी आमतौर पर यों शोख नहीं होतीं कि दिल्लगीमें तनिक भी बेअदबी कर बैठें। मगर बादशाहको बाँदीकी यह अदा बेहद पसन्द आई; ज़ाहिरा तौर पर नाराज़ हो कर कहा: "तेरी यह मजाल कि अपने बादशाह पर छींटे डाले।"

और सहमीं पर ये बाँदी न घबराई, बादशाहसे नज़रें मिलाते हुए उसी शोख़ीसे जवाब दिया: "खेलमें कोई बादशाह और ग़ुलाम नहीं होता जहाँपनाह।"

"वल्लाह।" नसीरुद्दीनकी आँखोंमें चमक भर गई, पल भर उसे ग़ौर से देखते रहे फिर मलिकाकी ओर मुख़ातिब होकर पूछा: "ये शायद नई आई है।"

"जी हाँ।"

"होशियार है।" बादशाह सलामत उठ खड़े हुए। चलते-चलते उस शोख़के गालोंपर मीठी चुटकी भरी, पूछा: "तेरा नाम क्या है?"

"कनीज़को बिस्मिल्लाह बानू कहते हैं सुल्ताने आलम।"

बादशाह तशरीफ़ ले गये। दूसरे दिन फिर आये, फिर उन्हें प्यास लगी। बिस्मिल्लाह पानी लाई, फिर वही खेल हुआ, वही जवाब-सवाल हुए। बादशाहने बड़ा रस लिया, मलिका ज़मानियाका सिर ठनका, आँखोंमें लाली आ गई, पर कुछ न बोली।

तीसरे दिन बादशाहने मलिका ज़मानियासे पतंगका मैदान बदा।

महलकी छतपर मलिका ज़मानियाका हसीन अखाड़ा जमा हुआ। जहाँ-पनाह तशरीफ़ लाये, हर ओर नज़र डाली, बिस्मिल्लाह बानू न दिखलाई दी। हुज़ूरे आलम उसीके बहाने पेंच लड़ाने आये थे, तरह-तरहके नक़्शे मनमें बाँध कर आये थे, बहानेबाज़ मनको अपना बहाना न मिला तो बिना कुछ कहे ही रूठ कर चले गये। मलिका ज़मानियाका चेहरा उतर गया। बदलेमें बहाने-बहाने बिस्मिल्लाह खूब पिटवाई गई। उसका जी चाहा कि बिस्मिल्लाह बानूको क़त्ल करवा दे, मगर बादशाहकी नाराज़ीका डर था।

बिस्मिल्लाह बानूके पास बादशाहके खुफ़िया पैग़ाम आने लगे, लेकिन वह मलिकाकी कड़ी निगरानीमें थी। बिस्मिल्लाहने जवाबमें उम्दा अशआर लिख कर भेजे। नसीरुद्दीनके दिलमें बिस्मिल्लाह बानूके लिए ऐसा वियोग समाया कि सीतलपाटी लेकर पड़ रहे।

मलिकाज़मानियाने बड़ी-बड़ी कोशिशें कीं, रिझानेकी हर तरकीब की, गण्डा-तावीज़ बाँधा, बादशाहके खानेमें, बावर्चीख़ानेमें हज़ारोंकी रिश्वत बाँटकर जादूकी पुड़िया मिलवाई, हर तरहसे ज़ोर आज़माइश की—मगर मर्ज़ बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की। एक दिन बादशाहने नाराज़ होकर कहलाया कि अगर दुलारीने उनके और बिस्मिल्लाह बानूके मिलनमें तनिक भी बाधा डाली तो वे उसे उसी हैसियत पर पहुँचा देंगे जहाँसे वह आई थी।

दुलारी हार गई, टूट गई। इतनी सख्त बात उसने अपने शाही दिलबरसे कभी न सुनी थी। बिस्मिल्लाहबानू लाखोंकी चमकसे सज, बाँदियोंके हुजूमसे घिरकर राजसी डोलेमें बैठ बादशाहके महलोंमें पहुँच गई। बादशाहकी खास खिदमतगार धनिया महरीने जो उसे लिवा लानेके लिए भेजी गई थी, बिस्मिल्लाहबानूको कमरेमें छिपा दिया।

बादशाह बेताबीसे इन्तज़ार कर रहे थे। धनिया अकेली आई।

नसीरुद्दीनका जी धकसे बैठ गया, पूछा: "बिस्मिल्लाहबानू कहाँ है?"

"वो नहीं आतीं सरकारेआलम।"

"क्यों?" शाही आँखें सुर्ख़ होने लगीं।

"नई बेगमसाहबा फ़रमाती हैं कि हुज़ूरकी नज़रे इनायतसे मेरा दर्जा तो बढ़ा, मगर दीगर बाँदियोंको क्या मिला, उनकी भी तरक्क़ी होनी चाहिए।"

बादशाह समझे; ज़ोरसे हँसे। बाँदियोंकी तनख्वाहें दूनी हो गईं। धनिया और उसकी बहन दलवीने लड़-झगड़कर कई हज़ार इनाममें वसूल किये।

अबतक तक़दीरकी मारी, अच्छी ख़ानमकी पाली बेटी, वहीदनकी मेहरबानीसे महलोंमें दाखिल होनेवाली बिस्मिल्लाहबानू बेगम अब अवधके ताजदार बादशाहकी सिरताज थी। नई पदवियोंसे विभूषित होकर अब उसका नाम हुआ—नवाब मुक़द्दरेज़मां मेहदेउज्ज़मा बिल्किस दौरान मलिकये आफ़ाक़ क़ुद्सिया सुल्तान मरयमबानू बेगम।

ज़माना उसे क़ुद्सिया बेगमके नामसे पुकारने लगा।

२८

क़ुद्सियाबेगमने अपनी नई हैसियतको कुछ ही दिनोंमें ऐसा साध लिया और इस तरहसे बरतने लगी गोया कि वह हमेशाकी शाहजादी और मलिका ही रही हो। उसने अपने आपको सारे ऐश्वर्यके घिराव के बावजूद हर समय बाहोश बनाये रक्खा। वह अपने महलका इन्तज़ाम ख़ुद देखती थी। अच्छीख़ानम और कुलसुम महलोंमें ही आ गई थीं। उसने अच्छीख़ानमके ज़िम्मे ख़र्चका कुल हिसाब-किताब किया और आप भी बराबर नज़र रखनी शुरू की। क़ुद्सिया बेगमकी बाँदियाँ आपसमें कानाफूसियाँ करने लगीं। ओने-कोने बैठ ताने-ठोने मारना मलिका ज़मानिया और दूसरी बेगमातके महलोंमें जानेपर हाथ-हाथ भरकी ज़बान निकाल क़ुद्सियाबेगमकी बुराइयाँ करना शुरू किया। ख़बर उड़ी कि

बड़ी चालाक है, पैसा-पैसा बटोरकर अपने बुरे दिनोंका इन्तज़ाम अभीसे कर रही है; कोई कहती मुंतज़िम बनकर शाही हुकूमतपर कब्ज़ा करनेके ख्वाब देखती है; कोई हँसकर कहती कि कुछ दिनों बाद हकीम मेहदीको निकलवाकर खुद वजारतका क़लमदान सम्हालेगी। बाँदियोंने तरह-तरहसे उसकी बदनामी फैलाना शुरू की।

क़ुद्सियाबेगम तक हर बात पहुँच जाती थी। अच्छीखानमका इन्तज़ाम बड़ा चौकस था, शाहीमहलोंमें रह चुकनेके कारण, ज़िन्दगीकी ऊँच-नीच देखचुकनेके कारण वह किसी भी परिस्थितिके प्रति लापरवाह नहीं रहना चाहती थी। मुफ्तकी फैलती बदनामीसे वह सहमी, क़ुद्सियासे कहा : "बिटिया, साँपको मारना बहुत ज़रूरी है मगर लाठीको बचाना भी उतना ही ज़रूरी है। आखिर साँप कोई एक तो नहीं है यहाँ तो कोने-कोने बाँबियाँ हैं।"

"चाहती क्या हो?" क़ुद्सिया बेगमने पूछा।

"धनिया और उसकी बहनको हाथमें लेना होगा।"

"किस तरह?"

"रिश्वत देनी होगी। उसे यह यक़ीन दिलादो कि तेरी आमदनी बन्द न होगी मगर और हर तरफ़की लूटको तुझे क़ाबूमें करना होगा। उसकी बहन दलवी भी ध्यान रक्खेगी। चार गवाँकर छह बचानेमें ही अक्लमन्दी है, दस बचानेके फेरमें हजार दुश्मन पैदा होंगे।"

क़ुद्सियाने ग़ौर किया, बोली : "ठीक कहती हो अम्मी। इस वक्त जैसे भी हो, उस नेकबख्त इंसानकी इज़्ज़त बचानी ही होगी जिसने मुझे ख़ाकसे उठाकर आस्मानपर चढ़ा दिया।"

क़ुद्सिया बेगम सच ही इतने दिनोंमें नसीरुद्दीनपर रीझ गई थी— उसने देखा वह कुल्सुमकी तरह ज़िद्दी है, नेक है, बच्चा है। जिस तरह कुल्सुम दूसरोंके-ज़ोर दबावका विरोध करते-करते कठोर हठ साध गई उसी तरह नसीरुद्दीन भी। कुल्सुम पर वे तमाम ज़ोर दबाव कठिन अत्याचारोंके

साथ पड़े और नसीरुद्दीन पर भुलावा देकर। दोनों एक ही-से हैं, दोनों बच्चे हैं, दोनों ही बड़े प्यारे हैं; जिस दिन कुल्सुम आई उसका नसीब चमक उठा। नसीरुद्दीन बड़े दुःखसे कहता कि जब अँगरेज़ उसे सल्तनत की बदइंतज़ामीके कारण मीठी फटकार सुनाते हैं तब वह मन-ही-मन घुटनसे बावला हो उठता है। क़ुद्सिया उसकी इसी घुटनको खत्म करना चाहती है, अपने महलोंकी लूट खत्मकर एक जगहके इंतज़ामको अपने क़ाबूमें लेकर वह सल्तनतके सुधारके लिए अनुभव और विश्वास ग्रहण करना चाहती है। क़ुद्सिया अपनी महत्त्वाकांक्षाको लेकर दिन रात चिंतित रहती है—उसकी महत्त्वाकांक्षा एक है—नसीरुद्दीनको आदमी बनाना, उसे सुखी जीवन प्रदान करना।

उसने धनियाको बुलाया, अकेलेमें बात की, कहा : "बहन, तुम्हारी मदद चाहती हूँ। तुम्हें अपनी बड़ी बहन मानकर तुम्हारे आगे अपना दामन फैलाती हूँ, इसकी लाज रखना, अपने बादशाह और सल्तनते अवधकी लाज रखना।"

धनिया क़ुदसियाकी बातोंमें बह गई। बड़ी-बड़ी बाते हुईं, बड़े नक्शे बँधे, उसने वादा किया कि वह बादशाहके महलमें लूटको यक़ीनन रोक देगी लेकिन क़ुद्सिया बेगमके हकमें भी निहायत यह ज़रूरी है कि वह मुंतज़िम होनेका जस पाये, न कि कंजूस कहलानेका अपजस।

क़ुद्सिया बोली : "तुम सलाह दो, कैसे करूँ?"

धनियाने कहा : "अच्छा, आज शाम यही करिश्मा होगा, आप देखियेगा, ज़माना देखेगा, बादशाह सलामत भी खुश होंगे और नौकर बाँदियाँ भी।"

शाम हुई; कोठी फ़रहबख्शसे शाही सवारी सराय मआलीख़ाँके नज़दीक़ नवाब क़ुद्सिया बानू बेगमके महलोंकी तरफ़ रवाना हुई। आगे-आगे हाथीपर कारचोबीके मण्डपमें नक्कारा बजता चलता था, झण्डा, मछली आदि शाही निशान भी हाथियोंपर थे। हाथियोंके सिर, कानों और

सूँड़ोंपर चित्रकारी बनी थी, सोने-चाँदीके ज़ेवर पहने थे, पैरोंमें बड़े-बड़े घुँघरू और गलेमें घंटियोंकी माला, कारचोबीकी मखमली झूलें और गंगाजमनी हौदे थे। हाथियोंके बादशाही अंगरक्षक घुड़सवार भड़कीली फ़ौजी वर्दियाँ डाटे भालोंमें झंडियाँ फरकाये खबड़-खबड़ चले जा रहे थे; उसके बाद सोलह घोड़ोंकी बग्घीपर सुलेमानजाह उम्दतुलमुल्क नसीर-उद्दीन हैदरखाँ बहादुर असद जंग शाहे-अवध तशरीफ़ फ़रमाँ थे। बड़ी मूँछोंवाला गोरा विलायती कोचवान भड़कीली पोशाकमें बड़ी शानसे बैठा था, जुते हुए घोड़ोंपर भी अंगरक्षक सवार थे। पीछे शाही छत्र थामे एक आदमी खड़ा था। बाँदियाँ मोरछल झल रही थीं। पीछे दो और बन्द गाड़ियाँ चल रही थीं और सबसे पीछे घुड़सवारोंकी एक टुकड़ी और चली जा रही थी।

शाही गाड़ीके दोनों ओर घुड़सवार भिखमंगोंकी भीड़को एक हदसे आगे न बढ़ने देनेके लिए चाबुक फटकारते चलते थे। रास्तेके बाज़ारोंमें दूकानदार, राह चलते लोग अदबसे झुक-झुककर दोनों हाथोंसे सलामें करते, ऊँची आवाज़ोंमें दुआ-ए-ख़ैर मनाते। भिखमंगोंकी बेतादाद, बेतरतीब, बदअमनीसे भरी भीड़ बादशाहके लिए बड़े-बड़े लम्बे-लम्बे आकाशचुम्बी आशीर्वादोंकी बौछार इधरसे करती और उधरसे बादशाह सलामतकी बाँदियाँ धनिया और दलवी सड़कके दोनों ओर पंचसेल सिक्के उछालती चलतीं, बीच-बीचमें बादशाह सलामत भी जब कभी मौज आ जाती तो दो मुट्ठी इधर-उधर फेंक देते। बादशाहके हाथ उठाते ही दुआओंकी घनगरज तोपें-सी दग उठती हैं। बड़ा रौरा मचता है; आस्मानसे लेकर धरती तक निगाहें और हाथ उछलते-गिरते सिक्के लोकते हैं, लूट पड़ जाती है, घमासान छिड़ जाता है। भिखारियोंकी भीड़में नसीरुद्दीन हैदरशाह अपने वर्तमान कालका प्रतीक बन कर, सारे ऐश्वर्यके साथ भी भिखारी ही लगता है।

उन दिनों लखनऊमें हज़ारों बल्कि लाखसे ऊँचे भिखारी थे। शाही

महलोंकी बहुत बूढ़ी बाँदियाँ, बूढ़ी लाचार वेश्याएँ, दूर-दूर गाँवोंकी उजड़ी, शाही सिपाहियों, डाकुओंके बलात्कार स्वरूप घर-बिरादरीसे निकाली गईं औरतें, बेसहारा विधवाएँ भीखके सहारे ही जीती थीं। भिखारियोंमें उनकी संख्या सबसे अधिक थी। लूले-लंगड़े, अपाहिज भी थे। मगर इनके अलावा हज़ारों ऐसे भी थे जिन्होंने भीख माँगना अपना पेशा बना लिया था। उन्हें मालूम होता रहता था कि कब किस रईसकी सवारी, किस सड़कसे गुज़र रही है। निकाह, मुसलमानी, ब्याह, जनेऊ, मुण्डन, नकछेदनमें किस रईसके यहाँ कितनी खैरात बटे, ये भिखारियोंके दल ही तय किया करते। भिखारियोंका इतना ज़ोर था। शाही महलके सामने, दीगर महलातके सामने, बड़े-बड़े वज़ीर, दीवान, अहलकारोंकी कचहरियोंके सामने, बड़ी-बड़ी मस्जिदों, दरगाहों, मन्दिरों, घाटोंके सामने लँगोटी लगाये, चिथड़े लपेटे, फटे पाजामे-अँगरखे पहने, नंगे सिर, बड़ी-बड़ी बिखरी-सी दाढ़ियाँ मूँछें बढ़ाये, धनुष-बाण, लट्ठ-बर्छी-भाले, ढाल-तलवार-कटारसे लैस भिखारी झुण्डके-झुण्ड हर वक्त खड़े मिलते थे। दाता देखा; देखते ही दयनीय बत्तीसी खुलनेकी क्रिया उतनी ही सहज भावसे होती जैसे जनमते ही जीवको साँस लेना आ जाता है। हुज़ूर दाता माई-बाप सरकार ग़रीबपरवरका रुतबा बढ़े, उमर हज़ारी हो, साहबज़ादे साहबज़ादियोंकी ख़ैर, पगड़ी, पुरनूर चेहरेकी ख़ैर, क़ीमती ज़ेवरों-पोशाकोंकी ख़ैर, हाथी-घोड़ोंकी ख़ैर, दौलत-दरबानोंकी ख़ैर, हरमकी ख़ैर, पोते नवासोंकी ख़ैर, धरम-ईमानकी ख़ैर मनाते घिघियाते सवारियोंके साथ-साथ झोली फैलाये दौड़ना, कम देनेवाले दाताकी पीठ फिरते ही उसकी माँ-बहन-बेटियोंसे ज़बानी रिश्ते क़ायम करना, आपसी हिस्से बाँट, नोच-खसोट करना, बे-झिझक खुलेआम आपसमें वह सब कर गुज़रना जो गली-सड़कों पर उनके साथ उनके समान ही रहनेवाली कुत्तोंकी बिरादरीमें होता है। यही भिखारी-समाजका नियम था। इसलिए बच्चे एक दीन धरमके होते थे; कालीमाई और

बीवी फातिमा उनके धरम-मज़हबमें एक थीं। भिखारी मालदार होते थे; कइयोंने मकान खड़े कर लिये थे। इनके अलावा मुड़चिरे, अघोरी, हठीले शाह थे कि जिनके मुँहसे जो निकल जाय वह माँग दाताको पूरी करनी पड़े; जब तक न करें तब तक वे उसकी दूकान या मकानके दरवाज़े पर धरना देके बैठ रहें, खप्पर-चिमटोंसे अपना सिर फोड़ें, गालियाँ बकें, शाप दें, पाख़ाना-पेशाब खायें-पियें और उसके दरवाज़े पर छितरायें—भिखारी ऐसे ज़बर्दस्त थे कि उनसे सल्तनतका बस भी न चलता था। सल्तनत ही भिखारियोंकी थी, बादशाह भी अंगरेज़ोंके दरबारका भिखारी था।

बादशाहकी सवारी नवाब क़ुद्सिया बानू बेगमके महलोंमें पहुँच गई। फाटकपर शहनाई और अंगरेज़ी बैण्ड बज उठा। महलमें दाखिल होते ही बादियाँ, ख्वाजासरा, दरबान बाअदब कमर झुका-झुकाकर कोर्निश करने लगे। बाहर बरामदेमें निकलकर क़ुद्सिया बेगमने झुककर ताज़ीम की। बादशाहने बेसाख्ता उसे उठा बाँहोंमें भरकर चूम लिया। बाँदियों की नज़रें अदबसे झुकी हुई थीं। क़ुद्सिया और नसीरकी नज़रोंमें चमकके फूल झड़ रहे थे, गलेमें बाहें डाले आगे बढ़ते हुए भी टकटकी टूटती न थी, मुसकराहट छीजती न थी। दोनों बेखुदीके आलममें बँधे-बँधे बढ़ रहे थे।

बादशाहकी ज़नाना फ़ौजकी जनरल ग़फ़ूरन बुआ उनके यहाँ आनेसे पहले ही दीवानख़ानेके दरवाज़े पर अपनी जगह ले चुकी थीं। बादशाह सलामत जिस वक्त जिस महलमें होते ग़फ़ूरन बुआ वहीं तैनात होती थीं। दरवाज़े पर पहुँचते ही जनरल ग़फ़ूरन बुआने तनकर फ़ौजी सलूट झाड़ा, नसीरुद्दीन रोमानी ख्वाबसे होशमें आया, ग़फ़ूरन बुआके सलूट पर कुछ ऐसी तबीयत मस्त हुई कि खुद भी उसी तरह ग़फ़ूरन बुआको सलूट झाड़ दी; क़ुद्सिया बेगम और तमाम बाँदियाँ खिल-खिलाकर हँस पड़ीं। जनरल ग़फ़ूरन बुआ कुछ भौंचकी हुईं कुछ झेंपी; फ़ौजी वर्दीमें जकड़ी

उनकी मोटी लम्बी-चौड़ी देहमें, आँखों और चेहरे पर झेंप और भौंचक्का-पनकी गड़बड़ीने कुछ ऐसा रंग जमाया कि हँसी और चमकी।

धनिया आगे बढ़कर हाथ मटकाते हुए बोली : "ऐ वा' सरकार, भला ये भी कोई बात हुई कि भोली मासूम जानकर मेरी नन्हीं गुलबदन-को छेड़ दिया। मैं हुज़ूर बेगम साहबाके दरबारमें इसका फ़ैसला कराऊँगी।"

कमरेके अन्दर बढ़ते हुए हुज़ूरने फ़रमाया : "हमें मंज़ूर है।"

शाही जोड़ा मसनदपर विराजमान भी न हो पाया था कि दरवाज़ेपर ग़फ़ूरन बुआकी गालियाँ गरजने लगीं, धनियाने अपनी आदतके मुताबिक़ जण्डैलसाहबाकी वर्दीपर हाथ फेर उनके ज़नानेपनको और भी छेड़कर भड़का दिया था : "ऐ तेरी जवानीमें आग लगे, तेरे चाहनेवालेका बुरा हो, ख़ुदाका क़हर नाज़िल हो तुझपर···" ग़फ़ूरन बुआ रस्सीकी तरह कोसने बटने लगीं। उन्होंने भी बादशाहसे इसी वक़्त इस झगड़ेका फ़ैसला चाहा। दीवानख़ानेमें हँसी-मज़ाक़की चहक भर गई। सब ओरसे इन्साफ़ की फ़रमाइश हुई। दो मुक़द्दमे थे, एक फ़रियादीने बेगमसाहबासे फ़रियाद की थी और दूसरीने बादशाह सलामत से। नसीरुद्दीनने कहा कि पहले हम मुक़द्दमेका फ़ैसला करेंगे और बेगम साहबा बोलीं कि धनियाने पहले हमसे फ़रियाद की थी लिहाज़ा पहला फ़ैसला हमारे इज-लासमें होगा। दोनो क़ाजियोंमें भी 'पहले हम पहले हम' का झगड़ा पड़ा तो दलवी बोली : "अब तो ऐसा लगता है कि सबसे पहले इस कनीज़को ही क़ाज़ी बनना पड़ेगा। मैं मोहर उछालती हूँ, हुज़ूर फ़रमायें कि इबारत या मछली—"

"मछली मेरा निशान है। या अली, मेरी दुआ क़बूल हो।" नसीरुद्दीन हैदरने हाथ बढ़ा कर कहा।

"या अली, मेरी दुआ क़बूल हो।" कुद्सिया बेगमने कहा।

दलवीने मोहर उछाली, कुद्सिया बेगम जीत गयीं। बादशाह सलामत

को आमतौर पर शर्तें जीतनेका अभ्यास है, ज़िन्दगीकी इस पहली हारसे वे अनमने हुए, आँखोंके डोरोंमें सुर्खी झलझलाने लगी, भवोंमें बल पड़ गये। क़ुद्सिया बेगमने यह रुख़ देखा तो ख़ुद भी भवोंमें बल डालकर बादशाहको हल्के हाथसे धक्का-सा देकर कहा—"ऐ जाइये भी, ज़रा सा मन का न हुआ तो लगे लाल पीले होने। अल्लाह तालाके इंसाफ़पर क्यों नहीं जाते जो बादशाहका दिल भी रखता है और नाचीज़ कनीज़का भी। अच्छा चलिये आइये, पहले मैं इन्साफ़ करूँगी। धनिया अपना मुक़द्दमा पेश कर।"

धनियाने गर्दनमें लोच डाल बनते हुए कहा—"ऐ वाह हुज़ूर, मेरा मुक़द्दमा कोई मामूली है? जिसके ख़िलाफ़ दावा दायर किया है वह दीनों दुनियाका बादशाह है। मैं तो लक्खी चबूतरे पर इन्साफ़ लूँगी।"

बादशाहको क़ुद्सिया बेगमकी मीठी फटकारने ताज़गी दी, प्रतिवादी बनकर उन्हें इस मुक़द्दमेमें मज़ा आने लगा। लाख रुपये फ़ौरन मँगाये गये और जब तक कि नौकर यह रकम लेकर आयें-आयें तब तक नये-नये दिल बहलाव होते रहे। पतंगोंका तज़किरा चला, दूसरे दिन दोपहरमें बादशाह और बेगममें पेंच लड़ेंगे यह तय हुआ।

बातें करते लाख रुपये आ गये। दीवानखानेमें ढेरी लगाकर उनका चबूतरा बनाया गया, उसपर क़ालीन बिछा, मसनद लगी। सबने बड़ी-बड़ी तारीफ़ें कीं, लक्खी चबूतरा क्या बना गोया नायाब करिश्मा हो गया। लेकिन क़ुद्सिया बेगम उसपर बैठीं नहीं महज़ उठकर पैरके अँगूठेसे उसका एक कोना छू रुपयोंकी एक गड्डी बिगाड़ दी, फिर अपनी जगह पर बैठकर इन्साफ़का खेल रचा। धनियाने अपना दावा पेश किया, बादशाहने उज़्रदारी की, फ़र्माया कि ग़फ़ूरन बुआ किसीकी माशूक़ बनने लायक़ ही नहीं। वो तो ख़ासी मर्द लगती हैं, कोई उनको माशूक़की तरह हर्गिज़ न अपनायेगा, चाहे मर्द हो या औरत हो।"

धनिया मुँहचढ़ी थी, उसने फौरन ही बात काटी और कहा कि जब

किसी मूँछों वालीको हमारे बादशाह सलामत जैसा हुस्नोइश्कका क़द्रदाँ अपनी माशूक़ा बनाकर उसपर अपना तन-मन-धन निछावर कर सकता है तो ग़फ़ूरन बुआ क्यों नहीं किसीकी महबूबा बन सकतीं ।

धनियाकी बात ठीक ठिकाने लगी, बादशाह झेंप गये। दुलारीके होठोंपर हल्के हल्के रोएँ थे जो कभी आलमपनाहकी नज़रोंमें दुलारीकी खूबसूरतीमें चार चाँद लगा देते थे। क़ुद्सिया बेगम वाक़ई दुलारीसे कहीं ज़्यादा हसीन थी। वह मुक़द्दरे आलिया बेग़म और नवाब ताजमहलकी तरह बर्फ़की डली सी न होकर भी नाज़ुक अंदाम थी। गोरी, बड़े सुडौल बदनवाली, गोल चेहरा, बड़ी-बड़ी आँखें, कमानदार भवें और सबसे अधिक सुन्दर उसकी सतेज आँखों और मुखमण्डलपर चमकने वाला अदमनीय व्यक्तित्व था जो क़ुद्सिया बेगमको सहसा आकर्षक और आदर की पात्री बना देता था।

झेंपकर बादशाह सलामतने धनियाका दावा मान लिया, हरजानेमें मोतियोंकी माला एक धनियाको और एक उसकी माशूक़ा गफ़ूरन बुआकी ओर फेंक दी। ग़फ़ूरन बुआने माला तो उठा ली मगर बड़बड़ाती रहीं। हँसी-खुशी यह खेल खत्म हुआ, लाख रुपयोंकी ढेरी थैलियोंमें भरी जाने लगी। क़ुद्सिया बेगम बोलीं—"जिस दौलतको मैं ठुकरा चुकी हूँ वह खजानेमें वापस न जायेगी। बादशाह सलामत इन्साफ़ करेंगे, यह यहींकी यहीं तक़सीम होगी।"

बादशाह सलामत धनियापर खुश थे, फ़रमाया कि सूझ इसी की है लिहाज़ा आधा चबूतरा उसका और बाक़ी बराबरके हिस्सोंमें सबको तक़सीम कर दिया जाय। धनिया महरीने आगे बढ़कर हुज़ूरकी क़दमबोसी की और कहा—"ज़िल्लेसुब्हानी, ना-चीज़पर आलमपनाहका साया सदा बरक़रार रहे। अल्ला रक्खे; कुर्बान जाऊँ, इस जुगल जोड़ीपर सदाअली की अमाँ रहे। एक इजाज़त चाहती हूँ, इस रक्मसे हुज़ूरकी रिआयाके लिए कोई भला काम करना चाहती हूँ ताकि दुनिया जाने कि शाहे अवध

ही नहीं उनकी हक़ीर लौंडी बाँदियाँ तक रिआयाकी बहबूदीके वास्ते बेक़रार रहती हैं। मैं बुद्धेसुरों महादेवके रास्तेमें एक-पुल बनवाना चाहती हूँ। वहाँ एक बड़े पहुँचे हुए फ़क़ीर रहते हैं, सारी खिलकत उनकी ज़ियारतके लिए जाती है, हुज़ूरकी रिआयाको बड़ी तकलीफ़ है। और हुज़ूर, अपना नाम क़ायम रखनेके लिए एक मस्जिद भी बनवाना चाहती हूँ।"

बादशाह नसीरुद्दीन हैदर धनिया महरीका यह प्रस्ताव सुनकर बड़े ही प्रसन्न हुए। उन दिनों इस्लामी धार्मिक स्थल बनवानेके लिए शाही सरकारकी ओरसे धनकी सहायता दी जाती थी; मस्जिदके बहाने धनिया के लिए नई आमदनीका द्वार भी खुल गया और मौक़ेका जस भी हाथ लगा। प्रसंग छिड़कर शामकी बातोंका महत्त्वपूर्ण विषय बन गया। बादशाह सलामत इतने जोशमें आ गये कि क़ुद्सिया बेगमकी सलाहके अनुसार उन्होंने सल्तनतके कामोंमें रोज़ वक्त देनेकी ठानी। क़ुद्सिया बेगमका आग्रह था कि ख़र्चपर क़ाबू किया जाय और रिआयाके हकमें अच्छे काम किये जाँय जिससे कि अँगरेज गवर्नरजनरलपर भी अच्छा असर पड़े। लार्ड विलियम बैण्टिङ्क बार-बार कड़ी चेतावनी भेजते थे। क़ुद्सिया बेगमने कहा कि इससे रिआयामें उनकी साख बढ़ेगी, रिआया ख़ुशहाल होगी तो फिर अँगरेज़ोंकी हिम्मत भी इस तरह धमकियाँ देनेकी न होगी। बादशाह सलामतपर इन बातोंका बहुत अच्छा असर हुआ। यतीमोंके लिए लंगरख़ाना और आम रिआयाके लिए शफ़ाखाना खोलनेका क़स्द किया।

हकीम अलीमेहदीखाँ भी उस वक्त ख़ज़ानेमें दौलतकी कमीको पूरा करनेमें जी-जानसे लगे हुए थे, यद्यपि उनका दृष्टिकोण दूसरा था। वे ज़मीदारोंको बढ़ाकर उनका राजनीतिक दल मज़बूत करना चाहते थे साथ ही शहरके विलासी अमीरोंके लिए तुरन्त धन इकट्ठा करना चाहते थे। शाही अमले आग़ामीरके बाद बादशाहबेगम और मलिका ज़मानियाकी

आपसी राजनीतिक चालोंके कारण निरंकुश और लापरवाह हो चुके थे। शाही सेनामें सुचारु संगठन और संयम न होनेके कारण उसमें अवधकी विद्रोही प्रजासे मालगुज़ारी वसूल करनेकी शक्ति न थी। नवाब सआदतअलीखाँने मालगुज़ारी वसूल करनेकी पुरानी इजारेदारी पद्धति को समाप्ति कर अमानीपद्धति चालू की थी। इजारेदार मालगुज़ारीके अतिरिक्त अपना मोटा मुनाफ़ा मारनेके लिए प्रजाको बहुत सताते थे। नवाबने जब बीचके दलालको हटा दिया और प्रजासे सीधा कर वसूल किया तो प्रजाके प्राण बचे, रोज़की लूट खत्म हुई, खेती-बारी निश्चिन्त होकर फलने-फूलने लगी; अच्छी शासन-व्यवस्थाके कारण राजखज़ानेकी भी दिनोंदिन उन्नति हुई, साथ-साथ प्रजामें भी वैभव-समृद्धिके दिन बहुरे थे। परन्तु शासनकी कुव्यवस्थाके कारण अमानीपद्धतिसे राजकोषको बहुत घाटा हो गया था। हकीम मेहदीअलीने फिरसे इजारापद्धति चलाकर राजकोषके लिए धन खींचना तो आरम्भ कर दिया परन्तु प्रजाको दो चक्कीके पाटोंमें पिसनेके लिए छोड़ दिया।

हकीम मेहदीअलीखाँकी सख्तीसे कमसे कम राजधानीमें शाही मुहकमे सुचारु रूपसे काम करने लगे। शहरकी बदअमनी कम हुई। बादशाह भी काम-काजपर नज़र रखने लगे, हालाँकि उनकी नज़र बेमानी थी। हकीममेहदी जो सुझा देते वह उन्हें ठीक लगता था। मौक़ा देखकर उन्होंने अँगरेजोंसे संकेत पाकर एक नयी चाल चलना आरम्भ किया। क़ुद्सिया बेगमकी बड़ी-चड़ी तारीफ़ें करना शुरू किया और बादशाहको इशारतन् यह यक़ीन भी दिलाने लगे कि सही और सच्चा साथी मिल जानेके कारण बादशाहसलामत निश्चय ही किसी दिन सर्वशक्तिमानके प्रतापसे शासनके भावी उत्तराधिकारीके पिता भी बन सकते हैं। अभी उनकी उम्र ही क्या है? और इस ख़ुशामदके साथ ही उन्होंने बादशाह सलामतको गवर्नर जनरलका वह ख़रीता भी दिया जिसमें युवराज पदके लिए मुन्नाजान और कैवाँजाहमें एकको चुननेका तुरन्त आग्रह था।

नसीरुद्दीन चौंका; उसे सोचना पड़ गया और अन्तमें उसने मुन्नाजान के प्रति शाही कार्यवाही करनेका आदेश दे दिया।

गड़े मुर्दे उखड़ने लगे। हकीम मेहदीने मुन्ना धोबिनके पति पीरा धोबी, पड़ोसी परवरिशअली, मिर्ज़ा इनायत अली, शेख़ ज़ैनुल्लाह, दौलतख़ाना क़दीमकी दाई मुसम्मात महताब, बादशाहबेगमकी पुरानी दासी नौबतीखानम मुग़लानी आदिके बयान लेकर तफ़तीश करनेके पूरे नाटकके साथ यह नतीजा निकाला कि मुन्नाजान बादशाह सलामतकी औलाद नहीं है; वह पुराने मंत्री और बादशाहबेगमके वात्सल्य भाजन मीर फ़ज़लअलीकी जारज सन्तान हो सकता है।

बादशाहबेगम इस तमाम कार्यवाहीसे आगबबूला हो उठीं। उन्होंने भी बरसोंका गड़ा मुर्दा उखाड़ा, अँगरेज़ सेक्रेट्रीको ख़त लिखकर यह बतलाया कि धोबीकी सन्तान तो दरअस्ल नसीरुद्दीन हैदर है जिसे स्वर्गीय बादशाह गाज़ीउद्दीन हैदरने अन्याय पूर्वक अपना उत्तराधिकारी बनाकर गद्दी दे दी। दर अस्ल गद्दीके असली मालिक उनके दोहते नवाब मुहसानुद्दौला हैं।

लेकिन इस ख़तका कोई असर न हुआ। बात बड़ी पुरानी थी और नवाब सआदतअली ख़ाँके जीवनकालमें ही इसका सच झूठ परखा जा चुका था। बादशाह बेगमने जलनके मारे पहले भी यह ख़बर उड़ाई थी परन्तु गुस्सा ठंडा हो जानेपर, फ़ैज़न बीवी और ससुर नवाब सआदतअली ख़ाँके समझाने-बुझाने पर उसने अपनी झूठी ख़बरको नन्हेंसे नसीरुद्दीन को अपनी गोदमें उठाकर सरेआम झूठ साबित कर दिया था। लखनऊ के राजनीतिक क्षेत्रोंमें लोग यह भी जानते थे कि उसी पुरानी बातका बदला लेनेके लिए आग़ामीरने मुन्नाजानके पैदा होनेपर उसे पीरा धोबी की औलाद बतलाया था।

अपनी औरस सन्तान फ़रीदून बख्त रफ़ीउद्दीन हैदर उर्फ़ मुन्नाजान को नसीरुद्दीन हैदर जिस निर्ममतासे त्याग सका उसके पीछे एक मानसिक

प्रक्रिया काम कर रही थी। मुन्नाजानके जन्म से पूर्व माताकी नीतिवश पचीस महीने तक उसके गर्भमें रहनेकी सूचनाके बावजूद पुत्र-जन्मके अवसर पर वह परम प्रसन्न हुआ था। उसमें अपने प्रति आस्था उत्पन्न होने लगी; परन्तु उसकी पुंसत्व शक्तिके प्रति शंका भरे ज़ोरदार आग़ामीरी प्रचारसे और दुलारीके स्वार्थवश मीर फ़ज़लअली तथा मुन्नाजानकी माता अफ़ज़ल महलके प्रति शंकाके बीज बो देनेके कारण उसका जमता-जमता सा आत्म-विश्वास तिरोहित होने लगा। बहुत कच्ची उम्रमें ही बाँदियोंके साथ विषय-भोगके अतिचारसे उसकी शक्ति क्षीण हो चली थी, नई जवानीमें ही निरन्तर हकीमोंकी शरण लेनी पड़ी। आग़ामीरने नसीरुद्दीन की इसी शर्मको उभार कर उसके मनमें झकोला डाल दिया था। चूँकि ग़ाज़ीउद्दीन हैदर भी बादशाहबेगमसे अपने वैमनस्यके कारण पोते-को अपना न मानते थे और दुलारी-सुलखिया षडयन्त्रके कारण वह उन दिनों अपनी सौतेली माताके क़ब्ज़ेसे निकलकर पिताके प्रभावमें आ गया था, इसलिए हठके साथ उसने मुन्नाजान और उसकी माताकी ओरसे अपना मुँह मोड़ लिया, उनसे चिढ़ने लगा। बादमें जब ग़ाज़ीउद्दीन हैदर तकने मुन्नाजानको अपना पोता मानकर उसे गोदमें लेकर खिलाया तब भी नसीरुद्दीन उसे न अपना सका। उस समय दुलारी उसके सिर पर जादूकी तरह चढ़कर बोलती थी। नसीरुद्दीन बादशाह बेगम और बादशाह ग़ाज़ी-उद्दीनके झगड़ेमें पड़कर अपने पुत्रसे विरक्त तो हो ही चुका था, दुलारीके कान भरनेके कारण उससे घृणा भी करने लगा; इतनी घृणा की कि किसी ग़ैरकी औलादको, सफ़ेद झूठको, अपना बेटा और वलीअहद मान लिया। ग़ाज़ीउद्दीन हैदरका देहान्त हो जाने पर जब वह गद्दीपर बैठा तब राज्यके भावी उत्तराधिकारीके निर्वाचनके लिए एक ओरसे बादशाह बेगमका ज़ोर पड़ने लगा, दूसरी ओरसे मलिका ज़मानिया का। मुन्नाजान और कैवाँजाह दोनों बादशाहके पुत्र माने जाने लगे। यही नहीं वरन् आयुमें तीन वर्ष बड़ा होनेके कारण रुस्तम अलीका बेटा मुहम्मदअली कैवाँजाह

नसीरुद्दीन हैदरके बेटे मुन्नाजान उर्फ़ रफ़ीउद्दीन हैदर फ़रीदूनबख्तके मुक़ाबलेमें बादशाहका जेठा बेटा माना गया।

और इसीलिए अब क़ुद्सिया बेगमके प्रभावमें आ जानेके बाद भी, बड़ी-बड़ी पट्टियाँ पढ़ाई जानेके बावजूद नसीरुद्दीन हैदर जिस निस्पृहताके साथ मुन्नाजानका पिता होना अस्वीकार कर सका, उस तरह कैवाँजाहका पिता होनेकी अपनी पुरानी स्वीकारोक्तिको नामेट करनेमें उसे बड़ी झिझक और झेंप मालूम हुई। यह नहीं कि नसीरुद्दीन कैवाँजाहको अब भी अपनी मानस संतान माननेके भ्रममें था, वरन् इसलिए कि उसके बेटोंके रूपमें जाने गये दोनों लड़कोंके जनक-पदको अस्वीकार कर देनेसे प्रजामें उसकी बड़ी बदनामी फैलेगी। नसीरुद्दीन यह नहीं चाहता कि दुनिया उसे नपुंसक समझे, किसी प्रकार भी हीन समझकर खिल्ली उड़ाये।

हकीम मेहदी हार गये, पर क़ुद्सिया न हारी। वह सम्पूर्ण मनसे नसीरुद्दीनको चाहती थी। वह अपने उपकारकर्ता पर रीझ गई थी; उसने नसीरुद्दीनके नन्हें बच्चे-से मासूम दिलको परखा, उसका दर्द समझा; उसने नसीरुद्दीनकी झूठी खुशामद कभी न की बल्कि अपना सहज विश्वास देकर उसका मन जीता। हकीम मेहदीके संकेतसे प्रेरणा पाकर क़ुद्सिया बेगमके मनमें भी महत्त्वाकांक्षा जाग उठी थी। नसीरुद्दीन शक्तिशाली पुरुष न होनेपर भी पिता बननेकी सामर्थ्यसे नितान्त हीन भी न था।

नसीरुद्दीन अपने आपको स्वस्थ रस प्रदान न कर पानेके कारण हीनभावनाकी प्रतिक्रियावश हठपूर्वक विषय-विकृतियोंमें उसे पानेका बहाना करता था। क़ुद्सिया बेगम अपने साथ अंग संग करते समय उसके अन्दर सन्तानका पिता होनेकी चाहना जगाती थी। वह उसे यह समझाती थी कि शुद्ध अन्तःकरणसे संतानकी कामना करनेवाले दम्पतिकी आस भगवान् अवश्य पूरी करते हैं। संतानका पिता बननेकी तीव्र भावना भर-कर क़ुद्सिया बेगमने नसीरुद्दीनकी जीवनचर्याको भी काफ़ी हद तक

संयमसे साध दिया। क़ुद्सिया बेगम अपने लिए निर्धारित जेबखर्चकी रक़मसे लगभग तीन चौथाई धन बचाकर नसीरुद्दीन हैदरको जेबखर्चके लिए दे देती थी जिससे कि बादशाहको अपने खर्चोंके लिए बार बार हकीम मेहदीसे कहकर उसके द्वारा अंग्रेज़ोंकी आड़में धमकियाँ सुननेकी शर्मिंदगी न उठानी पड़े, मगर नसीरुद्दीनमें यहाँ तक परिवर्तन आया कि उसे वह ख़र्च न कर अलग सन्दूकमें जमा करता चलता था।

क़ुद्सियाने नसीरुद्दीनमें नई आस्था भरकर उसे यह समझाया कि वह असत्यका भ्रमजाल अपने भावी सुखके लिए काट दे, अन्यथा भगवान् जब उसे अपने पुत्रका पिता बनायेंगे तब अपने नकली पुत्रको राज्याधिकार दे देनेके कारण उसे आजीवन हाथ मल-मलकर पछताना पड़ेगा।

बात नसीरुद्दीन हैदरके दिलमें जगह कर गई। उसने अपनी झूठी शर्म तोड़कर कम्पनी सरकारके आला अफ़सरोंके समक्ष यह स्वीकार कर लिया कि ग़लत सलाह और दबावमें पड़कर उसने कैवाँजाहको अपना पुत्र और उत्तराधिकारी माना था। गवर्नर जनरलने बादशाहको पत्र लिखकर उसकी ईमानदारी और नैतिक साहसकी बड़ी प्रशंसा की।

अंगरेज़ रेज़िडेण्टने लखनऊ-स्थित गोरी रेजिमेंटोंको, रेज़िडेंसीके सिपाहियों और अधिकारियोंको यह आदेश दिया कि मुन्नाजान अथवा कैवाँजाहको राजपुत्र मानकर अब तक दिया जानेवाला सम्मान भविष्यमें बन्द कर दिया जाय, उन्हें सलाम न किया जाय।

बादशाह बेगम और मलिका ज़मानिया दोनों ही दाँत पीसकर रह गईं। बादशाह बेगमने हकीम मेहदीको बड़ी बड़ी धमकियाँ भिजवाईं। अपने पुराने शत्रु आग़ामीरके प्रति शत्रुता भुलाकर उसे बुला लानेके लिए कानपुर पत्र भी भेजा, लेकिन हकीम मेहदीके आदमी पत्रवाहकको ही पकड़कर ले आये।

मलिका ज़मानियाने क़ुद्सिया बेगमके विरुद्ध बड़े-बड़े टोने-टोटके करवाये, कोसने काढ़े, षडयन्त्र रचे, ज़ेवरोंके सन्दूकचेमें काला साँप

छुड़वानेकी कोशिश की, परन्तु सारे प्रयत्न निष्फल गये। उसका बुलन्द सितारा डूब चुका था।

२६

अंगरेज़ सरकार हकीम मेहदीसे परम प्रसन्न थी। उनकी ज़मीदारोंका पोषण करनेवाली नीतिके कारण, सामंत और औले दौले दरबारी प्रसन्न थे और प्रजा उनके अत्याचारोंसे पीड़ित हो राज्य छोड़ भाग रही थी। प्रजामें नवाबी शासनके प्रति असन्तोष बढ़ गया था। अंगरेज़ इस स्थितिको अपने लिए शुभ मानते थे। दोनों उत्तराधिकारियोंका पत्ता कट जाना भी वह अपने लिए शुभ मानते थे।

हकीम मेहदी अँगरेजोंकी पुरानी मँजी हुई गोट थे। अठारहवीं शताब्दीके अन्तमें वे आज़मगढ़ ज़िलेके एक ज़मींदार बू अलीहकीमके यहाँ कारिन्दा थे; परन्तु उन्नीसवीं शताब्दीका जन्म होते ही नवाब वज़ीर अलीकी गद्दी छिनवाकर नवाब सआदतअलीखाँको देनेके एवज़में रिश्वत या दलालीके बतौर जब अवध राज्यका वह क्षेत्र अँगरेज़ोंके अधिकारमें आगया तो हकीममेहदीको अपनी नौकरीसे हाथ धोना पड़ा। आदमी वह बड़े चतुर, व्यावहारिक, कार्यकुशल और दूरंदेश थे। मालिककी ज़मींदारी छिन जानेपर शाही सरकारसे मुआवज़ा वसूल करनेके सिलसिलेमें उन्हें कई बार लखनऊ आने-जानेके अवसर मिले; दीवानके मनपर उन्होंने अपनी योग्यताका अच्छा प्रभाव डाल दिया था। इसलिए बेकार होते ही, रोज़ी-रोज़गारकी तलाशमें लखनऊकी ओर पयान किया।

नौजवानीका आलम था, तक़दीरके चढ़ते दिन थे। अपने ज़मानेकी सरनाम तवायफ़ पियाजू इनपर सौ जानसे क़ुर्बान हो गई। उसके पास माल था और हकीम मेहदीकी दीवान तक रसाई थी; तोड़-जोड़ बैठा, हकीम साहब मुहम्मदी ज़िलेके बड़े ज़मींदार हो गये। पियाजूजान ने ज़मानतकी रकम बत्तीस हज़ार रुपए शाही खज़ानेमें जमा करनेको दिये

और हकीम मेहदी ज़िन्दगी भरके लिए उसके बँधुआ हो गये—एक दूसरेसे ख़ूब निभी, बहुत ख़ूब निभी।

पियाजूकी लक्ष्मीसे चमक पाकर हकीम मेहदीके हौसले जागे। उन्होंने अपने छोटे भाई हादीअलीखाँके ज़िम्मे तो ज़मींदारीका काम सौंपा और आप लखनऊमें रहकर दरबारमें अपना प्रभाव बढ़ाने लगे। दोनों भाई दुनियादारीमें पूरे होशियार थे, दोनोंका एक-दूसरेसे भला भरोसा था, उधर आमदनी बढ़ती गई, इधर पियाजूकी पुरानी जान-पहचानोंका लाभ उठाकर हकीम मेहदी राजधानीके उच्चतम समाजमें अपना स्थान बनाने लगे। होते-करते दस-बारह बरसोंमें नवाब वज़ीर सआदतअलीखाँ की नज़रोंमें अपनी योग्यतावश चढ़ गये। मुहम्मदी ज़िलेके अलावा ख़ैराबाद ज़िला भी इनके ताल्लुकेमें आ चुका था। इनका प्रबन्ध अच्छा था; पैसा सख़्तीसे वसूल करते थे मगर खेतीके लिए अपनी प्रजाको सुविधा-सुरक्षा भी प्रदान करते थे। प्रजा इनके राजमें कमसे कम अनेक की लूट, रोज़की लूटसे बचकर तनिक सुखकी साँस ले सकती थी। समयको देखते हुए यही बहुत था। इससे इनका यश अच्छा फैल रहा था। हकीम मेहदी नवाब सआदतअलीखाँ और रेज़िडेन्सीके साहबाने आलीशान की नज़रोंमें चढ़ गये। लेकिन इनकी चालाकीने अँगरेजोंका काइयाँपन भी जगा दिया। दरबारी राजनीतिके चक्करमें पड़कर हर्मीम मेहदीअलीखाँ एक दिन अपनी कोठी वापिस जाते वक्त गुण्डोंसे घिरवाकर पिटवाये गये, उन्हें ज़लील किया गया।

हकीम मेहदीके लिए यह पिटना भी फल गया। वे नवाब वज़ीरकी नज़रोंमें ऊँचे उठ गये; उन्होंने हकीम मेहदीको अपना नायब मुक़र्रर किया। अपना आधा राज्य अँगरेज़ों द्वारा हड़प लिये जानेके कारण सआदतअलीखाँ टूट चुके थे। अपने जीवनके अन्तकालमें विलासी और चिड़चिड़े हो गये थे। उन्हें किसीपर भरोसा न रह गया था। अँगरेज़ोंकी शत्रुतावश अपमानित होनेवाला व्यक्ति जो कुशल व्यवस्थापक होनेका भी

यश अर्जित कर चुका था, सआदतअलीखाँका विश्वासपात्र बना। अँगरेज़ उससे बहुत चिढ़ते थे। पर सआदतअलीखाँ की बची-खुची प्रजा हकीम मेहदीके कुशल प्रबन्धसे सुरक्षित थी। अँगरेज़ोंकी कूट राजनैतिकता से सतर्क रहकर मोर्चा लेनेकी मेधा होनेके कारण टूटा हुआ नवाब वज़ीर सआदतअलीखाँ उनके भरोसे निश्चिन्त हो गया था। हकीम मेहदी अँगरेज़ोंकी आँखका काँटा बन गये। लार्ड हेस्टिंग्ज़ने नवाब वज़ीरपर ज़ोर डालकर हकीम मेहदीको नायाबतसे, लखनऊसे हटाकर दूर फेंक दिया।

आग़ामीर चढ़ती गोट बने; बादमें उनके कारण हकीम साहबको शाही इलाक़ा छोड़कर ही भागना पड़ा। वे अँगरेज़ोंकी अमलदारीमें फ़तहगढ़में बस गये और अँगरेज़ोंके आगे अपना मत्था टेक दिया।

साहबाने आलीशानसे रसूक बढ़ाते रहे, बड़े लाटको शिकार खिलाया, बरसोंमें जाके दिन अच्छे आये। हकीम मेहदी अब सवा सोलह आने अँगरेज़ोंकी भलाईका रुख रखकर सोचते थे। मँजे हुए इन्तज़ामकार थे ही, नसीरुद्दीनके ज़मानेमें मन्त्रिपदपर लौटकर, शासनकी झँझरी नैया देख इन्होंने लखनऊके बादशाह और उसके दरबारके प्रभावशाली व्यक्तियों तक धनकी धार बहा लानेकी चटपट व्यवस्था तो इजारेदारी पद्धति चलाके कर दी परन्तु प्रजामें त्राहिमाम् मच गया। न जाने कितनी औरतोंने अपनी लाज बचानेके लिए गोमती, सरयू और गंगामें अपने प्राण दिये होंगे। अवधकी धरतीके न जाने कितने कुएँ सहमी सतियोंके स्मारक बन पटे पड़े होंगे। हकीम मेहदीको उसकी कोई परवाह न थी। अँगरेज़ हाकिमको यही नीति पसन्द भी थी। दोनों उत्तराधिकारियोंको पदच्युत करा हकीम मेहदी कम्पनी सरकारकी नज़रमें बहुत ऊँचे उठ गये थे। लार्ड विलियम बेण्टिङ्कने हकीम साहबसे यहाँ तक रिश्ते स्थापित कर लिये थे कि निजी और गोपनीय पत्र लिखते थे। हकीम मेहदीने एक ही नीति अपनायी कि जब बादशाह तथा प्रमुख दरबारी विलासकी निशामें सोते रहें

तब वे अर्थ संचय तथा अँगरेज़ोंकी राजभक्ति अर्जित कर संयमीकी भाँति सफलतायोग सिद्ध करते रहें।

हकीम मेहदीने बादशाह बेगम और मलिके ज़मानियाको तो ज़माने की नज़रोंमें हाथीसे उतारकर गधेपर बिठा ही दिया था अब तक क़ुद्‌सिया बेगमको भी क़ाबूमें रखनेके लिए बढ़ा-बढ़ी करने लगे। कहलवाया कि बेगम साहबा जो ख़र्च बचाकर बादशाह सलामतको वापस कर देती हैं वह क़ानूनी खानापूरीके लिए पहले शाही ख़जानेमें आना चाहिए। क़ुद्‌सिया बेगम अड़ गयी, कहा—"वह रक़म मेरी है जो बादशाहकी बेगमकी हैसियतसे मुझे मिलती है। बादशाह मेरे शौहर भी हैं। मेरी और मेरे शौहरकी मिल्कियत एक है। रक़मके साथ क़ानूनी कार्यवाहीका कोई सवाल ही नही उठता।"

हकीम मेहदी मान गये कि मोर्चा तगड़ा है और बादशाह सलामत तो कुद्‌सिया बेगमकी इस दबंगदिली पर बार-बार बलिहार हो गये।

३०

नवाब मुक़द्दरेज़मां मेहदेउज़्मा बिल्क़िस दौरान मलिकये आफ़ाक़ कुद्‌सिया सुल्तान मरयम बानू बेगमसे मुँहकी खाकर मुन्तज़ामुद्दौला हकीम मेहदी अली ख़ाँकी बड़ी किरकिरी हुई। जलने वालोंको रंग जमानेका मौक़ा मिला। आपसी महफ़िलोंमें, मुशायरोंमें, तवायफ़ोंके कोठों पर और वहाँसे उतरते हुए पनवाड़ीके यहाँ, अत्तारकी ज़बान पर, ग़र्ज़ेकि गली-कूचोंमें लोग कहने लगे कि कुद्‌सिया बेगमने हकीम मेहदीको भी उन्हींके घाट पर पानी पिला दिया। कुद्‌सिया बेगमकी बड़ी तारीफ़ हुई; बादके चर्चेमें मलिका ज़मानिया और बादशाहबेगमकी बातें इस समय नये व्यक्ति की पराजय होने पर सहानुभूतिका विषय बन गयीं। यही समयका चलन था। जनता सबके ख़िलाफ़ शिकायतोंसे भरी हुई थी। जो व्यक्ति जब तक शासन कर सकता, सत्ताकी बागडोरको मज़बूतीसे थामे रह सकता, लोग

उसके सामने घिघियाते थे, गिड़गिड़ाते थे और मन ही मन जलते थे; जब वह पराजित होता तो अपने अन्दरकी सारी नपुंसक घृणाको खिल्ली उड़ानेके तौर पर बड़ी बहादुरी और बड़े जोशसे निकाल फेंकते थे।

हकीम मेहदीके कानों तक खबरें पहुँचीं तो बड़े झल्लाये। फिरसे अपने रोबको क़ायम करनेके लिए नयी तदबीरें सोचने लगे। मलिके ज़मानिया तो एकदम सीधी हो गयी थी। उसने अपनी हैसियत पोढ़ी कर ली और चुपचाप राजनीतिसे पीछे हट गयी। अब वह धर्मके क्षेत्रोंमें दान-पुण्य कर अपना यश स्थायी रखनेके अहिंसक प्रयत्न कर रही थी। लेकिन बादशाहबेगमके दरबारसे अब भी हकीम मेहदीको जली-कटी सुननेको मिलती थीं। शाहे अवध अब भी अपनी सौतेली माताका आदर करते थे।

हकीम मेहदीने इस बार अधकुचली नागिनका फन पूरी तौर पर कुचल देनेकी ठानी। उन्होंने आये दिन बहाने-बहाने बड़े आड़े तिरछे घूमकर राजा दर्शनसिंह ग़ालिबजंगकी मार्फ़त नयी-नवेलियोंका तोहफ़ा भेज कर बादशाह बेगमके खिलाफ़ नसीरुद्दीनको भरना शुरू किया। उन्होंने उस खुफ़िया खतका ज़िक्र किया जिसे बादशाहबेगमने अँगरेज़ सेक्रेटरीको लिखा था और जिसमें बादशाह सलामतको धोबीकी औलाद बतलाकर राजमाताने अपने दोहते मुहसानुद्दौलाको गद्दीका असली हक़दार बतलाया था।

बादशाह सलामतकी आँखोंमें खून उतर आया। देहमें तमतमाहट छा गयी मगर इन दिनों बादशाहको क़ुद्सिया बेगमके अंकुशमें रहनेकी ऐसी आदत पड़ गयी थी कि दम-दम पर उन्हें बाँध लेती। कुछ जवाब न दिया और क़ुद्सिया बेगमसे सलाह कर लेने तक अपना कोई रुख न जतलानेका दृढ़ निश्चय कर नसीरुद्दीन हैदरके तेवर एक क्षणमें बदल गये। हकीम मेहदी अपने बादशाहके मिज़ाजमें यह नया करिश्मा देख भौंचक्के रह गये। उनकी समझ ही में न आया कि यह अदृश्य प्रभाव

किसका था जो हकीम मेहदीके द्वारा चलाये गये इतने बड़े तीरके कारगर होते-होते खटसे नाकाम कर गया—किसका जादू था, राजमाताका या आजकी पटरानी का ?

क़ुद्सिया बेगम किसी भी हालतमें बादशाह सलामतको बादशाह बेगमकी ज़ाहिरा शानोशौकत कम करनेकी सलाह देने या उनसे लड़ानेके खिलाफ़ थी। इस पत्रके मज़मूनको लेकर अगर सौतेले माँ बेटेमें जंग छिड़ेगी तो तौहीन हर तरहसे शाहे ज़मानाकी ही होगी और उस गड़बड़ीमें अँग्रेज़ोंको अपनी टाँग अड़ानेका एक नया मौक़ा मिल जायगा। हो सकता है कि वह नसीरुद्दीनको नवाब वज़ीरअलीकी तरह गद्दीसे उतार कर किसी औरको बिठा दें। बड़े चाचाको गद्दी दे दें, अँगरेज़ोंका कोई भरोसा नहीं।

नसीरुद्दीनको यह सलाह बहुत माक़ूल जँची। उसने उसके बाद भी उस पत्रके विषयमें हकीम मेहदीसे कोई चर्चा न की। लेकिन हकीम मेहदी आसानीसे पीछा छोड़ने वाले न थे। उन्होंने क़ुद्सिया बेगमसे आड़े तिरछे तौर पर बड़े तकल्लुफ़से हार मान ली; यों क़ुद्सिया बेगमके अहम्को सन्तुष्ट कर अपना खेल खेलना चाहा।

उन्होंने पग-पग पर मुन्नाजानका अपमान कराना आरम्भ किया। रूमी दरवाजे कोतवाली और महलके बाहरके सिपाही तक मुन्नाजानकी खिल्ली उड़ाते थे। डरके मारे उसने बाहर निकलना ही छोड़ दिया। वह बादशाह बेगमका बड़ा लाडला था। अब तक दरबारमें, रेज़ीडेन्सीमें, हाट-बाज़ारमें हर जगह राजपुत्र और भावी राजाके रूपमें बारह-तेरह बरसके नन्हेंसे बालकने बड़े-बड़ोंको अपने सामने अदबसे पेश आते देखा था, और अब उसका मज़ाक उड़ाया जाने लगा। रफ़ीउद्दीन हैदर उसे बर्दाश्त न कर पाता था। वह बड़ा हठीला, बेहद चिड़चिड़ा और बद दिमाग़ हो गया था। अफ़ज़ल महल और बादशाह बेगमके लिए आठों पहरकी हाय-हाय हो गई थी। बादशाह बेगम अपने आपसे ऊब गयीं थीं। चारों तरफ़से

घिरकर उनके कुचले दर्पकी शक्ति कठोर धार्मिक निष्ठाके सहारे चामत्कारिक बनने लगी। परियोंके बादशाह बादशाहबेगमके दैवी पति—मीराके कृष्ण कन्हैया—हज़रत अमीरुज्जिन्नात बादशाह बेगमको सहारा देनेके लिए आसमानसे ज़मीन पर आ गये और उन्होंने अपने देवजिन्नातोंकी फौज़से बादशाह बेगमके महलको सुरक्षित कर अपनी रूहानीबेगमके महलोंमें डेरा डाल दिया। बादशाह बेगमकी सेज सुहागिनकी तरह सजती थीं, बादशाहबेगम नई नवेलीका सिंगार कर हरदम वहीं पड़ी रहती थीं। ख़ास-ख़ास बाँदियाँ और सुल्तान महल तथा अफ़ज़ल महलके सिवा और कोई उनके पास आ जा न सकता था। हाँ इनकी मारफ़त वह ज़मानेको दुआएँ देती रहती थीं।

सारी ख़िलक़तमें शोर पड़ गया था कि बादशाहबेगमके महलोंमें अमीरुज्जिन्नात आये हैं। शाहों पीरोंका जमघट जुड़ गया। मौलवी मुल्लोंकी बन आयी। ग़रीबोंको ख़ैरात मिलने लगी; बड़ा ख़र्च बढ़ गया।

उन दिनों सल्तनतमें हरतरफ़ फ़िज़ूलख़र्ची कम की जा रही थी, नसीरुद्दीन हैदर तक सँभल गया था। हकीम मेंहदीको छेड़नेको एक नायब बहाना मिल गया। बादशाह अब अपनी पिछली आदतके मुताबिक़ काग़ज़ात सरसरी तौरपर पढ़नेके बजाय ग़ौरसे देखकर उसपर सही करते थे, बादशाहबेगमके यहाँसे नित नये धार्मिक ख़र्चोंकी फ़रमाइश होते देखकर एक दिन नसीरुद्दीन हैदरको झुँझलाहट आ गयी। हकीम मेंहदीने उतनी ही पकड़के बलपर बादशाहबेगमके ख़र्चकी रक़में नामंज़ूर कर दीं।

बादशाहबेगमके पास जब यह अस्वीकृतिकी सूचना पहुँची तो आवेशमें आ गयीं। उसी वक़्त नसीरुद्दीनको सूचना करवाई कि वे स्वयं उससे मिलने आ रही हैं। बादशाहबेगमने सीधे जाकर अपने सौतेले पुत्रको आज्ञा दी हकीम मेंहदीको इसी वक़्त बर्ख़ास्त करो।

नसीरुद्दीन अब भी माँको इनकार नहीं कर सकता था और अँगरेज़ अपनी नीतिवश बादशाहकी घरेलू राजनीतिमें दख़ल नहीं दे सकते थे।

जिस नसीरुद्दीनसे उन्होंने आग़ामीरको हटाते वक्त कहा था कि आपको पूरा अख़्तियार है अपनी सल्तनतमें जिसे चाहें नया ओहदा दें, जिसे चाहें गिरा दें, उसी नसीरुद्दीनने अँगरेज़ोंकी बड़ी पक्की गोट, लार्ड विलियम बेण्टिङ्कके ख़ास आदमी मुन्तज़ामुद्दौला हकीम मेहदीअलीख़ाँको क़लमकी एक नोकसे बर्ख़ास्त कर दिया। अँगरेज़ फटफटाते रह गये। हकीम मेहदी सन्नाटा खींच गये। बादशाह बेगमने अपनी जीतसे लखनऊ की जनतामें अमीरुज्जिन्नातका चमत्कार व्याप्त कर दिया। परियोंका बादशाह जिसका सहायक हो उस बादशाहबेगमका भला कोई क्या बिगाड़ सकता था ? लोगोंकी दृष्टिमें राजमाताका आदर बढ़ गया।

हकीम मेहदीअलीख़ाँकी जगह नवाब रौशनुद्दौला अवध राज्यके महामन्त्री नियुक्त हुए। नये महामन्त्री बत्तीस दाँतोंमें ज़बानकी तरह रहना जानते थे। उन्हें फ़क़त अपने हलुए-माँडेसे काम था; बादशाहबेगम हों कुद्सियाबेगम या बादशाह सलामत हों, रेज़िडेण्ट हों, उनके लगुए-भगुए उनके कुत्ते, बिल्ली हों,—सबका रौशनउद्दौला बड़ा अदब करते थे। राजा दर्शनसिंह ग़ालिबजंग, मेंहदीअलीख़ाँ और मलिकाज़मानियाके सहारे धीरे-धीरे उठते हुए ख़ासे शक्तिशाली व्यक्ति हो गये थे। नवाब रौशनुद्दौलाने उन्हें, राजा बख्तावरसिंह, दलजीत ख़वास धनियामहरी आदिको ख़ूब पटा रक्खा था। कुद्सियाबेगमके महलोंमें वह अक्सर उम्दा माल सस्ते दामों ख़रीदा गया कहकर भिजवाया क़रते थे; पाँच सौकी चीज़ ख़रीद कर उसे दो सौकी ख़रीद बतलाना उनकी आदत हो गई, कुद्सियाबेगम उनसे बड़ी ख़ुश हुई। ख़ुशामदसे हर आदमी रीझ जाता है, बशर्ते कि ख़ुशामद आदमीके मिज़ाजको देखकर की जाय।

दिन अच्छे गुज़र रहे थे। कुद्सिया बेगमने बादशाहको एक दिन बहुत ही अच्छी सूचना दी—बादशाह सलामत पिता बनने वाले थे। नसीरुद्दीन ख़ुशीसे बावला हो उठा। यहाँ उसे पूरा विश्वास था कि सन्तान उसकी है और वह मुन्नाजानके जन्मसे उत्पन्न भ्रम जालसे उबर कर अब

फिर नयी आस्था पा रहा है। वह अपना राज्य वास्तविक उत्तराधिकारी को छोड़ जायगा, यह ख़ुशी उसे दीवाना बना रही है। मगर कुद्सिया बेगमने क़स्में दिला दिलाकर बहुत दिनों तक इस ख़बरको उड़नेसे बचाये रक्खा, जहाँ तक बना दुश्मनोंकी निगाहसे अपनी होने वाली औलादको बचाये रखा।

एक दिन शहरमें एक लम्बा नौजवान अँग्रेज़ अपने चाचाके साथ आया। उसने पहुँच भिड़ाई, बादशाहके दरबारमें हाज़िर हुआ। उसने बादशाहसे सायंसका एक नया चमत्कार दिखानेकी आज्ञा माँगी। पूछा गया कि वह क्या करना चाहता है? उसने कहा कि वह आसमान पर उड़ कर दिखाना चाहता है। सबकी आँखें फटीकी फटी रह गयीं। लोगोंने, बादशाहने हैरतसे दाँतों तले उँगली दबाली। हर रात क्या बादशाह, क्या और रईस क़िस्सागो लोगोंसे कहानियाँ सुनते-सुनते ही सोता है? हर एकने जादुई क़ालीन, परों वाले आस्मानी घोड़े और उड़नेवाले कलदार घोड़ोंका चर्चा सुना था, मगर यहाँ तो सायंसके करिश्मेसे उड़नेवाली मशीनको देखनेका मौक़ा उन्हें हाथों हाथ मिल रहा था। बादशाहने तुरत सारी व्यवस्था कर दी। हर आमिल अमला ओहदेदार बड़ी ख़ुशीसे इस काममें मदद देने लगा। चौक चौपटियों और नख़ास हुसैनाबाद मेहदीगंज सआदतगंज ठाकुरगंज बालागंज तक, पूरब-पच्छुम उत्तर-दक्खिन दूर-दूर गाँव-गाँव हवाके साथ यह हुल्लड़ फैल गया कि एक अँगरेज़ ग़ुब्बारे पर उड़ेगा। जो सुनता लखनऊकी ओर दौड़ता। शहरमें लाखोंकी भीड़ लग गयी। जहाँ देखो यही चर्चा था, जिसे देखो यही बात करता था। शाही राजनीति, आपसी झगड़े, लूटपाट, तमाशबीनी, गुण्डागर्दी—एक दिनके लिए सब ठंडी पड़ गयी; ज़माना छतों टीलों, मैदानों गोमती पारकी खुली जगहों पर झुण्डोंसे सिमट कर नये विज्ञानका चमत्कार देखने जुट गया। ख़ोंचे वालोंकी बन आयी, जहाँ तहाँ चाटकी दूकानें खुल गयीं, चलते-फिरते पान वाले पहुँच गये, चम्पी वालोंके जमघटे लग गये। बाज़ारू

माशूक़ डोलियोंसे झाँक-झाँक कर, हज़ार अदाओंसे मजमेंका दिल गरमाने लगीं। अँगरेज़ी पहरेका इन्तज़ाम था, चारों ओर गश्त लग रही थी। बड़ा कौतूहल, बड़ी उत्सुकता थी।

दिलकुशाबाग़की बारादरीमें शाही बेगमात और उनके द्वारा निमन्त्रण से सम्मानित होकर शहरके ऊँचे-ऊँचे घरानोंकी स्त्रियाँ इकट्ठा हुई थीं। मलिकाज़मानिया नहीं दिखलाई देती थीं, उन्हें नहीं बुलाया गया था। अफ़ज़लमहलको भी नहीं बुलाया गया था। और सब थीं, बादशाहबेगम तक थीं। सामने ही मैदानमें एक आमके पेड़के नीचे अंगरेज़ नौजवान ने अपने गुब्बारेका जाल फैला रखा था उसमें गैस भरी जा रही थी। गुब्बारा फूलने लगा; लोग टकटकी बाँध कर देख रहे थे लेकिन ज़नानी नज़रोंकी टकटकी इतनी न सध सकी कि आपसी नुक्ताचीनीके लिए भी नज़रें ताक-झाँक न करें। कुद्सिया बेगम अपने सामने गुब्बारा फूलनेका तमाशा देखनेमें बेभान थीं और आज पोशाक भी लहँगा-ओढ़नीकी थी। एक औरतकी नज़र पड़ गयी कि सामनेका गुब्बारा ही नहीं बल्कि कुद्सिया बेगमका पेट भी बढ़ रहा है।

गुब्बारा फूलकर बड़ा भारी बन गया और जिस जालमें वह जकड़ा था उसे अपनी ताक़तसे झिंझोड़ कर ऊपर उठनेके लिए मचलने लगा। नौजवानने अपने चचासे गले मिलकर विदा ली और गुब्बारेके साथ ही बँधी हुई छोटी-सी डोंगीनुमा डोलचीमें बैठ गया। उसने छुरीसे जालकी रस्सियाँ काट दीं। गुब्बारा आसमानमें उड़ चला और उसके सहारे डोंगी-नुमा डोलचीमें वह अँगरेज़ नौजवान भी। मीलों तक इधर उधर फैली लाखोंकी ख़िलक़तमें शोर मच गया। नया करिश्मा था, इन्सान आसमान में उड़ रहा था। गुब्बारा दिलकुशाबाग़की बारहदरीके सामनेसे होकर गुज़रा, नौजवानने हैट उतारकर बादशाह सलामतको सलाम किया और हवामें और ऊँचा उठ गया। शाही हुक्मसे घुड़सवार ज़मीनपर ग़ब्बारेका पीछा कर रहे थे। नौजवानका चचा व्यग्र होकर आकाशकी ओर देख

रहा था उसका एक भाई, इसी नौजवानका पिता, भी पहले इसी तरह गुब्बारेपर उड़कर दूर निकल गया था, गैस ख़त्म होनेपर गुब्बारा समुद्रमें गिरा और वह डूब गया। लेकिन चचा ही क्या उस समय तो हर व्यक्ति की सद्भावना नौजवानको भरसक हर आपदासे बचानेके लिए उत्साहित हो उठी थी। सवार आसमानमें पैनी नज़र साधकर देखते हुए ज़मीनपर आगे बढ़ रहे थे। गुब्बारा अब तो नीचेसे दिखलायी भी नहीं पड़ता था। नौजवान एक भरी बन्दूक तथा आसमानमें उड़नेवाले परिन्दोंकी चोंचों से अपने गुब्बारेको बचानेके लिए खानेकी नक़ली मछलियाँ उछालता चलता था।

थोड़ी देर बाद जब गुब्बारा न दिखायी पड़ा तो लोगोंमें घबराहट फैली और इसीमें लगे हाथों सट्टा भी हो गया। गुब्बारा लौटकर आयेगा या नहीं, आदमी लौटकर आएगा या नहीं, इस पर अच्छे बुरे क़यास भिड़ गये। लोग कहते कि बेटा कल पुर्जोंके ज़ोरसे इतने ऊँचे उड़कर तो गये हैं मगर वहाँ परियाँ ऐसे गबरू जवानको क्या छोड़ देंगी! अजी देव-जिन्नात उड़ाके क़ैद कर ले गये होंगे, ऊपर आसमानी ताक़तोंका राज है, वहाँ अंगरेज़ोंकी हिकमत नहीं चल सकती।

मगर थोड़ी देरमें ही गुब्बारा पूरबकी ओर फ़ैज़ाबादवाली सड़ककी ओर उड़ता नज़र आया। घुड़सवार बहुत तेज़ीसे उसका पीछा करते भागे। पत्थरवाले पुलसे गोमती पार की; जगह-जगह आदमियोंकी भीड़ शोर मचा रही थी। घुड़सवारोंको सत्रह मीलका चक्कर लगवाकर गुब्बारा भैंसाकुण्डके पास उतरता दिखलाई दिया। आसमान पर चीलों और कौओंके झुण्ड काँव-काँव कर मँडरा रहे थे। गुब्बारेसे निकलती गैसकी ज़ोरसे हिस्-हिस् करती आवाज़ अजीब तरहसे भयावनी लगती थी। नीचे भीड़ खड़ी थी। लोग गोकि इसी तमाशेको देखने खड़े थे, मगर गुब्बारा जब अचानक उनके बीचमें गिरने लगा तो दैयामैया मच गयी। महाविशालकाय गुब्बारा ज़मीनसे लगता था और उछलता

था; उछलता था और इधर उधर टकराता था। गुब्बारा बड़े भारी विचित्र जन्तु सा भयानक लगता था। डोलची जिसमें कि वह अँगरेज़ नौजवान बैठा था ज़मीनसे घिसटती थी। आसपास कई लोग डरकर बेहोश हो गये, चीख़ पुकार मच गई, नौजवानने अपनी जेबसे चाक़ू निकाल उछल-उछलकर बमुश्किल तमाम गुब्बारेका एक हिस्सा चीर दिया। गैस तेज़ीसे निकल गई तबतक सवार भी आ पहुँचे थे। नौजवानने डोलचीसे बाहर कूदकर सबसे पहले सिगारकी फ़रमाइश की। ऊपर ठंढी हवाओंमें उसे सर्दी महसूस हुई थी, वह गर्म होना चाहता था।

गुब्बारेकी घटनाके साथ दो खबरें तेज़ीसे उड़ीं एक तो यह कि अँगरेज़ोंकी क़ौमसे कोई नहीं जीत सकता और दूसरे यह कि क़ुदसिया बेगम गर्भवती है। गुब्बारेका चर्चा शहरमें तो हफ्तों और महीनों सर गर्म रहा मगर शाही हरम सिर्फ़ क़ुद्सिया बेगमके गर्भकी सूचनासे ही गर्मा रहा था। नवाब नसीरुद्दौला जो सआदतअलीखाँके जीवित बेटोंमें सबसे बड़े होनेके कारण तथा नसीरुद्दीन हैदरके निःसन्तान करार दे दिये जानेके कारण शासनके भावी उत्तराधिकारका स्वप्न देख रहे थे, बादशाह बेगम जिनका स्वप्न मुन्नाजानके पदच्युत किये जानेके कारण टूट चुका था और राजनीतिसे दूर रहनेकी क़सम खा चुकने वाली मलिके ज़मानिया तक ईर्ष्यासे जकड़ उठीं। हर बेगम रखैल अपने-अपने पुराने क़िस्से क़ज़िए भूलकर इस जलनमें एक हो गईं। इस गर्भको तबाह करनेके लिए हज़ारों लाखों रुपये सिमट आये, षड्यन्त्रका जाल फैल गया। अच्छी खानम तकको हवा न लग पाई और क़ुदसिया बेगमकी अनेक लौंडी बाँदियाँ सम्मिलित षड्यन्त्रके जालमें फँस गईं। हकीम मेहदी गो ज़ाहिरा तौर पर शहरसे ग़ायब हो चुके थे मगर छिपे तौर पर इस षड्यन्त्रमें पूरी सहायता पहुँचा रहे थे। आड़में अँगरेज़ रेज़िडेण्ट तक था।

अँगरेज़ अपनी लन्दनकी राजनीतिके कारण दो मतोंमें बँट गये थे। इँग्लैण्डके मन्त्रिमण्डलके मिस्टर चार्ल्स ग्राण्ट और उनके गुटके लोग

ईस्टइंडिया कम्पनीके बोर्ड ऑफ़ कन्ट्रोल पर अपने राजनीतिक दाँव कस रहे थे। इँग्लैण्डकी राजनीतिमें एक मत बराबर बनता जा रहा था कि ईस्ट-इण्डिया कम्पनीकी सत्ता ख़तम कर दी जाय। अवध राज्य ब्रिटिश पार्लियामेण्टकी दुखती रग थी। अँगरेज़ोंके देशमें अवधके नवाब बादशाहोंको लेकर तरह-तरहके अलिफ़ लैलानुमा क़िस्से फैले हुए थे। लन्दनके बाज़ारोंमें अवधके नवाबोंके नामसे सेण्ट तक बिकते थे। अवध बेशुमार दौलतका ख़ज़ाना माना जाता था। इसलिए एक राजनीतिक गुट इस ताकमें था कि अवधराज नसीरुद्दीनके मरते ही हड़प कर लिया जाय। मिस्टर चार्ल्स ग्राण्टने एक बड़ी नायाब स्कीम सोची; नवाब वज़ीर अलीके ज़मानेमें जबकि अवधकी सल्तनत नवाब सआदतअलीखाँको दी गई तो कम्पनी द्वारा निर्धारित मुआवज़ेकी रकम भुनानेमें सिक्कोंकी नाप-जोखको लेकर बहुत सी रक़म बट्टेखाते निकल गई थी। ग्राण्ट साहब चाहते थे कि वह हरजाना सन् १७९६ से लेकर १८३४ तकके अरसेका छत्तीस रुपये सैकड़ेके हिसाबसे पड़ब्याज लगाकर शाहे अवधसे वसूल किया जाय। ग्राण्ट साहबके द्वारा जोड़ी गई यह रकम उनकी दृष्टिमें बहुत छोटी सी थी—महज़ तेरह हज़ार तीन सौ अट्ठाइस करोड़ नौसौ पैंतालिस हज़ार अट्ठावन पाउण्ड स्टर्लिंग थी। ग्राण्ट साहबने आदेश किया कि शाहे अवधसे इस मामूली-सी रकमको तुरन्त अदा करनेके लिए कहा जाय। किन्तु कम्पनीके बोर्ड ऑफ़ कण्ट्रोलके सदस्योंने इसमें अपने राजनीतिक गुटकी हानि देखी और इस बात पर अड़ गये कि सरकार चाहे डायरेक्टरोंको गिरफ्तार करले मगर वह नसीरुद्दीनको इस अनहोने तक़ाज़ेसे परेशान नहीं करेगी। लन्दनकी दुहरी राजनीतिके कारण हिन्दुस्तान स्थित अँगरेज़ोंमें भी मतभेद था। हकीम मेहदीको गोपनीय पत्र लिखकर इशारतन् उसे स्वतन्त्र रूपसे अवधका बादशाह बनानेका लालच भी देकर अँगरेज़ परदा दर परदा खेल रच रहे थे। क़ुदसिया बेगमका गर्भ इस समय हर स्वार्थ-पक्षकी आँखोंमें खटक रहा था।

महामन्त्री नवाब रौशनुद्दौलाकी दलवी महरीसे आँखें लड़ गईं। दलवीके बहाने उसकी बड़ी बहन धनिया भी शामिल हो गई। क़ुद्सिया बेगमके महलोंमें एक आदमीके अक्सर औरतके लिबासमें घुसने पैठनेकी खबर कनफुसकियोंमें फैलने लगी। बादशाह सलामतको भी समझाया जाने लगा। मगर नसीरुद्दीन पर जल्दी रंग न चढ़ सका। उसने क़ुद्सिया बेगमसे ही इस बातकी चर्चा कर दी। क़ुद्सिया सावधान हो गई मगर अब उसका संगठन बिगड़ चुका था; उसकी नौकर बाँदियोंमें यह समझ ही नहीं पड़ता था कि कौन किस तरफ़ है।

एक दिन बादशाह सलामत दिलकुशाबाग़ तशरीफ़ ले गये थे। मुसाहबोंके साथ बाग़में टहलने लगे। एक जगह बन्दर बैठे थे। बादशाह सलामतका जी शिकार करनेको हो आया। राजा बख्तावर सिंह काँप गये, कहा—"हुज़ूर इन्हें न मारिए। ये हनुमान् जीके औतार हैं। जन्नत मकानी ग़ाजीउद्दीन हैदर शाहके बड़े भाई नवाब शम्सुद्दौला भी ज़िद पर चढ़ गये थे, उन्होंने बन्दर मारे और उसीके बाद मर गये। बेचारे आग़ा-मीरने वज़ारतकी गद्दीसे उतरनेके एक दिन पहले बन्दरोंका शिकार किया था तो बुरा नतीजा पाया इसलिए इन्हें न मारें।"

मगर बादशाह ज़िद पर चढ़ गये। बन्दरोंका शिकार किया।

शामको जब क़ुद्सिया बेगमके महलोंमें लौटे तो एक आदमी ज़नाने लिबासमें छिपकर उन्हें क़ुद्सिया बेगमके पोशीदा महलोंसे निकलता दिखलाई दिया। धनिया महरीने रोककर उससे पूछा कि तू कौन है? उसने सहमकर कहा कि मैं नई बाँदी हूँ। चख़-चख़ हुई, नई बाँदी पकड़ी गई। तब राज़ खुला कि वह मर्द है। फिर उसने कहा कि वह क़ुद्सिया बेगमका भूतपूर्व पति है और उसकी पत्नी सदासे उसे इसी प्रकार छिपाकर महलोंमें बुलाती रही है। नसीरुद्दीन हैदर खामोश खड़े सुनते रहे। क़ुद्सिया बेगमके कानोंमें भी यह खबर पहुँची। वह शेरनी-सी तड़पकर बाहर निकली।

ईस्टइंडिया कम्पनीके बोर्ड ऑफ़ कन्ट्रोल पर अपने राजनीतिक दाँव कस रहे थे। इँग्लैण्डकी राजनीतिमें एक मत बराबर बनता जा रहा था कि ईस्ट-इण्डिया कम्पनीकी सत्ता खतम कर दी जाय। अवध राज्य ब्रिटिश पार्लियामेण्टकी दुखती रग थी। अँगरेज़ोंके देशमें अवधके नवाब बाद-शाहोंको लेकर तरह-तरहके अलिफ़ लैलानुमा क़िस्से फैले हुए थे। लन्दनके बाज़ारोंमें अवधके नवाबोंके नामसे सेण्ट तक बिकते थे। अवध बेशुमार दौलतका खज़ाना माना जाता था। इसलिए एक राजनीतिक गुट इस ताकमें था कि अवधराज नसीरुद्दीनके मरते ही हड़प कर लिया जाय। मिस्टर चार्ल्स ग्राण्टने एक बड़ी नायाब स्कीम सोची; नवाब वज़ीर अलीके ज़मानेमें जबकि अवधकी सल्तनत नवाब सआदतअलीखाँको दी गई तो कम्पनी द्वारा निर्धारित मुआवज़ेकी रकम भुनानेमें सिक्कोंकी नाप-जोखको लेकर बहुत सी रक़म बट्टेखाते निकल गई थी। ग्राण्ट साहब चाहते थे कि वह हरजाना सन् १७९६ से लेकर १८३४ तकके अरसेका छत्तीस रुपये सैकड़ेके हिसाबसे पड़ब्याज लगाकर शाहे अवधसे वसूल किया जाय। ग्राण्ट साहबके द्वारा जोड़ी गई यह रकम उनकी दृष्टिमें बहुत छोटी सी थी—महज़ तेरह हज़ार तीन सौ अट्ठाइस करोड़ नौसौ पैंतालिस हज़ार अट्ठावन पाउण्ड स्टर्लिंग थी। ग्राण्ट साहबने आदेश किया कि शाहे अवधसे इस मामूली-सी रकमको तुरन्त अदा करनेके लिए कहा जाय। किन्तु कम्पनीके बोर्ड ऑफ़ कण्ट्रोलके सदस्योंने इसमें अपने राजनीतिक गुटकी हानि देखी और इस बात पर अड़ गये कि सरकार चाहे डायरेक्टरोंको गिरफ्तार करले मगर वह नसीरुद्दीनको इस अनहोने तक़ाज़ेसे परेशान नहीं करेगी। लन्दनकी दुहरी राजनीतिके कारण हिन्दुस्तान स्थित अँगरेज़ोंमें भी मतभेद था। हकीम मेहदीको गोपनीय पत्र लिखकर इशारतन् उसे स्वतन्त्र रूपसे अवधका बादशाह बनानेका लालच भी देकर अँगरेज़ परदा दर परदा खेल रच रहे थे। क़ुदसिया बेगमका गर्भ इस समय हर स्वार्थ-पक्षकी आँखोंमें खटक रहा था।

महामन्त्री नवाब रौशनुद्दौलाकी दलवी महरीसे आँखें लड़ गईं। दलवीके बहाने उसकी बड़ी बहन धनिया भी शामिल हो गई। क़ुद्सिया बेगमके महलोंमें एक आदमीके अक्सर औरतके लिबासमें घुसने पैठनेकी ख़बर कनफुसकियोंमें फैलने लगी। बादशाह सलामतको भी समझाया जाने लगा। मगर नसीरुद्दीन पर जल्दी रंग न चढ़ सका। उसने क़ुद्सिया बेगमसे ही इस बातकी चर्चा कर दी। क़ुद्सिया सावधान हो गई मगर अब उसका संगठन बिगड़ चुका था; उसकी नौकर बाँदियोंमें यह समझ ही नहीं पड़ता था कि कौन किस तरफ़ है।

एक दिन बादशाह सलामत दिलकुशाबाग़ तशरीफ़ ले गये थे। मुसाहबोंके साथ बाग़में टहलने लगे। एक जगह बन्दर बैठे थे। बादशाह सलामतका जी शिकार करनेको हो आया। राजा बख्तावर सिंह काँप गये, कहा—"हुज़ूर इन्हें न मारिए। ये हनुमान् जीके औतार हैं। जन्नत मकानी ग़ाजीउद्दीन हैदर शाहके बड़े भाई नवाब शम्सुद्दौला भी ज़िद पर चढ़ गये थे, उन्होंने बन्दर मारे और उसीके बाद मर गये। बेचारे आग़ा-मीरने वज़ारतकी गद्दीसे उतरनेके एक दिन पहले बन्दरोंका शिकार किया था तो बुरा नतीजा पाया इसलिए इन्हें न मारें।"

मगर बादशाह ज़िद पर चढ़ गये। बन्दरोंका शिकार किया।

शामको जब क़ुद्सिया बेगमके महलोंमें लौटे तो एक आदमी ज़नाने लिबासमें छिपकर उन्हें क़ुद्सिया बेगमके पोशीदा महलोंसे निकलता दिखलाई दिया। धनिया महरीने रोककर उससे पूछा कि तू कौन है? उसने सहमकर कहा कि मैं नई बाँदी हूँ। चख़-चख़ हुई, नई बाँदी पकड़ी गई। तब राज़ खुला कि वह मर्द है। फिर उसने कहा कि वह क़ुद्सिया बेगमका भूतपूर्व पति है और उसकी पत्नी सदासे उसे इसी प्रकार छिपाकर महलोंमें बुलाती रही है। नसीरुद्दीन हैदर ख़ामोश खड़े सुनते रहे। क़ुद्सिया बेगमके कानोंमें भी यह ख़बर पहुँची। वह शेरनी-सी तड़पकर बाहर निकली।

लेकिन नसीरुद्दीन दूसरे बहावमें बह चुका था। मुन्नाजानके बाद यह दूसरी बार उसका आत्मविश्वास टूटा था। नसीरुद्दीन और क़ुद्सिया बेगम एक दूसरेसे ग़ुस्सेमें जूझ पड़े।

सारे महलमें सनाका छा गया। लौंडी बाँदियाँ लुक-छिपकर सुनने लगीं; ख़बरोंका भाव बहुत ऊँचा जा रहा था। उनकी ख़बरें बाहर पहुँचने लगीं। हर तरफ़ पोलिटिकल कन्नेतराशियाँ, हर तरफ़ कनफुसकियोंका बाज़ार गर्म हुआ।

बिस्मिल्लाह बानू उर्फ़ क़ुद्सिया बेगम बुरी तरह तड़प उठी थी। उसने नसीरुद्दीनसे कहा—"तुम कम अक़्ल ही नहीं कम नसीब भी हो। तुम्हें ख़ुदा भी नहीं बचा सकता। तुम एक दिन इस घेरेमें घिर कर मारे जाओगे। और मैं इस मक्रोफ़रेबसे भरी हुई दुनियामें, जहाँ इन्सान इन्सानका दिल तक न पहचान सके, एक घड़ीके लिए भी नहीं रहना चाहती। और न मैं अपनी होनेवाली औलादको ही मुन्नाजानकी तरह धरती पर छोड़ जाना चाहती हूँ कि वह नसीरुद्दीन हैदरका बेटा होकर भी किसी ग़ैरकी औलाद कहलाये।"

क़ुद्सिया बेगमने तैशमें आकर अपनी अँगूठीके नीचे छिपा कारी ज़हर खा लिया और आवेशमें बड़ी देर तक प्रलाप करती रही।

नसीरुद्दीन हैदर बुत बना देखता रह गया। उसकी समझमें नहीं आ रहा था कि सच क्या है। ज़हर अपना असर दिखलाने लगा। क़ुद्सियाकी नाज़ुक देह छटपटाने लगी। वह बार-बार तरह-तरहसे कहती—"मैं तुम्हारी थी, तुम्हारी रही और तुम्हारी होकर ही जा रही हूँ। मरते वक़्त ख़ुदाकी गवाहीमें मैं तुम्हें यक़ीन दिलाती हूँ कि मेरे हमलमें मेरे साथ जो एक और नन्हीं-सी जान भी दुनिया देखे बिना ही दुनियासे जा रही है, तुम्हारी ही औलाद है। मैं बड़ी साधसे तुम्हारे बच्चेकी माँ बन रही थी। तुमने मेरा ख़्वाब चूर-चूरकर दिया, तुमने अपना मुक़द्दर मिटा डाला!"

नसीरुद्दीन हैदर वास्तविकता समझकर चौंक पड़ा—"बचाओ !" वह चीख पड़ा। नौकर-चाकर सारे अमले सारा महल उसकी आज्ञाओंसे गूँज उठा—"अँगरेज़ डॉक्टर को बुलाओ, शाही हकीमको बुलाओ, वैद्य लाओ, मेरी क़ुद्सियाको बचाओ।"

लेकिन मौत अपना क़ब्ज़ा कर चुकी थी। क़ुदसियाका बदन और चेहरा स्याह पड़ता जाता था, जी मचलता, हलक़से ख़ून और जिगरके टुकड़े कट-कटकर गिरते थे।

आख़िरी होश आया, आख़िरी तमन्ना जागी, क़ुद्सियाने अपनी डूबती हुई आवाज़में भी बड़ी तड़पसे गुहारकर कहा—"जाने मन, अपनी गोदमें मेरा सिर रख लो !"

नसीरुद्दीन अपनी ही अपनी सुन रहा था—"मैंने ये क्या किया ? ये क्या हो गया ?"—

उसका दिल कटता जाता था, उसका अन्तर सैलाबकी धारकी तरह बहता चला जाता था। उसमें अन्यायकी, धोखेकी मौतकी दहशत समा रही थी। उसके दिमाग़की नसें फटी जा रही थीं, वह बावला हुआ जा रहा था। "बचाओ ! कोई बचाओ ! बचाओ !" चिल्लाता हुआ नसीरुद्दीन कमरेसे भागा, महलोंसे भागा, बेतहाशा सड़क पर भागता चला गया। सिपाही, आसाबरदार, नौकर-चाकर उसके पीछे दौड़ने लगे। राह चलती रिआया ये अनहोनी देखकर सनाका खा गई। पुलिस पलटन, अँगरेज़, शाही हरम, सारे शहरमें वहशतकी लहर-सी इस खबरसे दौड़ गई। बादशाह समाजका आदर्श पुरुष था, ईश्वरका प्रतिनिधि था।—बादशाह मनुष्य भी था—कमज़ोर कम अक़्ल, बेपनाह था। क़ुद्सिया नहीं मानो वह ख़ुद ही जीते जी मर गया था। वह अपने ही भूतसे बचकर भाग रहा था। बादशाह सड़कों पर दौड़ते-दौड़ते तीन मील दूर घुड़दौड़के मैदानमें बनी कबाड़खाने की कोठरीमें घुस गया और किवाड़ बन्द कर लिये। नसीरुद्दीन शाहे अवध मामूली इन्सानकी तरह, नन्हें मासूम बच्चेको

तरह फूट-फूटकर धूलमें मचल-मचलकर रो रहा था। उसका अन्तिम सहारा टूट गया था। उसका तनिक-सा पनपा आत्मविश्वास सदाके लिए नष्ट हो गया था।

३१

मजनूँ बादशाहकी लैला क़ुद्सिया बेगम अपनी दुःखद परिस्थितियों वाली मौतसे शहरके हर अमीर ग़रीबके दिल पर ज़मानेका दर्द बन कर छा गई। क़ुद्सिया बेगमके लिए नसीरुद्दीनके बावलेपनने हर तरहकी राजनीतिको शोकमें डुबा दिया था। हर अमीर उमरा काले मातमी लिबासमें जनाज़ेके साथ था, लाखोंकी भीड़ साथ थी। सैंकड़ों भावुकोंकी आँखोंमें आँसू थमते न थे। इतना बड़ा मजमा होने पर भी अलम खामोशी थी, केवल चलनेकी आहट और ताबूत उठाने वालोंका क़ुरआन पाठ ही सुनाई देता था। पूरे शाही सम्मान और नगर-व्यापी हार्दिक शोकके साथ मेहदीगंजकी नयी कर्बलामें क़ुद्सिया बेगमकी अन्त्येष्टि क्रिया सम्पन्न हुई।

बादशाह सलामतको बहुत समझा-बुझा कर राजमहलमें लाया गया। नसीरुद्दीन पत्थर हो गया था। वह अपने आस-पासकी हर वस्तु, हर व्यक्तिको फटी आँखोंसे घूर कर देखता और देखता ही रह जाता। उसे किसी चीज़की चाह नहीं रह गई थी; खाना नहीं पानी नहीं शराब नहीं किसीसे बात चीत नहीं, कोई हरकत नहीं, बादशाह गुम हो गया था। वह किसीसे मिलना-जुलना नहीं चाहता था। उसने अपने कमरेके हर खिड़की दरवाज़े हाथके इशारेसे बन्द करवा दिये और अपनी घुटनमें बैठा रहा। लोग डरते थे, बादशाह कहीं खुदकुशी न कर लें। दरवाज़ेकी झिरियोंसे बराबर उन पर निगाह रखी जा रही थी। पल-पल पर खबरें दौड़तीं; वज़ीर, राजा ग़ालिब जंग और तमाम दरबारी फ़रहबख्श महलके बाहरी कमरोंमें बैठे प्रतिपलकी खबरें पा रहे थे। रेज़ीडेंटको बराबर खबरें मिल रही थीं। किसीको यह समझमें ही नहीं आता था कि इस गुम्मीका अन्जाम

क्या होगा। अँगरेज़ डॉक्टरका अनुमान था कि बादशाह सलामतका कमज़ोर दिमाग़ इस सदमेसे उबर न पायेगा, वे जीते भी बच गये तो सल्तनतके कामके न रहेंगे। वे पागल हो चुके हैं। अँगरेज़ डॉक्टरके इस कथनने राज्यके भविष्यके लिए लोगोंके मनोंमें सनसनाहट उत्पन्न कर दी थी। बहुत देर बाद बादशाह उठे। दरवाज़ोंकी झिरियोंमेंसे झाँकती हुई बाँदियाँ सतर्क हुईं। धनियाने देखा बादशाह दरवाज़ेकी ओर बढ़े आ रहे हैं। उसने इशारेसे बाँदियोंको दूर हटनेको कहा और आप भी सँभल कर खड़ी हो गयी।

दरवाज़ा खुला; एक पल्ला खोल कर उसपर हाथ रक्खे खड़े हुए आक़ाए आलम सामने घूर कर देखते रहे। उनकी पुतलियाँ पथराई हुई थीं। उनके चेहरे पर आँखोंमें उनके अन्तसंघर्षका आभास मिला। बादशाहने अपने सिरको झटका दिया, आँखें मीचकर फिर खोलीं और उन्हें स्थिर करनेका प्रयत्न किया। धनिया मौक़ा देखकर आगे बढ़ी, हुज़ूरके पास तक गयी, हुज़ूरने उसे देखा और कोशिशसे पहचान भी लिया। नसी-रुद्दीन हैदरकी आवाज़ बहुत देर बाद फूटी, धनियाके कंधे पर हाथ रख उसे बड़ी अपनाहटसे दबाते हुए कहा : 'धनिया—'

'आलमपनाह !' धनियाका स्वर आँसुओंसे काँप रहा था।

बादशाह फिर जैसे सब कुछ भूल गये, उसके कन्धेसे हाथ हटाया और टूटे हुए इन्सानकी तरह धीरे-धीरे कमरेमें लौट गये। धनिया पीछे-पीछे आगे बढ़ी।

कमरेमें जाकर नसीरुद्दीन फिर गुम हो गया था। सिर झुकाए खड़ा रहा फिर एक बार चारों ओर दरोदीवार पर नज़र दौड़ाई, धनियाको देखा, देखता रहा, आँखोंमें पानी भर आया; फिर सिरको झटका दिया, मनकी तिलमिलाहट शरीर पर स्पष्ट होकर उभरी, दो चार क़दम चहल क़दमी हुई, फिर धनियाके पास आया। उसके दोनों कन्धों पर हाथ रख कर

खड़ा हो गया फिर कहा : "धनिया—" मानो इससे अधिक वे कुछ और बोल ही न पाता था और इसी एक शब्दमें वे बहुत कुछ कह जाता था।

"हुज़ूर बेगम साहबाकी रूहने आपका साथ नहीं छोड़ा ज़िल्ले सुब्हानी। वो यहीं है, फ़क़त उनका जिस्म नहीं है। हुज़ूर ग़ौर करें, हुज़ूर लाखों रिआयाके सहारे हैं। आपकी यह हालत देखकर ज़माना रो रहा है।"

"अच्छी ख़ानम कहाँ है?" बादशाहके स्वरमें सहसा सधाव आ गया था। धनिया इतनी जल्दी इसके लिए तय्यार न थी। घबरा गयी पर तुरत सँभलकर कहा : "वो कहीं चली गयीं हुज़ूर!"

"उसकी तलाश हो? कुल्सुम कहाँ है?"

"बेगम साहबाके महलमें।"

"मैं वहाँ जाऊँगा!"

तुरत इन्तज़ाम हुआ, भगदड़ मची, लोगोंके ठंढे-ठंढे क़यास झकोले खाने लगे; बादशाह सलामत पागल नहीं हुए। उन्होंने ख़ुदकुशी भी नहीं की। वे बच जायँगे। गद्दीके उम्मीदवारोंको अभी कुछ और बरस यों ही आसमें बिताने होगें।

.कुद्सिया बेगमके महलोंमें नसीरुद्दीन कोने-कोने ख़ामोशीसे घूमता रहा। हर तरफ़, जहाँ-जहाँ उसने .कुद्सियाके साथ सुखके क्षण बिताये थे, वह गुमसुम जाकर खड़ा हो जाता। इधर-उधर ख़ामोशीसे देखता और फिर आगे बढ़ जाता। बाग़में फ़व्वारेके पास, बड़े दालानमें जहाँ पिंजरोंमें चिड़ियाँ टँगी हैं, दीवानख़ानेमें, हर तरफ़ वह गया लेकिन इस समय उसका चेहरा खोया हुआ नहीं था; वह संयत था। उसके वेदनासे अभिभूत चेहरेपर चिन्तनका कसाव था। वह उस कमरेकी ओर भी बढ़ा जहाँ .कुद्सियाने प्राण त्यागे थे; दरवाज़े तक गया, ठिठका, लौट पड़ा; फिर दरवाज़ेकी तरफ़ गया, क्षण भर बन्द दरवाज़ोंको दोनों हाथोंसे पकड़े हुए उनपर सिर टिकाये खड़ा रहा, फ़िर ख़ुद अपने हाथसे सिटकनी ख़ोली। दरवाज़े खुल गये, अन्दरका कमरा झलकने लगा। चाँदीके पत्तर चढ़ी गंगा

जमुनी खूबसूरत सेज, कमरेकी तमाम सजावट ज्यों की त्यों थी। इस कमरेमें नसीरुद्दीनने न जाने कितनी ताज़गी, कितनी आस्था पायी थी! यह कमरा कभी इतना ख़ामोश न था। बादशाह दरवाज़े पर खड़ा-खड़ा थोड़ी देर देखता रहा फिर एक क़दम चौखट लाँघी, खड़ा रहा; फिर दूसरा क़दम भी अन्दर गया; खड़ा रहा और फिर धीरे-धीरे सेज पर जाकर बैठ गया, खो गया। इस समय उसकी आँखोंमें आँसू नहीं थे, वह स्थिर था।

काफ़ी देर बाद उसे फिर याद आयी, कुलसुमकी बुलाहट हुई।

क़ुद्सिया बेगमकी मृत्युके बाद कुलसुम भी नसीरुद्दीन हैदरकी तरह ही बुत हो गयी थी। अच्छी ख़ानम रातों-रात कहीं भाग चुकी थी। कमरोंमें ताले पड़ चुके थे। बाँदियोंने कुलसुमको नज़रन्दाज़ किया, किसीने उसकी ओर ध्यान देनेकी जरूरत भी न समझी। वह अब तक भूखी-प्यासी, ख़ामोश एक कोठरीमें बैठी थी। नसीरुद्दीन द्वारा पहली बार याद किये जाने पर बाँदियोंने उसकी देखभाल पर फिरसे ध्यान देना आरम्भ किया और बादशाहके इस महलमें आने-आने तक कुल्सुमके लिए काला मातमी लिबास जैसे-तैसे बनकर तैयार हो गया। कुलसुम उसे ही पहनाकर इस समय बादशाहके रूबरू पेशकी गयी थी।

नसीरुद्दीन उसे देखते रहे फिर उठकर तेज़ीसे उसके पास जा कसकर उसे छातीसे चिपका लिया। बादशाहकी आँखोंसे चुपचाप आँसुओंकी गंगा-जमुना बहने लगी; नसीरुद्दीन हैदर और कुल्सुम—दो बेसहारा बच्चे एक दूसरेके दुःखका सहारा बन गये।

लेकिन नसीरुद्दीन शोककी पराकाष्ठा पर अनहोने रूपसे गम्भीर और संयमित था। उसने कुल्सुमको तसल्ली दी, कहा : "तुम्हारी बहन नहीं रहीं मगर मैं तो हूँ; तुम किसी तरह भी हिरास न होना—" बड़ी समझदारी की बातें करता रहा, बड़ी दार्शनिक बातें करता रहा, नसीरुद्दीन जैसे अपने

आपको ही समझा रहा था। फिर अचानक पूछा कि क्या वह क़ुद्सिया बेगमकी सगी बहन है ?

कुल्सुमने अपनी कथा सुनाई; नसीरुद्दीन सुनता रहा, फिर बोला : "खुदा नहीं है। सब झूठ है, खुदा होता तो इस नन्हीं-सी प्यारी-प्यारी बच्ची पर यों आफ़तोंके पहाड़ टूटते, नसीरुद्दीन यों दिन दहाड़े लुट जाता ?" उसे पूरा-पूरा शक था कि वह नक़ली बाँदी, कुद्सिया बेगमका नक़ली शौहर उसकी सौतेली माँ की साज़िशसे ही इस घरमें आया था और उसका घर तबाह कर गया। यह कचोट उसे अन्दरसे चिढ़ा रही थी। बादशाह बेगम बड़ी अल्लाहवाली हैं, बड़ा धर्म-कर्म पुण्य करती हैं। भगवान्ने उनकी आस पूरी कर दी, कुद्सिया मर गई। लेकिन एककी आस पूरी करनेमें दूसरे को, नसीरुद्दीनको भगवान्ने तोड़ क्यों दिया ? नसीरुद्दीन भी धार्मिक है, अपनी हज़ार कमज़ोरियोंके बावजूद वह ख़ुदाको याद करता है; उसने लाखों रुपये मक्कामदीना और बग़दाद आदिमें ख़ैरातके लिए भिजवाये हैं। उसने अपने महलोंमें सौतेली माँ की तरह ही इमामोंके रोज़े बनवाये हैं; उसके यहाँ भी अछूतियाँ हैं, अछूते हैं; दान-पुण्य सब कुछ ईश्वर और धर्मके नाम पर होता है फिर भी ईश्वरने उसका सहारा छीन लिया ? ईश्वर जो कि रहीम और करीम है, वह क्यों कर इतनी बड़ी ग़ैर इन्साफ़ी कर सकता है ?···नहीं, ख़ुदा नहीं है; ख़ुदा झूठ है ! ख़ुदा मर चुका है।—"ख़ैर ख़ुदा न सही मैं हूँ, मुझे कहींसे तसल्ली भले न मिले मगर मैं तेरी ज़िन्दगीको तस्कीन बनूँगा बेटी !···" कहते-कहते नसीरुद्दीन सहसा अटक गया, सोचने लगा फिर बोला : "मैं जो कुछ कह रहा हूँ झूठ कह रहा हूँ। मुझमें किसीकी भी हिफ़ाज़त करनेकी ताक़त नहीं। मैं ख़ुद अपनी ही हिफ़ाज़त नहीं कर सकता। ये शाही महल किसीकी भी हिफ़ाज़त नहीं कर सकते। इन पर लाख दुश्मनोंका क़ब्ज़ा होता है। नहीं, मैं तुझे यहाँ नहीं रखूँगा मेरी बेटी ! यहाँ नहीं रखूँगा ! पर कहाँ रखूँ मैं ? मुझे कोई भी ऐसा बशर नहीं दिखलाई देता जिसमें इन्सानियत

की एक किरन हो, जिसके दिलमें खुदा रहता हो। यहाँ तो हरसूँ शैतानका ही बोल बाला है। और अगर तू अपनी हिफ़ाज़त चाहती हो तो शैतानके आगे ही घुटने टेक दे। तू अम्मनके पास ही लौट जा, वही तेरी हिफ़ाज़त कर सकती है।...लोग अपने प्यारोंको खुदाको सौंपते हैं। मैं मुझे शैतान को सौंपता हूँ बेटी...और अपने आपको भी।"

कुल्सुम डोली पर बिठाकर सिपाहियोंकी निगरानीमें अम्मनके घर भेज दी गयी। तेरह वर्षकी नन्हीं कुल्सुम आयुको देखते हुए बुद्धिमें बहुत प्रौढ़ हो गई थी, उसका मन भी चलते-चलते सध रहा था, वह अब किसी बातका विरोध नहीं करेगी, अपने आपको तक़दीरके हाथों सौंप देगी। भाग्यने ही उसके माता-पिता और परिवारको नष्ट किया, कक्कूको छुड़ाया, नईम भइया, सुलनी छूटे। वह जहाँ गई बदक़िस्मती उसके साथ रही, अन्तमें क़ुद्सिया बेगम भी सदाके लिए छूट गई। अब वह अपनी तक़दीरसे नहीं लड़ेगी। अम्मन जो कहेगी वही करेगी। डोली चौकक्की भरी सड़कसे नखासकी ओर बढ़ रही थी; बाजारोंमें चहल-पहल थी गो बहुतसे लोग अब भी शाही मातम मनाते हुए काले लिबासमें नज़र आते थे। शहरकी आम मस्ती और बेफ़िक्री बादशाहके डरसे ग़मके रंगमें रँगी हुई थी। कुल्सुम डोलीके परदेको अपनी नन्हीं उँगलियोंसे हटाये ज़रा सी झिरी बनाकर बाज़ारको देखती खोये-से मनसे चली जा रही थी। अचानक वह चीख उठी—"कक्कू! रोको! रोको!"

उसके अचानक उछलनेसे डोली कहारोंके कन्धों पर हचकोले लेने लगी; उन्होंने डण्डोंके सहारे डोली टिका दी। सिपाही आगे बढ़ा लेकिन कुल्सुम तबतक सब कुछ भूल डोलीसे उतरकर भागी। एक हलवाईकी दूकानके सामने भीड़में झोली फैलाये मैले गेरुआ वस्त्रमें दिग्विजय ब्रह्मचारी खड़े थे। कुल्सुमकी आवाज़ने कानोंमें पड़कर उन्हें सहसा विचलित कर दिया था। वे इधर-उधर बावली नज़रोंसे देख ही रहे थे कि डोलीसे कूदकर दौड़ती हुई कुल्सुम उनके पास आ गई। हिन्दू संन्यासी और शाही

उसके पीछे भागी। मुसलमानी मुहल्लेमें स्वाभाविक रूपसे जो भी यह सुनता वही ब्रह्मचारीको गालियाँ देता, थूकता, बँधे हुए क़ैदीको मारनेका ज़ोम दिखलाता। पीठ पीछे हाथ बाँध कमरमें रस्सी डाल अम्मनके आदमी ब्रह्मचारीको कोतवालीकी ओर लिये जा रहे थे, शाही चोबदार आगे-आगे जा रहा था, पीछे निठल्ले तेहेबाज़ोंका झुण्ड था। राह चलते तमाशा देखते, संन्यासीका अपराध सुन गालियाँ देते। उस समय शासक जातिके लोग शासित जातिके इस घोरतर अपराधीके बहाने काफ़िर बुतपरस्तोंको उनके धर्म-कर्मको गालियाँ देते चले जा रहे थे। मुसलमान हिन्दू यों तो मिलकर चलते थे फिर भी औसत मुसलमान औसत हिन्दूसे अपने आपको श्रेष्ठ समझता था और अवसर पाते ही बेझिझक अपनी मनोभावनाओंको प्रकट भी करता रहता था। घर-गृहस्थीमें दुख-सुख पड़े तब चाहे हिन्दू हो या मुसलमान अपनी कोमल भावनाओंके वशीभूत होकर एक दूसरेके संत धार्मिक पुरुषोंकी चिरौरी भी करता था; मुसलमान अपने बच्चोंकी आँखें आने पर कालीजीका नीर ले जाते थे, ज्योतिषियोंसे अपना भाग्य विचार और ग्रहशांतिके उपचार कराते थे और हिन्दू भी ताज़ियोंके नीचेसे अपने बच्चोंको निकालते, पीर औलिया क़ब्र दरगाह पूजते; गंडे, ताबीज़ बाँधते; पर यह होते हुए भी हिन्दू मुसलमानोंकी पारस्परिक धार्मिक घृणा वातावरणमें स्पष्ट रूपसे उभरती थी। हिन्दू केवल अपनी जानसे हाथ धोनेका निश्चय कर ही मुसलमानोंके विरुद्ध कुछ कहनेका साहस कर सकता था जब कि मुसलमान बेझिझक और सदम्भ अपनी दुर्भावनाओंको प्रकट करता था। हिन्दू मुसलमान बनाया जा सकता था पर मुसलमानको हिन्दू बनाना घोरतर अपराध था। दिग्विजय ब्रह्मचारी पर यही भीषण आरोप था। वे विवश बँधे सिर झुकाये शान्त भावसे चले जारहे थे।

एक सूफ़ी सन्त हज़रत कौड़ाशाह अपने मुरीदोंके साथ चले जा रहे थे। कौड़ाशाह बड़े पहुँचे हुए फ़क़ीर माने जाते थे। वे पोर-पोर कौड़ियों टँका लम्बा चोग़ा पहनते थे और उनके गलेमें बड़े-बड़े कौड़ों,

बड़ी मँझोली छोटी झीनी कौड़ियोंकी अनेक मालाएँ सदा झूलती रहती थीं इसीलिए उनका यह नाम पड़ा था। कौड़ाशाह तामझाम पर चले जा रहे, भीड़के साथ जाते हुए क़ैदी पर नज़र डाली पूछा, इसे क्यों बाँधा है। उनके चेले दौड़ कर शाही चोबदारको बुला लाये। हज़रत कौड़ाशाहको देखकर भीड़ अदबसे झुक गई। शाह साहबने कारण जाना, फिर संन्यासीको ग़ौरसे देखा। दिग्विजय ब्रह्मचारीका सिर विचार-मग्न मुद्रामें अबतक झुका ही हुआ था। शाह साहब आगे बढ़े, उनके बँधे हाथों पर हाथ रखकर चोबदारसे कहा—"इन्हें छोड़ दो। फ़ौरन खोलो।"

भीड़के हाथोंसे तमाशा चला जा रहा था मगर शाह साहबकी हुक्म-उदूली करनेकी हिम्मत किसे थी। ब्रह्मचारी मुक्त हो गये; दोनोंने एक दूसरेको आँखोंमें आखें डालकर देखा।

शाह साहबने प्रेमसे उनके सिर पर हाथ फेरकर कहा—"बड़ी तकलीफ़ पाई।"

ब्रह्मचारी धीमेसे मुसकराये, फिर कहा—"दिन रातका भेद भूल चुका हूँ।"

"दमसे या ग़मसे ?"

ब्रह्मचारीने गर्दन झुकाकर सोचा फिर उत्तर दिया—"गम है तो पर दम जादा है।"

शाह साहबकी हिनाई दाढ़ी सुरमगीं आँखों और इत्रसे चुचुआती हिनाई रँगी जुल्फोंवाले शांत सतेज मुखमण्डल पर करुण आवेशका अभाव प्रत्यक्ष चढ़ता दिखाई पड़ा, आँसू आँखोंमें एकदम उमड़ कर आये—"हाय प्यारे, तू भी मेरे माशूक़का मारा है। हाय सितमगर! हाय ज़ालिम!—कहते हुए ब्रह्मचारीको कसकर कलेजेसे लगा लिया और उनके कन्धे पर सिर रखकर हिचकियाँ बाँध-बाँधकर रोने लगे। मुरीद दौड़े आये, शाह साहबको सम्हालने लगे। खुदाका नाम लिया जाने लगा ज़िक्र और

उसके पीछे भागी। मुसलमानी मुहल्लेमें स्वाभाविक रूपसे जो भी यह सुनता वही ब्रह्मचारीको गालियाँ देता, थूकता, बँधे हुए क़ैदीको मारनेका ज़ोम दिखलाता। पीठ पीछे हाथ बाँध कमरमें रस्सी डाल अम्मनके आदमी ब्रह्मचारीको कोतवालीकी ओर लिये जा रहे थे, शाही चोबदार आगे-आगे जा रहा था, पीछे निठल्ले तेहेबाज़ोंका झुण्ड था। राह चलते तमाशा देखते, संन्यासीका अपराध सुन गालियाँ देते। उस समय शासक जातिके लोग शासित जातिके इस घोरतर अपराधीके बहाने काफ़िर बुतपरस्तोंको उनके धर्म-कर्मको गालियाँ देते चले जा रहे थे। मुसलमान हिन्दू यों तो मिलकर चलते थे फिर भी औसत मुसलमान औसत हिन्दूसे अपने आपको श्रेष्ठ समझता था और अवसर पाते ही बेझिझक अपनी मनोभावनाओंको प्रकट भी करता रहता था। घर-गृहस्थीमें दुख-सुख पड़े तब चाहे हिन्दू हो या मुसलमान अपनी कोमल भावनाओंके वशीभूत होकर एक दूसरेके संत धार्मिक पुरुषोंकी चिरौरी भी करता था; मुसलमान अपने बच्चोंकी आँखें आने पर कालीजीका नीर ले जाते थे, ज्योतिषियोंसे अपना भाग्य विचार और ग्रहशांतिके उपचार कराते थे और हिन्दू भी ताज़ियोंके नीचेसे अपने बच्चोंको निकालते, पीर औलिया क़ब्र दरगाह पूजते; गंडे, ताबीज़ बाँधते; पर यह होते हुए भी हिन्दू मुसलमानोंकी पारस्परिक धार्मिक घृणा वातावरणमें स्पष्ट रूपसे उभरती थी। हिन्दू केवल अपनी जानसे हाथ धोनेका निश्चय कर ही मुसलमानोंके विरुद्ध कुछ कहनेका साहस कर सकता था जब कि मुसलमान बेझिझक और सदम्भ अपनी दुर्भावनाओंको प्रकट करता था। हिन्दू मुसलमान बनाया जा सकता था पर मुसलमानको हिन्दू बनाना घोरतर अपराध था। दिग्विजय ब्रह्मचारी पर यही भीषण आरोप था। वे विवश बँधे सिर झुकाये शान्त भावसे चले जारहे थे।

एक सूफ़ी सन्त हज़रत कौड़ाशाह अपने मुरीदोंके साथ चले जा रहे थे। कौड़ाशाह बड़े पहुँचे हुए फ़क़ीर माने जाते थे। वे पोर-पोर कौड़ियों टँका लम्बा चोग़ा पहनते थे और उनके गलेमें बड़े-बड़े कौड़ों,

बड़ी मँझोली छोटी झीनी कौड़ियोंकी अनेक मालाएँ सदा झूलती रहती थीं इसीलिए उनका यह नाम पड़ा था। कौड़ाशाह तामझाम पर चले जा रहे, भीड़के साथ जाते हुए क़ैदी पर नज़र डाली पूछा, इसे क्यों बाँधा है। उनके चेले दौड़ कर शाही चोबदारको बुला लाये। हज़रत कौड़ाशाहको देखकर भीड़ अदबसे झुक गई। शाह साहबने कारण जाना, फिर संन्यासीको ग़ौरसे देखा। दिग्विजय ब्रह्मचारीका सिर विचार-मग्न मुद्रामें अबतक झुका ही हुआ था। शाह साहब आगे बढ़े, उनके बँधे हाथों पर हाथ रखकर चोबदारसे कहा—"इन्हें छोड़ दो। फ़ौरन खोलो।"

भीड़के हाथोंसे तमाशा चला जा रहा था मगर शाह साहबकी हुक्म-उदूली करनेकी हिम्मत किसे थी। ब्रह्मचारी मुक्त हो गये; दोनोंने एक दूसरेको आँखोंमें आखें डालकर देखा।

शाह साहबने प्रेमसे उनके सिर पर हाथ फेरकर कहा—"बड़ी तकलीफ़ पाई।"

ब्रह्मचारी धीमेसे मुसकराये, फिर कहा—"दिन रातका भेद भूल चुका हूँ।"

"दमसे या ग़मसे?"

ब्रह्मचारीने गर्दन झुकाकर सोचा फिर उत्तर दिया—"गम है तो पर दम जादा है।"

शाह साहबकी हिनाई दाढ़ी सुरमगीं आँखों और इत्रसे चुचुआती हिनाई रँगी जुल्फोंवाले शांत सतेज मुखमण्डल पर करुण आवेशका अभाव प्रत्यक्ष चढ़ता दिखाई पड़ा, आँसू आँखोंमें एकदम उमड़ कर आये—"हाय प्यारे, तू भी मेरे माशूक़का मारा है। हाय सितमगर! हाय ज़ालिम!—कहते हुए ब्रह्मचारीको कसकर कलेजेसे लगा लिया और उनके कन्धे पर सिर रखकर हिचकियाँ बाँध-बाँधकर रोने लगे। मुरीद दौड़े आये, शाह साहबको सम्हालने लगे। खुदाका नाम लिया जाने लगा ज़िक्र और

मुराक़बत (ध्यान) का चर्चा होने लगा। ब्रह्मचारी उन्हें दोनों हाथोंसे थामे सामने दृष्टि स्थिर किये शान्त खड़े थे। पहचानने वाले ये भी कह रहे थे कि शाह साहब इस समय आलमे जमरूतमें हैं। इस हिन्दू फ़कीरके भेसमें इनकी किसी पुरानी जान पहचानवाली रूहसे मुलाक़ात हो रही है।

नगरमें जहाँ और सब था; सूफ़ी फ़क़ीर नामी गिरामी योगी संन्यासियोंका भी बड़ा माहात्म्य फैला था। नक़ली तमाशे बहुत थे, पर असली खिलाड़ी भी मिल ही जाते थे। हज़रत कौड़ाशाह बड़ी पहुँचवाले खरे साधक माने जाते थे। ये किसीके बसके न थे; मौज आती तो किसीके यहाँ भी चले जाते वरना लाखों बुलावों पर भी टससे मस न होते। दुख दरद ग़मीमें जहाँ सुनते दौड़ पड़ते—अमीर-ग़रीबका भेद न था, पापी-पुण्यात्मा तकका भेद न रखते। वे सारे दोषोंका कारण अपने 'माशूक़' की कठोरताको बतलाते, कहते "मेरा माशूक़ बड़ा ज़ालिम है। हाय मैं कहाँ तक उसकी शिकायतोंका बोझ ढोता रहूँ।" वे अपने प्रियतम ईश्वरको कोसते-कोसते भी आनन्दमग्न हो जाते थे और उसका गुणगान करते हुए भी। उनकी दुआओंमें असर होता है, यह प्रसिद्ध था और यह भी जगज़ाहिर था कि अपने माशूक़को छोड़ कर वह और किसीको भी बददुआ नहीं देते थे; माशूकके लिए कहते थे कि उसकी बात न्यारी है, उस जादूगरको मेरी बददुआएँ भी दुआ होकर ही लगती हैं। कौड़ाशाह साहब सत्तर पारकी आयुके स्वस्थ, गेहुँआ रंगके तेजवान पुरुष थे। वे सुबह शाम एक-एक इलायची मुँहमें डाल लेनेके सिवा और कुछ भी नहीं खाते थे। दोनोंसमय उनके सामने भोजनके राजसी व्यञ्जन प्रस्तुत होकर आते, वे दस्तरख्वानपर बैठ कर उन व्यञ्जनोंको थोड़ी देर तक देखते और फिर उठ जाते थे।

हज़रत कौड़ाशाह ब्रह्मचारीको अपने स्थान पर ले गये। फल-मेवोंसे सत्कार किया, उनका जीवनवृत्तान्त सुना। कुल्सुमके ग़ायब होनेके बाद नाज़िम द्वारा बन्दी होकर ब्रह्मचारी कई हफ्ते तक तहखानेमें पड़े रहे। नाज़िमने उन्हें अंगरेज़ोंसे शाबासी पानेकी नीयतसे अपनी निगरानीमें

रखा था, परन्तु बादमें पता चला कि अंगरेज़ अब किसी नीतिवश उन्हें गिरफ्तार करनेके लिए चिन्तित नहीं हैं तो नाज़िमने उन्हें करामतहुसैनके सुपुर्द कर दिया। करामतहुसैनने एक बैलके साथ उन्हें हलमें जोत कर खेती कराई, पुर चलवाया, एक समय खानेको दिया और रात बितानेके लिए चूहोंवाले सीलनभरे तहखानेमें स्थान दिया। लगभग एक महीने तक यही क्रम रहा इस बीचमें उन्हें नींद और विश्राम न मिल सका। दिग्विजय ब्रह्मचारीने अपनी विवशताको ईश्वरी दण्ड मान कर मौन हो सहा और जब यह अत्याचार शरीरकी सहनसीमाके पार हो गया तो एक दिन खेतमें बेहोश हो गये। इस प्रकार अनेक कष्ट सहकर नाज़िमके अच्छे, बुरे और बहुत बुरे तहखानोंमें साढ़े तीन वर्ष बिताये। नाज़िम उन्हें मारता इसलिए न था कि न जाने अंगरेज़ कभी एकाएक अपने क़ैदीकी फरमाइश करबैठे, पहले एकाधबार नाज़िमको इस प्रकारका अनुभव हो चुका था। नाज़िम उन्हें आज़ाद भी नहीं करना चाहता था; उसे भय था कि मुक्त होकर वे उसके भयंकर शत्रु हो जायेंगे। यह सोच कर नाज़िमने अन्तमें उन्हें लखनऊके शाही क़ैदखानेमें भेज दिया; और आजकी घटनाके पन्द्रह-बीस रोज़ पहले ही जेल दारोग़ाके मनमें दो-एक बातोंसे इनके प्रति चामत्कारिक श्रद्धा जागी और उसने इन्हें चुपचाप मुक्त कर दिया। ब्रह्मचारी तबसे भटक रहे थे और आज अकस्मात् कुल्सुम उन्हें मिली भी और बिछुड़ भी गई। अपनी बात समाप्त करते हुए ब्रह्मचारीने कहा : "औरोंसे भगवान् जंगलों-पहाड़ोंकी गुफाओंमें तपस्या कराते हैं मुझे क़ैदघर में वो सुविधा दी। मैंने एक दिन दुख नहीं माना शाह साहब। मैंने हज़ारोंके कष्टका अपनी साधनामें अनुभव किया, उससे दम मिला। ग़म केवल इस लड़कीका है।"

"तेरे भाईकी औलाद है न। और जो सैकड़ों लड़कियाँ इसी तरह रोज़ उड़ा कर लाई जाती हैं वे तेरे भाइयोंकी औलादें नहीं तो क्या ग़ैर हैं? बोल साईं, बोल मेरे प्यारे, जवाब दे।"

दिग्विजय ब्रह्मचारी नतशिर हो विचारमें डूब गये।

"तेरे शीशेमें यह बाल क्यों आता है। मेरा माशूक तुझे चकमा दे रहा है साईं। उस जादूगरके जादूसे अपनी नज़रोंको न बाँध, उसे देख।" सूफ़ी संतकी दृष्टि वाणी शरीर और मन एक ही से सधे हुए थे। दिग्विजय ब्रह्मचारीने संतके चरणोंमें भक्ति-पूर्वक सिर नवाया, कहा:, "आपने मेरी आँखें खोल दीं। मगर कसक जीसे नहीं जाती। यह क्यों होता है? शक्तिशाली निर्बलोंको दबाते हैं—"

"चक्कीका एक पाट चल रहा है, दूसरा उसकी रगड़ खा रहा है; कौन किसको पीस रहा है साईं?—शऊरका गेंहू पिस रहा है, हक़का आटा तैयार हो रहा है। सब्र कर प्यारे, मेरा माशूक़ तेरी ही रोटीका इंतज़ाम कर रहा है।"

ब्रह्मचारी निरुत्तर हो गये परन्तु उनका मन घुमड़ता रहा। सही है, चेतनाका गेंहू पिस रहा है, सत्यका आटा निकल रहा है। पर सत्य क्या है?—आगे भी जो दिखलाई दे रहा है वह यही है कि यवनोंका राज जायेगा, अंगरेज़ोंका राज आयेगा पर लूट तो वैसीकी वैसी ही बनी रहेगी। अंगरेज़ अपने विलायतको लंका बना रहा है और भी बनायेगा। ठाकुर ब्राह्मण कहार चमार खेती छोड़-छोड़ कर भाग रहे हैं, धरती ऊसर होती जाती है, जिसका जिस पर वश चलता है उसे लूट खाता है। इसमें कौन सी चेतना जाग रही है, कौन-सा सत्य प्रकट हो रहा है?

"तू चाहता क्या है साईं।" सूफ़ी संतने सहसा पूछा।

"मैं?—चाहता हूँ यह अन्याय मिट जाय।"

"तो मिटा दे। जो चाहता है उसे पानेके लिए जतन कर।"

"यही तो सवाल है। क्या जतन करूँ। अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। समय बिखर रहा है, मनुष्यका मन बिखर रहा है—कैसे बँधे?"

"देख प्यारे, अपने पकाव पर आये बग़ैर कोई बात बनती नहीं। मौसम आने पर किसान खेतमें बीज डालता है और मौसम आने पर ही

उसका फल भी पाता है। बीचमें लाख जतन करने पर भी वह फल नहीं हासिल कर सकता।"

"ठीक है, पर इस बीचमें किसान चुपचाप हाथ पर हाथ धर कर तो नहीं बैठ रहता। वह खेत सींचता है, उसकी रखवाली करता है—"

"ठीक है। यही करो। हम तुम जो भी उसे प्यार करते हैं, हक़ पर क़ायम रह कर अपनी मिसाल पेश करें। साँस रुक जाय तो ज़िस्म मुर्दा हो जायगा, किसी कामका न रहेगा; मगर साँस जो चल रही है तो भले ही हमारा ध्यान उस पर आज न जाय, कल या परसों जाय, जब भी जाय—जायगा ज़रूर। साँसकी तरह अपनी मिसाल क़ायम रक्खो साईं। तुम चलते रहोगे तो ज़माना तुम्हारे साथ चलेगा।"

उसी समय विचार-जगत्के इन निवासियोंके सामने कौड़ाशाह साहब का एक भक्त भौतिक जगत्का एक सनसनाता समाचार लेकर आया। विचार-जगत्के इन निवासियोंके निकट वह ताज़ा समाचार दिल उछालने वाला भले ही सिद्ध न हुआ हो, पर ज़मानेका दिल बाँसों बल्लियों उछल रहा था—नसीरुद्दीन हैदर और उसकी सौतेली मा बादशाह बेगममें खुले आम ठन गई। बादशाह राजमातासे बुरी तरह चिढ़ उठा था।

३२

कुल्सुमको अम्मनके घर विदा करनेके बाद नवाब क़ुद्सिया बेगमके महलमें हर जगह तालेबन्दी करवा तालियाँ लेकर ही नसीरुद्दीन वहाँसे हटा। वह नहीं चाहता था कि क़ुद्सिया बेगमकी एक भी चीज़ इधरसे उधर हो। वह उसकी हर स्मृतिको रखना चाहता था।

कोठी फ़रहबख़्शमें लौट आने पर भी नसीरुद्दीन हैदरको फ़रह नसीब न हुई, खाना पीना कुछ भी न सुहाता था, बादशाह अकेला रहना चाहता था, ख़ामोश बैठा था।

बादशाह बेगम अपने बेटेका दुःख बँटाने आईं। उन्होंने तरह-तरहसे

समझाया, कहा—"ख़ुदाने तुम्हारे लिए एकसे एक ख़ूब सूरत औरतें पैदा की हैं। बरख़ुरदार उस मक्कारामें ऐसा था ही क्या जो उसके ग़ममें तुम इस तरह अपने आपको तबाह कर रहे हो। ऐ, पैरकी जूती थी, फट गई, नई आयेगी।"

नसीरुद्दीन चिढ़ गया; क़ुद्सिया बेगमका प्रभाव इतना हल्का न था कि कोई उसके विरुद्ध ऐसी बातें कहे और नसीरुद्दीनके क्रोधकी लपटोंसे बच जाय। बादशाह बेगमके प्रति अरसेसे उसके मनमें रोष घुमड़ ही रहा था और इस समय तो उसका दृढ़ विश्वास था कि क़ुद्सियाके नक़ली पति वाला षड्यन्त्र बादशाह बेगम द्वारा रचा गया था। उसके मनमें हकीम मेहदीकी यह बात भी थी कि बादशाह बेगमने अँगरेज़ सरकारको पत्र लिखकर उसे धोबीकी सन्तान और अपने दोहते मुहसानुद्दौलाको गद्दीका असली अधिकारी बतलाया था। मनमें अरसेसे सोता हुआ ज्वालामुखी अचानक फट पड़ा, उसने गर्म होकर कहा—"याद कीजिए, जब आपके फ़रमाबरदार ग़ुलाम मीर फ़ज़लअलीका इंतक़ाल हुआ था तब आपको कैसा ज़बर्दस्त सदमा पहुँचा था। मेरे लिए भी कोई उतना ही अज़ीज़ हो सकता है। अगर आपको मेरा कुछ भी ख्याल होता, आपके दिलमें मेरे लिए वाक़ई माँकी मामता होती तो आप भी मातमी लिबासमें आई होतीं और यों जली-कटी न सुनातीं। मगर सौतेली माँसे यह उम्मीद करना ही फ़िज़ूल है।"

"सैयिदुश्शोहदा हज़रत इमाम हुसैनके मातमके अलावा मैंने कभी मातमी पोशाक नहीं पहनी। तुम्हारे वालिद और दादाका जब इंतक़ाल हुआ था तब हमारे ख़ानदानमें किसने मातमी पोशाक पहनी थी जो मैं आज पहनकर आती। नाहक़की रार बढ़ा रहे हो बरख़ुरदार, किसीने तुम्हारे दिलको बदगुमाँ कर दिया है। इससे कुछ हासिल न होगा, हाँ, फ़रेबियोंके जालमें फँसकर हम बरबाद हो जायेंगे।"

"आप चाहती यही हैं। आपने जन्नतमकानी अब्बा हुज़ूरको सदा

ख़ूनके आँसुओं रुलाया और मेरी राहमें भी शुरूसे काँटे ही बोती आईं। लेकिन अब ऐसा न कर सकेंगी। मैं आपको आपके बापकी हैसियत पर पहुँचा दूँगा।"

बादशाह बेगम तड़प उठीं, कड़ककर कहा—"नसीर, एक अदना औरतके ग़ममें इस तरह होशहवास न खो बैठो कि तुम्हें अपनी माँका अदब—"

"माँ।" नसीरुद्दीनने चिढ़कर कहा: "ख़ुदाका शुक्र है कि मैं ऐसी ख़ुद ग़रज औरतकी कोखसे पैदा नहीं हुआ।"

कह कर शाहे अवधने अपना मुँह फेर लिया। बादशाह बेगम घायल बेबस शेरनीकी तरह गुर्राहट भरा मन लिये लौट गईं।

बरसोंसे राजमाताके प्रति ख़ार खाये बैठे लोग-बागोंने फटी चादरमें अपने-अपने पाँव डालने शुरू कर दिये। खुशामदी खुशामदमें राजमाताके खिलाफ़ बादशाहके कान भरने लगे।

हकीम मेहदी मातमपुर्सीके बहाने बादशाहसे मिलने आये। बड़े टेसुवे बहाये; बादशाह भी उनके मातमी लफ़्ज़ोंसे ताज़ा घावमें नई टीस या क़ुद्‌सिया बेगमको याद कर रोने लग गये। मौक़ा देख हकीम मेहदीने बादशाह बेगम द्वारा नसीरुद्दीन हैदरकी असली मा सुब्हदौलतकी निर्मम हत्या करनेका विवरण सुनाया। नसीरुद्दीन काँप उठा, उसे बहुत क्रोध आया। दो आज्ञाएँ तुरत एक साथ प्रसारित हुईं—एक तो यह कि ग़रीब-भिखारियोंके कब्रिस्तान झंखड़ बाग़में जहाँ उसकी माताकी समाधि है, एक सुन्दर मक़बरा बनाया जाय और दूसरे बादशाह बेगमको महलसे निकाल दिया जाय। नसीरुद्दीनने कहलाया कि वे बीस पचीस हज़ार रुपया महीना लें और शहरमें जी चाहे जहाँ रहें।

बादशाह बेगमने उत्तर दिया कि वे मासिक ख़र्च न लेंगी। वे अपनी सलोन नामक जागीर चाहती थीं। ग़ाज़ीउद्दीन हैदर और नसीरुद्दीन हैदर, दोनों ही ने अपने गद्दीनशीन होनेके अवसर पर बादशाह बेगमको

उसे प्रदान तो किया था पर कभी उनके अधिकारमें नहीं गया। बादशाह बेगम इसी शर्त पर महल छोड़कर जानेको तैयार थीं कि उन्हें सलोनकी जागीर मिले और रेज़िडेंट इस बातके लिए ज़ामिन हों कि उक्त इलाक़ा फिर उनसे छीना नहीं जायगा।

बादशाहने रेज़िडेंटसे इसका चर्चा चलाया और राजमाताको महलोंसे निकाल बाहर करनेमें उनकी मदद चाही।

रेज़िडेंटने साफ़ कह दिया कि ये आपका घरेलू मामला है और गवर्नर जनरलकी सख्त हिदायत है कि हम इस पचड़ेमें न पड़ें।

लेकिन बादशाह हठ पकड़ चुका था। वह अपनी सौतेली माताको निकालनेके उपाय सोचने लगा। दलजीत सिंह खवासने एक सुझाव दिया, कहा: "हूज़ूर, महलोंमें मदद लगवा दें। बेपर्दगी होगी तो बेगम साहबा आप ही महल छोड़ कर चली जायेंगी।"

बादशाहको यह सलाह पसन्द आई। दूसरे दिन सवेरेसे राज-मज़दूर "पर्दे वालों पर्दा कर लो कोठे मजूर चढ़ते हैं" की तीन आवाज़ें लगाये बिना ही कोठे चढ़ गये। तोड़ फोड़ शुरू की, मलवा राजमाताके महलमें गिरने लगा; मजदूर भद्दी-भद्दी बातें बक रहे थे।

राजमाताने अपूर्व शान्तिके साथ इस आक्रमणको झेला और अपनी बाँदियों समेत दिन भर अन्दर ही सिमटी बैठीं रहीं। तीन चार दिन यही होता रहा। प्रति दिन मज़दूर अपनी छींटाकशियोंका भद्दापन बढ़ाते थे, राजमाताके महलके आंगनमें टूटते कमरोंका मलवा गिरा करता, नौकर बाँदी इधर-उधर आ जा न पाते थे, खाना पीना तक हराम हो गया था। लेकिन बादशाह बेगमने महल न छोड़ा।

जब यह तरकीब कारगर न हुई तो बादशाहकी नाकके बाल विलायती नाऊने सुझाया कि उनके महलोंमें दिन भर पाखाने-पेशाबसे भरी हाँड़ियाँ फेंकी जाँय, इससे यक़ीनन घिना कर वे भाग खड़ी होंगी।

यह भी हुआ; बादशाह बेगम तब भी शान्त रहीं। वे महलके कमरों के बजाय अपने द्वारा महलोंमें बनवाये हुए रौज़ा-ए-दोवज़्दा इमाममें चली गईं और क़ुरआन पाठ करने लगीं।

बादशाहके विलायती नाऊने बादशाहके नामसे आज्ञा दी कि रौज़ों में गन्दगी फेंकी जाय।

बादशाह बेगम तब भी उत्तेजित न हुईं। पवित्र स्थलमें गन्दगी गिरती तो वे अपने हाथों उसे साफ़ करतीं। सब सहतीं मगर अपनी आन न छोड़तीं, महल न छोड़ती थीं।

बादशाहका बावला क्रोध उनके क़ाबूसे बाहर होने लगा। जब बेगम ने महल न छोड़ा तो वह आप ही फ़रहबख़श कोठी छोड़ कर शाही दौलत खानेमें चला गया। उसी समय उसे यह भी सुझाया गया कि इंग्लैंडमें पार्टीबाज़ी चल रही है, अगर कहीं बादशाह बेगमने इंग्लैंडके बादशाह और मलिकाको यह शिकायत लिख भेजी तो शायद उसे अपना दाँव हारना पड़ जाय, इसलिए इंग्लैंडके बादशाहके लिए शाहे अवध क़ीमती तोहफ़े भेज कर उन्हें अपनी ओर मिला ले। अंगरेज़ नाऊ डी रसेट उर्फ़ सर्फ़-राज़ खाँके इस प्रस्तावका समर्थन रेज़िडेंटने भी किया और गवर्नर जनरल ने भी। शाही भेंटके बहाने राजख़ज़ानेसे लाखों रुपये निकल गये।

शहरमें नसीरुद्दीन हैदरकी बड़ी बदनामी फैल गई—"अमां हद हो गई। सौतेली ही सही पर बादशाहकी मा हैं। बादशाह बेगमने अगर नसीरुद्दीनको पाला न होता तो आज ये दिन देख पाते? अजी और तो और रौज़ोंमें भी गन्दगी फिकवाते हैं, ख़ुदाका डर भी नहीं रहा।"

रौज़ोंको नापाक करवानेके कारण नसीरुद्दीन हैदरकी बदनामी हुई। ईश्वर-भक्त, मातृ-पितृ भक्त भारतीय हिन्दू मुसलमान प्रजाके लिए ये ख़बरें बड़ी ही कटु थीं। गली-मुहल्लों चौराहों पर, हाट-बाट घर-घर रोज़ यही क़िस्से रहते। शाही महलके आस पास, कप्तान-बाज़ारमें, गोमतीके किनारे रेज़िडेंसीके इधर-उधर उत्सुक निठल्लोंकी भीड़ जमा रहती, महलसे

आने वाली एक-एक ख़बरके लिए जनता उत्सुक रहती और किसी भी अफ़वाहका सहारा लेकर "च-च, या ख़ुदा, बुरा हो इस बादशाहका, उसे बुरी सलाह देनेवालोंका।" आदि बातोंका बाज़ार गर्म होता।

मौक़ा अच्छा था; रेज़िडेंसीके भारतीय कर्मचारियोंके मुखसे धीरे-धीरे यह अफ़वाह फैलने लगी कि नसीरुद्दीनको गद्दीसे उतार कर अवधराजको अंगरेज़ी सल्तनतमें मिला लिया जायगा। और अगर परम दयालु अंगरेज़ नसीरुद्दीनको बख़्श भी देंगे तो उसके मरते ही शाही-अमल ख़ारिज हो जायगा क्योंकि बादशाहके कोई औलाद तो है नहीं।

अत्याचार, अनाचार और विशेष रूपसे राजमाताके प्रति होनेवाले इस घृणित व्यवहारके कारण जनता ऐसी उपयुक्त मानसिक अवस्थामें थी कि जो सुनता यही कहता, अच्छा है अंगरेज़ी अमल हो जाय। यह नहीं कि अंगरेज़ी शासनके प्रति प्रजाका आकर्षण था पर इसलिए कि लोग शाही-कुशासनसे इतने त्रस्त थे, इतने घुट रहे थे कि उन्हें अपनी चिढ़में कोई भी परिवर्तन अच्छा लगता था। बादशाह बदनाम हो रहा था। वज़ीर रौशनुद्दौला अपना घर भर रहा था, पचीस हज़ार रुपये मासिक उसका वेतन था, सरकारी मालगुज़ारी पर पाँच रुपया सैकड़ा दस्तूरी खाता था जिससे वेतनके अलावा उसे लगभग छह लाख रुपये वार्षिक आय हो रही थी। अपनी दोनों पत्नियोंके जेबख़र्चके लिए भी शाही ख़ज़ानेसे वह आठ हज़ार रुपया महीना वसूल करता था; इसके अलावा चोरी-चुपके जो दौलत उड़ा रहा था उसका कोई हिसाब न था। राजा दर्शनसिंह ग़ालिबजंगकी मिली भगत थी, वे भी लाखों लूट रहे थे। धनिया महरी, सैयद कोका, दलजीत ख़वास, विलायती नाऊ 'सर्फ़राज़ ख़ाँ' और हर बड़ा ओहदेदार आये दिन शाही ख़ज़ानेको खुक्ख करनेमें ही अपनी चतुराईका पूरा कमाल दिखलाता था। छोटे अमलों और सिपाहियोको वक़्से तनख़्वाह तक नहीं नसीब थी और ऊपरवाले गुलछर्रे उड़ा रहे थे। शहरमें, राज्यमें बड़ी बदअमनी फैल रही थी।

३३

शहरमें गुण्डोंका राज हुआ। सरकारी नौकरों और सिपाहियोंको छः छः महीनेसे तनख्वाहें नहीं मिल रही थीं कोई पुरसाँ-हाल न था। बाँके उस्ताद अपने-अपने गिरोहोंके साथ शहरके असली मालिक बने हुए थे। उन्होंने शहरके मुहल्ले बाँट रक्खे थे और उनमें दरअस्ल उनका ही राज था। कौन सौदागर किस मुहल्लेमें माल बेच सकता है और कौन नहीं इसका फैसला बाँके गुण्डे ही करते थे। सेठ-साहूकार हो या राहचलता खोञ्चेवाला, सभीको रोज़बरोज़ इन गुण्डोंको अपना बँधा हुआ टैक्स देना पड़ता था। टैक्सका बढ़ाना-घटाना भी गुण्डे सरदारों और उनके शागिर्दों पर ही निर्भर था। अक्सर किसी सरदारके इलाक़ेमें जब दूसरा गुण्डा सरदार अपना दख़ल जमाना चाहता तो दिनदहाड़े शाही राजधानीकी सड़कों पर दस-पाँच लाशें गिर जाना कोई अजब या अनहोनी बात नहीं समझी जाती थी। गुनहगारों पर शासनका प्रभाव न था। लोग कहते, बादशाह अपनी बादशाही तो सम्हालें पहले। अंग्रेज़ अब मालिक हुआ चाहते हैं और जब तक किसी ऐसी ताक़तका अमल नहीं होता जो हमें रोक सके तब तक अमल हमारा ही रहेगा, राजा ग़ालिबजंग या रौशनुद्दौलाका नहीं।

बादशाह बेगमके प्रति होने वाले अत्याचारोंने शहरकी अशान्तिको बेहद भड़का दिया था और इसी बीचमें गुण्डा राज तथा अंग्रेज़ी अमल आनेकी अफ़वाहें भी तेज़ीसे बढ़ी थीं। नौबत यहाँ तक आई कि बादशाह और कम्पनी सरकारके खुशामदी अमीरों अमलोंकी सवारियाँ जब सड़कोंसे गुज़रतीं तो आसपास भीड़से छींटाकशी भी हो जाती थी।

शहरकी बुरी ख़बरोंने शाही सेनापति राजा दर्शन सिंह ग़ालिबजंग और महामंत्री नवाब रौशनुद्दौला बहादुर जैसोंके दिग्गज डुला दिये थे। उनके जासूस पक्की ख़बरें ला रहे थे कि बादशाह बेगम और शाही

खानदानके लोग नसीरुद्दीन हैदरको गद्दीसे उतरवानेके लिए अंग्रेज़ोंसे लिखा पढ़ी कर रहे हैं। नसीरुद्दीन हैदरके चाचाओंमें सबसे बड़े नवाब मुहम्मद-अली खाँ नसीरुद्दौला बहादुरका चूँकि गद्दी पर हक़ पहुँचता है इसलिए उनके आदमी भी बादशाह बेगमकी तरह ही बड़ी दौड़-धूप कर रहे हैं। सरकारी दफ्तरोंमें बदअमनीके बड़े-बड़े सबूत जुटाये जा रहे हैं। नसीरुद्दीन हैदरको हर तरहसे निकम्मा साबित करनेकी कोशिशें की जा रही थीं। बड़े लोग सोच रहे थे, किसका साथ दें जिससे उनका भविष्य सुरक्षित रहे; कुछ समझमें न आता था इसलिए ऊँचे तबकोंमें भी बड़ी घबराहट फैली थी।

एक रोज़ राजा ग़ालिबजंग अपने हाथी पर सवार होकर अपने हाली महालियोंके साथ नवाब रौशनुद्दौलाकी कोठी पर गये। दोनों ओरसे सामाजिक शिष्टाचार हुए फिर एकान्त हुआ, बातें होने लगीं "शहरकी यह फ़िज़ा ठीक नहीं नवाब साहब। जैसे भी हो शाही खानदानके लोगोंको क़ाबूमें करना ही होगा। बादशाहको गद्दीसे हटानेकी साज़िश अगर कारगर हो गई तो हम आप कौड़ीके तीन-तीन हो जायेंगे।"

राजा साहबकी बात नवाब साहबके कलेजेका डंक थी। वे बोले : "हकीम साहबने भी मुझसे इसके मुतल्लिक़ फ़रमाया था—"

"क्या हकीम मेहदी साहब आजकल यहीं तशरीफ़ रखते हैं?" राजा ग़ालिबजंगने चौंक कर पूछा।

नवाब रौशनुद्दौला मुसकराये, कहा: "देखता हूँ कि शाही गोयन्दोंकी लापरवाही दिन पर दिन बढ़ती जा रही है, कोतवाल भी राजा साहबको हर खबरसे खबरदार करनेमें—"

राजा ग़ालिबजंग झेंप गये, चटसे कहा : "हकीम साहब बड़े पहुँचे हुए लोगोंमें हैं, उनकी मर्ज़ी बग़ैर उनके आने जानेकी खबर शहर कोतवाल क्या फ़रिश्तोंके कानोंमें भी नहीं पहुँच सकती। खैर तो क्या फ़रमा रहे थे हकीम साहब?"

"कहते थे कि रिआयाके हक़में यही मुनासिब होगा कि अवधसे बादशाही अमल उठ जाय और अंगरेज़ पूरे सोलह आने क़ब्ज़ा करलें। कहते थे कि रईसोंकी हिफ़ाज़त भी इसीमें है, वरना ख़ुदा न करे, नसीरुद्दीनकी आँख मिचते ही ये लोग हमें तबाह कर डालेंगे।"

"यह तो सही है मगर बादशाहको किसी भी तरह फ़िलहाल दोज़खमें भिजवाना भी हमारे हक़में अच्छा न होगा।" राजा दर्शन सिंह गालिबजंगने कहा।

नवाब बोले--"कलकत्तेसे रेज़ीडेण्ट साहब लौट आये, उनका रुख समझ लें तब ही कोई काम करना अच्छा होगा। अँग्रेज़ोंकी मर्ज़ीके खिलाफ़ कोई भी काम करना हमारे हक़में अच्छा न होगा।"

"खैर, रेज़ीडेण्ट साहब भी बस अब कल परसोंमें तशरीफ़ लाया ही चाहते हैं। परमेशुर करे कोई बुरी खबर उनके साथ न आये।"

दो दिन बाद कर्नल जान लो तशरीफ़ लाये। उनके हाथों बादशाह और बादशाह बेगम दोनोंने ही गवर्नर जनरलके नाम खत भेजे थे। अपनी-अपनी शिकायतोंका पूरा ब्योरा दिया था और दोनोंने ही मददकी दरखवास्त की थी। लो साहबके लखनऊ वापस लौटते ही शहरके राजनीतिक वर्गमें अनुमान भिड़ने लगे। आमतौर पर लोगोंका खयाल था कि लाख हो अँग्रेज़ बादशाहके द्वारा राजमाताके प्रति होनेवाले अन्यायको अवश्य ही खत्म करा देंगे। बादशाह बादशाह बेगमको सलोनकी जागीर अवश्य मिल जायगी।

रेज़ीडेण्ट उसी दिन दोपहरको लखनऊ पहुँचे थे। उनके आनेकी खबर पाकर नसीरुद्दीन हैदर घबराहटमें अनमना हो गया था। उसे एक ही भय था, अगर गवर्नर जनरलने राजमातासे समझौता करनेके लिए कहा तो?--नहीं अब वह किसी प्रकार भी राजमाताके सामने न झुकेगा। जिन लोगोंने उसे वर्षों तक अपने प्रभावमें रखकर नाच नचाया है उनमेंसे एक भी अब नसीरुद्दीन हैदर पर शासन नहीं कर सकता। भले

वह बादशाह बेगम हो, मलिका ज़मानिया हो, कोई हो। नसीरुद्दीनको हर एकसे घृणा हो गई थी। उसे कोई भी बेगम अच्छी नहीं लगती थीं। वह अपनी किसी भी पत्नी या उपपत्नीसे नहीं मिलता था। क़ुद्सिया बेगमकी मृत्यु और बादशाह बेगमसे लड़ाई छिड़ जाने पर मलिका ज़मानियाने एक बार फिर उठनेका प्रयत्न किया। मातमपुर्सीके बहाने मिलने आना चाहा मगर नसीरुद्दीनने मिलनेसे इनकार कर दिया। जबसे कोठी फ़रहबख्श छोड़ी और दौलतखानेमें आकर रहे तबसे तो धनिया और दलवीको छोड़कर और किसी पुरानी बाँदी तकको अपने पास न फटकने देता था। उसे डर था कि पुरानी बाँदियाँ उसके ख़िलाफ़ किसीसे मिलकर दग़ा न दे जाँय। उसे ज़हरसे भी डर लगता था और जादुई गण्डे ताबीज़ोंसे भी। लेकिन रेज़ीडेण्टके आनेकी खबर सुन सबसे ज्यादा डर उसे अँग्रेज़ी हुक्मसे लग रहा था—कहीं ऐसा न हो बादशाह बेगम जीत जाँय। बादशाहका जी नहीं लग रहा था। दोपहर भर वह न किसीसे बोला न चाला। बस परेशान होकर बीच-बीचमें उठ-उठ पड़ता था, टहलता, इधर-उधर दरवाज़ोंमें खड़ा होकर बाहर सूनेमें आखें गड़ा लेता। कभी बड़बड़ाता, कभी आँखोंमें आँसू भर जाते और बादशाह परेशान सा नज़र आता; कभी चेहरे पर तमतमाहट आ जाती, आँखोंमें ख़ून उतर आता होंठ और मुट्ठियाँ भिंच-भिंच जाती। हाथमें फूल होता तो मसल जाता, नज़रके सामने जो चीज़ पड़ती वह उनकी ठोकरोंसे दूर जा पड़ती। शाही मिज़ाज अच्छे-अच्छोंको थर-थर कँपा रहा था।

मुसीबत मँडराते-मँडराते एक नई बाँदीके सिर पर टूटी। हुक्क़ेकी चिलम सजाना भी एक श्रेष्ठ रियासती कला है; एक बाँदीकी लापरवाही किसीका दुर्दैव बन गई। चिलम ताज़ा कर अभी ही लाई गई थी, कोयले ठीक तरह गरमाये न थे। बादशाहने बड़ी देरसे हुक्क़ेमें मुँह न लगाया था। चार चिलमें चढ़ीं और उतर चुकी थीं, इस पाँचवीं पर ही सारी मुसीबतका भार पड़ा। बादशाह सलामतने कश खींचा, गला कड़वाया,

तनमें आग लग गई पूछाः "चिलम किसने सजाई है ?" शाही गुस्सा चूँकि मामूली न था इसलिए कोई भी इल्ज़ाम ओढ़नेको तैयार न था। लेकिन एक न एक तो मुजरिम होना ही चाहिए। दो रोज़ पहले ही बाँदियों में भरती की गई एक छोटी-सी लड़की सामने कर दी गई। बादशाहने उसको देखा, आज्ञा हुई कि इसे चिलम सजाना सिखाया जाय। इसके सर पर तपाया हुआ तवा और गुल रक्खें जाँय जिससे कि आयन्दाके लिए इसे अपना काम मालूम हो जाय और ग़लती न हो।

शाही आज्ञा पालन न करने की मजाल भला किसमें थी, लड़कीको बादशाहके सामने खड़ा किया गया और उसके सर पर अंगारे उसी तरह सजाये जाने लगे जैसे चिलममें सजाये जाते हैं। पीड़ासे चीखना डबल जुर्म था, लेकिन लड़की आखिर कहाँ तक बरदाश्त करती, चीख कर गिर पड़ी। उसे उठा कर ले जाया गया, बादशाहका मिज़ाज और खराब हो गया।

शामको सैरके लिए सवारी निकली। वही रोज़का नज़ारा—डंका छत्र शाही निशान अंगरक्षक आदि। शाही बग्घीके पीछे अंग्रेज़ नाऊ आदि मुसाहबोंकी गाड़ी थी; बादशाहके अंगरेज़ मास्टर शाही सवारीके साथ-साथ घोड़े पर चले जा रहे थे ? बादशाहके लिए दुआओंका शोर, खैरातका बँटना सब कुछ क्रमसे चला जा रहा था। तभी एक भिखारी शाही गाड़ीके बहुत पास आ हाथ बढ़ा कर चिल्लायाः "ठहर बादशाह, शाहोंका शाह तुझे आगे बढ़नेसे रोकता है।"

बादशाहकी त्योरी चढ़ी। अंगरक्षक सवारका चाबुक उठा, नौजवान भिखारी अपने फटे लबादेमें शाही शानसे अविचलित खड़ा रहा। उसकी ओर देखते हुए नसीरुद्दीनके चेहरेका भाव बदल गया। 'गाड़ी रोक दो!' हुक्म हुआ। भिखारी नौजवान गाड़ीके पास बुलाया गया।

"क्या चाहिए ?" बादशाहने पूछा।

नौजवान भिखारी हँसा, बोला—"क्या चाहूँ ? हः हः हः—एक ही

राह पर दो मतवाले आशिक़ चले जा रहे थे। तेरी दौलत कम देखी, फ़क़ीरके जीमें आया कि तुझे अपने दर्दसे मालामाल कर दूँ।"

नसीरुद्दीन उसकी ओर देखने लगा, उसके चेहरे पर उलझनकी रेखाएँ खिंची, मिट गईं। बड़ी बड़ी आँखोंकी पुतलियोंमें एक क्षणके लिए उन्मादकी चमक भर गई। हँसा, बोला—"दर्द दोगे? उसकी इफ़रात है, अब और नहीं चाहता।"

"कमी है मतवाले आशिक़, मेरे गुरू कह रहे थे कि शाहे अवध अपनी छाती पर दहकते अंगारे बर्दाश्त नहीं कर सकता, तभी वह उन्हें दूसरोंके सिरों पर रखता है। हः हः हः हः—"

नसीरुद्दीन चौंक उठा। नौजवान फ़क़ीर अपनी मस्तीमें हाथ ऊँचे उठा-उठाकर नाचने लगा। आसमानकी ओर हाथ बढ़ाकर मतवाले जोशके साथ गा उठा :

"वह है कौन दिन कि तेरे लिए मुझे तुझ गलीमें गुज़र नहीं।
है यह क्या सितम कि तुझे सजन मेरी अब तईं भी ख़बर नहीं॥"

शाही सवारी रुकी रही, ज़माना रुका रहा सिर्फ़ मतवाला फ़क़ीर गा रहा था और गाते-गाते रोने लगा, सिर धुनने लगा। दहाड़ें मार-मारकर आकाशमें रहनेवाले अपने दिव्य प्रियतमके विरहमें उसने ऐसा विलाप किया कि कोई उसके प्रभावसे न बच सका। बादशाहकी आँखोंसे आँसू बहने लगे, उसे अपनी प्रियतमाकी याद आ गई थी।

आदेश हुआ कि भिखारीको दूसरे दिन शाही महलमें बुलाया जाय। सवारी आगे बढ़नेका संकेत हुआ, फिर थमा। बादशाहने पूछा—"इस पीरका नाम क्या है?"

आदमी मतवाले फ़क़ीरसे नाम पूछनेके लिए दौड़े। फ़क़ीरने बड़ी-बड़ी आखें फाड़ पूँछनेवालेको घूरकर देखा, फिर कहा—"नाम? मेरा नाम नसीरुद्दीन हैदर है।"

नसीरुद्दीन हैदर फ़क़ीरकी बात सुनकर उसे देखने लगा, गाड़ीसे उतरा, फ़कीरकी ओर देखते हुए हँस, उसके पास आया, बोला : "तो तुम नसीरुद्दीन हैदर हो।—और मैं?"

"जो मैं हूँ वह तुम हो, जो तुम हो वह मैं हूँ।"

"मगर मेरा नाम तो तुमने ले लिया। अब मैं अपने आपको किस नामसे पुकारूँ?" नसीरुद्दीन हैदर बड़ी गम्भीरताके साथ प्रश्न कर रहा था। फ़क़ीरकी बातोंने उसके अति चंचल विक्षिप्त मनको बाँधकर एकाग्र कर दिया था। वह इस समय खरे मनसे जिज्ञासु था और बावले फ़कीर द्वारा अपना नाम अपना लिये जाने पर वह सचमुच अपने अन्दर एक भारी हलचल भरा सूनापन महसूस कर रहा था। उसके जीवनमें प्रतिक्षण अटकने वाले तरह-तरहके प्रश्न सिमट कर इस एक महाप्रश्नमें एक रूप हो गये थे। मेरा नाम क्या है, यह प्रश्न इसी लिए बहुत सहज और गम्भीर ढंगसे हुआ।

फ़कीर बोला : "तेरे अनगिनत नाम हैं रे बाश्शा! किसी भी नामसे पुकार ले अपने को। तूने मुझे पीर कहा इसलिये तू पीर ही सही।···लेकिन प्यारमें पीर—उहुँ, पीरू कहना, आजसे तू पीरू और मैं नसीरू। ला हाथ मिला।"

नसीरुद्दीन क्षण भर गरदन झुकाकर सोचता रहा फिर बोला : "नहीं, मैं नसीरू तुम पीरू।"

"यही सही। मैं नसीरू तू पीरू, तू नसीरू मैं पीरू—ला हाथ दे।"

पीरू इतने सहज स्नेहसे नसीरुद्दीनको देख रहा था कि नसीरूद्दीनका मन उसकी स्नेह दृष्टिसे अभिभूत हो गया। उसे सचमुच लगा जैसे सामने खड़ा हुआ पीरू फ़क़ीर और कोई नहीं, दर्पणमें पड़ने वाला स्वयं उसका ही प्रतिबिम्ब है। नसीरुद्दीनकी आँखोंमें स्नेहका सोता उसी तरह फूट पड़ा जैसे रेगिस्तानमें बहुत गहरा खोदते-खोदते कहीं दूर धरतीके भीतर जाकर पानीका सोता फूटता है, श्रम सार्थक होता है, थकान मिट जाती है—केवल

आनन्द ही व्याप्त होता है। नसीरुद्दीनने कसकर पीरूको अपनी छातीसे बाँध लिया। दोनों एक दूसरेके कन्धे पर सिर डाले ख़ामोश आँसू बहा रहे थे। ज़माना देख रहा था, बादशाह फ़क़ीरमें कोई भेद न था। अंग्रेजोंको यह पागलपन लग रहा था। मनमें, आपसी नज़रोंके इशारोंमें मखौल और चुहल थी। भारतीय प्रजा संस्कारजनित श्रद्धा और आश्चर्यसे इस दृश्यको देखकर आह और वाहसे भर उठी थी। साँवला सलोना दुबला-पतला नसीरुद्दीन हैदरका हमउम्र-सा बावला फ़क़ीर लोगोंकी नज़रों में वली हो गया था। नसीरुद्दीन हैदरके लिए भी भावुक भारतीय दृष्टिमें प्रेम और आदर चमक उठा। यह भाव और बढ़ गया जब कि नसीरुद्दीन और फ़क़ीर एक साथ शाही सवारी पर होकर चले। बादशाहकी जय-जयकार हो उठी।

नसीरुद्दीन हैदर सारे वातावरणसे प्रसन्न था; अपनी नयी उपलब्धि पर मुग्ध था। वह पीरूसे बार-बार आग्रहकर वही शेर सुनता, खुद भी गुनगुनाता :

वह है कौन दिन कि तेरे लिए मुझे तुझ गलीमें गुज़र नहीं।
है यह क्या सितम कि तुझे सजन मेरी अब तईं भी ख़बर नहीं॥

उस दिन बादशाह बहुत प्रसन्न था, उसे पीरू मिला था और साथ ही यह खबर भी कि कम्पनी सरकार उसके और बादशाह बेगमके मामलेमें कोई हस्तक्षेप न करेगी।

३४

बादशाहका मन अटूला हो गया था, कोई उसके मनका साथी न था। साथीकी चाह नसीरुद्दीन हैदरके लिए अब एक ऐसी भूख हो गई थी जिसे लेकर वह आठों पहर अपने आपमें उलझता ही रहता था। अब उसे चैन न था। उसे अपने ऊपर भरोसा न था। दूसरोंके कन्धों पर अपनी समस्याओंका बोझ डालकर चलना ही उसने जाना था और इसमें

धोखा खाते-खाते वह पक गया था। क़ुद्सिया बेगमकी मृत्युके उपरान्त वह अपने लिए अत्यधिक भयभीत हो उठा था और इसीलिए अपनी सत्ताके बलपर अपने भयसे लड़नेके लिए वह निरन्तर क्रूर होता चला जा रहा था। मृत्यु यदि उसे भयभीत करती है तो अपनी पूरी शक्तिके साथ मृत्युसे लड़ना चाहिए—मृत्यु औरोंकी हो उसकी न हो। उसकी आई औरों पर लद जाय और जो उसकी मृत्युका षड्यंत्र रचते हों वे सब नष्ट हो जायँ।

इस विचारको लेकर जब-जब उसके दिमाग़में तमक आती तो पलके हज़ारवें हिस्सेमें उसकी कल्पना अपनी तलवारके एक झटकेसे लाखों अनगिनतोंके सिर काटकर अपने आपसे सिहर उठती, उसकी दत्ती भिंच जाती, होठ मुट्ठियाँ कस जातीं और उस कसावके ज़ोरको न सह पानेके कारण उसके कमज़ोर विलासी शरीरका स्नायुमण्डल उत्तेजनाकी तड़पसे फड़क-फड़ककर उसे थका डालता था। नसीरुद्दीन अपने आपसे थक गया था।

और इस थकानमें उसे पीरू मिल गया। वह पीरूको लेकर बड़ा लाड़ लगाने लगा। कभी-कभी शौक़के आलममें उसे नसीरुद्दीन मानकर आप क़ुद्सियाकी कल्पना कर उसकी खुशीके लिए छोटी-छोटी बातोंकी निगरानी रखनेमें कमालका संयम बरतता था। अपने इस खिलवाड़से उसे नई आस्था मिलने लगी नया आनन्द मिलने लगा। क़ुद्सियाके चिन्तनसे, उसका अनुकरण करते हुए उसमें समर्पणका एक नया भाव जागने लगा, उसकी संस्कारोंसे जुड़ी धार्मिक आस्था तीव्र होने लगी।

आस्थाकी यह तीव्रता ही उसे अपनी सौतेली मातासे लड़नेकी शक्ति देती थी। बादशाहबेगमके प्रति घोर घृणाका अजस्र स्रोत खोलकर भी वह उनके कट्टर धार्मिक व्यक्तित्व और रस संयम पर बड़ी श्रद्धा रखता था, उससे वह मुक्त नहीं हो पाता था। यहीं वह अपनी वर्तमान सर्वश्रेष्ठ शत्रु, सौतेली माताके प्रति अपनी पराजय माननेके लिए विवश था। और

इसीलिए अपने अन्दर आस्थाकी तीव्रता पाकर बादशाह बेगमके प्रति उसकी घृणा भी तीव्रतम हो गई। पीरूको नसीरू मानकर आप क़ुद्सिया बेगमके रूपमें नसीरूके प्रति सेवारत हो उसे अपने अन्दर सूफ़ी वलियोंकी सी धार्मिक महानताका अनुभव होने लगा था। राजसी ठाठ-बाटमें भी अपने आपको फ़क़ीर मानकर नसीरुद्दीनके अकेलेपनको बड़ा संतोष मिलता था। उसने बड़े आग्रहसे पीरूको अपने ही जैसा राजसी ठाट-बाट दिया। यदि वैधानिक असुविधा न होती, अंग्रेज़ोंका डर न होता तो वह उसे अपने साथ-साथ राजसिंहासन पर अवश्य ही बिठलाता। फिर भी पीरूको उसने राजा तो बना ही दिया। पीरू हिंदू थे अतः राजा और सिंह हो गये, ऊँचे-ऊँचे ख़िताबोंवाले हो गये। बादशाहके लाडले बनकर वह खुशामदी ज़मानेके भी लाडले हो गये। पीरूके क़दमों पर दौलत लुटने लगी। बड़े-बड़े अमीरो-उमराका सिर झुकने लगा। पीरू एक तरहसे अवधका बादशाह हो गया।

मगर उसका बावलापन न गया। उसकी आँखोंमें खोयापन था। कभी-कभी दिनों बीत जाते वह चारपाईकी पाटीसे चिपट कर रोता ही रहता; खाना पीना सोना सब कुछ छूट जाता। नसीरुद्दीन हैदरकी बेकली देखते ही बनती थी। और एक दिन पीरू सुख-वैभवकी क़ैदसे निकल भागा, उसका कहीं पता न लगा।

बादशाहने इस दौरानमें काफ़ी नाम हासिल किया। उसके धार्मिक व्यक्तित्वकी चर्चा होने लगी। बादशाहने भी अपनी सौतेली माताके समान रौज़ा-ए-दोवज़्दा इमाम बनवाये। अछूती और अछूते रक्खे। लोगोंका आम ख़याल था कि जब बादशाहने अपनी सौतेली माता द्वारा स्थापित इमामोंके रोज़े तक अपवित्र कराये हैं तो वह अवश्य बादशाह बेगमके चलाये नये धार्मिक सुधारोंको समाप्त कर देगा। बहुतसे लोग खुश हुए, उन्हें मौका मिला, राजमाता द्वारा चलाये गये नये सुधारोंको बन्द करवानेके लिए रूढ़िपंथी उलेमाओंके द्वारा, नवाबोंके द्वारा संकेत

भी होने लगे परन्तु नसीरुद्दीनने किसीकी एक न सुनी। उसने अपनी सौतेली माता द्वारा चलाये गये सुधारोंको मान्यता ही न दी बल्कि एक नया चलन और भी जोड़ा। बारह इमामोंकी जन्मतिथियोंके दिन वह नारीका वेश धर, नख-सिख सोलह सिंगार सज सोनेके जड़ाऊ पलँग पर ठोस सोनेके छोटे बच्चेनुमा इमामोंके पुतले अपनी जन्मतिथियोंके अनुसार बारी-बारीसे लिटाकर इमामोंकी माता होनेका गौरव प्राप्त करने लगा था।

वैष्णवोंका गोपीभाव और सूफ़ियोंका माशूक़ भाव निष्क्रिय अपंगु भारतको बड़ा संतोष दे रहा था। भारतके राजे सामन्त बड़ी-बड़ी मोछ दाढ़िएँ रखकर भी ज़नखे हो चुके थे। अंग्रेज़ों द्वारा अपनी सुरक्षाका ठेका ले लिये जानेके बाद सिवा अपने ऐश-आरामके, तरह-तरहके बहानों से अपने निकम्मेपनको बहलानेके लिए वे कभी खीज भरे, क्रूर, निर्मम व्यवहार करते और कभी अपनी झूठी बादशाहीको निहाल करनेके लिए दूसरोंको निहाल कर देते। जो राजा सामन्तोंका हाल था वही सब हैसियत-दारोंका हाल था। खुशामदकी सीढ़ी लगाकर सब हैसियतकी ऊँचाइयों पर चढ़ते थे। इसलिए जो दरबारका चलन होता वही दरबारियोंका चलन होता। बहुतसे खुशामदी दरबारी रईसोंके घरोंमें अछूते अछूतियाँ रक्खे जाने लगे। रईस बादशाहकी नक़ल करते हुए औरतका भेस धरने लगे। बहुत से तो स्त्रियोंका मासिक धर्म पालन करनेका ढोंग भी निबाहते थे।

खुद शाहे अवध नसीरुद्दीन हैदर जब विभिन्न इमामोंकी जन्मतिथि[illegible] पर स्त्री बननेका स्वाँग रचते थे तब उन्हें ज़च्चाख़ानेमें दाईके सिवा को[illegible] छू भी नहीं सकता था। छठे दिन इमाममाता बने नसीरुद्दीन हैदरका पहला सौरी-नहान पड़ता, सोनेके बच्चेको भी नहलाया जाता, बधावा बजता, सोहरें गाई जातीं। सारे शहरमें त्योहार जैसा मन जाता था। छठी की रातको नसीरुद्दीन लाखों रुपयेके नारी-वस्त्राभूषण पहन मुसलमानी प्रथा के अनुसार सितारा-बीनीके लिए छत पर जाता। सोनेका बच्चा उसकी गोद में होता, क़ुरआन शरीफ़ सिर पर रखकर क़ुतुब तारेको सलाम करता।

इसके बाद पुतला सोनेके जड़ाऊ हिंडोलेमें लिटा दिया जाता। लोग नज़रें देने आते। सैकड़ों तरहके क़ीमती और लज़ीज़ खाने पकते और फ़ातेहा पढ़े जानेके बाद बादशाहके प्रिय नवाबों अमीरों तथा उनकी बेगमातमें तक़सीम किये जाते थे।

ज़च्चाखानेसे बाहर निकलनेकी रस्म पूरी होने पर दूसरे दिन नसीरुद्दीन बेशक़ीमती ज़नानी पोशाकमें सोनेकी शिशु प्रतिमा लिए बहुमूल्यसे सजी हुई पालकीमें पूरी तड़क-भड़कके साथ नगर भ्रमण करता था; ज़च्चाखानेमें रहनेका कोई निश्चित नियम न था; कभी छठे दिन, कभी आठवें, दसवें, बारहवें जिस दिन इमाम माता बने हुए बादशाहकी मौज आगई उसी दिन सौरीका खेल ख़त्म हो जाता था।

क़ुद्सियाके गर्भसे शिशु होनेकी कल्पना उसे पहले सुख देती थी, बादमें रस्म बन गई। अपने पिता होनेकी शक्ति पर विश्वास न होनेसे माता बनकर शिशुको जन्म देनेकी कल्पना भी विकृतिका रस बनती मगर ज्योंही यह रस्म हो गई त्योंही यह सारा तमाशा नज़रोंकी रक़म द्वारा आमदनीका ज़रिया भी बना गया। इस तरकीबसे बादशाहने प्रधान मंत्री और रेज़िडेंटकी मीठी धमकियोंसे बचकर भी अपना ख़र्च न कम करनेका ब्योंत बैठा लिया।

धार्मिक सुधारोंके कारण नसीरुद्दीन हैदरने अपनी सौतेली माताके समान ही एक वर्गमें ख्यातिलाभ की। बादशाहके प्रति निन्दाका प्रचार उसी तरह तनिक कम हुआ जैसे जेठ बैसाखकी लूमें अन्धड़के झोंके बीच-बीचमें तनिक नर्म पड़ जाते हैं। मोहर्रममें भी पहले दिन हज़रत-अली और उनकी पत्नी हज़रत फ़ातिमाके क़द्देआदम पुतले बड़ी सजावटके साथ पलँग पर एक साथ लिटाये जाते, उनका निकाह होता नज़रें पेशकी जातीं। लोग बाअदब हाथ बाँधे खड़े रहते, फ़ातेहा पढ़े जानेके बाद सबको मिठाई तक़सीम होती। बादशाह बेगमके प्रभावसे तथा मीर एहसानअली मर्सियागोकी सिफ़ारिशसे धार्मिक मातमके दिन मुहर्रमके पहले दस दिनों

तक ही सीमित न रह कर चालीस दिन तक, चेहल्लुम तक बढ़ा दिये गये थे। बादशाह बेगमने यहाँ तक आदेश निकलवा दिया था कि इन चालीस दिनोंमें शहरमें कोई शादी-व्याह न हो, खुशियाँ न मने और सारी प्रजा शोक मनाये। परन्तु रेजीडेन्टकी आज्ञाके सामने बादशाह बेगमकी चल न पाई थी। नसीरुद्दीन हैदरने सौतेली मातासे बिगाड़ हो जाने पर भी रेज़ीडेन्टकी आज्ञाकी सीमामें बादशाह बेगमके तमाम आदेश बराबर चलाये।

रूढ़िपन्थी मुसलमान बादशाह बेगम और नसीरुद्दीन हैदरकी इस बुतपरस्तीसे बेहद नाराज़ थे। सुन्नी मुसलमान खासतौर पर इन नये चलनोंसे बहुत कुढ़ते थे मगर उनकी एक न चल पाती थी। मुहर्रममें बादशाह शराब क़तई नहीं पीता था, रमणीविलाससे भी परहेज़ रखता था इसलिए उसके विरोधी भी उसकी इस निष्ठाके क़ायल थे। लेकिन बादशाह किसीको क़ायल करनेकी नीयतसे यह सब नहीं करता था, वह तो दरअस्ल सर्वशक्तिमान् परमेश्वरको अपनी धार्मिक निष्ठाकी रिश्वत दे, बादशाह बेगमकी तरफ़से फोड़कर अपनी ओर मिला लेना चाहता था। वह चाहता था कि ईश्वर उसके प्रति दयालु रहे उसका भला हो और उसके सारे शत्रुओंका नाश हो जाय। क़ुद्सिया बेगमकी मृत्युके बाद नास्तिकताका जो भाव उसमें बड़ी चिड़चिड़ाहटके साथ जागा था वह सहसा बादशाह बेगमसे ठन जाने पर दूने जोशके साथ आस्तिकतामें पलट गया।

परन्तु सारी शक्ति लगादेनेके बावजूद बादशाह बेगमने महल न छोड़ा, खुद उसे ही चिढ़कर हटना पड़ा इसलिये पराजयकी भावना भी उसके मनमें रह-रह कर जागती थी। वह अल्लाह मियाँसे नाराज़ होने लगा— आखिर यह भी कोई बात है कि भगवान् बादशाह बेगमको तो इतना बल दें कि वह नसीरुद्दीन हैदरकी मर्ज़ीके खिलाफ़ भी महलोंमें रहनेकी शक्ति पा जाँय और नसीरुद्दीन हैदर शाह इतना बेबस हो जाय कि खुद चिढ़कर महल छोड़ दे? माना कि वह अपनी मर्ज़ीसे ही कोठी फ़रहबख्श छोड़कर

शाही दौलतखाने खानेमें चला आया मगर आखिरको बादशाह बेगमके महल न छोड़नेके सबबसे ही तो उसे ऐसा करना पड़ा। यह हार उसे मन ही मन सता रही थी। वह सर्वशक्तिमान् ईश्वरसे मन ही मन चिढ़कर भी भगवान्को नाराज़ नहीं करना चाहता था; फिर भी सहारेके लिए उसे अब एक दुनियावी आधारकी भी जरूरत थी। वही उसे नहीं मिलता था।

एक दिन दुलारीकी याद आई। बादशाह आयेंगे, यह खबर मलिका ज़मानिया दुलारीके महलोंमें नई चमक भर गई। लोगबाग खुद दुलारी भी यही सोचने लगी कि अब उसके दिन फिरसे बदलेंगे।

नसीरुद्दीन गया। दुलारीने बादशाहको खुश करनेके लिए बड़े इन्तज़ामात कर रक्खे थे। नसीरुद्दीन हैदर उन सबसे विलग ही रहा, उसने दुलारीसे कहा: "अगर तुम किसी मामूली आदमीकी बीवी होतीं तो बहुत दिनों बाद घर लौटने वाले शौहरके लिए क्या-क्या करतीं?"

दुलारी भाँप गई। बिजलीकी चमक-सा खयाल बरसों पीछेकी एक शाममें पहुँच गया—जब वह साधारण साईसकी पत्नी थी और उसने अपने प्रेमी नईमउल्लासे मिलनेके लिए छोटे देवर वारिसअलीको उल्टा-सीधा पटा कर अपनी कोठरी बन्दकर सुरंग खुदवाई थी। सास कलहकर रही थी और अचानक बरसों बाद उसका पति आ गया था। उस पर अपना जादू चलानेके लिए खातिरदारीकी कैसी तैयारीकी थी—खयालसे बल मिला चटसे जवाब दिया: "वही जो आज किया है। शाहे अवधकी मलिका हूँ, मेरे पास अपने शौहरका दिया हुआ सब कुछ है इसलिए खुशीका इज़हार यों हो गया। ग़रीब होती तब भी किसी तरह जुगाड़ कर मीठे पुलाव तो पका ही रखती और आज की तरह ही उस हालतमें भी मैंने अरसे बाद यों ही कंघी चोटीकी होती। जो कुछ अच्छेसे अच्छा मेरे पास होता यों ही पहना ओढ़ा होता। तुम महसूस नहीं कर सकते जानेमन कि तुम्हारे बिना—"

"बाप रे बाप, तुम्हारे अलफ़ाज़से फ़रेबकी किस क़दर तेज़ बदबू आ रही है!"

दुलारीके चेहरेकी आब ढल गई। नसीरुद्दीनने अपने कोटकी जेबसे बोतल निकाली। अपने ही हाथसे ढाल कर पी, किसी भी बाँदीको पास तक न फटकने दिया और बोतलको खुद काग लगा अपने पास ही रख लिया। ख़ालिस शराबकी तेज़ लकीरें उसके हलक़से लेकर कलेजे तक नफ़रतकी लकीरों-सी खिंचती रहीं, जब तब चुस्कियाँ ले-लेकर वह सुनाता रहा : "तुम लोग मुझे खुश करनेके लिए कितना फ़रेब करती हो। हरम से लेकर दरबार तक हर औरत मर्दकी सूरत पर मक्रो फ़रेबके सिवा और कुछ झलकता ही नहीं। हैरत है कि नसीरुद्दीन हैदरको ताउम्र एकको छोड़ कर और कोई इंसान ही न मिला !···पीरू है; बहुत बड़ा इंसान है, वली है, लेकिन वह मेरे प्यारसे ज्यादा परस्तिशकी चीज़ है। और तुम लोग··· क्या कहूँ दुलारी, खुदा गवाह है, तुम खुद भी गवाह हो, मैं कितने खुले दिलसे तुम पर भरोसा रखता था और तुम कितनी तंगदिलीसे मेरे साथ पेश आईं ? मैंने अपने आपको तुम पर इतना निसार किया कि तुमने जो कहा मैंने सच मान लिया, मगर तुम इतनी खुदपरस्त रहीं कि शाहे अवधके उस तख्त पर, जिस पर ख़ान्दाने मंसूरियाके शाहज़ादे बैठते हैं न जाने किस धोबी, चमार, साईसकी औलादको मेरी औलाद बतला कर बिठलानेका जाल बुनने लगीं। तुममे और बादशाह बेगममें क्या फ़र्क है ? हाँ, वह शरीफ़ ख़ान्दानसे आईं हैं और तुम न जाने किस कमीनकी बेटी हो—फिर भी फ़र्क नहीं पड़ता। झूठ और खुदपरस्ती तुम्हारी रग-रगमें भरी है—तुम दोनोंकी रग-रगमें भरी है। हः हः हः क्या रंग है ज़माने का कि शरीफ़ और रज़ीलमें फ़र्क़ न रहा। वलीयोंको छोड़ दो, इन्सानकी अब कहीं क़द्र नहीं, ताकतकी कद्र है। ताक़त चाहिए ? हः हः हः तुम सबसे ज्यादा ताक़त मुझे चाहिए, और अब मैं अपनी ताक़तमें किसी को भी साझीदार नहीं बनाऊँगा। देखने आया था कि शायद तुममें कहीं अपनी बाँदी और मेरी मलिका—मलिकए ख़ास, जन्नतनशीं नवाब क़ुद्सिया बेगम साहिबाकी तरह इन्सान छिपा हो, क्योंकि आखिर तुम भी

धाय ही थीं, तुम्हें मैंने ही मलिकए ज़मानिया बनाया था। लेकिन अब ज़मानेकी कोई भी मलिका नहीं रहेगी, सिर्फ़ मालिक रहेगा। मैं तुम सबको खाक़में मिला दूँगा।"

नसीरुद्दीन माताके प्रति अपनी निस्तेज खीजको अपनी पत्नियों और उपपत्नियों पर नित्यप्रति बरसा कर उसे प्रचण्ड करने लगा। बादशाहने सुल्तान महल और मुन्नाजानकी माँ अफ़ज़ल महल तकको बुलाकर उनपर अपना रौब फटकारा। नसीरुद्दीन हैदर क्रमशः सबको आतंकित करने लगा। केवल धनिया और दलवी, स्त्रियोंमें दो ही ऐसी थीं जिनसे वह सहज रूपमें बातें करता था। मगर उनके प्रति विश्वास रखते हुए भी उसने उन्हें अपनी प्रेमिका होनेका अवसर कभी न दिया। वह अब किसी भी स्त्रीको अपने निकट लाते डरता था। क्षण विलासके लिए वह भले किसीको भी अपना ले पर अपने सोनेके कक्षमें वह सदा अकेला ही रहता था।

एक दिन एक कश्मीरी नाचने वाली पर नज़र पड़ गई। वह पहले ही दिन दरबारमें नाची थी कि आसमान पर चढ़ गई। उसकी देहको मानो विधाताने ही साँचेमें ढाला था। बड़ी-बड़ी नज़रोंसे जिधर देख लेती थी ग़ज़ब ढा देती थी। हालाँकि दरबारमें बादशाहके सिवा और किसी को ज़ाहिरातौर पर आँख उठाके देखनेका चलन न था।

उसकी दर्द भरी आवाज़ उसकी जिस्मानी खूबसूरती, भोली चितवन और कत्थक नृत्यकी निपुणता,—सब विशेषताएँ एक दूसरेसे होड़ ले रही थीं और नाम भी नमकीन था—नूना।

नूनाने असीरकी एक ग़ज़ल छेड़ रक्खी थी जिसका एक शेर नसीरुद्दीन हैदरको बहुत ही भा गया था। नूना उसकी भाव अदायगी भी बहुत खूब करती थी।

"कहनेको यूँ जहाँमें हज़ारों हैं यार दोस्त।
मुश्किलके वक्त एक है परवरदिगार दोस्त॥"

नसीरुद्दीन झूम-झूम उठा। बार-बार उसने 'शाबाश! शाबाश!' की धुन उठाई। नूनाके गुलाबी चेहरे पर शाही शाबाशीका रंग और भी ग़ज़ब ढाने लगा उसमें बलाकी तेज़ी आ गई।

लोगोंको लगा कि नूना अब मलिका ज़मानिया और क़ुद्सिया बेगमकी जगह लेगी। बादशाह रातमें उसीके कन्धे पर हाथ रख कर हरममें गया। नूनाके चेहरे पर खुशी छाई हुई थी। नसीरुद्दीन हैदर उसे अपनी ख्वाबगाहके दरवाज़े तक ले गया और फिर सहसा उसके पैर ठिठक गये। उसने दरवाज़े पर ही नई कश्मीरी लड़कीको प्यार किया। क़ीमती जड़ाऊ हारके इनामसे निहाल किया और दूसरे दिन मिलनेके लिए कहा।

नूना दूसरे दिन मिली, तीसरे दिन मिली, रोज़ मिलती रही। कुछ दिनों तक नूनाकी तकदीरका सितारा ऐसा बुलन्द रहा कि देखने वाले ईर्ष्या करते थे; खुशामदियोंने नूनाका मिज़ाज सातवें आसमान पर चढ़ा दिया। बादशाह हर रोज़ उसका वही नाच देखता, वही ग़ज़ल सुनता जो उसने पहले दिन सुनी थी। अरसे बाद एक दिन शामके वक़्त नूना दरबारमें वही रोज़का घिसा पिटा नाच गा रही थी कि नसीरुद्दीन हैदरको जमुहाइयाँ आने लगीं—"बापरे बाप, उबा डाला इस औरत ने। खान!"

"योर मैजेस्टी!" सर्फ़राज़ खाँका खिताबधारी विलायती नाऊ आगे बढ़ा।

"दिल बहलानेका कोई और सामान नहीं?—मुर्ग़ ही लड़वाओ।"

विलायती नाऊ लड़ाकू मुर्ग़ोंका इन्तज़ाम करने गये। नसीरुद्दीन हैदरने अपनी ऊबी हुई नज़र नूना पर डाली। वह शाही बेरुखीसे सहमी हुई खड़ी थी।

"अच्छा, ये औरत योरोपियन लिबासमें कैसी लगेगी?" बादशाहके एक ओर उनके अँग्रेज़ मास्टर बैठे थे। उन्होंने बादशाहकी इस बातका जवाब न दिया। नाऊ लौटकर आया, बादशाहने उससे अपना सवाल

दोहराया। बादशाहका रुख़ समझकर भी कोई सीधा जवाब देनेके बजाय उसने कहा : "पहनाकर देख लेनेसे उम्दा जवाब और कोई नहीं हो सकता योर मैजेस्टी।"

नाऊने तत्काल ही अपने घरसे अपनी मोटी पत्नीके विलायती कपड़े मगवाये। वे कपड़े ढीले ढाले थे। नूनाको उन्हें पहननेका आदेश हुआ। नूना खुद अपनी धजा देखकर रोने लगी, बादशाह और उनके मुसाहिबे ख़ास सरफ़राज़ ख़ाँ ठहाके मारकर हँस पड़े।

कुछ दिनों तक रोज़ यही होता, नूना उसी ढीले ढाले विलायती लिबासमें मख़ौलका सामान बनाकर लाई जाती, रोज़ उसपर ठहाके लगते। नूना, जिसे कि ज़माना भावी महारानी समझता था, अपने नसीबकी चार दिन चाँदनी देख सदाके लिए अपमानिता हो गई। नूनाने कई बार हा हा खाकर बादशाहसे कश्मीर लौट जानेकी इजाज़त चाही परन्तु उसे न मिली। उसने अपनी मुक्तिके लिए सिफ़ारिश करानेकी ग़रज़से अपनी ताज़ी कमाई हुई दौलत फूँक दी मगर उसे नजात न मिली। नसीरुद्दीनके खिलवाड़ने नूनाको आसमान पर चढ़ाकर इतनी तेज़ीसे गिराया कि वह किसी धरती पर न टिक सकी—सीधे शाही महलोंके रहस्यमय पातालमें समा गई।

३५

बादशाह अब किसीको आसमान पर न चढ़ायेगा। वह अब भोला नहीं रहा; वह समझता है कि कि दरबारी राजे-नवाब और मुसाहब उसके हरममें अपने-अपने जाल फैलाये हुए हैं, हर खूबसूरत औरत जो बादशाह के मन चढ़ जाती है उसे दरबारी और मुसाहब लम्बी-लम्बी रिश्वतें लालचें देकर अपने गुटमें मिलानेकी कोशिशें करते हैं और इस तरह बादशाह को—उसकी—इच्छा पर, उसके निपट भोलेपन पर अपने जादूके तीर चलानेमें सफल हो जाते हैं। बादशाह अब किसीको भी ऐसा करनेका

अवसर न देगा। वह भी चतुर बनेगा, लोगोंको छकायेगा। वह किसी भी खूबसूरत लड़कीको अपने विलासके लिए चुनेगा, लोगोंमें यह भ्रम उत्पन्न करेगा कि वह नई सुन्दरीके वशीभूत होगया है, और जब लोग-बाग उसे आधार बनाकर बादशाहकी मर्ज़ीसे खेलना चाहेंगे तब वह उसे पैरों तले की हरियालीकी तरह कुचल देगा।

नसीरुद्दीन हर समय शंका, भय और क्रोधसे किटकिटाया करता; कभी चतुर बनता और कभी तप जाता। मगर सब करके भी वह अपनी सौतेली मातासे पार नहीं पा रहा था। वह दरअस्ल अपनेसे हार रहा था; उसे अपने अन्दर वह शक्ति ढूँढ़े नहीं मिल रही थी जो बादशाह बेगमसे मोर्चा ले सके।

एक दिन आधे शहरमें तहलक़ा मच गया, शाही अस्तबलका एक घोड़ा किसी तरहसे निकल भागा और उसने लखनऊकी सड़कों पर प्रलय मचा दी। वह घोड़ा आदमख़ोरके नामसे प्रसिद्ध था। किसी समय इंग्लिस्तानके बादशाह जार्ज चतुर्थकी ओरसे अवधके बादशाहके लिए भेंट स्वरूप वह नायाब इंग्लिस्तानी घोड़ा आया था; देखनेमें बड़ा खूबसूरत मगर बड़ा खूंख्वार था। विलायती शाहकी प्रेम भेंटपर शाहेअवधके अनेक प्रजाजनोंकी जानें भेंट हो चुकी थीं। उसे मारा जा नहीं सकता था क्योंकि विलायती शाहकी तौहीन होती। उसे नवाबज़ादोंकी तरह पाला जाता था; बस उसकी आँखोंपर सदा पट्टी पड़ी रहती और वह ज़ंजीरोंसे जकड़ा रहता। जब कभी औचकमें पट्टी हट जाती और वह किसी जानदार वस्तुको देख लेता तो फिर लोहेकी मोटी ज़ंजीरोंकी भी बिसात न थी कि आदमखोरको बाँध पातीं। उस दिन भी ऐसा ही हुआ, आदमख़ोर अस्तबलसे भाग निकला। बाज़ारमें घुसते ही एक जगह दस-पाँच आदमियोंका हुजूम देखकर वह मतवाला हो उठा। वह उछलकर उनपर आया; चार-पाँच उसके धक्केसे गिरे, एक व्यक्ति ऐन अगले खुरोंकी चपेटमें आ गया। आदमख़ोरने अपने थूथनसे उसे भँभोड़ खाया, इधरसे उधर

उछाला-पटका पैरोंसे खूँदा, देखते-देखते उसके लोथड़े डाल दिये। बाज़ारमें शोर मच गया, पटापट दूकानें बन्द हो गईं; जिसका जहाँ सींग समाया वहीं छिप रहा। गलियों-गलियों पुकार पड़ गई, बच्चे दरवाज़ोंके भीतर खींचे जाने लगे, पटापट दरवाज़े बन्द हो गये, छज्जों-छतोंपर भीड़ सिमट आई। लोग-बाग आतंकित थे। अफ़वाहें डर और हौलदिलीको दम-ब-दम दुबाला चौबाला भड़का रही थीं। लोगोंके ख़यालोंमें आदमख़ोर विलायती घोड़ेकी टापें और उसकी हिनहिनाहट उसकी ख़ूनी आँखें आ रही थीं। शाही घोड़ेको कोई मार नहीं सकता था, वह भले ही प्रजाजनोंको मारता फिरे। कप्तान बाज़ारमें एक मकानके छज्जेसे दूसरे मकानके छज्जेपर अपनी बात उछालते हुए एक मियाँजीने एक लालाजीसे कहा : "घोड़ा भी आख़िर फ़िरंगी है लाला, हिन्दुस्तानी रिआयाको तबाह करनेका हक़ उस मुल्कके चूहों तकको हासिल है, यह तो आख़िर घोड़ा ही ठहरा।"

"अमाँ चुप भी रहो भैया, ज़माना नाज़ुक है। ये देखो मास्टरकी बग्घी आरही है।',

शाहे अवध नसीरुद्दीन हैदरका अंग्रेज़ शिक्षक बग्घी पर अपने एक विलायती मित्रके साथ सैरको निकला था। मास्टर साहब जो, अपने कलकत्तासे आये हुए साहब जातिके मित्रको लखनऊका वैभव दिखलाने लाया था, सड़कोंकी वीरानी देखकर हैरतमें पड़ गया। उसकी गाड़ी सूनी सड़क पर आगे बढ़ी, एक औरत की बुरी तरह चोट खाई लाश सड़कके बीचोबीच पड़ी थी। मास्टरकी बग्घीका घोड़ा ठिठक गया। साहबने एक मकानकी छत पर खड़े हुए सिपाहीसे पूछा :

"ये क्या माजरा है?"

"आदम ख़ोर घोड़ा निकल भागा है हुज़ूर। अपनी हिफ़ाज़तकी फ़िक्र कीजिए साहब।"—और दो मिनट भी न बीते होंगे कि छतपर

खड़ा सिपाही फिर चिल्लाया : "होशियार साहबो, वो इधर ही आ रहा है।"

सड़कपर दूरसे ही एक बच्चेको मुँहमें दबाये उसे झिंझोड़ता हुआ घोड़ा तेज़ीसे मास्टरकी बग्घीकी तरफ़ आ रहा था। दूरसे ही उसने अपने सामने घोड़ागाड़ीकी शक्लमें एक बड़ी चुनौती, बड़ी जानदार चीज़को देखा। बच्चेकी लाश फेंक वह प्राणोंका भूखा मतवाला तेज़ीसे बग्घीकी ओर बढ़ा। साईसने फ़ौरन ही बग्घीका रुख एक ओरकी सड़कपर मोड़ा और एक बड़े फाटकमें उसे ले गया। अंग्रेज़मास्टरने उतरकर लोहेका फाटक बन्द किया ही था कि जनहिंसक घोड़ा सामने आ पहुँचा। दोनों अगले पैर उठाकर फाटकपर प्रहार करने लगा। उसका सिर और जबड़े खूनसे सने हुए थे; कनौतियाँ उठाये, नथुनोंसे फुफकार छोड़ता हुआ अंगारे-सी चमकती आँखोंसे वह फाटकके अन्दर सुरक्षित किन्तु सहमे लोगोंको देख रहा था। बड़े तेवरसे वह चारों तरफ़ घूमकर अपने शिकारोंपर आक्रमण करनेकी राह खोजने लगा; न मिलनेपर फिर क्रोधसे फाटकपर खड़ड़-खड़ड़ करने लगा। जितनी ही विवशता और निराशा हाथ लगती उतना ही उस आदमखोरका क्रोध बढ़ता जाता था। नया आक्रमण करनेके लिए उसने फिर पैंतरा बदला। फाटकके पास ही चहारदीवारीमें बनी हुई मेहराबके पास आ अन्धे क्रोधमें चतुर आक्रमण करनेकी राह खोजनेके लिए मचलकर दीवारपर टपाटप खुर पटकने लगा। चहारदीवारीकी [illegible] पर तबतक कई आदमी रस्सियाँ लिये खड़े हो चुके थे। इतने आदमि[illegible] तथा रस्सीके फंदेको बार-बार अपनी ओर आते देखकर आदमखोर घोड़ा अपने पागल जोशको लेकर अतिक्रमण कर गया। वह जोशके साथ पीछे हटकर फिर तेज़ीसे दीवारकी ओर छलाँग मारकर कूदा और चहारदीवारी पर खड़े हुए आदमियोंके हाथोंकी रस्सियाँ घोड़ेकी गर्दनपर उछलीं। बारे एकका फन्दा पड़ ही गया। आदमखोरको बहुत उछलकूदकर भी क़ाबूमें आना ही पड़ा। एक बार गर्दन फँसे जानेपर वह फिर बेबस हो गया।

उसकी आँखोंपर पट्टी चढ़ा दी गई, ज़ंजीरोंसे जकड़कर उसे अस्तबलमें पहुँचा दिया गया।

जो जीव इतनी देरमें उसके द्वारा मरे उनका ग़म उनके घरवालोंको रहा, चर्चा सारे शहरमें रहा; चूँकि बादशाहके अँग्रेज़ मास्टरको भी परेशान होना पड़ा था इसलिए ख़बर आक़ा-ए-आलम तक भी पहुँच गई।

नसीरुद्दीन बोला : "मैंने इस आदमख़ोरके मुतअल्लिक़ सुना तो अक्सर है। बापरे-बाप बड़ा ख़ूँख्वार जानवर होगा।"

"चीतेसे भी ज्यादा भयानक है योर मेजेस्ट्री।" मास्टरने उत्तर दिया।

"चीता!—बहुत ख़ूब—फिर चीतेसे ही इसे क्यों न लड़ाया जाय। ख़ान, हम देखना चाहते हैं कि बुढ़ियारके साथ इसका जोड़ कैसा बैठता है।"

चाँदगंजकी पशुशालामें एक-से-एक नायाब चीते मौजूद थे और उनमें तराईके बुढ़ियार चीतेकी तारीफ़ तो दूर-दूर तक फैली हुई थी। बुढ़ियार ऐसा ख़ूँख्वार चीता अबतक देखनेमें न आया था; नसीरुद्दीन हैदरको उसपर नाज़ था।

बुढ़ियार और आदमख़ोरकी लड़ाईका दिन निश्चित हुआ। बुढ़ियारको दो दिनों तक भूखा रखा गया ताकि वह और भी भयानक हो जाय। बादशाह सलामत अपने दरबारी मुसाहबोंके साथ लड़ाई देखने आये। ऊँचे बरामदेमें कोचपर वह बैठ गये। उनके पीछे पंखे, मोर्छल वालियाँ खड़ी हो गईं; हुक़्क़ा, पान, रूमाल, इत्रदान, उगालदान, साग़र-मीना,—सरकार-ए-आलमके शौक़का हर सामान अपनी-अपनी जगहपर नाज़ुक अन्दाम गुलबदनोंके मेंहदी रंगे हाथोंमें मौजूद था। शाही सोफ़ेके दायें-बायें अँग्रेज़ मुसाहब खड़े थे। नीचे अखाड़ेमें विलायती आदमख़ोरको एक देसी घोड़ीकी लालचमें बाँसके बाड़ेके अन्दर फँसाकर रक्खा गया था।

हुक्म हुआ; बुढ़ियारका पिंजरा लाया गया; फाटक खोल दिया गया। दो दिनसे बन्द भूखा-प्यासा बुढ़ियार अपने सामनेके शिकारोंकी ओर दृष्टि साधे पिंजरेके बाहर कूदा। बुढ़ियार बहुत ही आकर्षक चिकनी चमकती खालवाला, बड़ा शक्तिशाली और शानदार लगता था।

आदमखोरको भी देखते ही ज़ोम चढ़ आया। उसने एकबार अपनी गर्दन फटकारी, आँखोंमें खून उतर आया; आक्रमण करनेकी मुद्रामें गर्दन झुका, एक पैर आगे बढ़ा, बुढ़ियारपर टकटकी साधकर वह खड़ा हो गया। घोड़ी बेचारीके तो प्राण ही सूख गये, वह सहमकर एक ओर खड़ी हो गई।

नसीरुद्दीन हैदरकी दृष्टि भी टकटकी बाँधकर सामने लग गई थी। बुढ़ियार आदमखोरके चारों ओर चक्कर काटने लगा; आदमखोर भी बिना घबराये वैसे ही जुनूनभरी टकटकी साधे उसके साथ ही साथ रुख़ पलटता रहा। आदमखोर इतना सावधान था कि बुढ़ियारको उसपर आक्रमण करनेका मौक़ा नहीं मिल रहा था। कुछ देर तक योंही चक्कर चलता रहा, फिर मानो ऊब कर भूखे-प्यासे बुढ़ियारने अपने आपको ताज़गी देनेके लिए अचानक घोड़ीको दबोचकर उसका लहू पीना आरम्भ कर दिया। बेचारी घोड़ीने बिना किसी प्रकारकी आपत्ति करनेका साहस किये ही आक्रमणकारीको अपनी जान सौंप दी।

नसीरुद्दीन जोशमें अपनी हथेलियाँ रगड़ने लगा, [illegible] बुढ़ियार गरमायेगा, अब इसकी खैर नहीं।"

बुढ़ियार चार-पाँच मिनटतक खून पीता और आदमखोरको [illegible] घृणाभरी दृष्टिसे देखता रहा। आदमखोर बड़े आत्मविश्वासके साथ बेझिझक खड़ा शत्रुसे मोर्चा लेनेके लिए तैयार था।

आखिरकार बुढ़ियार भी तैयार हुआ, उसने घोड़ीकी लाश छोड़ी, अखाड़ेका एक चक्कर लगाया और बिजलीकी-सी फुर्तीसे घोड़े पर आक्रमण किया। लेकिन आदमखोर बहुत फुर्तीला और होशियार था, उसने इतनी

तेज़ीसे गोता मारा कि बुढ़ियार उसके सिरके ऊपरसे निकल गया, केवल पीछेके हिस्सेमें चीतेके पंजे गड़े। दुबारा घूमकर आदमखोरने चीतेको इतने ज़ोरसे ढकेला कि वह बाड़ेके बाँसोसे ही जा टकराया।

फिर भी बादशाह और उसके मुसाहबोंको यही विश्वास था कि इस बार उठकर बुढ़ियार आदमखोरकी ज़िन्दगीका फैसला ही कर डालेगा।

मगर दुबारा भी आदमखोरने ही मात दी। ज्योंही बुढ़ियारने उछलकर अपने खूनी दाँत और पंजे आदमखोरके बदनमें गड़ाये, त्योंही घूमकर वह चीतेको लिये दिये पलट गया। चीता धरती पर गिरा, घोड़ेने तुरत उठकर अपने नाल जड़े खुरसे उसके मुँह पर ऐसा प्रहार किया कि उसका जबड़ा ही टूट गया।

बुढ़ियारका टूटा हुआ जबड़ा, उसकी बुरी दशा, सहमा हुआ रूप देखकर नसीरुद्दीनको आदमखोर घोड़े पर बेहद गुस्सा आ गया। बुढ़ियारमें लड़नेका दम नहीं था; उसका पिंजरा खोल दिया गया। बुढ़ियार दुम दबाकर उसमें घुस गया।

ज़ख्मी आदमखोर घोड़ेको अखाड़ेमें निर्द्वन्द्व घूमते देखकर नसीरुद्दीनको सहसा लगा मानो बादशाहबेगम स्वयं उसके ही जबड़ेको तोड़कर उसे हराकर निर्द्वन्द्व विचर रही हैं। नसीरुद्दीनका क्रोध खयालकी चमकके साथ ही साथ भड़का : "डैम हिम ! बुढ़ियारको तबाह करनेका बदला लूँगा। दूसरा चीता लाया जाय।"

चीतोंके रखवालेने आकर खबर दी कि दूसरे चीतोंको चूँकि दो घण्टे पहले ही खाना दिया जा चुका है इसलिए वे लड़नेके क़ाबिल नहीं हैं। अवधका बादशाह नाराज़ होने लगा, उसने धमकाया कि अगर कोई चीता आदमखोरसे लड़नेको तैयार न हुआ तो रखवालेको ही घोड़ेके सामने फेंक दिया जायगा।

पेट भरा होने पर चीता लड़ने-भिड़नेकी नीयत नहीं रखता; मगर

बाड़ेके भीतर चारोंसे गर्म सलाखें घुसेड़-घुसेड़कर चीतेको किनारे खड़े रहनेके बजाय बीच मैदानमें उतरनेके लिए मजबूर किया गया।

चीता गरमाया, लड़ने पर तुल गया। एक शत्रुसे लड़कर थके हुए आदमखोरने इस बार भी कोई हिचकिचाहट प्रकट नहीं की। चार चक्करोंमें ही उसने दूसरे चीतेको भी मार-मारकर कुत्ता बना दिया, चीतेकी एक आँख भी जाती रही। बार-बार गर्म सलाखोंसे चीता लड़नेके लिए खदेड़ा गया मगर घोड़ेने उसे इतना दहला दिया था कि आगे बढ़नेकी हिम्मत ही नहीं होती थी।

दूसरे चीतेके हारने पर नसीरुद्दीनका मन घोड़ेकी बहादुरी पर निछावर हो गया। और इस इच्छामें मनकी तस्वीर भी बदल गई। विजयी आदमखोर अब उसे बादशाहबेगमके समान नहीं वरन् अपने समान लग रहा था। उसे हैरत थी कि एक घोड़ेने दो चीते मार भगाये; उसे इस बातकी खुशी भी थी। वह भी इसी तरह अपनेसे अधिक शक्तिशाली शत्रुओंको मार भगायेगा। अपने विरोधमें सिर ताननेवाली शक्तिको यों ही पछाड़ देगा। बादशाहबेगम—उसकी सर्वाधिक प्रबल शत्रु—अब कोठी फ़रहबख्शमें यों क़ब्ज़ा किये बैठ न पायेंगी; बादशाह इस अदमनीय उच्चैश्रवा आदमख़ोरकी तरह बादशाहबेगमके जबड़े तोड़ देगा।

चाँदगंजसे नसीरुद्दीन हैदर अपने अन्दर एक नई शक्ति लेकर लौटा। कम्पनी-सरकार उसके और बादशाहबेगमके आपसी झगड़ेमें किसी प्रकारका हस्तक्षेप न करेगी, यह भरोसा भी उसे प्राप्त हो चुका था। उसने सेना नायक राजा दर्शनसिंह ग़ालिबजंगको कड़ा आदेश दिया कि राजमातासे कोठी फ़रहबख्श जिस तरह भी हो खाली करवायें; राजमाताके प्रति किसी प्रकारका सम्मान प्रदर्शन करनेकी आवश्यकता नहीं; बार-बार उसका ज़ोर इसी बात पर था कि बादशाहबेगमसे तुरंत ही कोठी खाली करवा ली जाय।

शाही हुक्मकी तामील फ़ौरन हुई। १६ अप्रैल सन् १८३५ ई० के

दिन शाही सेनाने कोठीको चारो ओरसे घेर लिया। बादशाहबेगमके निवास-गृहमें अन्न जल तक पहुँचनेके सारे मार्ग अवरुद्ध हो गये।

बादशाह बेगम तब भी झुकी नहीं। उन्होंने अपने ख्वाजासराओंकी मार्फ़त वक्त ज़रूरतके लिए एक गुपचुप सेना तैयार की थी परन्तु दण्डके भयसे ख्वाजासरा ऐन वक्त पर दुम दबाकर बैठ रहे। बेगम सहसा अकेली पड़ गईं फिर भी हारी नहीं। उन्होंने अपने खासा बरदारोंको कोठी के फाटकके अन्दर तैनात कर दिया जिससे कि फाटक टूटने पर बादशाहके सिपाही बिना संघर्ष किये अन्दर प्रवेश न कर पायें। राजा दर्शनसिंहके दाहिने हाथ राजा शिवदीनसिंहने कोठीकी दीवारों पर ऊँची-ऊँची सीढ़ियाँ लगवा कर अपने आदमियोंको ऊपर चढ़वा दिया। बेगम अपनी लौंडियों बाँदियों और मुग़लानियोंकी फ़ौजी टुकड़ी-सी बनाकर स्वयं मैदानमें आ गईं। ईंट पत्थरों और लकड़ीके कुन्दोंकी मारसे औरतोंने मर्द गुण्डोंको दीवारका मोर्चा छोड़ कर भागने पर मजबूर कर दिया। शाही गुण्डोंने चहारदीवारीको फावड़ों और कुदालियोंकी मारसे तोड़ना और गिराना आरम्भ किया। बादशाह बेगमकी दासियाँ अपनी पूरी शक्तिके साथ मोर्चा लेती रहीं लेकिन शाही सिपाही बाग़के अन्दर घुस ही गये। राजा शिवदीन सिंह और बादशाहके खास ग़ुलामको भी ईंटोंकी मारसे चोटें आईं।

शाही शोहदोंको महलके बाग़में प्रवेश करते देख बादशाह बेगमने फ़ायर करनेका आदेश दिया। दोनों ओरसे गोलीबार होने लगा। बादशाह बेगमकी कई बाँदियाँ, इब्राहीम खाँ ख़ासाबरदार और शाही सेनाके अनेक सिपाही मारे गये, राह चलते घायल हुए और अपनी जानोंसे हाथ धो बैठे। बाज़ार बन्द हो गये, शहरमें सनसनी फैल गई। शाहे अवध तक यह ख़बर पहुँची कि बेगमकी बाँदियाँ ज़ोरदार हमला कर रही हैं। लेकिन शाहे अवध इस समय किसी भी प्रकारसे पराजित होना सहन नहीं कर सकता था। वह आदमखोर उच्चैश्रवाकी तरह अपने आपको इस बार अविजित सिद्ध करके ही रहेगा। उसने आज्ञा दी कि महल पर तोप चलाई

जाय। शहरकी सनसनीको खत्म करनेके लिए उसने अलीरज़ा कोतवालको आदेश दिया कि प्रजाको भय मुक्त कर पुलिस प्रबन्धके द्वारा बाज़ार खुलवाये जाँय। नसीरुद्दीन आदमखोर घोड़ेकी तरह ही चारों ओरसे चौकन्ना हो कर चल रहा था। बाज़ार बन्द होनेसे, प्रजामें घबराहट फैलने से रेज़ीडेण्ट कहीं प्रजाके नाम पर अपनी सेनाएँ भेज कर उसकी जीती बाज़ीको हरा न दे, बादशाह इसीलिए यह सतर्कता बरत रहा था।

कोठी फ़रहबख़्श पर शाही तोप गरजी। बादशाह बेगम दिन भरकी भूखी प्यासी, अपने लौंडी गुलामोंकी हत्यासे टूटी सहमी, शाही तोपका सामना न कर पाईं। उन्होंने हार कर राजा शिवदीनसिंहसे शरणदान देनेकी प्रार्थना की और महल छोड़ कर इल्मासबाग़में चले जानेका वचन दिया।

अवधके महामन्त्री नवाब रौशनुदौलाने अवधके महाराज नसीरुद्दीन हैदरको तुरन्त ही जाकर उनकी महाविजय पर मुबारकबाद दी और बादशाह बेगमके इल्मास बाग़ जाकर रहने की स्वीकृतिके सम्बन्धमें भी निवेदन किया।

शाही उच्चैश्रवा बुढ़ियार बादशाह बेगमके जबड़े तोड़कर परम प्रसन्न था।

३६

नसीरुद्दीन हैदरका यह विजयभाव बेहोशीके आलममें उसे आगे बढ़ा ले गया। बादशाह बेगमका साथ देने वाले राजकुलके लोग अब उसकी आँखोंमें चुभ रहे थे। नसीरुद्दीन निःसन्तान था यह बात उसे अब बुरी तरह खल रही थी। "मेरा तख्त-ताज अब मेरे दुश्मनोंके हाथमें पहुँचेगा। मेरे जीते जी यह लोग इसीलिए तो सर उठा रहे हैं। यह मुझे मारना चाहते हैं। मैं इनका सर कुचल दूँगा।"—नसीरुद्दीनकी विलास और शराबसे ढीली नसें रह रह कर क्रोधकी उत्तेजनासे भर जातीं। उसकी

मुट्ठियाँ बँध जातीं, दत्ती भिच जाती, चेहरे पर सिकुड़नें पड़ जातीं। उसके कमज़ोर बदनमें गुस्सा ऐसा बलवा मचाता कि वह थक-थक जाता था।

इन्हीं क्रोध और चिन्ताओंके बिजली-तूफानमें उसे यह खबर मिली कि इंगलैण्डकी राजनीतिक गुटबन्दीके दल-दलमें पड़ कर शाह इंगलिस्तान ने शाह अवध द्वारा भेजी गई मैत्री स्वरूप बहुमूल्य भेंट सामग्रीको अस्वीकार कर दिया है। लखनऊके राजनैतिक वातावरण पर बिजलीकी तरह इस खबरका असर पड़ा, दरबारी रईस शाहकी अवज्ञा करने लगे।

नसीरुद्दीन बेहद घबरा उठा, चिड़चिड़ा हो उठा, टूटने लगा। दिन भर शराब—बस यही तो उसके जीनेका सहारा थी। मोहरबन्द शराबकी बोतलें ख़ास उसीकी निगरानीमें रहती थीं। धनिया या दलवीके अलावा महलमें और कोई भी उसकी बोतलोंको छू तक नहीं सकता था; विलायती नाऊ डी-रसेट 'सर्फ़राज़ ख़ाँ'की बात और थी। उस पर तो धनिया और दलवीसे भी ज्यादा भरोसा था।

दिनमें ग्यारह-साढ़े ग्यारह बजेका समय था। नसीरुद्दीन कोच पर नशेके खुमारमें खोया हुआ बैठा था, नाऊ सर्फ़राज़ ख़ाँ उसके बालोंको घुँघराला बना रहा था। और बस धनिया पास थी, शाहे अवधके क़दमों में बैठी हुई पैरमें सुगन्धित लेप लगाते हुए उसकी सुन्न पड़ी पिंडलियों और पंजोको सहला कर हरारत पैदा कर रही थी। बादशाह महलके अन्दर वाले बरामदेमें बैठा था। आँगनमें असाढ़के पहले दौंगरेकी बहार छिटक रही थी। बादशाह काफ़ी देर चुप रहनेके बाद एकाएक सिर उठा कर डी-रसेटसे बोला : "बापरे बाप, यह औरतें, औरत नामकी शय कितनी दग़ाबाज़ और मक्रो फ़रेबसे भरी होती है! क्यों खान, तुम्हारे मुल्कने साइंसकी बड़ी बड़ी ईजादें की हैं—क्या ऐसी कोई तरकीब नहीं हो सकती जिससे कि आदमी औरतकी मदद लिये बग़ैर ही अपनी औलाद पैदा कर सके?"

धनिया महरीका हाथ बादशाहकी पिंडलियाँ सहलाते-सहलाते उसी

तरह हल्लेसे रुक गया जैसे सितार पर उँगलियाँ दौड़ते-दौड़ते किसी पर्दे पर तनिक देरके वास्ते चमत्कार उत्पन्न करने रुक जाती हैं। डी-रसेट बड़ी अदामें दोनों बाहें तनिक उठाये हुए, बात पर गहरा ग़ौर करनेका नाटक करते हुए गम्भीर आवाज़में बोला: "क्यों नहीं हो सकता योर मैजेस्टी। मगर मेरे ख़यालमें इस किस्मकी ईजाद करना किसी एक साइंटिस्टके बसकी बात नहीं, योरपके तमाम बड़े साइंटिस्ट अगर पूरे जोशके साथ इस काममें हाथ लगायें तो मेरे ख़यालमें मुमकिन हो सकता है।"

बादशाहकी नज़र शराबके सामानकी तरफ़ गई, हज्जामने अपने मालिककी नज़रके साथ ही उस तरफ़ हाथ बढ़ा दिया। दम भर बाद शराबकी चुस्की लेते हुए बादशाहने बड़े गम्भीर स्वरमें पूछा "लेकिन ये मुमकिन कैसे हो सकता है? मर्द अपने जिस्मके अन्दर आख़िर क्योंकर अपनी औलादको पनपा सकता है। यह मुमकिन हो सकता है कि जिस तरह पुराने ज़माने जादूगर पुतलियोंमें जान डाल देते थे उस तरह साइंटिस्ट भी कोई करिश्मा दिखलायें।"

डी-रसेटने भी चुस्की लेते हुए बाहर आँगनमें बारिशकी बूदोंसे टकटकी लगाकर कहा: "जादूमें कितना ज़ोर होता है यह तो मैं नहीं कह सकता··· मेरे ख़यालमें योर मैजेस्टीको किसी पुतलेमें जान पड़ते हुए देखनेका मौक़ा शायद ज़रूर मिला होगा।"

हिज़ मैजेस्टी बोले: "मैंने यह तो नहीं देखा मगर जादूके कुछ करिश्मे ज़रूर देखे हैं। ···मेरी वालिदा···वो—वो मुबशिशर ख़ाँ हक़ीरकी औलाद, वो ज़लील औरत जिसने मेरी वालिदा माजिदाको बड़ी बेरहमीसे क़त्ल करवा डाला था, उस—उसकी बात कहता हूँ। बापरे बाप, वह बड़ी जादूगरनी है ख़ान, अमीरुज्जिनात उसके बसमें हैं। ये धनिया जानती है।"

अब धनियाके बोलनेका मौक़ा आया। नाक पर बल डाल कर उँगलियाँ नचाते हुए बोली: "हुज़ूर आका-ए-आलम हैं जिसको जो

मुट्ठियाँ बँध जातीं, दत्ती भिच जाती, चेहरे पर सिकुड़नें पड़ जातीं। उसके कमज़ोर बदनमें गुस्सा ऐसा बलवा मचाता हि वह थक-थक जाता था।

इन्हीं क्रोध और चिन्ताओंके बिजली-तूफ़ानमें उसे यह खबर मिली कि इंगलैण्डकी राजनीतिक गुटबन्दीके दल-दलमें पड़ कर शाह इंगलिस्तान ने शाह अवध द्वारा भेजी गई मैत्री स्वरूप बहुमूल्य भेंट सामग्रीको अस्वीकार कर दिया है। लखनऊके राजनैतिक वातावरण पर बिजलीकी तरह इस खबरका असर पड़ा, दरबारी रईस शाहकी अवज्ञा करने लगे।

नसीरुद्दीन बेहद घबरा उठा, चिड़चिड़ा हो उठा, टूटने लगा। दिन भर शराब—बस यही तो उसके जीनेका सहारा थी। मोहरबन्द शराबकी बोतलें ख़ास उसीकी निगरानीमें रहती थीं। धनिया या दलवीके अलावा महलमें और कोई भी उसकी बोतलोंको छू तक नहीं सकता था; विलायती नाऊ डी-रसेट 'सर्फ़राज़ ख़ाँ'की बात और थी। उस पर तो धनिया और दलवीसे भी ज्यादा भरोसा था।

दिनमें ग्यारह-साढ़े ग्यारह बजेका समय था। नसीरुद्दीन कोच पर नशेके खुमारमें खोया हुआ बैठा था, नाऊ सर्फ़राज़ ख़ाँ उसके बालोंको घुँघराला बना रहा था। और बस धनिया पास थी, शाहे अवधके क़दमों में बैठी हुई पैरमें सुगन्धित लेप लगाते हुए उसकी सुन्न पड़ी पिंडलियों और पंजोंको सहला कर हरारत पैदा कर रही थी। बादशाह महलके अन्दर वाले बरामदेमें बैठा था। आँगनमें असाढ़के पहले दौंगरेकी बहार छिटक रही थी। बादशाह काफ़ी देर चुप रहनेके बाद एकाएक सिर उठा कर डी-रसेटसे बोला : "बापरे बाप, यह औरतें, औरत नामकी शय कितनी दग़ाबाज़ और मक्रो फ़रेबसे भरी होती है! क्यों खान, तुम्हारे मुल्कने साइंसकी बड़ी बड़ी ईजादें की हैं—क्या ऐसी कोई तरकीब नहीं हो सकती जिससे कि आदमी औरतकी मदद लिये बग़ैर ही अपनी औलाद पैदा कर सके?"

धनिया महरीका हाथ बादशाहकी पिंडलियाँ सहलाते-सहलाते उसी

तरह हल्लेसे रुक गया जैसे सितार पर उँगलियाँ दौड़ते-दौड़ते किसी पर्दे पर तनिक देरके वास्ते चमत्कार उत्पन्न करने रुक जाती हैं। डी-रसेट बड़ी अदामें दोनों बाहें तनिक उठाये हुए, बात पर गहरा ग़ौर करनेका नाटक करते हुए गम्भीर आवाज़में बोला : "क्यों नहीं हो सकता योर मैजेस्टी। मगर मेरे खयालमें इस किस्मकी ईजाद करना किसी एक साइंटिस्टके बसकी बात नहीं, योरपके तमाम बड़े साइंटिस्ट अगर पूरे जोशके साथ इस काममें हाथ लगायें तो मेरे खयालमें मुमकिन हो सकता है।"

बादशाहकी नज़र शराबके सामानकी तरफ़ गई, हज्जामने अपने मालिककी नज़रके साथ ही उस तरफ़ हाथ बढ़ा दिया। दम भर बाद शराबकी चुस्की लेते हुए बादशाहने बड़े गम्भीर स्वरमें पूछा "लेकिन ये मुमकिन कैसे हो सकता है? मर्द अपने जिस्मके अन्दर आखिर क्योंकर अपनी औलादको पनपा सकता है। यह मुमकिन हो सकता है कि जिस तरह पुराने ज़माने जादूगर पुतलियोंमें जान डाल देते थे उस तरह साइंटिस्ट भी कोई करिश्मा दिखलायें।"

डी-रसेटने भी चुस्की लेते हुए बाहर आँगनमें बारिशकी बूंदोंसे टकटकी लगाकर कहा : "जादूमें कितना ज़ोर होता है यह तो मैं नहीं कह सकता··· मेरे खयालमें योर मैजेस्टीको किसी पुतलेमें जान पड़ते हुए देखनेका मौक़ा शायद ज़रूर मिला होगा।"

हिज़ मैजेस्टी बोले : "मैंने यह तो नहीं देखा मगर जादूके कुछ करिश्मे ज़रूर देखे हैं। ···मेरी वालिदा···वो–वो मुबशिशर खाँ हक़ीरकी औलाद, वो ज़लील औरत जिसने मेरी वालिदा माजिदाको बड़ी बेरहमीसे क़त्ल करवा डाला था, उस—उसकी बात कहता हूँ। बापरे बाप, वह बड़ी जादूगरनी है खान, अमीरुज्जिनात उसके बसमें हैं। ये धनिया जानती है।"

अब धनियाके बोलनेका मौक़ा आया। नाक पर बल डाल कर उँगलियाँ नचाते हुए बोली : "हुज़ूर आका-ए-आलम हैं जिसको जो

मान लें वही दुनियाको भी मानना होगा, मगर हक़ीकत कुछ और ही है आलम नेवाज़। झूठेके मुँह पर खुदाकी मार, मरने पर सौ दुर्रे, आँखों देखी अरज़ करती हूँ सरकार, बुद्धेसुरों वाले बाबाजीने चुटकी भर राख अपनी धूनीसे उठाई और सामने फेंक दी। जाड़ेके मौसममें हुज़ूर आधे कोसके इर्द गिर्द मैदानमें आमके बड़े-बड़े दरख्त खड़े हो गये उसीके अन्दर जगह-जगह झूले पड़ गये। उतनी जगह आसमानमें भी घटाएँ घिर आईं, बिजलियाँ कड़कीं, रिमझिम-रिमझिम बूँदे पड़ने लगीं। बाबाने हम लोगोंसे कहा कि जाओं आम खाओं और झूले पर बैठकर लावनी बारहमासियाँ गाओ। इस वक्त फ़कीरकी यही मौज आई है। ज़िल्ले सुभागी, सच कहती हूँ, आपकी सौतेली माँके पास ऐसी ताक़त नहीं है। अगर हुज़ूरको बुरा लगे तो मेरा सर भले उतरवालें मगर सचको सच कहे बिना न रहूँगी।" उसकी उँगलियाँ फिर बादशाहकी पिंडलियों पर दौड़ने लगीं।

डी-रसेट दुबारा अपने कामपर लग चुका था। बीच-बीचमें वह अपनी पैनी कैंची जैसी कनखियोंसे धनियाकी एक आध झलक भी कतर लेता था। नसीरुद्दीन संगमर्मरके फ़र्शपर नज़र गड़ाये सोच रहा था, बोला : "धनिया मैं तुझे मुँहमाँगा इनाम दूंगा। सोनेके जिन पुतलोंको लेकर मुझे इमामोकी वालिदा बननेका फ़ख्र हासिल है उनमें—उनमें तेरे बाबा क्या जान डाल देंगे? कमीने नजूमीकी औलाद जिस तरह मुन्नाजानको लेकर मेरे तख्त-ताजपर अपना हक़ माँगती है, मैं भी उसी तरह हज़रतअली और इमामोंके नामपर अपना हक़ माँगूगी—माँगूगा। ...कुछ ऐसा करिश्मा हो कि इंगलैण्डके बादशाह और वज़ीर, कम्पनी बहादुरके डाइरेक्टरान और...और यह कमीनेकी औलाद रेजीडेण्टका बच्चा,—इन सबके सामने मेरे इमाम दोवज़्दा जाग उठें और मैं सबसे कहूँ कि सल्तनतेअवध अंग्रेजोंकी नहीं, बादशाह बेगमके मुन्नाजान और मलिका ज़मानियाके कैवाँजाहको नहीं, सआदतअलीखाँ मरहूमके किसी

बेटेकी भी नहीं, मेरी है, मेरे इमामोंकी है। इसपर कोई बदनज़र न उठाये, कोई अपनी नीयतके दाँत न गड़ाये।"

नसीरुद्दीनकी बड़ी-बड़ी आँखोंमें खुशीकी चमक भर गई। मनमाने सपनेसे बँधा उसका चेहरा खुशीसे लबालब भर उठा; विजय और संतोषके साथ सोफ़ापर अपना सिर टिका लिया। बाल दब जानेसे डी-रसेटका काम रुक गया।

"ख़ान!"

"योर मैजेस्ट्री!"

"ख़ान तुम्हारे विलायतके लोग बहुत होशियार होते हैं; बड़े ज़हीन, आक़िल और बहादुर होते हैं। सब ठीक है, मगर बाप-रे-बाप, बड़े लालची और मक्कार होते हैं।" क्या तमाशा है, सल्तनत मेरी है और हक़ उनका है।" बादशाहने निढाल होकर एक साँस छोड़ी।

डी-रसेटके हाथ साग़र और मीना तक फौरन पहुँच गये। धनिया बादशाह के दोनों क़दमोंपर हाथ रखकर चटसे बड़े जोशमें बोली: "मेरे सरताज, जगके पालनहार, किसूकी मजाल नहीं जो आपके सामने नज़र भी उठा सके- चाहे नवाब कम्पनी बहादुर या उनके बादशाह हों—कोई हों। बाबासे इन्तज़ाम करवा रक्खा है। आप अपनेको मुतलक़ हिरास न करें सरकार।"

नसीरुद्दीन ध्यानमें डूब गया। डी-रसेटने मुँहसे कुछ बात निकालते निकालते आलमपनाहके चेहरेपर नज़र डाली और चुप हो रहा। पलभर रुककर नसीरुद्दीन बोला: "मुझमें अभी होश बाक़ी है धनिया। और मैं बच्चा भी नहीं हूँ। अवध क्या हिन्दोस्तानकी एक भी रियासत अब आज़ाद न रह सकेगी। अंग्रेज़ किसी शरीफ़की इज्ज़त न रहने देंगे। ये सबके सरसे ताज उतार देंगे।"

डी-रसेट बोला: "योर मैजेस्टी, इंगलैण्डमें कम्पनीके डाइरेक्टरान ही सब कुछ नहीं हैं। आपके ऊपर किसी क़िस्मकी आँच नहीं आ सकती।

मेरे पास ख़बर आई है कि कलकत्तेमें इस वक्त बकिंघम पैलेसके दो ऊँचे अफ़सर आए हुये हैं। हिज़ मैजेस्टी शाहे इंगलिस्तान उनकी बातें उसी तरह सुनते है जिस तरह लखनऊमें हुज़ूरके इस कमतरीन ग़ुलामको यह फ़ख़्र हासिल है। अगर आप इजाज़त दें तो मैं कलकत्ता जाकर उनलोगोंसे मुलाक़ात करूँ।"

नसीरुद्दीनने सोफ़ेके पीछे हाथ टेके खड़े हुए डी-रसेटकी बाँहको छूते हुए कहा: "जाओ ख़ान, कुछ भी करो। मेरी ज़िन्दगीतक अवधमें अंग्रेजी अमल न होने पाये। और मैं अभी जीना चाहता हूँ। ये चारों तरफ़ जो मुझे मारनेकी साज़िशें हो रही है वह ख़त्म होनी चाहिए। मुझे शाहे-इंगलिस्तानसे दोस्तीका हाथ मिलना ही चाहिए। क्या तुम्हारा पुरअसर दोस्त भी इंगलैण्डके शाहका हज्जाम है ख़ान?"

डी-रसेट इस सवालसे एका-एक कटा, फिर भी हाज़िर जवाब रहा, झुककर अर्ज़ किया: "योर मैजेस्टी सब कुछ जानते हैं, बात ऐसी ही है।"

बादशाह उठ खड़ा हुआ। सोफ़ाके पीछे घूमकर अपने हज्जामके पास पहुँचा, कहने लगा: "देखो ख़ान, इस वक़्त रेज़ीडेण्ट या गवर्नर जनरलकी बात हरगिज़ न रहने पावे। मुझसे तोहफ़े भिजवाये और अब कहते हैं कि हिज़ मैजेस्टीको मेरी दोस्ती क़बूल नहीं? और इसका भी क्या ठिकाना है ख़ान कि इंगलैण्डके बादशाह तक मेरे तोहफ़े पहुँचे ही हों।" नसीरुद्दीनने जोशमें आकर डी-रसेटके कोटका कॉलर दबाते हुए कहा: "ख़ान, मेरे तोहफ़े क़ुबूल होने ही चाहिए। मेरे खिलाफ़ ये साज़िशें बन्द होनी ही चाहिए। तुम आज ही कलकत्ता जाओगे, समझे।"

नाऊने हामी भर ली; बादशाह डी-रसेटके कन्धे पर बाँह रखकर आगे बढ़ते हुए बोला: "हर शख्स, दो चारको छोड़कर, मेरा जानी दुश्मन है। मैं सबको तबाह कर देना चाहता हूँ। मैं किसीको भी नहीं बख्शूँगा। और मेरी सल्तनत पर मुबशिशरखाँकी बेटी या सआदत अली ख़ाँके बेटे क़ब्जा नहीं कर पायेंगे। मैं भले ही अपना तख्तो-ताज काले

चोरको दे जाऊँ—तुम्हें बख्श दूँ···ये पर्देके पीछे कौन है ?" बादशाहने एकदम चौंककर पूछा ।

धनियाने फ़ौरन आगे बढ़कर पर्दा हटाया, दो बाँदियां तेज़ीसे कमरेके पारवाले दरवाज़ेकी तरफ़ जाती दिखलाई दीं । नसीरुद्दीन हैदर गरज उठा—"गिरफ्तार करो उनको ।"

महलमें सनाका छा गया । दोनों बाँदियाँ गिरफ्तार होकर आईं ।

"तुम लोग यहाँ किस लिए छिपी हुई थीं ?"

दोनों बाँदियाँ जीते जी मुर्दा हो गई थीं, उनके मुँहसे बोल न फूटता था । नसीरुद्दीनकी दृष्टिमें यह अपराध और भी बड़ा हो गया । शाही इशारा हुआ । दोनों बाँदियोंके सब कपड़े उतरवा कर विलायती हण्टरकी मार शुरू हुई । एक बाँदीका बोल फूटा उसने बतलाया कि दूसरी उसकी सहेली है, कानपुरसे आई है । बादशाह सलामतको देखनेकी बड़ी इच्छा थी सो वह उसे रसूलन बाँदीकी एवज़में ले आई, वह बीमार पड़ी है । बाँदीने बतलाया कि वह दरवाजे पर उसूलके हिसाबसे खिदमतमें खड़ी थी; ग़लती उनकी सहेलीसे हुई वह राज-दर्शनकी लालसामें परदेके पास तक बढ़ती गई । दूसरीको टोकनेकी मोहलत भी न मिली थी कि ज़िल्लेसुभानीने देख लिया । उनके पूछते ही सहेली डरकर भागी । दूसरी बाँदीसे ग़लती यह हुई कि सहेलीके पीछे-पीछे [illegible] उठ गये ।

मगर नसीरुद्दीन हैदरको इस जवाबसे तसल्ली न हुई [illegible] नये अत्याचार शुरू हुए । पहला हन्टर खाते ही दूसरी बेहोश हो चुकी [illegible] उसके मुँह पर छींटे मारे जारहे थे । होशमें आकर उसने भी वही बात कही जो पहले सुनी जा चुकी थी, मगर नसीरुद्दीनको फिर भी तसल्ली न हुई ।

सामन्ती शासनमें बन्दी स्त्रियों और पुरुषोंके मर्म स्थानोंमें लाल मिर्च भरना अथवा यदि चरम दण्ड देना हो तो मेख ठोकना खास सज़ाओंमेंसे था ।

दण्डस्वरूप स्त्रियों और नवयुवक पुरुषों पर सामूहिक बलात्कार करवाना भी आम चलनमें शामिल था। धनिया और ज़नानी फ़ौजकी कमाण्डर, धनिया महरीकी 'माशूक़ा' बी ग़फ़ूरन बुआ यह जानती थीं कि बादशाहक इस वक्त कौन सी सज़ा पसन्द आयेगी। बात क़रीब-क़रीब साफ़ हो चुकी थी; यह ठीक था कि अजनबीको बग़ैर परवाना हासिल किये हुए अन्दर लाना बहुत बड़ा गुनाह था, मगर ये दोनों किसी राजनीतिक षडयंत्रमें शामिल न थीं। बादशाहके चेहरे पर गुस्सेका कसाव ढीला पड़ चुका था, मौसम सुहावना था; ग़फ़ूरन बुआने वह सज़ा तजवीज़की जो शाही मौजको भा गई।

डी रसेट कलकत्ता यात्राके लिए तैयारी करनेके बहानेसे जा चुका था। बादशाह चुस्कियाँ लेता रहा, धनियाँ क्षणका लाभ उठाती हुई बादशाहको अपने शरीरस्पर्शकी गरमी देती रही।

उस दिन बादशाहने हस्ब मामूल अपने मुसाहबोंके साथ भोजन न किया।

३७

क़ुद्सिया बेगमकी मृत्युके बाद नसीरुद्दीनने खिलवाड़ बहुतोंके साथ करते हुए भी किसी स्त्रीको अपने पास नहीं फटकाया था। स्वयं धनिया अनेक बार प्रयत्नकर भी इस कार्यमें सफल न हो पाई थी। प्राणोंके भयसे ही वह किसी परिचित अपरिचित स्त्रीको अपने निकट न लाता था। क़ुद्सियाके बाद वह निश्चयपूर्वक किसी भी स्त्रीको महत्त्व देकर अपने आस-पास नये षडयंत्रका जाल नहीं फैलाना चाहता था। अब तो वह स्वयं भी समझने लगा है और जानने वाले तो जानते ही हैं कि नसीरुद्दीनकी दैहिक विवशताको भुला देने वाली स्त्री नसीरुद्दीन हैदरकी मलिक-ए-ख़ास बन जाती है। जो इसमें असफल होती है वे कमज़ोर शाहके दिलसे उतर जाती है।

धनिया महरीकी जीत सियासतके घेरेमें घुस कर छा गई। बादशाह बेगम अब बेताब हो उठीं।

नगरमें बादशाह बेगमके कमाण्डर इंचीफ़ भिश्ती गुण्डे इमामबख़्शने बड़ा आतंक फैला रक्खा था। बादशाह बेगमके नाम पर एक नई गुप चुप सेना खड़ी कर ली गई थी। अवधके बाग़ी सामन्तोंकी परम्परामें बादशाह बेगम भी जुड़ गई थीं। राजधानीके आस-पास गाँवोंमें उनकी लुटेरी सेनाके लोग दिन रात उत्पात मचाते। क़त्ल लूट बलात्कार नारी अपहरण आदि बुरी तरहसे बढ़ गया। इस बातका चारों ओर प्रचार किया जा रहा था कि नसीरुद्दीन गद्दीसे उतारा जायगा। बादशाह बेगमके लोग कहते कि नसीरुद्दीनको उतार कर राजमाता यहाँ ऐसी शक्ति संगठित करेंगी कि जिससे अंग्रेजोंका भी पत्ता कट जाय।

दूसरी ओर हकीम मेहदीका प्रचार चल रहा था कि नसीरुद्दीनको गद्दी से उतार कर अँग्रेज़ अवधको अपने आधीन कर लेंगे, राज्यसे सारी बदअमनीका मुँह काला हो जायगा। सरकश सामन्तों और बादशाह बेगम के पासी-लुटेरोंसे त्रस्त जनता घुट कर अँग्रेजोंके आनेकी कामना करती। लुटेरे कहते कि अँग्रेज़ जब आयेंगे तब आवेंगे, तब तक चढ़े तवे पर हम अपनी रोटीक्यों न सेंक ले। इस प्रकार पूरे राज्यमें आपाधापी और अफ़वाहें फैल रही थीं। राजधानीमें हर दरबारी अपनी खींचतानमें लगा हुआ था। रेज़ीडेन्सी जाकर सलामे बजाने वालोंकी कमी न थी। छोटेसे छोटा अँग्रेज खुशामदी राजकर्मचारियों और दरबारियोंको निगाहमें सरकार-ए-दो आलम हो रहा था। रेज़ीडेन्सीके दरबानोंकी भी बड़ी पूछ थी। हर रईस और ओहदेदार एक दूसरेकी काट करनेके लिए अँग्रेज़ोंसे कन-फुसकियाँ करता था और यह हवा इतनी तेज़ हो गई थी कि आँधी बन गई। सरकारी दफ्तरोंमें ऐसा कोई विभाग नहीं था जिसके कर्मचारी सत्ता बदलनेकी गर्म खबरोंसे भय अनिश्चय और स्वार्थ षडयंत्रोंमें न फँस गये हों। विलायतके बादशाह द्वारा भेंट अस्वीकार किया जाना नसीरुद्दीन हैदरकी प्रतिष्ठाको

चूर-चूर करनेके लिए ज़रूरतसे ज़्यादा काफ़ी साबित हुआ—यानी कि लोगबाग बादशाहके सामने उसके अदबमें कमी करने लगे।

नसीरुद्दीन हैदर हर निगाह देखता हर शख़्सको अपनेसे कहीं कटा हुआ पाता, वह बुरी तरह सहम गया था। विलायती नाऊके कलकत्तासे लौटनेकी आशामें उसके दिन कट रहे थे।

एक दिन शाही बाग़के फल लुट गये। चूँकि ख़बर आम थी कि बादशाह बेगमके सिपाहियोंने लूटपाट की है इसलिए बादशाहके कानमें भी भनक पड़ गई। अख़बारनवीस भी ज़िलोंसे ख़बरें भेजते थे, उनमें भी राजमाताके लुटेरे सिपाहियोंका ज़िक्र होता था। नसीरुद्दीन हैदर भड़क गया। फ़ौरन शाही हुक्म हुआ कि बादशाह बेगम अपनी सेनाको तोड़ दें। राजमाताका उत्तर आया कि नगरसे दूर रहनेके कारण अपनी रक्षाके लिए सेना रखना वे आवश्यक समझती हैं। अपनी आज्ञा अमान्य होनेके कारण शाह नसीरुद्दीन हैदर तिलमिला उठा। तुरन्त नसीरुद्दीन हैदरने अपने कमांडर-इन-चीफ़को आज्ञा दी कि बादशाह बेगमके सिपाहियोंका बुरी तरहसे दमन किया जाय; साथ ही यह इश्तहार भी छपवाये कि जो कोई बादशाह बेगमको सैनिक सहायता देगा अथवा उनकी सेनामें भर्ती होगा उसे राजद्रोही माना जायगा। रौशनुद्दौला और ग़ालिबजंग बादशाह के सामने बड़े-बड़े ज़बानी करतब दिखानेके अलावा और कुछ कर न सके। बादशाह बेगमके सिपाहियोंका शहरके हर अमीरो-उमरा पर दबाव पड़ने लगा। नसीरुद्दीन हैदरके लिए उनके लोग खुलेआम अपमानजनक शब्द कहते थे और कोई उनका कुछ नहीं बिगाड़ पाता था। बादशाह आये दिन तरह-तरहकी शिकायतें पाता, रौशन नवाब और ग़ालिबजंगसे शिकायतें करता—मगर शाही शिकायतोंका कुछ असर न होता और शहरी शिकायतोंका ताँता टूट न पाता था। रौशन नवाब और ग़ालिबजंग, जब बादशाह गरमाता तब यही कहते कि "हाँ हुज़ूर अबकी देखियेगा; यों देखियेगा और वों देखियेगा।" हर दरबारी पुराना नमकख्वार और

जाँनिसार बननेका दम भरता, हर एक अपनेको बादशाहका और दूसरेको बादशाह बेगमका मददगार बना अपनी राजभक्ति स्वामिभक्तिके बड़े-बड़े उजागरे करता था। नसीरुद्दीन हैरतमें था कि वह किसे अपना माने किसे पराया। अपनेको अकेला पाकर नसीरुद्दीन बुरी तरह घुटता रहा। उसे अपनी घुटनमें बार-बार यह महसूस होता कि आसमानसे ढकी हुई यह दुनिया एक क़ैदखाना है और वह भी इतनी तंग कि नसीरुद्दीन उसमें समा नहीं पाता, दब भिंच कर उसका दम घुटता है। वह अपने प्राणोंको घुटनेसे बचाना चाहता है। वह जगमें किसका भरोसा करे। हाँ धनिया उसकी नई मजबूरी है, उस पर बहुत भरोसा भी करता है पर उतना नहीं कि आँख मीचकर उसे अपने आपको सौंप दे। आठों पहर वह आतंकित रहता था।

उसने शहरमें जाना आम तौर पर छोड़ दिया था; शहरमें हर तरफ़ लूट-मार और बद-इन्तज़ामी इतनी बढ़ गई थी कि अब फ़रियादियोंकी फ़रियादमें लिबलिबी गिड़गिड़ाहट नहीं बल्कि कठोर फ़ौलाद बोलता था। नसीरुद्दीनने घबरा कर जाना ही छोड़ दिया। रईस नवाब प्रजाजन नौकर बाँदियाँ अपना पराया जो भी आता उसे वह घूर कर देखता। वह देखता कि किसी नज़रमें भला वह छाँव भी है जिसे उसने क़ुद्सिया बेगमकी आँखोंमें सदा सहज भावसे ही पाया था। नसीरुद्दीन नज़रों-नज़रोंमें खोजता उसे कोई नहीं दिखलाई देता था। कभी अचानक बावर्चीखानेमें जाकर इन्तज़ाम देखता, अपने कपड़ों पर निगरानी रखता, अपने सोनेके कमरेमें खुद सब तरफ़ देख-भाल कर सोता था। शराबकी बोतलों पर शाही मोहर रहती थी; जिस अलमारीमें उसकी बोतलें बन्द रहती थीं उसकी चाबी सदा उसके पास रहती थी। कुएँ पर भी उसका ही ताला था।

इतनी सतर्कता बरत कर भी उसे अपने प्राणोंका भरोसा न था।

चूर-चूर करनेके लिए ज़रूरतसे ज़्यादा काफ़ी साबित हुआ—यानी कि लोगबाग बादशाहके सामने उसके अदबमें कमी करने लगे।

नसीरुद्दीन हैदर हर निगाह देखता हर शख्सको अपनेसे कहीं कटा हुआ पाता, वह बुरी तरह सहम गया था। विलायती नाऊके कलकत्तासे लौटनेकी आशामें उसके दिन कट रहे थे।

एक दिन शाही बाग़के फल लुट गये। चूँकि खबर आम थी कि बादशाह बेगमके सिपाहियोंने लूटपाट की है इसलिए बादशाहके कानमें भी भनक पड़ गई। अखबारनवीस भी ज़िलोंसे खबरें भेजते थे, उनमें भी राजमाताके लुटेरे सिपाहियोंका ज़िक्र होता था। नसीरुद्दीन हैदर भड़क गया। फ़ौरन शाही हुक्म हुआ कि बादशाह बेगम अपनी सेनाको तोड़ दें। राजमाताका उत्तर आया कि नगरसे दूर रहनेके कारण अपनी रक्षाके लिए सेना रखना वे आवश्यक समझती हैं। अपनी आज्ञा अमान्य होनेके कारण शाह नसीरुद्दीन हैदर तिलमिला उठा। तुरन्त नसीरुद्दीन हैदरने अपने कमांडर-इन-चीफ़को आज्ञा दी कि बादशाह बेगमके सिपाहियोंका बुरी तरहसे दमन किया जाय; साथ ही यह इश्तहार भी छपवाये कि जो कोई बादशाह बेगमको सैनिक सहायता देगा अथवा उनकी सेनामें भर्ती होगा उसे राजद्रोही माना जायगा। रौशनुद्दौला और ग़ालिबजंग बादशाह के सामने बड़े-बड़े ज़बानी करतब दिखानेके अलावा और कुछ कर न सके। बादशाह बेगमके सिपाहियोंका शहरके हर अमीरो-उमरा पर दबाव पड़ने लगा। नसीरुद्दीन हैदरके लिए उनके लोग खुलेआम अपमानजनक शब्द कहते थे और कोई उनका कुछ नहीं बिगाड़ पाता था। बादशाह आये दिन तरह-तरहकी शिकायतें पाता, रौशन नवाब और ग़ालिबजंगसे शिकायतें करता—मगर शाही शिकायतोंका कुछ असर न होता और शहरी शिकायतोंका ताँता टूट न पाता था। रौशन नवाब और ग़ालिबजंग, जब बादशाह गरमाता तब यही कहते कि "हाँ हुज़ूर अबकी देखियेगा; यों देखियेगा और वों देखियेगा।" हर दरबारी पुराना नमकख्वार और

जाँनिसार बननेका दम भरता, हर एक अपनेको बादशाहका और दूसरेको बादशाह बेगमका मददगार बना अपनी राजभक्ति स्वामिभक्तिके ढोल पीटता, नींदें उजागरे करता था। नसीरुद्दीन हैरतमें था कि वह किसे अपना माने किसे पराया। अपनेको अकेला पाकर नसीरुद्दीन बुरी तरह घुटता रहा। उसे अपनी घुटनमें बार-बार यह महसूस होता कि आसमानसे ढकी हुई यह दुनिया एक क़ैदख़ाना है और वह भी इतनी तंग कि नसीरुद्दीन उसमें समा नहीं पाता, दब भिंच कर उसका दम घुटता है। वह अपने प्राणोंको घुटनेसे बचाना चाहता है। वह जगमें किसका भरोसा करे। हाँ घनिया उसकी नई मजबूरी है, उस पर बहुत भरोसा भी करता है पर उतना नहीं कि आँख मीचकर उसे अपने आपको सौंप दे। आठों पहर वह आतंकित रहता था।

उसने शहरमें जाना आम तौर पर छोड़ दिया था; शहरमें हर तरफ़ लूट-मार और बद-इन्तज़ामी इतनी बढ़ गई थी कि अब फ़रियादियोंकी फ़रियादमें लिबलिबी गिड़गिड़ाहट नहीं बल्कि कठोर फ़ौलाद बोलता था। नसीरुद्दीनने घबरा कर जाना ही छोड़ दिया। रईस नवाब प्रजाजन नौकर बाँदियाँ अपना पराया जो भी आता उसे वह घूर कर देखता। वह देखता कि किसी नज़रमें भला वह छाँव भी है जिसे उसने क़ुद्सिया बेगमकी आँखोंमें सदा सहज भावसे ही पाया था। नसीरुद्दीन नज़रों-नज़रोंमें खोजता उसे कोई नहीं दिखलाई देता था। कभी अचानक बावर्चीख़ानेमें जाकर इन्तज़ाम देखता, अपने कपड़ों पर निगरानी रखता, अपने सोनेके कमरेमें ख़ुद सब तरफ़ देख-भाल कर सोता था। शराबकी बोतलों पर शाही मोहर रहती थी; जिस अलमारीमें उसकी बोतलें बन्द रहती थीं उसकी चाबी सदा उसके पास रहती थी। कुएँ पर भी उसका ही ताला था।

इतनी सतर्कता बरत कर भी उसे अपने प्राणोंका भरोसा न था।

चारों ओर षड्यंत्र इतने बढ़ गये थे कि वह अपने आपको सम्हालते-सम्हालते हैरान था।

३८

बादशाहबेगमके भिश्ती कमाण्डरने शहरमें प्रलय मचा रक्खी थी। उसने महाजनों साहूकारोंसे बादशाहबेगमके नाम पर धमकियाँ देकर रुपया उगाहना शुरू किया। रेज़ीडेन्सीके साहबे-आलीशान तक शिकायतें पहुँची। रेज़ीडेन्ट अब तुरन्त चेत उठा, शाही सेनाएँ बादशाहबेगमकी सेनाका यह उत्पात रोकनेके लिए भेजी गईं। इल्मास बाग़के पास ही एक नाला था, शाही सेना वहीं आकर जम गई। बादशाहबेगमको भला यह धौंस क्यों कर बर्दाश्त हो सकती थी; उनकी सेनाके लोग आज्ञा पाकर बाक़ायदा मोरचा साध नाले के उस पार अपनी हद बना कर खड़े हो गये।

बेलीगारदके जासूस साहबे-आलीशानको दम-दम पर दोनों ओर की गति-विधियोंका परिचय देते रहते थे। यही नहीं उनके लोग दोनों ओरके लोगोंको भड़का भी रहे थे। यह कम्पनी बहादुरके डाइरेक्टरोंके हक़में था कि इंगलैण्डकी पार्लियामेण्टमें विरोधी दलके सदस्य कम्पनी द्वारा किये गये भले-बुरे कारनामों पर तीखे सवाल न उठा सकें। अवधका राज्य इंगलैण्ड की राजनीतिक पार्टियोंके बीच क्रिकेटका गेंद हो गया था। माँ-बेटेकी लड़ाई का नक़्शा खींच कर, युवराज-पद पानेके इच्छुक मुन्नाजान और कैवाँजाहके वैध-अवैध सन्तान होनेका चर्चा उठा कर कम्पनीके डाइरेक्टरान अपने विरोधियोंका मुँह बन्द कर सकते थे। अंग्रेज हर तरहसे अपनी चाल चल लेते थे। एक ओर कहते कि हम राज्यके भीतरी मामलोंमें दख़ल नहीं देते और दूसरी ओर रेज़ीडेण्ट हर मामलेमें टाँग अड़ाता था। बादशाह नवाब आमतौर पर भोले, मूर्ख, ऐश-इशरतमें ग़र्क़ हो शासन सम्हालनेका मौक़ा ही न पाते थे।

उन दिनों ऐसा चलन हो गया था कि रईसज़ादोंके संस्कारोंका विकास मुँहलगे मुसाहबोंकी खुशामदों और उन्हें लूटनेकी तिकड़मोंके जालमें ही हो सकता था। उनके लिए मौलवी, मास्टर लगाये जाते थे मगर यह भी एक चलन ही था। जिसके पल्ले जितना इल्म पड़ गया उतना ही जीवनभर के लिए बहुत काफ़ी रहा; जब तक चेहरे पर दाढ़ी-मूछें न आईं पढ़ते रहे फिर ब्याह हो गया तो आलिम-फ़ाज़िल हो गये। यही हाल था।

राजा सम्राट् ईश्वरके प्रतिनिधि और समाजमें दुनियादारीके आदर्श-पुरुष होते थे। उनके घरमें कम्पनी बहादुरकी ही नीति चलती थी। लिहाज़ा समाज का हर रईस, सामन्त-बच्चा आम-तौर पर नालायक़ और नामाक़ूल होता था। कम्पनी बहादुरकी सरकारको हिन्दुस्तानमें पाँचवें दस्तेके तौर पर मुसाहबोंकी सेना खूब मिल गई थी। अंग्रेज़ बहादुरके बहुत-से गोयन्दे इन मुसाहबोंके अन्दरसे ही मिलते थे और इस समय तो उनका सबसे बड़ा दलाल स्वयं हकीम मेहदी था जो अवधके राज-मुकुटसे अपने अनेक अपमानोंका बदला लेनेके लिए उसे नष्ट कर अंग्रेज़ोंके राज्य-स्थापन हेतु जी-जानसे जुटा हुआ था। बादशाहबेगमकी गुण्डा-सेनामें हकीम मेहदीका अप्रत्यक्ष प्रभाव था। बादशाहबेगमकी सेना द्वारा शहरके कुछ नवाब साहूकार धमकाये जाते कुछ छोड़ दिये जाते। गुण्डा सेनाकी इस नीतिमें बादशाहबेगमसे अधिक हकीम मेहदीका हाथ था। फ़तहगंज मोहल्लेके भिश्ती इमाम बख़्शका शहरमें जो दबदबा था वह शहर कोतवालका न था।

भिश्ती इमामबख़्श नालेके उस पारसे बादशाह नसीरुद्दीन हैदरकी शानमें कहनी-न-कहनी सुना रहा था। वह शाही सेनाको चुनौतियोंपर चुनौतियाँ दे रहा था। नशेमें धुत्त बेगम सेनाके पासी धनुर्धारी हुल्लड़-सा बाँध, बुरी-बुरी गालियाँ दे-दे कर ललकार रहे थे। शाही सेना भी फ़िलहाल गालियोंके गोले ही दाग रही थी। मौक़ा एकदम नोकानोक तक आ गया था कि देवदूत-सम शान्ति स्थापित करनेवाले कम्पनी बहादुरके लखनवी

प्रतिनिधि, साहबे आलीशान हुज़ूर रेज़ीडेन्ट बहादुरकी सवारी ऐन मौक़ेपर आ पहुँची।

बादशाह बेगमकी सेना शाह नसीरुद्दीन हैदरकी सेनाके आगे ऐसी ही लगती थी जैसी मेमनेके सामने भेड़िया। रेज़ीडेन्टने इसपर ग़ौर किया। वह अपनी सरकारके ऊपर किसी प्रकारका कलंक नहीं आने देना चाहता था। वह अब गुण्डोंको अधिक बढ़ावा देनेके लिए तैयार न था क्योंकि इसका अर्थ अवधमें शासनका उलट-फेर भी हो सकता था। उसने अपने अमीर-उल्-इंशा सैयद इल्तफ़ात हुसैनखां बहादुरको अपना-अपना सन्देशवाहक बनाकर इल्मास बाग़ भेजा। ज़रीके परदेके आरपार बैठकर अमीर-उल्इंशाने कहा और बादशाहबेगमने सुना। रेज़ीडेन्टने कहलाया था कि यद्यपि वे सौतेली माँ-बेटेके आपसी झगड़ोंमें नहीं पड़ना चाहते थे मगर मामला चूँकि यहाँ तक बढ़ गया है कि उससे प्रजापर बुरा असर पड़ रहा है, "इसलिए राज्यकी रक्षा करनेके उद्देश्यसे माँ-बेटेके इस आपसी झगड़ेमें दखल देनेके लिए मजबूर हुआ हूँ।" रेज़ीडेन्ट साहबने अपने हेड मुंशी यानी अमीर-उल्-इंशाकी मार्फ़त बादशाहबेगमको अपनी क़ानूनी परिस्थिति भी समझाई। संधिपत्रके अनुसार रियासतोंमें बाहरी और भीतरी अशान्तियोंको दबानेका पूरा भार कम्पनी सरकारपर है। "और कम्पनी सरकार राज्यके किसी प्रजाजनको शाही आज्ञाके बिना इतनी बड़ी सेना रखनेका अधिकार नहीं दे सकती। इल्मास बागमें अपनी सुरक्षाके लिए आप चार-पाँच सौ सिपाही तो रख सकती हैं मगर इस संख्याके आगे सारे सिपाही डिसमिस किये जाँय। अगर आप यह मंज़ूर करेंगी तो मैं भी आपकी कुछ सेवा कर दूँगा। शाही खज़ानेसे प्रतिमास इतनी रक़म अवश्य दिलवा दूँगा जिससे कि आपके सारे खर्च पूरे पड़ सकें। आपकी रक्षाके लिए शाही सैनिक तैनातकर दिये जायेंगे। आपके मामलेकी पूरी रिपोर्ट गवर्नर जनरलके पास भेज दी जायेगी औरअगर आप मेरी बात माननेसे इनकार फ़रमायेंगी तो गोरी फ़ौजकी तीन कम्प-

नियाँ भेजकर आपकी सारी शक्तियोंको तहस-नहस करवा दूँगा। तब फिर आपका रोना गिड़गिड़ाना किसी काम न आयेगा। मैं इन तमाम बातोंकी रिपोर्ट गवर्नरजनरलको भेजूँगा इसलिए किसी नतीजेपर पहुँचनेके पहले आप खूब ग़ौरकर लीजिए।"

परदेके पीछे कुरसीपर बैठी हुई तपोनिष्ठ और घोर अहंकारिणी राजमाताके गोरे मुखमण्डलपर, आँखोंमें रह-रहकर तमतमा और कसाव चढ़ता और फिर एक सुबकी एक घुटनभरी आह सूनेपनमें बिछ जाती थी; मानो अन्दरके गरजते समुद्रके ज्वार भाटेका चित्र सामने आ रहा था। बढ़ती सुबकियोंको कसकर रोकती हुई बादशाहबेगमने तड़पकर साहबे आलीशानके मीर मुंशीसे कहा : "कम्पनी सरकारने सल्तनते अवधकी बेगमातके साथ कब इन्साफ़ किया है जो आज मेरे साथ ही बरतेंगे। कम्पनी सरकार हमेशा अच्छाइयोंको रोकती है, उन बुराइयोंकी ओर नज़र उठाकर भी नहीं देखती जो सुलेमानजाहकी रग-रगमें भरी हैं, जो सल्तनते अवध के हर अमीर आमिल ओहदेदारमें हैं। शाही बदइन्तज़ामीसे रियाया तबाह होती है तब आप कुछ नहीं कहते और मेरे सिपाहियोंने अपनी नादानीमें जो ज़रा-सी बदअमनी फैलादी तो उस जुर्ममें मुझपर हमलावर होनेकी धमकी देते हैं और आपने सैयिद होकर भी इंसाफ़की आँखोंपर पट्टी बँधी रहने दी? यही नहीं बल्कि खुद उस ना-इन्साफ़ीको मनवानेके वास्ते तशरीफ़ लाये?"

मीर मुंशीसाहब कट गये मगर मजबूरीके स्वरमें बोले : "बेगमसाहब मैं मुलाज़िम हूँ। न हुज़ूर रेज़ीडेन्ट बहादुरसे ही बग़ैर उनकी मर्ज़ीके अर्ज़ करनेकी जुरअत कर सकता हूँ और न आपसे ही। हुज़ूर रेज़ीडेन्टबहादुरने अपनी ज़बाने मुबारकसे जो कुछ फ़रमाया वह मैंने आपकी ख़िदमतमें अर्ज़ कर दिया। कम्पनी बहादुरकी सरकारसे पार पाना मुश्किल है। गुलामकी यह दस्तबस्ता गुज़ारिश है कि साहब बहादुरकी नेकसलाहसे

फ़ायदा उठायें वरना बात बिगड़ जानेपर फिर किसी तरह भी बनाये न बनेगी।"

बादशाहबेगम गुस्सेसे फूल-फूलकर रो उठीं और ऐसी हिचकियाँ बाँधकर रोईं कि सुननेवालोंपर असर पड़ा। कुछ देर बाद उन्होंने अमीर-उल इंशा खांबहादुर सैयिद इल्तफ़ात हुसैनसे फ़रमाया : "मुझे रेज़ीडेन्ट बहादुरका हुक्म माननेसे एतराज़ नहीं है; बल्कि मैं खुद चाहती थी कि वो मुआमलेको अपने हाथमें लें और मुझे दुश्मनोंकी बदकारियोंसे बचायें। ऊपरवाला जानता है कि सुलेमानजाहको पाल-पोसकर इतना बड़ा करनेमें मुझे क्या-क्या तकलीफ़ें उठानी पड़ी हैं। दुश्मनोंने उसे मेरी ओरसे बददिल कर दिया और उनके कहनेमें आकर वह मेरे साथ जो बुरा बरतावकर रहा है उसे भी दुनिया देख रही है। अब भी जब कि मैं इस उजाड़ जगहपर आकर बस गई हूँ, दुश्मन रोज़ मुझे परेशान करनेकी नई-नई तरकीबें किया करते हैं। मैं इतनी बड़ी फ़ौज न रखती तो क्या करती। अगर रेज़ीडेन्ट बहादुर मेरा ख़यालकर मुझे सलोनकी जागीर मेहरबानीकर दिलवा दें तो मैं खुद इन आफ़तोंसे बरी होकर चली जाऊँ। जन्नतमकानी बादशाहने वह जागीर मुझे बख्शी थी, मैं वहीं जाकर अपनी ज़िन्दगीके बाकी दिन गुज़ारना चाहती हूँ।"

मीर मुंशीने जवाब दिया : "मैं तो ग़ुलाम हूँ, साहबे-आलीशानने अपनी ज़बान-ए-मुबारकसे जो फ़रमाया वह मैंने यहाँ आकर ख़िदमतमें अर्ज़ कर दिया। अब हुज़ूरका जो फ़ैसला हो वह अपने दस्त-ए-मुबारकसे एक काग़ज़पर लिखकर देनेकी ज़हमत गवारा फ़रमायें। जो कुछ जवाब होगा बड़े साहबके दफ्तरसे लिखकर आ जायगा। यों तो फ़िदवी किसी लायक़ नहीं है, कोई वादा तो नहीं कर सकता मगर हुज़ूरको यह भरोसा दिलाता है कि आपके खर्चकी रक़ममें कोई कमी न की जायेगी—बशर्ते कि हुज़ूर गवर्नरजनरल बहादुर उसे मंज़ूर फ़रमायें।"

"मैं अपनी जागीर चाहती हूँ। जागीर मिलनेपर मैं अपने सिपा-

हियोंको बर्ख़ास्तकर दूँगी। लेकिन इसके पेश्तर मुझे सिपाहियोंको तनख्वाह भी देनी होगी जो कई महीनोंसे अदा नहीं की जा सकी है। सरकारी खज़ानेसे मुझे एक छदाम भी नहीं मिलती, मैं अपने ज़ेवर-जवाहरात बेच-बेचकर काम चला रही हूँ। अगर मुझे तीन लाख रुपये मिल जायँ तो सबकी तनख्वाहें देकर फ़ौजको बर्ख़ास्त कर दूँगी।''

रेज़ीडेन्टने शाहेअवधको सारी हक़ीक़तसे आगाह किया। नसीरुद्दीन हैदर ज़िदपर चढ़ गया, बोला : "शाही खज़ानेसे एक फूटी कौड़ी भी मुबशिरखाँकी बेटी न पा सकेगी।"

मगर रेज़ीडेन्टने शाही हठको झुका दिया, हालाँकि झुकानेके पहले बादशाहसे बा-अदब उनको झुकानेकी इजाज़त ली। कहा कि घरेलू मामला होते हुए भी चूँकि इससे शासनतंत्रको खतरा पहुँच सकता है इसलिए हस्तक्षेप करना आवश्यक है। रेज़ीडेन्टने वैधानिक प्रार्थनाकी पोशाक़में शाहेअवधको आज्ञा दी कि एक लाख रुपया बेगमकी सेवामें तुरन्त भेजा जाय। यह भी कहा कि शाही सेनाका कोई भी अफ़सर बादशाहबेगमके आदमियोंसे छेड़छाड़ न करे। वे नगरमें जी चाहे जहाँ डोल सकते हैं। इसके अतिरिक्त बेगमको यह लिखित आश्वासन भी दिया गया कि राज-माता यदि केवल चार सौ सिपाहियोंको छोड़कर बाक़ी सबको बर्ख़ास्त कर दें तो अवधकी सरकार उनका वेतन चुकानेके लिए पन्द्रह हजार रुपया प्रतिमास दिया करेगी। निकाले जानेवाले सिपाहियोंका वेतन चुकता करनेके लिए एक लाख रुपया अलगसे देनेकी बात भी लिखित रूपसे स्वीकार की गई।

३९

नसीरुद्दीन हैदरको लगा कि उसकी इज़्ज़त अंग्रेजोंने सरेआम लूट ली। यह सच भी था; बादशाह बेगमकी सेनाके लोग और शहरके तमाम नवाब रईस खिल्ली उड़ा-उड़ाकर कहते थे कि अंग्रेज़ोंने शाही सिपाहियोंको

बेगमके सिपाहियोंसे किसी भी प्रकारकी रोक-टोक, छेड़-छाड़ न करनेका आदेश दे सरकार-ए-अवधकी नाक काट ली। नसीरुद्दीन बादशाह बेगमको एक फूटी कौड़ी भी नहीं देना चाहता था। वह उन्हें एक दम तोड़ देना चाहता था। उसके और बादशाह बेगमके मामलेमें अंग्रेजों द्वारा हस्तक्षेप न होनेका विश्वास ही बादशाहबेगमके प्रति उसकी घृणाको बहुत दूर तक बढ़ा ले गया था। वह उन्हें और उनके आश्रित लोगोंको दर-दरका भिखारी बना देना चाहता था। बादशाहबेगमने ही कम्पनी सरकारके सेक्रेट्रीको यह लिखकर भेजा था कि नसीरुद्दीन शाही औलाद नहीं, शायद वही झूठी सूचना इंग्लैंडके बादशाहको मिल गई हो और उन्होंने नसीरुद्दीनकी भेंट अस्वीकार कर दी हो······

"तो क्या ये अंग्रेज़ मुझे भी नवाब वज़ीरअलीकी तरह गद्दीसे उतार देंगे? ये अंग्रेज़ इतने ताक़तवर हैं कि जो चाहे कर सकते हैं?······"

प्रश्न ऐसा था जिसका उत्तर भी नसीरुद्दीन हैदरके मनमें स्पष्ट था। नसीरुद्दीनकी शाही अकड़ आवेश भरे प्रश्नमें उभरती और उत्तरमें वह स्वयं ही दीन-हीन हो जाता था। अंग्रेज़ोंसे उसका वश नहीं चल सकता पर औरोंको वह कुचल देगा—ख़याल फिर लड़खड़ाया, कैसे कुचल सकता है वह? रेज़ीडेन्ट जिसको चाहेगा उसे ही बचा लेगा। "कलको मेरे बाँदी गुलाम अगर मुझसे सज़ा पायेंगे तो रेज़ीडेन्टके पास जाकर फ़रियाद करेंगे और वह उन्हें भी इसी तरह अपनी आड़में ले लिया करेगा जैसे अम्मीजान-हिश्, मुबश्शिरखाँकी कमीनी औलादके सिपाहियोंको अपनी आड़में ले लिया है। बापरे बाप, अंग्रेज़ सबको मेरा जानी दुश्मन बना देंगे! आख़िर क्यों? मैंने इनकी सदा इज्ज़त की है, मोहब्बत की है, सदा इनका फ़रमाबरदार रहा हूँ फिर भी मुझे ये ज़लील कर रहे हैं—क्यों?"

सवालका जवाब निकम्मी झुँझलाहट थी। निकम्मे क्रोधसे उसका कमज़ोर शरीर थरथरा उठा। शरीर पर क़ाबू पानेके लिए उसने ज़ोरसे

सोफ़ाके दोनों हत्थे पकड़ लिये। दलजीत ख़वास एक क़दम आगे बढ़ा, पर शाही रुख देखकर थम गया। नसीरुद्दीन बिना किसी सहारेके अपनी अन्तः शक्तिसे अपने ऊपर क़ाबू पाना चाहता था।

बादशाह ऊँची बारहदरीमें बैठा था। धनिया और दलवी दोनों बहनें भी इस समय शाही सेवामें मौजूद थीं। जबसे धनियाका पलड़ा भारी हुआ दलवी लाख फड़फड़ाती, जतन करती कि अकेले मौक़ा पा जाय मगर धनिया परछाईंकी तरह बादशाहसे लगी रहती थी। एकाध-दो बार अवसर पाया भी, बड़े जतन किये पर बादशाहका मन रंगीनियोंमें निखार लाने तक न रिझा पाई। बादशाहका मन उस वक्त मौज़ू न था। यह महज़ संयोग था कि धनियाको बादशाहके साथ अवसर मिल गया, दलवी भी पा सकती थी। बादशाह दोनों बहनोंको एक-सा चाहता था। दलवीमें अल्हड़पन ज़्यादा था; धनियासे काफ़ी ज़्यादह नमकीन होने पर भी अपनी लापरवाहीकी वजहसे नसीरुद्दीनके मनमें वह सदासे तोला-माशा कम ही बैठती थी। यद्यपि उन दोनों बहनोंके प्रति उसका दैहिक आकर्षण नहीं जागा फिर भी वह धनियासे सदा संतुष्ट रहा था। वह मलिका ज़मानिया, क़ुद्सियाबेगम, जिसकी सेवामें रही उसे सदा संतुष्ट रक्खा। धनिया बड़ी चौकस थी। मालिक किस समय किस प्रकारकी चिन्तामें है, क्या चाहता है, कैसे रसमें बहना चाहता है इसे वह मालिकके चेहरेके हल्के हावभावोंसे ही बख़ूबी समझ जाती थी। महलके ख़ास नौकरोंमें इस टक्करकी योग्यता वाला केवल एक व्यक्ति था—दलजीत ख़वास। दलजीत भी अगर गोरी चमड़ी वाला होता तो डी-रसेट उसके आगे पानी भरता।

कमज़ोर शाही शरीरका स्नायु कंपन थमा। बादशाहके चेहरे और हाथके पंजोंमें ढील आ गई। देह निढाल होकर सोफ़ाकी पुश्तसे लग गई उसके चेहरे पर थकान थी, संतोषकी फीकी कान्ति भी थी। अवसर समझकर धनिया उठी, बादशाहकी गर्दन लटकी थी, आँखें बन्द थीं।

धनियाने फूल-पंखुरीके-से कोमल स्पर्शसे उसके गलेमें पड़ी ज़ंजीरको छुआ। बादशाहमें मानो चौंककर प्राण आगये। ज़ंजीरमें उसके शराबके बक्सकी चाभी थी। लाल आँखें झपटकर खुलीं, धनियाको देखा तो निश्चिन्त हुईं। धनियाने चाभी ली, बक्स खोला, बोतल और प्याला निकाला। बक्स बन्द किया। नसीरुद्दीन बराबर उस ओर देखता रहा। ताली फिर शाहके गलेमें पड़ गई। उसी समय बाहर आकाशमें घन गरज उठा।

दलवीको अपने मनकी आग थामनेमें मशक्कत पड़ रही थी। दलजीत मूर्ति-सा खड़ा सिर्फ़ नजरोंसे जानदार लग रहा था। सहसा अदबसे झुका और पीछे क़दम कमरेसे बाहर हो गया। दलवीने अपने मान महत्त्वकी रक्षाके लिए दबे झटकेके साथ प्याला धनियासे ले लिया, सिर आँखों लगाया और बड़ी अदासे बादशाहके होठों तक ले गई।

बड़ी-बड़ी शाही आँखोंकी टकटकी दलवीके चेहरे पर सध गईं। दलवीने नज़रें मिलाईं, लजाईं, झुकालीं और फिर अपनी मासूम सूरतके साथ पैमाना लिये पुतलीनुमा बन गई।

धनियाने एक-दो बार शाही मौज और दलवीकी अदाको बेलौस नज़र देखा और फिर सामने बारहदरीके बाहर—दरियासे लेकर आसमान तक मूसलाधार बरसातकी बँधी झड़ीसे एक रंग हो रहा था।

नसीरुद्दीन हैदरने टकटकी तोड़ दी प्याला जूठा किया, कहा :"पी जा। प्याली मेरी नज़रोंके सामनेसे दूर कर।"

दलवी यकायक समझ न सकी कि बादशाहने उसका सम्मान किया है या······

नसीरुद्दीनने दूसरी बार तेज़ आवाज़में आदेश दिया। अपने गौरवको कसते हुए शाही झिड़कीको धनियाके सामने सहनेकी खिसियान और डरकी कँपकँपी लिये दलवीने काँपते हाथोंसे एक घूँटमें प्याला ख़ाली कर दिया और फिर उसकी समझमें न आया कि प्यालेको शाही नज़रोंसे हटा

कर कहाँ रख आये। परेशानीमें उसने झटपट आँचलके खूँटमें बाँधकर अपनी पीठकी ओर डाल लिया।

नसीरुद्दीन बच्चेकी तरह खिल-खिलाकर हँसा, फिर तालियाँ पीटते हुए बोला—"खूब! नज़र ओट पहाड़ इसीको कहते हैं। अपना नुक़सान होनेका डर, जानका डर इन्सान कितना चालाक बना देता है! पल्लूकी गाँठ खोल लो दलवी उसमें शराबके प्याले नहीं मतवालोंके दिल बाँधा करो।—धनिया।"

नज़रें धनियासे मिलीं और कुछ कहनेकी ज़रूरत न हुई; वह उनके पास आई, गलेकी ज़ंजीरसे चाभी निकाली और शराबके बक्सकी ओर बढ़ते हुए उसने दरवाज़ेके बाहरकी ओर मुखातिब हो दो बाँदियोंको आवाज़ दी। संगमर्मरकी मेज़ सहित शराब रखनेका कीमती विलायती बक्स बादशाहके सामने उठवाकर ले गई।

दलजीतसिंह खवास बादशाहके फ्रान्सीसी बावर्चीके साथ फिर आ गया। उनके पीछे दो बाँदियाँ नाश्तेकी किश्तियाँ लिये दाखिल हुईं। किश्तियोंमें रक्खी तश्तरियाँ रूमालोंसे बँधी थीं और उनकी गाँठोंपर मुहर लगी थी। फिरंगी बावर्चीने बादशाहके सामने मुहर तोड़ी, एक छोटी मेज़ शाही सोफ़ेके पास और लाकर रख दी गई, तश्तरियाँ उसपर सज गईं। एक खास क़िस्मकी प्लेटमें बावर्चीखानेसे आया हुआ नाश्तेका सामान थोड़ा-थोड़ा रक्खा गया। अगर किसी चीज़में ज़हर होता तो उस तश्तरीपर उसका असर फौरन ही दिखलाई पड़ जाता। लेकिन शाही सुरक्षाके लिए केवल इतनी ही परीक्षा काफ़ी न थी। कुत्ते लाये गये, उनके सामने वे तमाम चीज़ें रख दी गईं। कुत्ते भी सहीसलामत रहे, अब बादशाहको कोई शंका नहीं रह गई थी। अपने हाथसे प्याली भरकर फिरंगी बावर्चीको देते हुए नसीरुद्दीनने कहा: "खुशनुमा मौसमके नामपर—"

बावर्चीने इस सम्मानको बहुत अदबके साथ शाहेअवधके करकमलोंसे प्राप्त किया। शाहने दूसरी प्याली भरी, तीसरी भरी, धनिया और दलजीतको

अपने होठोंसे जुठलाकर दे दिया। दोनोंने झुककर तीन बार सलाम किया, प्यालीको सम्हालकर सर-आँखों लगाया और इस इन्तज़ारमें सबके हाथ रुके रहे कि बादशाह पहल करें।

बरसातकी झड़ी अभीतक टूटी न थी। बादशाहका डर और शंकाओंमें बहता हुआ मन शराबकी रंगीनियोंने थाम लिया था, वह इस समय मस्तीमें था और बहुत हदतक निर्भय भी। फिरंगी बावर्ची जा चुका था। शाही सोफ़ेके नीचे नसीरुद्दीनके क़दमोंमें उसके तीनो विश्वासपात्र बैठे हुए थे। उपयुक्त अवसर देखकर दलजीतने कहा : "देखिए, सर्फ़राजखाँ कलकत्तेसे कब सुर्ख़रू होकर लौटते हैं?"

घनियाने फौरन ही दामन फैला, नज़रें उठाकर कहा : "अल्लाह वो दिन जल्द लाये, मैं दुश्मनोकी आँखोंमें राईनोन और भटकटैयाके काँटे झोंकूँ। अल्लाह करे सब दुश्मनोंकी मैयतें एक साथ निकलें।"

नसीरुद्दीनका क्षणभर हल्का पड़ा मन इन बातोंसे फिर विचार गम्भीर हो गया था। घनियाके कोसने सुन उसे हँसी आई, बोला : "तुम्हारी बद-दुआके असरसे अगर मेरे सारे दुश्मन एक ही दिन मर जाँय तो इंगलैण्डकी पार्लियामेन्टमें सवालोंकी झड़ी लग जाय। कम्पनी बहादुरके डाइरेक्टरान फौरन गवर्नरजनरलकी मार्फ़त फ़ौरन हुक्म देंगे कि नसीरुद्दीन हैदर, जरूर तुम्हारी साज़िशसे ही इतने लोग एक साथ, एक दिन मरे हैं। तुम फ़ौरन तख्तोताज हमारे हवाले करो और फांसीके तख्तेपर चढ़ जाओ।"

अन्तिम बातपर तीनो चिहुँक पड़े, तीनोंके मुँहसे एक साथ मनहूस बातको काटनेके लिए शुभ वाक्य निकले। नसीरुद्दीनने फिर कहा : "अँग्रेज़ोंके लिए बादशाहोंको फाँसी देना कोई नई बात नहीं, ये खुद अपने एक बादशाहको फाँसी दे चुके हैं।" घनिया और दलवी दोनों ही की आँखें एक साथ चमक उठीं, मुँह खुल गये, दोनोंके दोनों हाथ छातियोंपर बँध गये, ज़मानेके ज़नाने चलनने दोनों बहनोंके भाव प्रदर्शनकी ड्रिलका

दृश्य उपस्थितकर दिया। दोके बजाय अगर वहाँ बादशाहकी दस-पाँच विश्वासपात्रियाँ और होतीं तब भी यही ड्रिल होती।

दलजीत खवास जोश ज़रा आगेको आते, सिर और बदनको झटकारते हुए बोला : "जहाँपनाह, मैं हूँ छत्री, आप मेरा गला कटवा डालें तौ भी आज अपने जीकी बात कहे बिना चूकूँगा नहीं।—आप इस नाऊको अबकी जब आये तो लात मारकर निकाल दें। और हुज़ूरको अगर मेरी यह बात नापसन्द आई हो तो जल्लादोंको हुकुम करें कि दलजीतसिंह सारे हरामज़ादेकी बोटी-बोटी काटिकै चील-गिद्धन क खवाय दीन जाय। अब आजु तौ ज़िल्लेसुभानी ते हमई बातपर फ़ैसला लै कै रहब। ये ससरा घरका भेदिया चित भी कराता है और पट भी करता है—"

धनिया दूर दरवाज़ोंको सशंक दृष्टिसे देखती हुई उठी। दलजीतसिंह बड़े जोशमें खोया हुआ-सा बोल रहा था। बादशाह उसके जोशके जादूमें बँधे थे।

वह बारहदरी बहुत ऊँचेपर थी और लम्बी थी। उसके एक ओरसे महलके नीचेका बाग़, सामनेकी सड़क, रेज़ीडेन्सी और शहरी आबादीका कुछ हिस्सा दिखलाई पड़ता था। दूसरी ओर गोमती उस पार किनारेकी मस्जिद, घाट और थोड़ी हरियालीके बाद दाहिनी ओर छोटेसे पिरामिड-नुमा त्रिकोणपर गेंद-सा गोल कमरा बना था जिसमें हर तरफ़ दूर-दूर तक देखनेके लिए, बाहरसे नक्क़ाशीकी उम्दा बेल-से दीखनेवाले झरोखे चारों ओर लगातार बने हुए थे और दूर बहुत-सा हरियाली भरा मैदान छोड़कर बादशाह बाग़की इमारत जब मौसम साफ़ होता, दिखलाई पड़ती थी। इस समय फ़ुहारोंके धुँधलेमें हर चीज़ छिपी हुई थी। धनिया बातोंको गरमाते देख दोनों ओरके दरवाज़ोंपर सख्त पहरेका इन्तज़ाम करनेके लिए उठी थी। बादशाह बारहदरीके बीचमें बैठे हुए थे, उनके अगल-बगल दो-दो महराबें छोड़कर चार-चार बाँदियाँ गुलाम और हरमकी

ज़नानी फ़ौजके हथियारबन्द सिपाही खड़े थे। दोनो ओर दरवाज़ों तक खम्भोंके पीछे इसी क्रमसे सिपाही खड़े थे।

धनियाकी 'माशूका' ग़फ़ूरन बुआ, ज़नानी फ़ौजकी सिपहसालार, आजकल धनियाके बहुत काम आ रही थीं। ऐसा कोई महल नहीं था जहाँका राई-रत्ती हाल धनियाके पास न पहुँचता हो। धनिया परिस्थितियोंसे विवश थी वरना वह नसीरुद्दीन हैदरकी नई मलिक-ए-ख़ास होती। नसीरुद्दीन क़ुद्सिया बेगमकी मृत्युके बाद किसी भी स्त्रीको ऊँचे न उठानेके लिए अपने निश्चय पर अडिग था। वह बहुत बचा पर अंतमें धनियाके जालमें फँस गया। नसीरुद्दीन अपने मन्द पौरुषकी ग्लानिसे कुण्ठित था। उसकी यह कुण्ठा रूढ़ हो चुकी थी। जो चतुर स्त्री उसकी इस कुण्ठाको भुलावा दे सकनेमें समर्थ सिद्ध होती है वह जीत जाती। धनिया नसीरुद्दीनको जीत चुकी थी। बहुत दिनोंका बाँध टूटा, गहरी चिन्ताओंकी घटाएँ घिरीं—नसीरुद्दीनका सच्चा मनबहलाव फिरसे यही हो गया।

धनिया पहले तो यही आस लगाये रही कि बादशाह उसे किसी खुशरौमें अपनी ज़बान-ए-मुबारक नवाब औ बेगमके ख़िताब अता फ़रमानेवाले हैं। मगर यह आस पूरी न हुई। धनिया मौका नाज़ुक देखकर इस बातको छेड़ना अपने हक़में अच्छा नहीं समझती थी फिर भी वह चाहती थी कि उसके हाथमें ओहदा न सही ओहदेकी तमाम ताक़तें आ जायँ। दलजीतसिंह और ग़फ़ूरन बुआके सधे रहनेसे धनिया अपने प्रभावकी योजना कर रही थी। दलवी और रौशनुद्दौला धनियाके आगे विवश थे; उनका दर्प त्रस्त था। धनिया पूरी चौकसी रखती थी। दलवीने कई बार बाँदियों सिपाहियोंमें चाँदीका जाल फैलाया पर धनिया और ग़फ़ूरन बुआकी चौकसी और ख़बरदारीके आगे वह पार न पा सकी। मुस्तैदीका पूरा भरोसा होते हुए भी धनिया दलजीतके जोशमें आते ही

अगली कतारके लौंडी गुलामों और सिपाहियोंको अपनी निगाहके असरमें लाने गई।

धनियाको उठकर जाते देख नसीरुद्दीन हैदरका शाही डर सावधान हो गया। धनियाके आने तक बादशाहने दलजीतको इशारेसे रोक दिया। दलवी मौक़ा झपटकर साक़ी बन गई लेकिन उसका दुर्भाग्य यह था कि यह क्षण बादशाहके लिए गहरे ख़यालोंके नशेका था, उसे ऐसा साक़ी ही रिझा सकता था जो विचारोंके जामपर जाम पिलाये। धनियाकी सतर्कता उसको उपयुक्त क्षणपर सचेत कर गई। वह गम्भीर हो उठा। दलवीके पिलानेपर वह बेहोशीमें हलका-सा घूँट भर लेता और फिर विचारोंमें खो जाता। दलजीतने बादशाहके बड़े मनचढ़े सर्फ़राज़खां डी-रसेटके ख़िलाफ़ इस वक्त खुल्लमखुल्ला मोर्चा साधा था। नसीरुद्दीन ऐसे अचानक गिरफ़्तमें फँस गया था कि दलजीतकी बातसे निकलते न बनता था।

नसीरुद्दीन अँग्रेज़ोंका अनन्य भक्त था अच्छाईका पुतला मानकर उनकी हर चीज़की नक़ल करता था। इधर जबसे कि इंग्लैण्डके बादशाहने उसकी भेजी हुई अमूल्य भेंटें अस्वीकार कीं तबसे नसीरुद्दीनकी अँग्रेज़ श्रद्धा डिग गई। भेंटका अस्वीकार किया जाना बादशाहबेगमको रुपया दिलवाना उनके सिपाहियोंको बेरोक-टोक करना उसे बेहद अखर गया था। उसके तात्कालिक भयके केंद्रबिन्दु अंग्रेज़ रेज़ीडेन्ट और गवर्नर जनरल थे। डी-रसेटकी परवरिश पर दलजीतका ज़ोरदार विरोध नसीरुद्दीन हैदरकी उपयुक्त मनःस्थितिमें किया गया था। यहाँ व्यक्तिगतरूपसे डी-रसेटकी ही कोई ख़ास बात न थी, वह फ़िरंगी था, फ़िरंगी मुसाहिबोंमें सबसे ज़्यादा कांइयाँ था इसलिए अबतक न देखा हुआ शंकाका काँटा नसीरुद्दीन हैदर द्वारा सहसा इस समय देख ही नहीं लिया गया बल्कि उसने कुछ-कुछ चुभन भी महसूस कर ली। धनिया दोनों ओर फुर्तीसे आई गई मगर फिर भी उसे कुछ देर तो लगी ही, दलजीत इतनी देरतक अपनी भाव-मुद्रा ज्यों-की-त्यों कसे बैठा रहा। दलवी कुछ खिलाने-पिलानेके

बहाने नसीरुद्दीनके पास जा बैठी। वह बादशाहकी बेरुखीसे कुछ-कुछ तनी और ऊबी बैठी थी। धनिया आई मानो फिरसे सबमें जान आ गई। धनिया सोफ़ापर न बैठी बादशाहके क़दमोंसे सटकर, उसकी टाँगकी पिंण्डलीपर दबी चुटकीका हाथ फेरती दलजीतके सामने बैठ गई, बोली: "हाँ ठाकुर, अब कहो अपनी बात! मैं पूरी तौरपर तुम्हारी रायसे मुत्तफ़िक़ हूँ। अल्लाह जाने हुज़ूरेआलमको उसमें ऐसा क्या दिखलाई पड़ गया है जो उसपर इतना भरोसा करते हैं। मुझे भी महलोंमें रहते अर्सा हो गया; बच्ची ही थीं जब भरती हुई थीं हम दोनों बहनें। यहाँकी बूढ़ी और मुअज़्ज़िज़ औरतोंसे सुना है कि अँग्रेज़ोंने हमारे साथ क्या-क्या सुलूक़ किये हैं। आखिरको नवाब रिज़डन्ट बहादुरने ही तो उस हज्जामको जहाँपनाह की ख़िदमतमें भेजा था। इसी काफ़िरकी औलाद मुये हज्जामने ही बैठे ठाले विलायतके शाहको तोहफ़े भेजनेकी सलाह दी। लखनऊके बड़े साहबसे लेकर कलकत्तेके लाटसाहबने पहले तो हामी भर ली और बादमें सब मिलकर यह करिश्मा कर गये। अजी इन सबकी सधी-बँधी है। लो मैं भी साफ़-साफ़ कहे देती हूँ, ज़िल्लेसुभानी चाहें तो तुम्हारे साथ-साथ मेरी गर्दन भी क़लम करवा सकते हैं।"

नसीरुद्दीन फीकी हँसी हँस एक जमुहाई और अँगड़ाई ले उठ खड़ा हुआ, बोला: "तुम दोनोंकी गर्दनें क़लम करवा देनेसे भी यह मुमकिन नहीं कि अँग्रेज़ोंके फन्देसे मेरी गर्दन बचनेका टोटका सध जाये। बाप-रे-बाप, ऐसी शातिर क़ौम दूसरी नहीं देखी, बड़े-बड़े समन्दरोंकी थाह है, अँग्रेज़के पेटकी थाह नहीं।"

दलजीत बोला: "यह माना सरकार अँग्रेज़ोंके चंगुलसे पूरी तौरपर निकस पाना नामुमकिन है, फिर भी डाकुओंसे जो बचाया जा सके वह ही सही। हज़ूर, यह नाऊका बेटा बड़ा बना हुआ है। इसने एक ऐसा गन्दा काम किया था कि जिससे लखनऊकी सारी ख़िलकत तौबा-तौबा

पुकार उठी थी।" नसीरुद्दीनने दलजीतकी ओर देखकर आँखोंसे पूछा "क्या ?"

दलजीतने बादशाहबेगमसे कोठी फ़रहबख्शमें लड़ाई होते वक्त डी-रसेटके कपटपूर्ण आदेशसे बारह इमामोंके रौज़ोंमें गन्दगी फिकवानेकी बात कह सुनाई।

नसीरुद्दीन आगबबूला हो उठा। अबतक डी-रसेटके विरुद्ध किसी प्रत्यक्ष बेईमानीका चित्र वैधानिक रूपसे चूँकि नहीं पेश किया जा सका था इसलिए उस बन्धनकी मुक्तिस्वरूप दलजीत द्वारा लगाया गया यह आरोप उसे बहुत ज़ोरदार लगा।

धनिया बोली, "देखो आप गया है और भाईको यहाँ छोड़ गया।"

नसीरुद्दीनको यह दूसरा प्रभाव मिला। वह दृढ़ निश्चयपर पहुँच गया। उसने दलजीतसे कहा: "दलजीत तुम्हारी अर्ज़ी मंजूर की जाती है।"

दलवी जो बहुत देरसे बोलनेका मौक़ा नहीं पा रही थी एकाएक बोल उठी: "हुजूरे आलम, कनीज़की भी एक अर्ज़ी है, क़बूल करें। अपने बक्सोंकी चाभियाँ मुझे, धनिया और ठाकुर तकको न सौंपा करें। ज़माना इतना नाजुक जा रहा है कि अपनेको रोक पाना इन्सानके लिए बहुत मुश्किल है।" धनिया खामोश रही लेकिन दलजीतने बादशाहकी ओर एक टक देखकर कहा: "दलवीकी बात तो ठीक है पर दुनियामें कोई इन्सान इतना अकेला नहीं रह सकता कि किसी पर भरोसा ही न करे। वैसे दलवी चाहे तो अलग रहे, ये धनिया चाहे तो—"

"किसीके चाहनेका सवाल नहीं उठता, तुम लोगोंके सिवा मेरे दुनियामें अपना कहलानेवाला है ही कौन ? उम्र छोटी पाई मगर तजुर्बा खूब मिला। बादशाहके घर पैदा होकर भी लावारिस रहा; एक सल्तनतके तख्तोताजका मालिक होकर भी फिरंगियोंका ग़ुलाम रहा। मेरा कोई अपना न हुआ मैं किसीका न हो सका।"

"ऐ वा' जहाँपनाह ये कैसी बातें कर रहे हैं आप। ऐ वो बदक़िस्मत

हैं जो आपके न हुए और उन खुशनसीबोंकी भी कमी नहीं जिनके दुःख-दर्दमें आप अपनोकी तरह मददगार न हुए हों। बहुत देखे मगर आप-सा कोई नहीं देखा।" कहते-कहते धनियाकी आँखे भर आईं।

नसीरुद्दीनकी अक्सर बँध जानेवाली पागलोंकी-सी टकटकी धनियाके मुखड़े पर लग गई। टकटकी तोड़ते हुए नसीरुद्दीन जब सिर घुमाकर दूसरे ध्यानमें आया तो सहसा कह उठा : "अब की किसी ज़िन्दगीमें मैं बादशाह बना तो इंग्लैण्डकी तरह पार्लियामेण्ट ज़रूर बनाऊँगा। एक आदमीकी बादशाहत उसूलन ग़लत है। इस वक्त चूँकि मैं संजीदा हूँ इसलिए समझ रहा हूँ कि बाज़ औक़ात मैंने लोगोंको बड़ी तकलीफ़ें भी दी हैं। अगर हमारे यहाँ भी पार्लियामेण्ट होती तो मुझसे या दीगर बादशाहोंसे अक्सर जो ज़ुल्म हो जाते हैं वे न हो पाते।"

दलवीके चेहरे पर बहुत देरसे अलग-थलगपनेका भाव धनियाकी बारीक नज़रोंमें झलक रहा था, वह उसे यहाँसे हटानेकी सोचने लगी। अरसेसे शाही मुहर वाली जड़ाऊ सन्दूकची दलवी ही निकाल कर लाया करती थी। धनियाने उसे ज़रा देरके लिए टालनेका उपाय सोचा, हाथ जोड़कर बोली : "आलीजाह, ठाकुर और दलवी तो अपनी-अपनी अर्ज़ी लगा चुके अब दरबारमें मुझ ग़रीबकी सुनवाई भी हो जाय।"

नसीरुद्दीनका प्याला अर्ज़ीके साथ ही फिर भर उठा और उसने एक सांसमें ख़ाली भी कर दिया; फिर बोला : "ये कुम्हारके खिलौने बादशाहका दरबार है धनिया। अर्ज़ी लगानी है तो सबसे बड़े दरबारमें पेश करो—अपनी भी, मेरी भी। या खुदावन्देकरीम, या रहीम, मैं बहुत गुनहगार होते हुए भी बड़ा बेगुनाह हूँ। मैंने कुछ नहीं किया, कुछ भी नहीं किया।"

नसीरुद्दीन फूट-फूटकर रोने लगा। धनिया दलवी दलजीत सब रोने लगे; रो-रोकर समझाने लगे कि हुज़ूर, अपनेको हिरास न करें, दिल इतना छोटा न करें वग़ैरह वग़ैरह।

बड़ी तसल्लियोंके बाद नसीबों जले नशीले भोले बादशाहके आँसू थमे। धनिया और दलवी दोनों ही बादशाहके दोनों ओर रूमाल लेकर बैठ गईं, आप रोती जाती थीं बादशाहके आँसू पोछती जाती थीं। इस तरह सुकून आया, दलजीतने बादशाहके वास्ते हर वक्त अपनी जानकी हाज़िरी देनेके लिए तुरत अपने म्यानसे कटार निकाल ली और अपनी छातीको दुश्मन समझकर उसका हाथ झपटा। धनिया दलवीके आँसुओंने शाही आँसू सुखा दिये थे, दलजीतके इस नाटकने धनिया दलवीके आँसुओंको भी सुखा दिया। बादशाहने 'खबरदार' कहकर दलजीतको रोका दलजीत कटार छोड़ जहाँपनाहके क़दमोंमें सिर रखकर फूट-फूटकर रोने लगा। धनिया बोली : "सरकार मेरी सुनिये, आप रौशन नवाब और ग़ालिबजंग दोनोंको यह हुक्म दीजिए कि आप एक हफ्तेके बाद शहरका इन्तज़ाम देखेंगे। इससे रिआयामें अच्छा असर पड़ेगा। इस वक्त रियायाको अपना दोस्त बनाकर ही हम जीत सकते हैं।"

धनियाने 'हम' शब्दका प्रयोग हूबहू उसी तरह किया जैसे क़ुद्सिया बेगम किया करती थी। बादशाह गम्भीर बैठा रहा, फिर बोला : "ठीक कहती हो।"

धनिया दलवीकी ओर देखकर बोली : "छोटी, जहाँपनाहसे ताली ले और मुहर पेटी, लिखनेका सामान ले आ।" कहते हुए उसने खुद शाही गलेकी पड़ी दूसरी ताली निकालकर पास ही रक्खी छोटी जड़ाऊ पेटी खोली। उसमें बादशाहके महत्वपूर्ण स्थानोंकी तालियाँ रहती थी। धनियाने कामकी ताली दलवीको दे दी।

दलवी जब दूर निकल गई तब धनियाने बादशाहसे कहा : "हुज़ूर सुनिये, खुदा ऊपर है, आप मैं और ठाकुर यहाँ है, पाँचवां चिड़ियाका पूत भी न जान पाये—देखिये ज़माना नाज़ुक है, अच्छे बुरे दिन राजा रंक सभीपर आते हैं इसकी कोई बात नहीं। क्या आरामोंका ठेका दुश्मनोंने और तकलीफोंका हमने लिया है जो सदा एकसे दिन बने रहेंगे।

आप राज-काजमें इस वक्त पूरी दिलचस्पी दिखलाते रहिये; रिआयासे मिलना-जुलना न छोड़िये। शहरके रईस नवाबोंको अपनी तरफ़ और खींचें। ठाकुर दौड़-धूपमें कोई कसर नहीं रक्खेंगे और जहाँपनाह आड़े वक्तपर ये निगोड़ा नाऊका बच्चा आपके किसू काम न आयगा। सल्तनत-की निगरानीमें हुज़ूरका ध्यान रहेगा तो दिन भर मनबहलाव भी होगा और ज़माने हालपर उसका बड़ा असर भी पड़ेगा।" दलजीत भी हाँ में हाँ मिलाता रहा, धनिया दम देती रही। उसने इशारतन् यह भी कहा कि यों तो रौशन नवाब भी बहुत अच्छे हैं और दलवी भी बादशाहपर जान देती है मगर चूँकि रौशन नवाब बेपेंदीके मटके हैं और छोटीकी आँख उनसे लड़ गई है इसलिए हर बात छोटीके सामने कहना ठीक नहीं।

दलजीतने फिर समर्थन किया, बादशाहने भी हामी भरी।

आज बादशाहके चार-प्रमुख विश्वासपात्रोंमें दो उसके दिलसे उतर गये। विलायती नाऊ एकदम उतर गया; उसका तो अन्त सोच डाला। जैसे फ़ज़लअली, आग़ामीर और ग़ालिबज़ंग कभी जड़से उखाड़े गये थे वैसे ही विलायती नाऊ भी उजाड़ा जायगा। इसके अलावा दलवीकी ओरसे भी उसे सचेत रहना चाहिए। यह दूसरा होश उसे अखरा। नसीरुद्दीनने कहा : "दलवीने चुना भी तो बूढ़ा बन्दर?"

धनियाने आँखें नचा धीरेसे कहा : "हिर्स में।" और फिर औसत स्वरमें कहने लगी: "दिलकी बुरी नहीं है छोटी मगर..."

अब अगर मगरकी ज़रूरत न रही थी। धनियाके हिर्समें दलवीने रौशन नवाबसे गाँठ जोड़ी थी, यह विचार ही उसे चिढ़ानेके लिए काफ़ी था। रौशन नवाब पर उसे पूरा भरोसा न था। उसे अब दोके सिवा किसी पर भरोसा न था। और उन दो पर भी भरोसा था? — वह विश्वासके साथ कुछ नहीं कह सकता था।

४०

विलायती नाऊ डी-रसेटके टलने और अंग्रेज़ मास्टरके इस्तीफ़ा देनेके बाद दलजीत और धनियाका भाव बढ़ा। शहरके राजनीतिक क्षेत्रमें एक अफ़वाह और भी गर्म हुई कि नसीरुद्दीन हैदर सआदत ख़ाँके बेटे नवाब नसीरुद्दौलाकी सदारतमें ख़ास दरबारियोंकी काउन्सिल बना, आप धनिया और दलजीतको लेकर योरप और इंगलिस्तानकी सैरको जा रहे हैं। इस अफ़वाहको लेकर रेज़ीडेन्ट, नवाब नसीरुद्दौला, बादशाह बेगम, हकीम मेहदी—और जितने ख़ास कम ख़ास लोग थे सभी चक्करमें पड़ गये। कुछ दिनों तक इस अफ़वाहका कहीं ओर-छोर न मिला, बस रोज़-बरोज़ गर्माती रही। अन्तमें बादशाहसे पूछा गया तो उन्होंने इस बारेमें कहा, मैं छ नहीं जानता।

दस बारह रोज़में अफ़वाह ठन्डी हुई मगर तब तक धनिया और दलजीतका काम बन चुका था। नसीरुद्दीन हैदर शाह जो अब तक शहरकी अफ़वाहोंके अनुसार मरण किनारे आ लगा था, गद्दीसे उतारा जाने वाला था, कम महत्वका आदमी हो गया था, अब इस नई अफ़वाहके साथ फिर राजनीतिक आकर्षणका केन्द्र बन गया। बहुतसे बड़े-बड़े लोग धनिया और दलजीतकी सेवामें नज़रें लेकर सलामें झुकाने आने लगे। सल्तनत-ए-अवधकी राजनीतिके सिरमौर अब तक बेगम और वज़ीर पद धारी लोग ही हुआ करते थे अब महरी और ख़वास हो गये।

राजा ग़ालिबजंगसे धनियाकी पुरानी राह रस्म थी। उन्होंने फिरसे उस नातेको गहरा करना शुरू किया। बादशाह बेगमके यहाँ भी बड़ी-बड़ी मिस्कौटें चलने लगीं। नवाब नसीरुद्दौलाके राजनीतिक गुटमें नीतिपरिवर्तन पर विचार किया जाने लगा। हकीम मेहदी जो अवधसे शाही ख़त्म होने और अंग्रेज़ी अमल आनेका प्रचार करते फिरते थे, नये सिरेसे इस बातकी काटमें दौड़ने-धूपने लगे कि नसीरुद्दीनको विलायत जानेका हुक्म नहीं

मिलेगा । रेज़ीडेन्टने शाही ख़ज़ानेसे बादशाह बेगमके सिपाहियोंको तनख्वाह बाँटनेके लिए एक लाख रुपया भिजवा दिया । हकीम मेहदीने बेगमके सिपहसालार भिश्ती इमाम बख्शको गहरी रिश्वत चटाई ।

× × ×

इल्मास बाग़के फाटक पर ढाई-तीन हज़ार हथियार बन्द लोगोंका मजमा जुड़ा हुआ था । आज उनका वेतन बटने वाला था । बादशाह बेगमके प्रमुख कर्मचारी स्वयं सिपाहियोंके सरग़नाओंसे घुल-मिल कर बेगम साहबाकी ओरसे सद्व्यवहार प्रकट कर रहे थे । उन्हें यह संकेत दिया जा रहा था कि सिपाही बरख़ास्त नहीं किये जा रहे; यह महज़ दिखावा है । तुम लोग पैसे लो, आस-पासके जंगलोंमें होशियारीसे छिपे रहो और हर दम तैयार रहो ।

इल्मास बाग़के बाहर चारों ओर हँसी-खुशीके ठहाके लग रहे थे; कहीं जवान हँसी-हँसीमें एक दूसरेसे दौड़की होड़ ले रहे थे, कहीं कोई उस्ताद दो-चार नयोंको अपने आस-पास जमा कर लाठीके नये-नये दाँव दिखला और सिखला रहा था; कोई अपने चौके पानीसे निपट चुका था कोई निपट रहा था, ताड़ी महुआकी कुज्जियों पर कुज्जियाँ चढ़ाते हुए बहुतेरे. अलमस्त आस-पास गाँवोंसे घिर आयी पतुरियोंका नाच देखनेमें मगन थे; और इस तमाम दौरमें धीमी-धीमी कनफुस्कियाँ भी हर तरफ चल रही थीं, हर तरफ़ बादशाह बेगम और मुन्नाजानकी महिमा बखानी जा रही थी । लोग बाग बड़े गर्वसे इस बातकी घोषणा कर रहे थे कि परम न्याय प्रिय कम्पनी बहादुरकी सरकारने बादशाह बेगमका मान रख कर उनके सिपाहियोंकी इज्जतकी और शाही सिपाहियोंको उनके साथ किसी प्रकारकी रोक-टोक न करनेका कड़ा आदेश दे उनकी (शाही फ़ौजकी) इज्जत उतार ली । लोग बड़े खुश देख पड़ रहे थे । बड़े-बड़े शाही ओहदे दारों, यहाँ तक कि बादशाह नसीरुद्दीन हैदरकी भी भोंडी नक़लें उतारते हुए लोग उनका

मखौल उड़ा रहे थे। सरकारी गोयन्दे इस मजमेंमें फैले हुए सारा राज़ ले रहे थे; अंग्रेज़ोंके आदमी भी मौजूद थे पर वहाँ छिपानेको था ही क्या—सिर्फ़ एक बात कि सेना बरख़ास्त नहीं की जा रही—और सारी निन्दा तो उजागर थी। छिपावमें और जो बात हो रही थी वह इल्मास बागकी कोठीके अन्दर एक कमरेमें हो रही थी, बादशाह बेगम और हकीम मेहदी परदेकी आड़ ले बातें कर रहे थे।

बादशाह बेगम हकीम मेहदीकी बात बड़े गौरसे सुन रही थीं; वे कह रहे थे "मैं इस घरका पुराना नमकख्वार हूँ, ख़ुदा गवाह है मेरी नीयत साफ़ है मौका देखकर मैंने यही मुनासिब समझा कि हुज़ूरकी खिदमतमें वह बात ज़रूर पेश कर दूँ जो आपके हक़में हर तरहसे अच्छी रहेगी।" हकीम मेहदी दम भरके लिए रुक गये; परदेके उस पार सन्नाटा था।

हकीम मेहदीने फिर कहना शुरू किया: "मैं ख़ुदाकी गवाहीमें क़ुरान शरीफ़की क़सम खाकर हुज़ूरको फिर यक़ीन दिलाता हूँ कि बेगम आलियाकी ख़िदमतमें ख़ुद अपनी रूहका हुक्म पाकर ही हाज़िर हुआ हूँ, मेरे रोएँ-रोएँ में बिंधा आपका नमक मुझे अपनी निगरानीमें हुज़ूरके कदमों तक पहुँचा गया है और वही इस वक्त ज़बानसे बोल रहा है...माँ होनेकी वजहसे यूँ खबर शायद आपको बुरी लगे, सुलेमान जाह या तो अब कोई दिन जाता है जब सरेराह मजनू बने डोलते नज़र आयेंगे—या फिर जैसा कि वह ख़ुद अपनी ज़बान-ए-मुबारकसे फ़रमाया करते हैं कि ख़ुदा न करे, नसीबे-दुश्मना ज़हर खा लेंगे—[गहरा निश्वास छोड़ कर] क़िस्मतको कौन मेट सकता है? औलाद लाख बुरी निकल जाय मगर माँकी मामता क्या शय है इसका ध्यान रखना भी इंसानकी नाज़ुक-खयालीसे ही तअल्लुक़ रखता है। ग़ुलाम सब सोच-समझ कर ही हाज़िर हुआ है...हुज़ूरके हक़ में यही बेहतर होगा कि इंग्लिशोंसे किसी किस्मका भी बिगाड़ न करें और मैं इस बातका यक़ीन दिलाता हूँ कि कैसा भी वक्त पड़े सल्तनते इंगलिशिया आपके जायज़ हुक़ूक़, पेन्शन और रुतबेमें किसी तरहकी कमी न होने

देंगी। हुज़ूर रेज़िडेण्ट बहादुर और गवर्नर जनरल बहादुर बेगम आलियाका बड़ा खयाल रखते हैं। बेगम आलियाका मुबारक नाम लन्दनके अखबारोंमें अक्सर शाया करते रहना अपने लिए फ़ख्रकी बात समझते है—"

"आप कहना क्या चाहते हैं ?" बादशाह बेगमने पूछा।

सधी आवाज़में हकीम मेहदीने कहा : "बात तो अर्ज़ कर चुका बेगम आलिया। कम्पनी सरकारके बाँधे हुए सियासती नक्शेमें हमारी तरफ़से किसी क़िस्मका भी अटकाव डालना मुनासिब नहीं। हक़ीक़त यह है कि कम्पनी सरकारकी इंसाफ़ पसन्दीने शियोंको यह सल्तनत बख्शी है। हमें उनका हर तरहसे शुक्र-गुज़ार होना चाहिए···हो सकता है कि अवधकी सल्तनत कम्पनी अपने अमलमें ले ले।"

"किसीकी मजाल क्या कि तलवारसे तलवार भिड़ाये बग़ैर ही हमारी सल्तनत हमसे छीन ले। मैं लोहा दूँगी।"

"हर शख्स हुज़ूरकी ज़बान-ए-मुबारकसे ऐसे ही बुलन्द खयालात सुननेकी आस रखता है। मगर हक़ीक़त—"

"मैं नादान नहीं हूँ हकीम साहब, आप जिस बातको कहनेके लिए तकल्लुफ़के क़फ़समें फड़फड़ा रहे हैं वह यह है कि मैं अपने मुन्नाजानका हक़ न जताऊँ। यही न ?"

"हुज़ूर सब जानती हैं, हुज़ूरकी रूहमें खुदाका नूर है। खुद सुलेमान जाह नवाब मुन्नाजानके हक़में काँटे बो चुके हैं।"

"सुलेमान जाह गलती कर सकता है। गलती मुझसे भी हुई कि मैंने एक बाँदीके अफ़वाह उड़ाने पर यक़ीन कर लिया था और फिर जब राज़ खुला, तो वह मुँह काला कर दफ़न हुई। फिर मुन्नाजानकी मांको मैंने खासतौर पर चुना। दुनिया कुछ भी कहे मगर अब मैं सचको नहीं छिपा सकती, ये औरतकी इज़्ज़तका सवाल है। यह इंसानकी पैदाइशसे सीधा तअल्लुक़ रखने वाला सवाल है। मुन्नाजान नसीरुद्दीनकी औलाद है। मैं

पूछती हूँ लोग क्या अन्धे हो गये हैं, हकीम साहब ? बाप-बेटेकी सूरत एक जैसी है, आदतें भी वैसी ही हैं, सूरजकी रोशनीको झूठ कहनेका हौसला कौन रख सकता है ?"

हकीम मेहदी बहुत विनम्रतासे अपनी बात दुबारा आगे बढ़ाते हुए बोले : "हुज़ूरका फ़रमाना बजा है लेकिन इसे क़िस्मतकी ही खूबी समझिए—और क्या कहा जाय—नवाब मुन्नाजान बहादुरको नसीबकी परीने यही लिख कर दिया होगा कि खुद उनके बाप दादा ही दुश्मन हो जायँ। गवर्नर जनरल बहादुरका कोई क़ुसूर नहीं, बादशाह सलामत खुद अपने दस्ते मुबारक़से दो दो बार लिख चुके हैं। नवाब नसीरुद्दौलाके लिए विलायतसे कम्पनीके डाइरेक्टरानकी मंज़ूरी भी आ चुकी है—"

परदेकी दूसरी ओर बादशाह बेगमके गोरे मुखमण्डल पर क्रोधकी लपटें उठ रही थीं। एक बार तो वे उत्तेजनामें कुरसीसे उठ खड़ी हुईं। दासियाँ घबरा कर उन्हें देखने लगीं। परन्तु हकीम साहबको अन्दरकी नब्ज़का पता न चला। बादशाह बेगम कुछ सोचती हुई खामोश, उत्तेजित खड़ी रहीं।

"दरबार वकील ग़ुलाम यहिया, वसीअली खाँ, राजा बखतावर सिंह मुज़फ़्फ़रुद्दौला, सुभानअली खाँ—किन-किनके नाम गिनाऊँ हुज़ूर। सभी वक्त देख कर नवाब नसीरुद्दौलाके साथ हैं। रौशनुद्दौला अपने आपको धोका दे रहे हैं, बड़े चालाक बन रहे हैं। सब देख परख कर ही हुज़ूरकी खिदमतमें अर्ज़ करने आया हूँ। अगर आप इस ग़ुलामकी बातों पर टुक कान देनेकी तकलीफ़ गवारा फ़रमायेंगी तो हुज़ूरको किसी क़िस्मकी परेशानी नहीं उठानी पड़ेगी। नवाब मुन्नाजान बहादुरकी पेन्शनका भी माक़ूल इन्तज़ाम हो जायगा।"

बेगम शान्त, गम्भीर स्वरमें बोली : "आपकी नेक सलाहके लिए बहुत-बहुत शुक्रिया। आप हीके ज़मानेमें मेरे मुन्नाजानके खिलाफ़ सुलेमान जाहने लिखा था। और आपही आज यह नसीहत देने आये

हैं !"—बेगम सहसा परदेसे बाहर निकल आईं। हकीम मेहदी उन्हें देख कर बा अदब दोनों हाथ बाँधे सिर झुका कर खड़े हो गये। बादशाह बेगम कहती रहीं : "मैं ताउम्र अपने नसीबसे लड़ती रही हूँ हकीम साहब, मुझे अब आँचोंसे डर नहीं लगता। मेरे ज़ायचेमें लिखा है ज़िन्दगी भर लड़ कर भी अपना हक़ हासिल न कर पाऊँगी। न सही, मगर कोई यह तो न कहेगा कि सैयिद मुबश्शिर खाँकी बेटी, और नवाब सआदतअली खाँकी बहू भी उस वक्त ख़ामोश बैठी रह गई थी जब कि सल्तनते-अवधके बड़े-बड़े नमकहलाल सरदार अंग्रेजोंके हरममें चूड़ियाँ पहन कर बैठ गये थे।"

हकीम मेहदी बगैर जवाब दिये ही आदाब पेश करते हुए बा-अदब तशरीफ़ ले गये।

बादशाह बेगम कुछ देर सोचती खड़ी रहीं, उनका निश्चय दृढ़ हो चुका था। वे मुन्नाजानको उसका हक़ दिलानेके लिए कृत संकल्प थीं। कोई उन्हें अपने निश्चयसे डिगा नहीं सकता था।

सैनिकोंको लाख रुपया मिला। फिर भी पूरा न पड़ा। दुबारा फिर एक लाख रुपया मँगाया।

रौशनुद्दौला बादशाहकी खिदमतमें मंज़ूरी माँगने गये। बादशाह चिढ़ उठा, झुँझलाकर काग़ज़ पटकते हुए बोला : "ताजके दुश्मनोंके लिए शाही ख़ज़ानेमें रुपया नहीं है। जाओ।"

रौशन नवाब फिर भी खड़े रहे। नसीरुद्दीनने उनकी तरफ त्योरी चढ़ाकर देखा। एक झलक नज़रें मिला फिर बा-अदब उन्हें झुका, हिचकते हुए बोले : "रेज़ीडेन्ट बहादुरने सिफ़ारिशकी है आलमपनाह।"

"मैं उस सिफ़ारिशको भी नामंज़ूर करता हूँ। चले जाओ।"

रौशनुद्दौला सलामें झुकाते हुए चले गये। थोड़ी ही देर बाद राजा ग़ालिबजंग आये। "क्या है राजा ?" बादशाह सलामतने पूछा। "गुलाम खिदमतमें कुछ अर्ज़ करना चाहता है ?"

बादशाहने कोई जवाब नहीं दिया। ग़ालिबजंगने फिर कहा :" ज़िल्ले सुभानीसे कुछ अर्ज़ करनेकी इजाज़त चाहता हूँ।"

"अर्ज़ी पेश हो।"

"हुज़ूर, रेज़ीडेन्ट बहादुरके मीर मुंशी आये हैं।"

नसीरुद्दीन चमक उठा। त्योरियोंके बल ठीक तरह उतर भी न पाये थे कि फिर चढ़ गये। नसीरुद्दीन झपाटेके साथ बोला : "मैं मुब्रशिशर खाँ की बेटीको,अपनी मंज़ूरीसे एक छदाम भी न दूँगा ग़ालिबजंग।"

राजा ग़ालिबजंगने बेझिझक हो उत्तर दिया : "साहबे आलीशानका हुक्म टाला नहीं जा सकता आलम पनाह। आप बादशाह हैं मगर हम लोग मुलाज़िम हैं सरकार। जैसे आपके वैसे कम्पनी बहादुरके। हुज़ूर रेज़ीडेन्ट बहादुरने अभी मुझे बुला कर यह हुक्म दिया है कि ज़िल्ले सुभानीकी मंज़ूरी हासिल करूँ।"

"और अगर मैं मंज़ूर न करूँ ?"

"कम्पनी सरकारके नुमाइन्देकी सिफ़ारिश नज़र अन्दाज़ नहींकी जा सकती जहाँ पनाह।"

नसीरुद्दीनकी मुट्ठियाँ भिंच गई, गुस्सेसे उसका सारा बदन पत्तेकी तरह काँप उठा। बोला : "तू—मुझे हुक्म देने आया है ?"

"मेरी क्या मजाल है हुज़ूर, हुक्म तो मीर मुंशी इल्तफ़ात हुसैन सुनाने आये हैं।"

"एक अदना अहलकार मुझे हुक्म सुनायेगा ?—कोई है ! गिरफ्तार करो इस बदतमीज़को। कमीने, नमकहराम वह दिन भूल गया जब तुझे मैंने पिंजरेमें लटका कर रक्खा था ?"

कुछ वर्ष पहले हँसी-हँसीमें बात कहते हुए राजा ग़ालिबजंग प्रचण्ड शाही कोपके भाजन बन चुके थे। नसीरुद्दीनने उनको तथा उनके परिवारके स्त्रियों बच्चों बूढ़ों तकको एक साथ बन्दी बना कर उनकी जमा-जायदाद छीन ली थी तथा उन्हें पिंजरेमें बन्द कर रक्खा गया था। ग़ालिबजंग

अंगरेज़ोंकी कृपासे ही मुक्त होकर पुनः अपना पद पा सके थे। राजा ग़ालिबजंगने उसके बादसे नसीरुद्दीन हैदरको कभी भूलसे भी नाखुश करनेका साहस नहीं किया था। किन्तु आज बादशाहके गिरफ्तारीका आदेश देने पर ग़ालिबजंगने मुसकरा कर जिन्दगीमें पहली बार मालिककी नज़रोंसे नज़रें मिला कर ज़बानसे अदबका नाटक करते हुए कहा : "हुज़ूर नाहक तकलीफ़ फ़रमा रहे हैं। इस बार कोई मुझे गिरफ्तार करने नहीं आयगा। और सरकारको वह एक लाख रुपया मंज़ूर—"

पास ही सजे हुए पीतलके विलायती पुतलेको उठा कर नसीरुद्दीन हैदरने राजा ग़ालिबजंग पर खींच मारा।

राजा फुर्तीसे कतरा गया, और फिर अदबसे सलाम कर तेज़ीसे बाहर चला गया। नसीरुद्दीन हैदर उसके पीछे दौड़ा लेकिन दरवाज़े तक ही गया और जैसे अपने क्रोधकी मान रक्षाके लिए ही उसने फटा फट दरवाज़े बन्द कर अन्दरसे सिटकनी चढ़ा ली।

४१

महलके एक कमरेमें धनिया महरी और राजा ग़ालिबजंगमें धीरे-धीरे बातें होने लगीं।

ग़ालिबजंग बोले : "तुम एक बार हाँ कह दो धनिया, तुम्हारे क़दमों पर दौलत लुटा दूँगा।"

"भाई, मुझसे ये नमक हरामी न होगी।"

ग़ालिबजंगने धनियाके कहनेको अदा पर रीझ कर छाती पर हाथ रक्खा, कहा : "हाय, क्या नमक बोलता है तुम्हारी हर अदामें! सुनो, अगर मलिक ए-खास बननेका सपना देख रही हो तो—"

"रहने दीजिए, मुझे आपकी सलाहकी ज़रूरत नहीं और न मुझे दुलारी या बिसमिल्लाकी तरह चढ़ कर गिरना है। मैं तो उस भोले भाले

इंसानको रौशन नवाब और राजा ग़ालिबजंग जैसोंकी नज़रेबदसे बचा कर रखनेमें ही अपनी उम्र तमाम कर दूँगी।"

ग़ालिबजंग मुसकराये, कहा : "खयालोंमें ज़रूर बचाये रक्खोगी बीबी, मानता हूँ। और हाँ, क्या रौशन नवाब भी यही पैग़ाम लेकर आये थे?"

मुँह पर पल्ला ढाँप हँसते हुए धनिया बोली : "सिर्फ़ रकम ही नहीं निकाह पढ़वानेका वादा भी किया है।"

"तुमसे?"

"दलवीसे। मेरी तो बड़ी इज्ज़त करते हैं। हर साँसके साथ, उठते-बैठते कोसते हैं।"

राजा ग़ालिबजंग तेज़ पैनी नज़र डाल फिर भोले भाले बन कर कहने लगे : "हाँ, हवाएँ मुझसे भी कुछ कह तो गईं थीं—"

"क्या?"

"कोई खास बात नहीं, यही कि तुम्हारी जीतने तुम दोनों बहनोंके बीचमें दरार डाल दी है।"

धनियाका कलेजा उचक कर उसके मुँह पर आ बैठा, तड़प कर बोली : "क़िस्मतसे किसीको क्यों जलन हो। तदबीरकी कमी किसी तरफ़से भी न हुई थी। रौशन नवाबने तो यहाँ तक मेरे हक़में काँटे बोये कि मौक़े-मौक़ेसे और तरह-तरहसे बादशाहको मेरी ओरसे बदगुमाँ किया, नापाक हज्जाम तकके उल्टे-सीधे कान भरे मगर खुदा मेहरबान था, बाबाकी मेहर मुझ पर थी—"

राजा ग़ालिबजंगने खुली सावधान आँखोंसे देखा, पूछा : "वे बाँदियाँ तुम्हारी ही साज़िशका शिकार थीं?"

"मेरी क़िस्मतसे वे पकड़ी गईं और बाक़ी सारा काम मेरा और मेरी माशूक़ाका था।"

"तुम्हारी माशूक़ा!" राजा ग़ालिबजंग चौंक और मज़ाक भरी नज़रोंसे देखने लगे।

धनियाकी भँवों पर बनावटी गुस्सेके बल पड़े, बोली : "निरे गँवार होजी, इसी अक्ल पर सिपहसालारी चली तभी तो सल्तनत यों दूसरोंकी मुँहताज हुई। कमज़ोरकी जोरू मुहल्लेकी भौजी क्यों न बने ?" धनिया बात बदल कर आगे बढ़ा ले गई।

अधेड़ उम्रके राजा दर्शनसिंह ग़ालिबजंग अपने फूले शरीर और बड़े-बड़े गलमुच्छोंके साथ झेंपते हुए एकदम खिलौना बन गये; धनिया हँस दी; वे गिड़गिड़ा कर बोले : "किसी एक को मत कोसो; आपाधापीके ज़मानेमें गाय खुद अपना ही दूध पीनेकी फ़िराक़में रहती है—"

"बेचारी गाय नहीं राजासाहब, ओहदेदार कहिए।"

राजा डबल कटे, मूड़ी हिला कर बोले: "मैं वही कहने जा रहा था—"

"ओहदेदार गाय कैसे हो गये ?"

"गायसे भी बदतर। एक आदमीकी सरकारके निज़ाममें यही हाल होता है। इसी नुत्फ़-ए-कमीनने मुझे पिंजरेमें बन्दकर रक्खा था, मेरी रानियाँ, मेरे बूढ़े बीमार वालिद—"

"जाने दीजिए राजा साहब। हरे घावको खुरचनेका नतीजा अच्छा नहीं होगा। पागलकी करनीका बुरा क्या मानना। आप मर्दोंको भला क्या सहना पड़ता होगा जो हम लौंडी ग़ुलाम झेलती हैं। तवे पर रोटी सिकी सबने खाई, तवा कितना जला ये कौन देखता है। औरतकी भी कोई ज़िन्दगी है। जाने दीजिए। पहले असल बात हो जाय, मैं कहती हूँ मुफ्तका गुनाह क्यों सर पर लेते हैं। वो यों भी ज्यादा दिन नहीं चलेगा।"

"इस कामके बिना ज़माना रुका पड़ा है धनिया, इस हक़ीकतको भी समझो। इंग्लिस्तानके बादशाह किसी गवर्नर जनरल या रेज़िडेन्टको या किसी अदना मुलाज़िमको भी ज़लील करनेकी हक़ नहीं रखता। दरअस्ल उनकी पार्लियामेन्ट, जो आला दिमाग़के लोगोंकी कुमैटी होती है वही सब

क़ायदे-क़ानून चलाती है। जो अंग्रेज़ी अमल हो जायगा तो इज्ज़त बची समझो वरना नागनाथ गये तो उनके भाई साँपनाथ आयेंगे। मैं, तुम, दलजीत, रौशन नवाब तक खतरेमें हैं। नसीरुद्दौला गद्दीनशीन हुए नहीं कि हम सब बेआबरू किये जायेंगे। हकीम मेहदीके पास—देखो कानोकान किसीकी ख़बर न होने पाये—"

"ऐ अल्ला तोबा ! उसके इजलासमें मूँ दिखलाना है। हाँ, हकीम साहबका क्या हुआ ?" धनियाने उत्सुक होकर पूछा।

"कलकत्तेसे गवर्नर जनरल बहादुरका खत उनके पास आया है। वह चाहते हैं कि इनके बाद अवधमें कम्पनीका अमल हो जाय। हम सबके हक़में यह अच्छा ही होगा।"

"रौशन नवाब भी सुना है अब यही कहते हैं।" धनियाने ग़ौर करते हुए कहा।

"तुम्हे रौशन नवाबकी ख़बरें खूब मिल जाती हैं।" राजाने रसीले अंदाज़से सवाल किया।

"कहिए तो यह भी बतलाऊँ कि नवाब साहब रोज़ कितनी देर दलवी के पैर दबाते हैं।" धनियाने मुँह बना कर कहा।

"हूँ :। तो ये आलम है।"

"अजी वहाँ सरकारे दो आलम बननेका दावा है जनाब, रौशन नवाब से पैर दबवाती हैं और वसीअली खाँ के पैर दाबती हैं।"

"ख़ैर होगा, बोलो मंज़ूर करती हो ?"

"देगा कौन ?"

"मैं ?"

"तुम क्यों ?"

"बदला लेना चाहता हूँ।"

"तुम या हकीम साहब या फ़िरंगी कोठी वाले—किसका काम है ?

चारों ओर पुकार पड़ गई, बादशाहकी परिचर्या होने लगी। शाही हकीम अंग्रेज़ डाक्टर दौड़े आये, दरबारियोंके झुण्डके झुण्ड बादशाहकी मिज़ाजपुर्सीके लिए आने लगे।

बादशाह किसीसे नहीं मिलना चाहता था, किसीकी सूरत नहीं देखना चाहता था। उसे लगता था कि मिज़ाजपुर्सीके बहाने ये सब मेरा मज़ाक उड़ाने आ रहे हैं। हरामखोर कहींके, सारी दुनिया हरामखोर है, मक्कार। इन्सानियतका दावा ग़लत है, ख़ुदा—हिश्, कहीं कुछ नहीं—बस मक्रफ़रेब है और उसका ख़ुदा ये रेज़ीडेण्ट, ये गवर्नर जनरल, ये तमाम शैतान...ये सब मुझे नीचा दिखानेके लिए हर तरहसे तुले हुए हैं। दो कौड़ीका ग़ालिबजंग जिसे मैंने बन्दरकी तरह पिंजड़ेमें बन्द कर रक्खा था, आज मेरी तौहीन कर बग़ैर अपनी गरदन धड़से जुदा देखे ही चला गया! किसीने उसे गिरफ्तार तक न किया?...किसके इशारेपर ऐसा करनेकी जुरअत उसे हुई? मेरी ही दुश्मनकी फ़ौजकी तनख्वाह और मैं ही उसे अदा करनेके लिए दो-दो बार मजबूर किया जाऊँ? मैं उन्हें तोड़ दूँगा...[दिलमें सच धड़का] या...फिर मैं खुद ही टूट जाऊँगा।"

नसीरुद्दीन मारे ग़ुस्सेके जला जा रहा था। चाहे उसके दुश्मन अंग्रेज़, ग़ालिबजंग, बादशाह बेगम टूटें या वो खुद टूटे—बहरहाल कुछ टूट जाय क्योंकि उसका मन टूट रहा है; तन भी टूक-टूक हो रहा है। जीकी घुटन कैसे खुले किससे कहे—कोई अपना नहीं। "हाय, मैं कितना अकेला हूँ।"—नसीरुद्दीन करवट लेकर पड़ रहा, उसके आँसू थम नहीं रहे थे। ये आँसू कोई न देखे क्योंकि उसका अपना कोई नहीं और वह ग़ैरोंसे जीका भरम न खोलेगा। उसने अपना सर तकियेमें गड़ा लिया, दाहिनी बाँह सरककर चेहरेपर आ गई और उसकी उँगलियाँ तकियेके कोनेको मसलती रहीं।

नसीरुद्दीन जानता है कि उसे एक लाख रुपया देना ही पड़ेगा।

बात एक लाख या एक करोड़की नहीं, यह तो बातकी बात है। मुझे बादशाह बेगमसे ज़लील करवायेंगे, ग़ालिबजंग जैसे कुत्तोंको भौंकने के लिए मेरे सामने भेजेंगे, रौशनुद्दौला मेरे बुलानेपर भी नहीं आता, सब हरामज़ादे हैं, ये सब मुझे नवाब वज़ीरअलीकी तरह क़ैदमें डलवाना चाहते हैं। मुझे, अवधके बादशाहको क़ैद करेंगे? मुझसे एक लाख रुपया दिलवायेंगे--मैं हरगिज़ नहीं दूँगा, मुझे मजबूर करेंगे?—मैं—मैं भाग जाऊँगा। मैं इनको चकमा दूँगा, देखूँगा ये मुझसे कैसे मंज़ूरी ले लेते हैं।"

दवाका वक्त हो गया था, दलवी प्याली लेकर सामने आई। शाही हकीम, अँगरेज़ डाक्टर, धनिया, दलजीत सभी उस कमरेमें मौजूद थे। बादशाह बड़ी देरसे करवट लिये पड़ा था। वह किसीका मुँह नहीं देखना चाहता था। लेकिन बहुत झुँझला कर भी वह इस वक्त अपनी शाही आदतके मुताबिक़ हर एकको कमरेसे निकल जानेका हुक्म भी नहीं दे सकता था। राजा ग़ालिबजंग जबसे उसका अपमान कर चला गया और उसके आज्ञा देने पर भी कोई उसे गिरफ्तार करने नहीं आया तबसे वह सहम गया है। धनिया और दलजीतको छोड़ कर और किसीसे कुछ कहनेकी हिम्मत ही नहीं करता। हुक्म देनेके खयालसे ही वह इतना सहम गया है कि किसी अदना बाँदीको भी सीधे हुक्म देनेमें उसे डर लगता है, कहीं वह उलटकर जवाब न दे दे। हुक्म देनेकी उम्र भरकी आदत रह-रह कर उठती फिर सहम उठती। उसे मन ही मन बड़ी घुटन महसूस होती थी।

दलवी आई; जहाँपनाहसे बड़े इसरार और अदबसे दवा पीनेको कहा। बादशाह उसकी आवाज़ सुनकर ही सहम उठा। कहीं इस दवामें ज़हर तो नहीं है? ये हकीम साहब और डाक्टर साहब क्या किसीकी साज़िशसे यहाँ आये हैं, मुझे दवा पिलानेका इतना इसरार क्यों? और नहीं पियूँगा तो क्या ये मुझे रेज़ीडेण्टका हुक्म सुनाकर ज़बरदस्ती पिलायेंगे? मैं दवा हरगिज़ न पियूँगा।

दलवीने दुबारा कहा, तिबारा कहा और फिर हार कर धनियासे कहा: "धन्नो तुम्ही आओ।"

धनिया जो दलवीको हकीम साहबसे दवाकी प्याली लेकर आगे बढ़ते देख ख़ामोश खड़ी रही थी, अब बड़े अन्दाज़से सरकारके सिरहानेकी तरफ़ जाते हुए हकीम साहबको भी उधर ही आनेका इशारा देती हुई दलवीके पास पहुँच कर उससे बोली: "छोटी, सिर्फ़ एक दरवाज़ेको छोड़ कर बाक़ी ये सब दरवाज़े बन्द करवा दो।—हकीम साहब, मेरे ख़यालसे तो अब आप डाक्टरके साथ बाहर तशरीफ़ ले जायँ।"

कमरेमें सन्नाटा हो गया। धनिया पास आई। नसीरुद्दीनने धीरे-धीरे चेहरेसे बाँह हटाई, कनखीसे देखा फिर और हाथ हटाया, तकियेसे गरदनको तनिक उठा कर चारों ओर देखा—कुर्सियाँ ख़ाली थीं, कमरा फिरसे उसका अपना हो चुका था। धनिया सामने खड़ी थी, वह उछल कर बैठ गया और धनियाका हाथ पकड़ उसे घसीटते हुए अपने पास बिठा उससे चिपट कर सहमे हुए बच्चेकी तरह बोला: "धनिया, मुझे बचा। मुझे इन शैतानोंसे नजात दिला। ये काफ़िर मुझे मारना चाहते हैं।"

बादशाहके लाड़ लड़ानेमें धनियाका बहुत-सा समय बीत गया। फिर भी वह बादशाहको न दवा और न खाना ही खिला सकी। बादशाहको अब अपने गोरे रसोइयेसे भी डर लगता था।

धनियाने प्रस्ताव किया कि वह स्वयं बादशाहके लिए खाना बना दे। पहले तो नसीरुद्दीन झिझका फिर राज़ी हो गया। जब धनिया चलने लगी तो घबरा कर कहा: "न! न! रहने दो धनिया बात कहींकी कहीं पहुँचेगी; रेज़िडेण्ट सुनेगा तो और चिढ़ेगा। ओह मुझे इतनी भी आज़ादी नहीं कि ......सुनो धनिया, हम लोग कहीं बाहर चलें। इन महलोंसे शहरसे तमाम सूरतोंसे मुझे नफ़रत हो गई है। चलो बस आज ही चलते हैं।...... मगर...मैं हुक्म दूँ तो क्या उसकी तामील होगी?"

"क्यों नहीं आलमपनाह—"

"अब आलमपनाह जहाँपनाह मत कहो धनिया। नसीरुद्दीन इतना लाचार है कि खुद अपनेको ही पनाह नहीं दे सकता।" नसीरुद्दीन हैदरकी बड़ी-बड़ी आँखें झलझला आईं।

धनिया बोली : "हुज़ूर आप दीन दुनियाके सरताज हैं। गोरे कुछ भी करें लेकिन रिआया आपकी है।"

"रिआया भी मेरी नहीं है। मेरा कोई भी नहीं है। तुम्हारे कहनेसे दो एक बार गया लेकिन रिआयाके सामने जाते डर लगता है। लोग कहते हैं, हम भूखे हैं आपके सिपाही और शहरके गुण्डे हमें लूटते हैं लोग आवाज़ें कसते हैं कहते हैं कि बादशाहसे फ़रियाद न करो बड़े साहबकी कोठी पर चलो। सुन-सुनकर मैं पागल हो उठता हूँ धनिया, खुदा जानता है! मैं भीड़में किसीको सज़ा भी नहीं दे सकता मैं उनकी सूरत नही देखना चाहता। मैं अब यहाँ घड़ी भर भी नहीं रहना चाहता। मुझे आज ही इसी वक्त ही कहीं ले चलो।"

× × ×

सीतापुरतक यात्रा निरापद बीती; मौसम भी अच्छा रहा और बादशाहका मन भी खुश रहा। लेकिन इस शाही-यात्रासे गाँवकी प्रजाको कष्ट हो रहा था। शाही सेनाके सिपाही और सवार जहाँ भी पड़ाव पड़ता, अपने आरामके लिए प्रजाको बड़ा कष्ट देते? शाही जुलूसके आगे बढ़नेके मार्ग पर प्रजाका असन्तोष छूतकी बीमारीकी तरह बढ़ता ही जा रहा था। और नसीरुद्दीन हैदर भी लखनऊ लौटनेके भयसे आगे बढ़ता ही जा रहा था।

गोमती और कठिना नदियोंके संगम पर हिरनके शिकारकी लालचमें पड़ाव पड़ा। धरती दूर-दूर तक बलुहा और लोना मिली हुई थी। संयोगकी बात थी कि जिस दिन शाही पड़ाव पड़ा उसी दिन बड़ी तेज़ आँधी आई।

धूल और बालू इतनी उड़ी कि लोग घुट-घुट गये। बादशाहका मिज़ाज चिड़चिड़ा उठा। धीरे-धीरे रात घिरने लगी आसमान पर घनघोर घटाएँ घिर आईं बिजलियाँ कड़कने लगीं और इसके साथ ही साथ सरकारी गोयन्दे यह ख़बर भी लाये कि लुटेरे शाही पड़ाव पर आक्रमण करने और लूटनेका आयोजन कर रहे हैं।

नसीरुद्दीनके प्राण सूख गये। उसने धनियासे कहा: "ये लुटेरे नहीं हो सकते। ज़रूर कोई साज़िश है। मुझे मार डालनेके लिए यह जाल रचा गया है। मैं अब यहाँ एक पल भी नहीं रुकूँगा। मैं लखनऊ जाऊँगा इसी वक्त कूच करूँगा।" बादशाह कोईके मनाये न माना। उसी दम कूच कर दिया। बादशाहके साथ धनिया दो-चार और बाँदी खवास और अस्त्र-शस्त्रधारी सैनिक थे, बाक़ी लौंडी-बाँदी, नौकर-चाकर और तपायफ़ें दूसरे दिन चलने वाली थी। उसी रात पानी बिजलीकी घमासानमें उन निराश्रितोंके पड़ाव पर डाका पड़ा। बहुत सा शाही सामान लूटा गया। शाही नौकरोंको तरह-तरहके अत्याचार सहन करने पड़े।

लखनऊसे जाकर नसीरुद्दीनका मन जितना ही हलका हुआ था उतना ही लखनऊ लौटते समय भारी भी हो गया था। हर जगह उसे अपनी मौत ही दिखलाई देती थी। वह सड़क-गलियारों तकसे चौंकता था। उसका सदाका अस्थिर मन और भी अस्थिर हो गया था। वह लोगोंकी आहटसे चौंक पड़ता, अचानक किसी आवाज़से चौंक पड़ता, रातमें सो नहीं पाता था और जो कभी आँख ज़रा देरके लिए लग भी गई तो वह नींदमें चौंक उठता। उसे लगता कि अब उसका क़ातिल आया—ये आ गया। वह किसी भी हथियारबन्द आदमीको अपने पास नहीं आने देता था। वह धनिया और दलजीतको छोड़कर किसी भी व्यक्तिको अपने पास फटकने नहीं देता। मुझे ये लोग ज़हर दे देगें, ज़रूर मार डालेंगे।

× × ×

राजा ग़ालिबजंग धनियासे मिलनेके लिए आये। सफ़रके हाल-चाल

पूछे। फिर बोले :, "उन लाख रुपयोंकी मंज़ूरी तुम्हें लेनी होगी धनिया। और अब तो वह सिर्फ़ तुम्हारे ही हाथका खाता पीता है इसलिए वह काम भी तुम्हें जल्दसे जल्द कर डालना होगा।"

"मंज़ूरी मैं ले लूँगी लेकिन...लेकिन...राजा साहब वह मासूम इस क़ाबिल नहीं कि उसे धोखेसे मारा जाये।" धनिया बोली।

"बचपन मत करो धनिया। इतना समझा चुका, इल्ज़ाम तुम्हारे ऊपर हर्गिज़ न आयेगा। यह सवाबका काम है धनिया। इस पगलेके मरने पर लोग तुम्हें दुआएँ देंगे। और अगर तुमने इस पर ध्यान न दिया तो याद रक्खो कम्पनी बहादुरका मामला है। काम तो किसी न किसीके ज़रिये हो ही जायगा मगर तुम बरबाद हो जाओगी और इस वक्त दो लाख रुपया पाओगी और साहबाने-आलीशानका करम पाओगी। तुम्हारे एहसानात चढ़ जायेंगे जो आयन्दा कभी काम आयेंगे। तुम्हारा हर तरहसे भला होगा।"

अपनी सुरक्षाके लिए धनिया डोल गई।

बादशाहने आपदाओंसे भरी यात्रासे लौटकर किसी भी मुसाहबको नाश्ते या सुबहके भोजनके लिए न बुलाया। घर और बाहर हर तरफ़, हर इन्सानकी सूरतसे वह इतना सहम गया था कि अकेला रहना चाहता था। उसने आते ही अपने कमरेके दरवाज़े चारों ओरसे बन्द करवा लिये थे; यहाँ तक कि सड़क और गोमतीकी ओर पड़नेवाले दरवाज़े भी। उसे सहसा यह डर समा गया था कि अँग्रेज़ कहीं ग़ुब्बारेवाले नौजवानको बुलवाकर इन दरवाज़ोंके आस-पास उसे उड़ा दें और वह चील कौओंको उड़ानेके बहाने उसे, शाहेअवधको, गोली मारकर ख़त्म कर दें। इन अँग्रेज़ोंका बड़ा करिश्मा है; यह ग़ुब्बारेपर भी उड़ते हैं। यह हर ठौरसे मार सकते हैं—"सारा ज़माना मेरे खिलाफ़ है। सब कोई इंग्लिशों की मदद कर रहे हैं। सब मिलकर मुझे मार डालेंगे।—आख़िर क्यों मार डालेंगे? मैं नहीं मरूँगा। मैं हरगिज़ हरगिज़ नहीं मरूँगा......"

दरवाज़ेपर धीरेसे दस्तक पड़ी—एक बार दो बार—बादशाह चौंक उठा। कौन आया ?—मैं दरवाज़ा नहीं खोलूँगा।

नसीरुद्दीन डरसे बच्चा हो गया था। दरवाज़ेपर फिर हल्की दस्तक पड़ी, नसीरुद्दीन और कस गया। डरके मारे उसका शरीर पत्तेकी तरह काँप रहा था। उसे लगता था कि अन्तिम क्षण आ गया। उसका दिल बहुत ज़ोरसे धड़कने लगा, उसका होश डूबने लगा। फिर फ्रान्सीसी शैलीके बने दरवाज़ेकी झिलमिली खुलनेका खटका हुआ, नसीरुद्दीन पत्थर हो गया। ज़ड़ वस्तु-सा निराधार हो वह सोफ़ेसे लुढ़ककर फ़र्शपर आगिरा।

फिर कुछ देर बाद दरवाज़ेपर हथौड़ेकी ठोक-पीट सुनाई पड़ी। वह चोटें नसीरुद्दीन हैदरके होशपर पड़ने लगीं। बिखरा होश तेज़ीसे सिमटने लगा, बिखरी ताक़त भी बिजलीकी तेज़ीसे सिमटी। फ़र्शपर दोनों बाँहें टेक बादशाह उठा चीखा : "नहीं। नहीं।"—न जाने किस तीव्र शक्तिसे वह दरवाज़ेकी ओर दौड़ पड़ा; दरवाज़ेको दोनों हाथोंसे थाम लिया और फिर तेज़ हँफ़नीसे बिखरती अपनी आवाज़को भरसक बल देते हुए वह झखपर चढ़कर बड़बड़ाने लगा : "दरवाज़ा मत-मत तोड़ो—मत तोड़ो।" उसकी आँखोंसे आँसुओंकी अविरल धार बह चली।

"हम हैं सरकार, दरवाज़ा खोलिये।"

"आह, राहते जान आई मेरा होश आया !"

कुन्डी खोलते ही बादशाह फिर बेदम हो गया लेकिन इस समय उसे सम्हालनेवाले आ चुके थे। शराब और भोगविलाससे जर्जर नसीरुद्दीन हैदरका शरीर इतनी विषम चिंताओंका बोझ सम्हालनेके योग्य न था। बचपनसे ही विमाताके लाड़-प्यारके अतिरेकसे वह प्रबल हठी हो गया था, उसकी बुद्धि आयु और शरीरके साथ कभी बढ़ ही न पाई। आज अपनेआपको हर तरफ़से अकेला पाकर वह बौरा उठा था, घबरा उठा था। वह अपनेआपको सम्हाल नहीं पाता था; वह धनियाका सहारा लेनेके लिए विवश था।

धनियाने उसके बचपनको दुलराया, जवान मनको रिझाया, फिरसे उसकी दिल-जमई की, उसकी बादशाहतको जगाया, कहा : "आप परेशान न हों, आपकी बीमारीका विलायतकी बड़ी कुमैटीमें चर्चा हुआ। वहाँ यह कहा गया कि शाहेअवधकी मर्ज़ीके ख़िलाफ़ कोई काम न किया जाय, उनके तोहफ़े शाहे फ़िरंग क़बूल करें। हाँ शाहेअवधसे इतनी दरख्वास्त ज़रूर की जाय कि वे अपनी सौतेली माँका क़र्ज़ अदा करनेके लिए अगर एक लाख रुपया दे दें तो दुनियामें जब तक चाँद-सूरज रहेंगे उनका नाम रौशन रहेगा। और अगर बादशाहकी मर्ज़ी न हो तो उनपर इस कामके लिए ज़ोर भी न डाला जाया।"

बादशाह चुप-चाप सुनता रहा। धनिया उसके गलेमें दोनों हाथ डालकर आँखें नचाते हुए बोली : "अब न कहियेगा हुज़ूरेआलम कि मेरी दुआमें असर नहीं होता, मुझपर बाबाकी बड़ी मेहरबानी है। उनकी ख़िदमतमें रुक्क़ा लिखकर भेजा था, उसका यह नतीजा हुआ कि लन्दन विलायत तक हिल उठा। अब आपके दुश्मनोंके ज़हरके दाँत टूट गये।"

"तुमसे किसने कहा ?"

"अभी-अभी राजा ग़ालिबजंग तशरीफ़ लाये थे। बड़े डरते काँपते आये, आते ही मेरे क़दमोंपर लोट गये; बड़ी देरतक रोते रहे। मैं घर-घरके पूछूँ कि बात क्या है, मगर हिचकियोंके सिवा आवाज़ ही न फूटती थी। बहुत कहने-सुननेपर सब हाल सुनाया, कहने लगे कि मैं बड़ा बदक़िस्मत हूँ। गोरोंके बहकावेमें आकर अपना गला कटा बैठा। बादशाहसलामत अब मुझे मुआफ़ नहीं करेंगे।"

धनिया बादशाहको बहलाती रही। कमरेके सारे दरवाज़े खोलकर उसने फिरसे चहल-पहलका वातावरण तैयार कर दिया। मुबारकबादीका नाच और गाना भी करवा डाला, बहुत-सी नेग, मन्नतें भी बादशाहके हाथ छुलाकर इधर-उधर तकियों-दरगाहोंमें भिजवाईं, सतनजा और कपड़े फ़क़ीर-फ़ुक़रोंको बटवाये। हर शख्स शाहेअवधकी सेवामें पुराने

की तरफ़ चला जहाँ शराबका भंडार रहता था। अर्से पहले वह इधर आया था, नीचेके आँगनमें गया था। आज फिर उसी तरफ़ बढ़ा। चलते फिरते परिचारक-परिचारिकाएँ बादशाहको देखकर चौंक पड़ते थे। बादशाह नीचे ज़ीने उतरने लगा। आँगनके दरवाज़े तक पहुँचते हुए उसने देखा, नवाब रौशनउद्दौला और दलवी खड़े थे; दारोग़ा मालख़ाना भी मौजूद था। वे तीनों बादशाहको और बादशाह उन्हें देखकर चिहुँक उठे। नसीरुद्दीन उल्टे पाँवों ऐसी घबराहट और तेज़ीसे ज़ीने चढ़ने लगा मानो बाघ देख लिया हो। उसे शक हो गया कि ज़रूर यह सब मिलकर शराब की बोतलोंमें ज़हर घोल चुके होंगे। नसीरुद्दीनको वे तीनों अपनी मौतके मनहूस जमदूत-से लगे। नहीं अब वह शराब नहीं पियेगा। किसीके हाथकी कोई चीज़ भी नहीं खायेगा वह सिर्फ़ पानी पीयेगा।

प्यास दौड़ने-हाँफ़नेसे और तेज़ हो गई। अपने कमरेमें जाते-जाते लौट कर वह कुँएँ वाली कोठरीकी ओर चल दिया। कोठरीके ताले पर हर बार कपड़ा सीकर शाही मुहर लगती थी। धनियाके साथ नसीरुद्दीन ख़ुद इस कमरेसे पानी लेने आया करता था। बाँदियां पीछे-पीछे चलने लगीं। कोठरीके पास जा नसीरुद्दीनने ताले पर हाथ रक्खा। एक बाँदी फ़ौरन कैंची लेकर आगे बढ़ी। बादशाह ख़ुद अपने हाथसे मुहर तोड़ता था। उसने देखा कि मुहर टूट गई है उसके टुकड़े-टुकड़े कपड़े पर चिपके खिल गये हैं। नसीरुद्दीनके मनमें शंका उत्पन्न करनेके लिए इतना ही यथेष्ट था। नसीरुद्दीनने दोनों हाथोंमें रूमाल पर कैंची लिए खड़ी बाँदी की ओर देखा। एक बार इच्छा हुई कि उससे मुहर टूटनेके सम्बन्धमें कुछ पूछताछ करे पर सहम कर न पूछा। वह तेज़ीसे अपने कमरेमें घुस गया और किवाड़ बन्द कर लिये।

भूखा-प्यासा नसीरुद्दीन बड़ी देर तक खोया हुआ बैठा रहा, रात हो गई। न उसके घरमें दीया-बत्ती न उसके मनमें उजाला। चारो ओर घटाटोप कर नसीरुद्दीन बैठा था। मगर कब तक बैठा रहे। प्यास बगूले सी उमड़

रही थी। दम अब इतना घुट गया था कि वह ऊब गया था। वह जीवित नहीं रहना चाहता पत्थर हो जाना चाहता था, जड़ हो जाना चाहता था। उसने एक एक कर दरवाज़े खोलने शुरू किये। पहले नदी पारकी रोशनियाँ झलकीं, फिर सड़क दिखलाई पड़ने लगी; फिर दरवाज़ेके बाहर नौकर बाँदियाँ, धनिया, दलजीत सब दिखलाई पड़ने लगे। बादशाह अपने अँधेरे कमरेकी पृष्ठ-भूमिमें दास-दासियोंके सामने कंकाल-सा खड़ा था। कुछ देर दरवाज़े पर खड़े रह कर बादशाह कमरेके अन्दर लौट आया, दरियाकी ओर एक दरवाज़ेके पास जाकर खड़ा हो गया। दलजीत और धनिया पीछे-पीछे आये, दोनोंने एक सोफ़ा वहीं लाकर रख दिया और बादशाहसे आराम फ़रमानेके लिए बा-अदब इसरार किया। बादशाहको समझाया जाने लगा कि धनियाने मुतलक़ झूठ नहीं कहा था। शाहे-इंगलिस्तानने शाहे-अवधके तोहफ़े बड़ी खुशीसे क़बूल कर लिये हैं। शहर में इसको लेकर खुशियाँ मनाई जारही हैं, दुश्मनोंके मुँह काले होरहे हैं। बादशाहसे कहा गया कि उनकी तबियत नासाज़ है, उन्हें ताक़त चाहिए और उसके लिए उन्हें दवा लेना चाहिए। वह दवा धनियाने अपनी निगरानीमें तैयार करवाई है। शरबतके साथ पीते ही ताक़त देगी।

हारी हुई आवाज़में नसीरुद्दीन बोला: "पहले एक घूँट पानी पिलाओ।...और फिर लाओ...मुझे लेकर दुनियाका यह अरमान भी क्यों अधूरा रह जाय।"

रातके साढ़े ग्यारह बजे शाही कमरेसे एक मर्मान्तक चीख सुनाई दी। पता लगा बादशाद बेहोश होगया है। महलमें हर तरफ़ बिजली-सी खबर फैल गई, दास-दासियोंके झुण्ड इधर-उधर सिमट कर कनफुस्कियाँ करने लगे। थोड़ी देरमें दरबार वकील आये रौशनुद्दौला, ग़ालिबजंग आये, अँग्रेज कप्तान, अँग्रेज़ डाक्टर आये। घोषणा हुई कि दिलकी कमज़ोरीसे धड़कन रुक गई; शाहेअवध मर गया। शाहेअवध ज़िन्दाबाद!

यह ८ जुलाई १८३७ ई० की बात है।

४३

अवध दरबारके अँग्रेज़ रेज़ीडेण्ट कर्नल लो ने फ़ौरन ही अपने दो सहकारी कैप्टेन पेटन और कैप्टेन शेक्सपियरको अपने मीर मुन्शीके साथ कोठी फ़रहबख्शमें नियुक्त कर दिया। उसने मड़ियाँव छावनीसे एक हज़ार गोरी फ़ौज बुलानेके लिए भी आदेश भेजा। रेज़ीडेण्ट महलके फाटकों और खज़ानेकी रक्षाके लिए तुरत व्यवस्था करने लगा। नवाब रौशनुद्दौला और कप्तान फ़तेहअली ख़ाँने मड़ियाँव छावनीसे गोरी फ़ौज आने तक रेज़ीडेण्टकी इच्छानुसार हथियारबन्द सिपाही नियुक्त कर दिये। महलके बाहर और भीतरसे किसी भी छोटे बड़े आदमीको आने जानेकी सख्त मनाही हो गई। महलकी हिफ़ाज़तका प्रबन्ध देख-भाल कर रेज़िडेण्ट अपनी कोठी पर गया और जाते ही खुदाबख्श चोबदारके हाथ बादशाह बेगमको यह आदेश भेजा कि वे अपना स्थान छोड़कर कहीं न आयें-जायें। रेज़ीडेण्टके दूसरे आदेश पर कैप्टेन शेक्सपियर और मीर मुन्शी सैयिद इत्तिफ़ात हुसैनको नवाब नसीरुद्दौला मुहम्मद अली खाँकी सेवामें भेजा गया। नवाब साहब स्वर्गीय नवाब सआदत अली खाँके जीवित पुत्रोंमें सबसे बड़े थे। इस्लामी विधानके अनुसार उन्हें अपने निःसन्तान भतीजेकी गद्दी का उत्तराधिकार प्राप्त हुआ था। बूढ़ा नवाब जगाया जाने पर घबरा कर उठा और जब उसे यह बतलाया गया कि वह अब अवधकी सल्तनतका बादशाह है तो उसके आश्चर्यका ठिकाना न रहा।

शहरमें ख़बर इस तेज़ीसे फैली कि गली सड़कों पर आधी रातमें फिरसे दिन जैसी चहल-पहल हो गई। लोग इधर-उधर टोलियोंमें बँट कर बादशाहकी मृत्यु पर विचार-मन्थन करने लगे; उत्तराधिकारके प्रश्नको लेकर चर्चा चलने लगी।

जब बादशाह बेगमके पास नसीरुद्दीन हैदरकी मृत्युका समाचार पहुँचा तो वे सहसा कुछ देरके लिए स्तम्भित हो गईं फिर ध्यान सिमटते

ही उन्होंने पहला आदेश दिया : "मुन्नाजानको मेरे पास ले आओ।"

नसीरुद्दीन हैदरकी मृत्युका समाचार इल्मासबाग़में भारी हलचलका कारण बन गया। भिश्ती इमामबख्श सुनकर इतना हर्षोन्मत्त हो उठा था कि उसके हुल्लड़ मचानेसे इल्मासबाग़में चारों ओर उत्तेजना ही उत्तेजना फैल गई। रेज़ीडेण्टका चोबदार ऐसे ही समय वहाँ पहुँचा था।

पर्दा हुआ; चोबदार हुज़ूर बादशाह बेगमकी खिदमतमें पहुँचाया गया। उसने रेज़ीडेण्टका आदेश सुनाया। बादशाहबेगम बोलीं : "साहबे आलीशान असली हक़दार अगर नवाब मुन्नाजानको तस्लीम करें तो मैं भी उनका हुक्म माननेमें ऊज्र न करूँगी।" भिश्ती इमामबख्शने जोशमें आकर कहनी न कहनी सुनानी शुरू कीं। चोबदार किसी तरह वहाँसे अपनी जान छुड़ा कर भागा।

इल्मासबाग़में उत्तेजना उत्तरोत्तर बढ़ने लगी। बाग़के सिपाहियोंके हुल्लड़ने आस-पासके जंगलोंमें छिपे लोगोंको सचेत कर दिया। दूर-दूरसे शोर सुनाई पड़ने लगा और देखते ही देखते बाग़के फाटक पर उत्तेजित लड़ाकुओंकी भीड़ इकट्ठा होने लगी।

दुलारीने सुना। अपने बेटे कैंवाजाहको उसने फ़ौरन ही छिपा दिया। कैंवाजाह एक बार सिंहासनका उत्तराधिकारी नियुक्त हो चुका था, इस समय कोई शक शुबह कर उसे गिरफ्तार करे या और किसी तरहका नुक्सान पहुँचाये इसीलिए उसने सुरक्षाकी व्यवस्था की। एक पतिकी सधवा और दूसरेकी सद्यः विधवा दुलारी बड़ी हौलदिलीके साथ अपना और अपने बेटे बेटीका भविष्य देख रही थी। उसके दोनों देवर वारिस अली और फ़तह अली भी अपने भविष्यको लेकर पत्तेकी तरह काँप रहे थे।

इल्मासबाग़से भिश्ती इमामबख्श, मोहनसिंह और लालताके नेतृत्वमें सात-आठ हज़ार हथियारबन्द पासी सिपाहियों, शोहदों और उठाईगीरोंकी भीड़ दरबार भवनकी ओर चल पड़ी। ज्यों-ज्यों बेगमकी सेना शहरकी ओर बढ़ती आती थी त्यों-त्यों शहरकी जनतामें भी जोशका सैलाब बढ़ता जाता

४३

अवध दरबारके अँग्रेज़ रेज़ीडेण्ट कर्नल लो ने फ़ौरन ही अपने दो सहकारी कैप्टेन पेटन और कैप्टेन शेक्सपियरको अपने मीर मुन्शीके साथ कोठी फ़रहबख्शमें नियुक्त कर दिया। उसने मड़ियाँव छावनीसे एक हज़ार गोरी फ़ौज बुलानेके लिए भी आदेश भेजा। रेज़ीडेण्ट महलके फाटकों और खज़ानेकी रक्षाके लिए तुरत व्यवस्था करने लगा। नवाब रौशनुद्दौला और कप्तान फ़तेहअली खाँने मड़ियाँव छावनीसे गोरी फ़ौज आने तक रेज़ीडेण्टकी इच्छानुसार हथियारबन्द सिपाही नियुक्त कर दिये। महलके बाहर और भीतरसे किसी भी छोटे बड़े आदमीको आने जानेकी सख्त मनाही हो गई। महलकी हिफ़ाज़तका प्रबन्ध देख-भाल कर रेज़िडेण्ट अपनी कोठी पर गया और जाते ही खुदाबख्श चोबदारके हाथ बादशाह बेगमको यह आदेश भेजा कि वे अपना स्थान छोड़कर कहीं न आयें-जायें। रेज़ीडेण्टके दूसरे आदेश पर कैप्टेन शेक्सपियर और मीर मुन्शी सैयिद इल्तिफ़ात हुसैनको नवाब नसीरुद्दौला मुहम्मद अली खाँकी सेवामें भेजा गया। नवाब साहब स्वर्गीय नवाब सआदत अली खाँके जीवित पुत्रोंमें सबसे बड़े थे। इस्लामी विधानके अनुसार उन्हें अपने निःसन्तान भतीजेकी गद्दी का उत्तराधिकार प्राप्त हुआ था। बूढ़ा नवाब जगाया जाने पर घबरा कर उठा और जब उसे यह बतलाया गया कि वह अब अवधकी सल्तनतका बादशाह है तो उसके आश्चर्यका ठिकाना न रहा।

शहरमें खबर इस तेज़ीसे फैली कि गली सड़कों पर आधी रातमें फिरसे दिन जैसी चहल-पहल हो गई। लोग इधर-उधर टोलियोंमें बँट कर बादशाहकी मृत्यु पर विचार-मन्थन करने लगे; उत्तराधिकारके प्रश्नको लेकर चर्चा चलने लगी।

जब बादशाह बेगमके पास नसीरुद्दीन हैदरकी मृत्युका समाचार पहुँचा तो वे सहसा कुछ देरके लिए स्तम्भित हो गईं फिर ध्यान सिमटते

ही उन्होंने पहला आदेश दिया : "मुन्नाजानको मेरे पास ले आओ।"

नसीरुद्दीन हैदरकी मृत्युका समाचार इल्मासबाग़में भारी हलचलका कारण बन गया। भिश्ती इमामबख्श सुनकर इतना हर्षोन्मत्त हो उठा था कि उसके हुल्लड़ मचानेसे इल्मासबाग़में चारों ओर उत्तेजना ही उत्तेजना फैल गई। रेज़ीडेण्टका चोबदार ऐसे ही समय वहाँ पहुँचा था।

पर्दा हुआ; चोबदार हुज़ूर बादशाह बेगमकी ख़िदमतमें पहुँचाया गया। उसने रेज़ीडेण्टका आदेश सुनाया। बादशाहबेगम बोलीं : "साहबे आलीशान असली हक़दार अगर नवाब मुन्नाजानको तस्लीम करें तो मैं भी उनका हुक्म माननेमें ऊज्र न करूँगी।" भिश्ती इमामबख्शने जोशमें आकर कहनी न कहनी सुनानी शुरू की। चोबदार किसी तरह वहाँसे अपनी जान छुड़ा कर भागा।

इल्मासबाग़में उत्तेजना उत्तरोत्तर बढ़ने लगी। बाग़के सिपाहियोंके हुल्लड़ने आस-पासके जंगलोमें छिपे लोगोंको सचेत कर दिया। दूर-दूरसे शोर सुनाई पड़ने लगा और देखते ही देखते बाग़के फाटक पर उत्तेजित लड़ाकुओंकी भीड़ इकट्ठा होने लगी।

दुलारीने सुना। अपने बेटे कैंवाजाहको उसने फ़ौरन ही छिपा दिया। कैंवाजाह एक बार सिंहासनका उत्तराधिकारी नियुक्त हो चुका था, इस समय कोई शक शुबह कर उसे गिरफ्तार करे या और किसी तरहका नुक्सान पहुँचाये इसीलिए उसने सुरक्षाकी व्यवस्था की। एक पतिकी सधवा और दूसरेकी सद्यः विधवा दुलारी बड़ी हौलदिलीके साथ अपना और अपने बेटे बेटीका भविष्य देख रही थी। उसके दोनों देवर वारिस अली और फ़तह अली भी अपने भविष्यको लेकर पत्तेकी तरह काँप रहे थे।

इल्मासबाग़से भिश्ती इमामबख्श, मोहनसिंह और लालताके नेतृत्वमें सात-आठ हज़ार हथियारबन्द पासी सिपाहियों, शोहदों और उठाईगीरोंकी भीड़ दरबार भवनकी ओर चल पड़ी। ज्यों-ज्यों बेगमकी सेना शहरकी ओर बढ़ती आती थी त्यों-त्यों शहरकी जनतामें भी जोशका सैलाब बढ़ता जाता

था। नवाब फ़रीदूनबख्त मुन्नाजान नसीरुद्दीन हैदरका पुत्र और सिंहासनका वास्तविक अधिकारी है या नहीं इस विषयको लेकर जगह-जगह जनतामें नये सिरेसे बहसें छिड़ गईं। एक पालकीमें बादशाह बेगम और तामज़ाम पर भिश्तीकी भीड़ द्वारा अपनी बादशाहतके नारे और जै-जै कार सुनता हुआ मुन्नाजान बढ़ रहा था। उसके दोनों ओर चन्द्र ज्योति और मशालोंकी काफ़ी रौशनी थी। देखने वाले देखकर यही कहते कि नसीरुद्दीन फिरसे नौजवान होकर चला आ रहा है।

मड़ियाँवसे अंग्रेज़ी सेनाएँ पहुँच भी न पाईं थीं कि बादशाह बेगमकी भीड़ महलों तक पहुँच गई। कैप्टेन पेटनने फाटकके ऊपर झरोखेसे भीड़को सम्बोधित किया और कहा कि कम्पनी बहादुरने नवाब नसीरुद्दौलाको अवधका बादशाह घोषित किया है इसलिए किसी दूसरेका अधिकार जताना अपराध है।

गोरेके मुँहकी बात थी उत्तेजित होते हुए भी भिश्ती आदि लीडरोंने उसे बादशाह बेग़म तक पहुँचाना उचित समझा। सुनकर बेगम बोलीं; "मुल्क और हक दोनों हमारा है। हुकूमते इंग्लिशिया हमारे घरेलू मुआमलातमें दख़ल देनेका दावा किस हैसियतसे रखती है। आगे बढ़ो, फाटक तोड़ दो, महलों पर कब्जा करलो।"

भीड़की उत्तेजना सहस्रमुखी हो गई। लड़वैयोंका रेला इतनी तेजीसे फाटक पर चढ़ दौड़ा कि उसे संभालना किसीके बसकी बात नहीं रह गई थी। फाटक तोड़नेके लिए एक हथनी भी लाई गई थी। फाटक पर कुल्हाड़ोंकी चोटें पड़ने लगीं सैकड़ों हाथोंकी चोट फाटक सह न सका शीघ्र ही आधा टूट गया। कैप्टेन पेटन फाटकके पीछे ही खड़ा था। भिश्तीकी भीड़ उसपर टूट पड़ी तलवारकी मूँठों और बन्दूकके कुन्दोंसे कैप्टेन पेटनकी बुरी दुर्गत की गई।

महलके बाग़-बाग़ीचे, बारहदरियोंमें, हर तरफ़ बेगमके सिपाही छाये हुए थे। रेज़िडेण्ट, उनके मीर मुंशी, नवाब रौशनुद्दौला, राजा शिव-

दीन सिंह सभी बेगमके सेनापतियों द्वारा नज़रबन्द कर लिये गये। रौशन नवाबको तो बेगमके सिपाहियोंने मार ही डाला होता मगर उनके नौकर क़ादिरबख्शने उन्हें किसी तरह बचा लिया। नायब वज़ीर सुभान अलीखाँ लाठी तलवारके वारसे अपना सिर बचानेके लिए सिरपर बहुत-सा कपड़ा पग्गड़की तरह लपेट भागा। वकील-उस्सल्तनत ग़ुलाम यहियाखाँ एक छत पर घिर गया; जान बचानेका दूसरा उपाय न देख वह उत्तरी दीवारसे गोमती तटपर कूद पड़ा। एक टाँग टूट गई, किसी तरह घिसटते लुकते छिपते नदी किनारे तक आया और एक नाववालेको मुँहमाँगे दाम देकर भाग निकला। महलकी ज़नानी ड्योढ़ियोंको छोड़कर हर तरफ़ अन्धेरेमें चन्द्रज्योति और मशालें दौड़ती लपलपाती फिरती थीं। झाड़-फानूस सजावटका सामान लूटा और तोड़ा-फोड़ा जा रहा था। हिंसक हुल्लड़ और लूटका अन्धा आह्लाद नगरमें दूर-दूर तक सुनाई पड़ रहा था। लोग दिल थामे खड़े थे कि अब क्या होता है?

कोठी फ़रहबख्शमें नदी किनारे नये बादशाह नसीरुद्दौला मुहम्मद अलीखाँ अपने बेटे अमजद अली और पोते वाजिदअलीके साथ सहमे हुए बैठे थे। महलकी स्त्रियोंमें रोना-धोना, छाती कूटना अपने क़ीमती माल असबाबको छिपाते फिरना आदि हंगामा मचा हुआ था। अंग्रेजी सेनाकी कुछ आगाऊ टुकड़ियाँ ही अभी पहुँच पाई थीं, बेगमकी अनियन्त्रित उन्मत्त भीड़को रोकनेका साहस उनमें न था।

दरबार हाल—लाल बारहदरी—में नवाब मुन्नाजानको सिंहासनपर बैठानेका आयोजन हो रहा था। चारों बड़े हॉल, आस-पास ऊपर नीचेके छोटे-बड़े कमरे, इञ्च-इञ्च जगह बेगमकी सेनासे अटी थी। सिंहासनके पीछे ही पालकीमें बादशाह-बेगम बैठी थीं।

नवाव मुन्नाजानकी बाशाहतको वैधानिक पुष्टि देनेके लिए यह ज़रूरी समझा गया कि रेज़ीडेण्टसे नये बादशाहको नज़र दिलवाई जाये। नज़रबन्द रेज़ीडेण्ट कर्नल लो, उनके सहकारी कैप्टेन जॉन शेक्सपियर और उनके

मीर मुन्शी सैयिद इल्तिफ़ात हुसैन बहादुर लाल बारहदरीमें घेर कर लाये गये। दरबार हॉलमें रेज़ीडेण्टके प्रवेश करते ही 'गॉड सेव दि किंग' की धुन बजाई गई। ग़ाजीउद्दीन हैदरके बादशाह घोषित किये जानेके अवसर पर पहली बार इस विलायती गीतकी परम्परा पड़ी थी और वही इस समय अपनाई गई थी। ज़िलोख़ानेसे तोपोंकी सलामी गरजने लगी। नवाब फ़रीदून बख़्त मुन्नाजान अवधके राजसिंहासन पर बैठा, उसके सिर पर मुन्दीर रक्खी गई। तवायफ़ें मुबारकबादियाँ गाने लगीं, उन्हें भी भिश्ती की सेना डरा धमका कर पकड़ लाई थी। चारों ओरसे मुबारकबादियोंका शोर उठने लगा। भाले, तलवार, मशाल, बन्दूक, जो जिसके हाथमें था, ऊँचा उठा कर बड़े जोशमें नये बादशाहको मुबारकबाद दे रहा था।

नये बादशाहके सामनेसे नज़रे गुज़रने लगीं; रेज़िडेण्टको भी नज़र पेश की गई लेकिन उसने शान्त किन्तु दृढ़ भावसे उसे अस्वीकार कर दिया। "साले तुझे नज़र लेनी ही पड़ेगी।"—भद्दी-भद्दी गालियोंके साथ रेज़ीडेण्टकी नोचा-खसोटी की जाने लगी। भिश्ती इमाम-बख़्शने रेज़ीडेण्टको मारनेके लिए भी हाथ उठाया मगर बादशाह बेगमके वकील मिर्ज़ा अली खाँने उन्हें बचा लिया। बन्दूककी गोली भी चली; कर्नल लो तकदीरके सिकन्दर थे गोली उनके कन्धेको तनिक सा छीलती हुई निकल गई। रेज़ीडेण्टको वहाँसे हटाकर बेगमके सामने लाया गया। रेज़ीडेन्टने उनके सामने भी अपनी वही ठंडी अकड़ क़ायम रक्खी। रेज़ीडेण्टने कहा : "मैं गवर्नर जनरलके हुक्मके खिलाफ़ नहीं जा सकता।"

"मैं भी हक़के खिलाफ़ नहीं जा सकती और हक़ सही तौर पर मेरे पोते मुन्नाको पहुँचता है।"

रेज़ीडेण्टने फिर उसी तरह शान्त किन्तु दृढ़ स्वरमें कहा : "आप गवर्नर जनरलसे मंज़ूर करवा लें तो मैं मान लूँगा। उस वक्त तक नवाब मुन्नाजानकी ताजपोशीको मैं एक ग़ैर क़ानूनी काम माननेके लिए मजबूर

हूँ। और आपको बा अदब आगाह भी करता हूँ कि इस ग़लत कामसे आप अपना हाथ खींच लें।"

भिश्ती, लालता राजपूत आदि सहमे कि बादशाहबेगम कहीं रेज़ीण्टके बहकावेमें न आ जायें। वे रेज़ीडेण्टको घसीटकर फिर सिंहासनके सामने ले आये और उसे झुकाते हुए बोले : "सलामकर साले—कर सलाम, नहीं तो—।" गन्दी-से-गन्दी गालियाँ, ज़ुल्फ़ खिंचाई, झटकेसे गर्दनका दबाया जाना आदि सब कुछ करके भी वे रेज़ीडेण्टको झुका न सके। उसने अपनी ओरसे तनिक भी उत्तेजना न दिखलाई, ठंडे स्वरमें केवल इतना ही कहा : "आप बशौक़ मेरी और कैप्टेन शैक्सपियरकी जान ले सकते हैं; मगर कम्पनी सरकार किसी भी हालतमें आपकी बात न मानेगी।"

बेगमके वकीलने अपने भविष्यको सुरक्षित करनेके विचारसे तुरत आगे बढ़कर हंगामेको इस तरह बेबातकी बातमें बाँधकर बहकाया कि वे आपसी बहस मुबाहसेमें गुँथ गये। मिर्ज़ाअलीखाँ रेज़ीडेण्ट और उनकी टुकड़ीको सफ़ाईसे बचाकर महलोंमें ले गया। तबतक मड़िगाँव छावनीसे गोरी सेना भी आ पहुँची थी।

रात बीत चुकी थी, पौ फट रही थी। अँग्रेज़ी तोपोंने लाल बारहदरी को चारों ओरसे घेरकर गोले छोड़े। गोरी फ़ौज और विलायती तोपोंकी गरज सुनते ही बेगमके सिपाहियोंमें भगदड़ पड़ गई। गोरी सेनाने भागते हुए लोगोंकी गहरी मारकाट मचाई,। चारों ओर चीख़ पुकार और पनाह! पनाह! की आवाज़ें उठने लगीं। साढ़े चार घंटे तक बाप दादोंके सिंहासनपर बैठकर बाप-दादाके द्वारा ही अवैध सन्तान घोषित किया जाने-वाला मुन्नाजान बादशाहतका मोह छोड़ अपने प्राण बचानेके लिए सिंहा-सनके नीचे छिप गया।

बादशाहबेगम पालकीसे उठकर महलके अन्दर चलीं गईं। सामने

एक बाँदी दिखलाई पड़ी उसे साथ ले वे उस कमरेमें गईं जहाँ नसीरुद्दीन हैदर आख़िरी नींद सो रहा था। बादशाहबेगम कुछ देर तक चुपचाप लाशके सिरहाने खड़ी रहीं। फिर धीरेसे कफ़न हटाया, अपने मरे हुए सौतेले बेटेका मुँह देखती रहीं......

सुलेमानजाह नसीरुद्दीन हैदर सो रहा था। राजमाताके सामने वह छोटा होता चला गया; गोदीका बच्चा हो गया। वह दिन उनकी स्मृतिमें स्पष्ट हो आया जब मुग़लानी फ़ैज़ुन्निसा बहुत समझा-बुझाकर आठ दिनके बच्चेको उसकी गोदमें डाल गई थी। बादशाहबेगमने नसीरुद्दीनके न जाने कितने-कितने लाड़-लड़ाये थे नसीरुद्दीन बादशाहबेगमकी महत्त्वाकांक्षाका प्रतीक था। उसके सहारे वह आग़ामीरसे लड़ी अपने पति ग़ाज़ीउद्दीनसे लड़ी—हर एकके दर्पको अपने अदमनीय अहं के सामने निस्तेज कर हज़ार आपदायें सहते हुए भी बादशाह बेगम इसी एक सपनेको लेकर आगे बढ़ती रही थीं कि नसीरुद्दीन जब बादशाह होगा तब एक-एकसे बदले चुका लूँगी, जी के हौसले पूरे कर लूँगी। उसी नसीरुद्दीनसे फिर उनकी ठन गयी और ऐसी ठनी कि एकका अन्त हो गया। और अब दूसरेका, स्वयं बादशाह बेगमका अन्त भी निकट आ पहुँचा था।

बेटेकी लाशमें बादशाह बेगम अपनी महत्त्वाकांक्षाओंका अन्त देख रहीं थीं। आपाधापीकी होड़में न यह रहा न वह रहा। जन्म-कुण्डलीके ग्रह-नक्षत्र जीवन भर मृगतृष्णा बन कर राजमाताको दौड़ाते रहे और अब जीवनका सब कुछ केन्द्रीभूत हो जड़ताकी ओर बढ़ चुका था। नसीरुद्दीन मर गया था। बादशाह बेगम, उसकी लाड़ लड़ाने वाली माता अब अपनी अंहताको लेकर रुक न सकी बहुत रोकते हुए भी उनकी आँखोंसे आँसू बह चले। नसीरुद्दीन हैदरके चेहरेने विमाताके आसुओंकी ठंठक पाई। बादशाह बेगमने लाशका मुँह धीरे-धीरे फिर चादरसे ढँक दिया।

कमरेके बाहर गोरे सिपाहियोंके बूटोंकी रप-रप बादशाह बेगमको अपने अन्तिम क्षणका आभास कराने लगी। सिपाही ठीक उसी दरवाज़े

पर आकर रुक गये। भिश्ती मारा जा चुका था, चार घंटेका बादशाह मुन्नाजान गिरफ्तार हो कर नंगे पैर, पाँव पैदल, हथकड़ी जड़े हाथोंसे घसीट कर रेज़ीडेन्सीके कैद खानेमें पहुँचाया जा चुका था और अब बादशाह बेगमकी बारी आई थी। वह शान्त भावसे अपना अंत देखनेके लिए प्रस्तुत थीं।

× × ×

बाँगर क्षेत्रमें सुनसान मार्ग पर एक कुटीमें एक बलिष्ट तेजवान संन्यासी बैठा रामायण पाठ कर रहा था। कुटीके द्वार पर एक नरकंकाल आकर खड़ा हो गया, उसकी आँखें फटी हुई थीं, उसका बेतरतीब दाढ़ी बढ़ा चेहरा मुर्देकी तरह सफ़ेद था।

"क्या चाहिए ?" संन्यासीने पूछा।

"पानी।"

"अन्दर आजाओ भाई।"

"मैं—मैं मुसलमान हूँ बाबा।"

"मैंने जाति नहीं पूछी। अन्दर आओ।" संन्यासीके निमंत्रणमें सहज स्नेह था।

पानी पीकर संतोषकी साँस लेते हुए नरकंकाल उठा, बाहर जाने लगा, फिर ठिठक कर पूछा : "बादशाह सचमुच मर गया बाबा ?"

"हाँ भाई, सुनो तो यही है।"

"और दुलारी—मलिका जमानिया ?"

"ज़िंदा हैं। तुम यह सब क्यों पूछ रहे हो ? क्या बादशाह और मलिका ज़मानियाके सताये हो ?

"हूँ :।" एक ठंडी आह भर कर नरकंकाल बोला : "क़िस्मतका मारा हूँ बाबा। किसी पर इल्ज़ाम नहीं लगाता। सब क़िस्मतका खेल है !" फिर ठंडी साँस छोड़ी।

संन्यासी देखता रहा, फिर पूछा : "क़ैदमें थे ?"

"जी हाँ। तेरह बरस बाद आज मैंने पहली बार दुनिया देखी है।"

"क्यों पकड़े गये थे ?" संन्यासीने पूछा।

"क्यों ?" नरकंकाल फीकी हँसी हँसा, फिर कहा :" इसलिए कि मेरी बीवीको बादशाहकी मलिका बनना था। बाबा, क्या खुदा है ? इंसाफ़ है ? हक़ है ?"

संन्यासी सोचता रहा फिर शान्त किन्तु दृढ़ स्वरमें कहा : "अवश्य है। रातमें दिन छिपा रहता है। मैं भी उजालेकी बाटमें बैठा हूँ भाई।" संन्यासीके चेहरे पर उदासीकी छाया पड़ने लगी।

नरकंकाल बोला : "अच्छा बाबा, ये दुनिया क्या सदा यूँ ही चलेगी ? कमज़ोर यूँ ही पिसते रहेंगे और शहज़ोर—"

"कहा न भाई, रातके बाद दिन अवश्य आता है। मैं उसी उजालेकी बाटमें बैठा हूँ।"

संन्यासी भविष्यमें आते प्रकाशको देख रहा था, नरकंकालके टूटे मनमें चारों ओर घना अँधेरा ही अँधेरा था।

एक दिग्विजय ब्रह्मचारी थे, दूसरा दुलारीका पति रुस्तम अली।

यह गदरके बीस वर्ष पहलेकी बात है।